

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक—फतहसिंह, एम. ए., डी. लिट्.

[निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

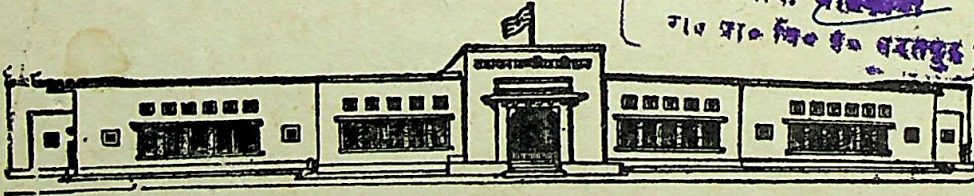
ग्रन्थाङ्क ३८

आचार्यचन्द्रगोमिप्रणीतं

चान्द्रव्याकरणम्

(शोधपूर्णभूमिकासहितम्)

50/2
विभा. १/२/४३
प्रभारी
रा. प्रा. वि. ३० वरतपुर



प्रकाशक

राजस्थान राज्य-संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR.

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक — फतहसिंह, एम. ए., डी. लिट्

निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

ग्रन्थाङ्क ३६

आचार्यचन्द्रगोमिप्रणीतं

चान्द्रव्याकरणम्

(शोधपूर्णभूमिकासहितम्)

प्रकाशक

राजस्थानराज्यसंस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR.

जोधपुर (राजस्थान)

१९६७ ई०

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थानराज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिलभारतीय तथा विशेषतः राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी आदि भाषानिबद्ध
विविधवाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट-ग्रन्थावली

प्रधान सम्पादक

फतहसिंह, एम. ए., डी. लिट्
निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

ग्रन्थाङ्क ३६

आचार्यचन्द्रगोमिप्रणीतं

चान्द्रव्याकरणम्

प्रकाशक

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

१९६७ ई०

आचार्यचन्द्रगोमिप्रणीतं
चान्द्रव्याकरणम्

सम्पादक
पं० श्रीबेचरदास जीवराज दोशी

प्रकाशनकर्त्ता
राजस्थानराज्यसंस्थापित
निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान
जोधपुर (राजस्थान)

विक्रमाब्द २०२४	}	भारतराष्ट्रियशकाब्द १८८६	}	ख्रिस्ताब्द १९६७
प्रथमावृत्ति ७५०				मूल्य ७.००

मुद्रक - नवजीवन कार्यालय, अहमदाबाद तथा साधना प्रेस, जोधपुर

विषयानुक्रमः

	पृष्ठ
१. सञ्चालकीय वक्तव्य	१-१६
२. प्रस्तावना	१-१५
३. प्रास्ताविक	१-६
४. मूलग्रन्थ	१-७५
५. गणसूत्रसूची	७६-८०
६. वर्णसूत्रम्	८१
७. उणादिप्रकरणम्	८२-१०४
८. धातुपाठः	१०५-१२६
९. चान्द्रसूत्राणामकारादिक्रमेण सङ्कलनम्	१२७-१८८
१०. उणादिसाधितशब्दानामकारादिक्रमेण सङ्कलनम्	१८९-२०५
११. चान्द्रव्याकरणस्थितधातुपाठागतधातूनामकारादिक्रमेण सङ्कलनम्	२०६-२२६
१२. शुद्धिसूची	२३०



संचालकीय वक्तव्य

प्रस्तुत चान्द्र-व्याकरण आचार्य चन्द्रगोमि की कृति माना जाता है । प्रो० क्षितीशचन्द्र चटर्जी के शब्दों में, चान्द्र-व्याकरण वस्तुतः पाणिनीय व्याकरण का ही एक संशोधित संस्करण है जिसमें कात्यायन और पतञ्जलि के समस्त सुभाषणों तथा सुधारों का समावेश किया गया है । यों तो इस व्याकरण का उल्लेख अनेक प्राचीन ग्रंथों में पाया जाता रहा है, परन्तु स्वयं यह ग्रंथ अप्राप्य ही था । तारानाथ से अवश्य इस ग्रंथ के तिब्बती संस्करण का पता चला था, परन्तु सर्वप्रथम इसको प्रकाशित करने का श्रेय प्रोफेसर लिविश को है जिन्होंने इसे रोमन-लिपि में मुद्रित करवा कर दो संस्करणों में निकाला था । ये दोनों संस्करण भी बहुत दिनों से अप्राप्य थे; इसीलिए इस प्रतिष्ठान के भूतपूर्व संचालक, आचार्य जिन-विजयजी ने, सुप्रसिद्ध विद्वान् पं० बेचरदासजी द्वारा संपादित करवा कर, इस ग्रंथ को देवनागरी-लिपि में पुनः प्रकाशित करने का संकल्प किया, और तदनुसार १९५२ ई० में यह कार्य प्रारम्भ भी कर दिया गया, परन्तु खेद है कि कुछ कारणों से इसका प्रकाशन पिछले पंद्रह वर्षों से अटका पड़ा हुआ है । अत्यधिक विलंब के लिए क्षमा चाहते हुये, अब यह पुस्तक विद्वानों की सेवा में प्रस्तुत की जा रही है ।

यद्यपि इस पुस्तक का मुद्रण-कार्य प्रारम्भ होने के पश्चात् डेकन कालेज, पूना से प्रोफेसर क्षितीशचन्द्र चटर्जी के संपादन में इस ग्रंथ का एक देवनागरी-संस्करण १९५३ ई० में प्रकाशित भी हो गया है, परन्तु फिर भी इस ग्रंथ की अपनी निजी विशेषता है । प्रस्तुत संस्करण अपनी लघुता में ही महत्ता छिपाये हुये है ; लगभग सवा सौ पृष्ठों में न केवल चान्द्र-व्याकरण के सभी सूत्र हैं, अपितु उनमें उणादि सूत्रों तथा धातुपाठ का भी समावेश कर दिया गया है और साथ में, तुलनात्मक अध्ययन की सुविधा के लिए, चान्द्रसूत्रों के साथ ही पाणिनि-सूत्रों का भी संदर्भ-निर्देश दे दिया है । परिशिष्ट में, अकारादिक्रम से सूत्रों, शब्दों और धातुओं की सूचियां देकर, ग्रंथ को शोधकर्त्ताओं के लिए और भी अधिक उपयोगी बनाया गया है । अन्त में उस विचार-सामग्री को भी इस संस्करण की ही विशेषता के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है जो सम्पादक तथा प्रधान सम्पादक की ओर से प्रस्तावना में उपस्थित की गई है ।

प्रस्तावना

चान्द्र-व्याकरण के प्रणेता चन्द्रगोमि ने अपने व्याकरण-सूत्रों पर स्वयं ही वृत्ति भी लिखी है जिसको लीबिश ने चान्द्र-व्याकरण के दूसरे संस्करण में सर्व-प्रथम मुद्रित कराया था। वृत्ति को 'नमो वागोश्वराय' के साथ प्रारम्भ करते हुये, लेखक ने अपने व्याकरण को 'शब्दलक्षण' की संज्ञा दी है और उसकी विशेषता तीन शब्दों में बतलाई है; ये शब्द हैं—लघु, विस्पष्ट तथा सम्पूर्ण^१। श्रीयुधिष्ठिर^२ मीमांसक ने इन तीनों विशेषणों पर विचार करते हुये लिखा है कि "कातन्त्र-व्याकरण लघु और विस्पष्ट है, परन्तु सम्पूर्ण नहीं है। इस के मूलग्रंथ में कृत्प्रकरण का समावेश नहीं है, अन्यत्र भी कई आवश्यक बातें छोड़ दी हैं। पाणिनीय व्याकरण सम्पूर्ण तो है, परन्तु महान् है, लघु नहीं।" अतः उनके अनुसार संभवतः इन्हीं दोनों प्रचलित व्याकरणों के गुणों को ग्रहण करके, यह व्याकरण रचा गया प्रतीत होता है। परन्तु आश्चर्य की बात यह है कि देश के जिस भाग (बंगाल) में चान्द्र-व्याकरण दो-तीन सौ वर्ष पहले तक लोकप्रिय^३ रहा, उसमें भी इसकी कोई हस्तलिखित प्रति न मिली, अपितु उसको नष्ट होने से बचाने का श्रेय तिब्बत^४ को प्राप्त हुआ। इस आश्चर्य की वृद्धि तब और भी हो जाती है, जब तिब्बत में कलापसूत्र, कलाप-सूत्रवृत्ति तथा कलापसूत्रलघुवृत्ति के तिब्बती अनुवादों के रूप में कातन्त्र-व्याकरण^५ का ही प्रचार अधिक हुआ बताया जाता^६ है।

उक्त दोनों व्याकरणों के तिब्बती सहास्तित्व में एक अन्य विस्मयकारी बात यह है कि चान्द्र-व्याकरण के सूत्र पाणिनि के सूत्रों से इतने अधिक मिलते हैं कि प्रथम को द्वितीय का ही संशोधित तथा वर्धित संस्करण^७ कहा जाता है, जब कि

१. सिद्धं प्रणम्य सर्वज्ञं सर्वीयं जगतो गुरुम् ।
लघुविस्पष्टसंपूर्णमुच्यते शब्दलक्षणम् ॥
२. संस्कृत-व्याकरणशास्त्र का इतिहास, पृ० ५०६ ।
३. प्रो० क्षि. चं. चटर्जी, चान्द्रव्याकरण भाव चन्द्रगोमिन की भूमिका ।
४. देखिये शीफनेर का लेख, बुलेटिन भाव हिस्टारिकल साइंसेज भाव द इंपीरियल अकेडमी भाव साइंसिज़ एट सेंट-पीटर्सबर्ग ४, २९४ संख्या २६०४ ।
५. देखिये युधिष्ठिर मीमांसक, सं० या० इति०, पृ० ५०२ ।
६. ए. सी. बर्नेल—दि ऐन्ड्रस्कूल भाव संस्कृत ग्रामर, पृ० ५९ ।
७. क्षि० चं० चटर्जी, भूमिका चान्द्र-व्याकरण भाव चन्द्रगोमिन ।

कातंत्र को ऐन्द्र-व्याकरण का ग्रंथ^१ कहा जाता है जिसको विनाश करने का भागी पाणिनि बताया जाता है। कथासरित्सागर^२ के अनुसार ऐन्द्र-व्याकरण कात्यायन का था और इसको नष्ट करने वाला पाणिनि था। कुछ हेर-फेर के साथ यही बात बृहत्कथामंजरी में भी मिलती है; कथा संक्षेप में यह है—आचार्य वर्ष के अनेक शिष्यों में दो शिष्य थे कात्यायन और पाणिनि। पाणिनि जडबुद्धि था और गुरुजनों की सेवा-शुश्रूषा में भी कमी करता था। गुरुपत्नी से निकाले जाने पर वह खिन्न होकर हिमालय चला गया जहाँ उसके घोर तप से प्रसन्न होकर शिव ने उसे 'नवव्याकरण' दिया जिसको प्राप्त करके उसने कात्यायन को शास्त्रार्थ के लिए ललकारा। जब कात्यायन ने पाणिनि को शास्त्रार्थ में परास्त कर दिया, तो नभ में स्थित शंभु ने घोर हुंकार किया जिसके फलस्वरूप कात्यायन का सारा ऐन्द्र-व्याकरण भूतल से नष्ट हो गया। लगभग इसी से मिलती-जुलती कथा हुयेन-सांग ने भी सातवीं शताब्दी में आकर भारतवर्ष में सुनी^३। कात्यायन-सूत्रम् अथवा पूर्वपाणिनीयम् नाम से एक २४ सूत्रों वाली पुस्तक बड़ीदा में पं० जीवाराम कालिदास के संपादन में प्रकाशित हुई; इसमें और कातंत्र में एक समानता यह है कि यह भी 'ओम् नमः सिद्धम्' से प्रारंभ होता है। परन्तु दोनों के आकार में आकाश-पाताल का अन्तर है। फिर भी 'ओम् नमः सिद्धम्' की समानता दोनों ग्रंथों की एक ही परंपरा सिद्ध करती है। क्या बर्नेल के अनुसार कातंत्र की भाँति इसे भी 'ऐन्द्र' परंपरा में माना जा

१. बर्नेल, दि ऐन्द्र स्कूल आव संस्कृत ग्रामर, पृ० ४५-५३।

२. अथ कालेन वर्षस्य शिष्यवर्गो महानभूत्।

तत्रैकः पाणिनिर्नामा जडबुद्धितरोऽभवत्॥

स शुश्रूषापरिविलब्धः प्रेषितो वर्षभार्ययोः।

अगच्छत् तपसे खिन्नो विद्याकामो हिमालयम्॥

तत्र तीव्रेण तपसा तोषितात् इन्दुशेखरात्।

सर्वविद्यामुखं तेन प्राप्तं व्याकरणं नवम्॥

ततश्चागत्य मामेव वादायाह्वयते स्म सः।

प्रवृत्तो चावयोर्वादि प्रयाताः सप्त वासराः॥

अष्टमेऽहनि मया तस्मिन् तत्समन्तरम्।

नभस्थेन महाघोरो हुंकारः शंभुना कृतः॥

तेन प्रनष्टमेन्द्रं तदस्मद्व्याकरणं भुवि।

जिताः पाणिनिना सर्वे मूर्खोभूता वयम् पुनः॥ (त० ४, २० - २५)

३. बर्नेल, पृ० ४.

सकता है ? इसके उत्तर के लिए उक्त २४ सूत्रों पर विचार करना आवश्यक है ।
पूर्वपाणिनोयम् या कात्यायनसूत्रम् के सूत्रों को इस प्रकार दिया गया है:—

ओम् नमः सिद्धम् ।

- | | |
|----------------------------|---------------------------|
| (१) अथ शब्दानुशासनम् । | (१३) सर्वः शब्दः । |
| (२) शब्दो धर्मः । | (१४) सर्वार्थः । |
| (३) धर्मादर्थकामापवर्गाः । | (१५) नित्यः । |
| (४) शब्दार्थयोः । | (१६) तंत्रः । |
| (५) सिद्धः । | (१७) भाषास्वेकादशी । |
| (६) सम्बन्धः । | (१८) अनित्यः । |
| (७) ज्ञानं छन्दसि । | (१९) लौकिकोऽत्र विशेषेण । |
| (८) ततो न्यत्र । | (२०) व्याकरणात् । |
| (९) सर्वमार्थम् । | (२१) तज्ज्ञाने धर्मः । |
| (१०) छन्दोविरुद्धमन्यत् । | (२२) अक्षराणि वर्णाः । |
| (११) अदृष्टं वा । | (२३) पदानि वर्णभ्यः । |
| (१२) ज्ञानाधारः । | (२४) ते प्राक् । |

उक्त २४ सूत्रों का विषय निस्संदेह 'शब्दानुशासन' है और इस प्रसंग में शब्द से अभिप्राय पद से नहीं धर्म^१ से है । धर्म को अर्थ, काम एवं अपवर्ग का स्रोत^२ बताया गया है; इनमें से अर्थ क्रियाशक्तिमूलक, काम इच्छाशक्तिमूलक, तथा अपवर्ग ज्ञानशक्तिमूलक माना जा सकता है । आगमों में क्रिया, इच्छा तथा ज्ञान-शक्तियों को पराशक्ति द्वारा 'मयूराण्डरसवत्' बीजरूप में धारण किया जाना माना जाता है; अतः इसी पराशक्ति को धर्म की संज्ञा दी जा सकती है और फलतः इसी धर्म से उत्पन्न होने के कारण क्रिया, ज्ञान तथा इच्छा-शक्तियों के पूर्वरूप को पुरुषसूक्त^३ में 'तानि धर्माणि प्रथमानि' कहा गया है । पराशक्तिरूप धर्म का धर्मी आत्मा या पुरुष है जिसे कई बार इन्द्र की भी संज्ञा^४ दी जाती है । यह इन्द्र या पुरुषरूप धर्मी अपने धर्म द्वारा ही अपने को व्यक्त करता है; इसीलिए इस धर्म को ऊपर 'शब्द' कहा गया है और अन्यत्र इसे वाक्-नाम भी दिया जाता है, क्योंकि शब्द या वाक् द्वारा ही मनुष्य अपने को व्यक्त करता

१. शब्दो धर्मः ।

२. धर्मात् अर्थकामापवर्गाः ।

३. भारतीय सौन्दर्यशास्त्र की भूमिका, पृ. ५६-६५ ।

४. देखिये—वैदिकदर्शन, पृ. १४-१५ ।

है। यह वाक् उक्त 'परा'¹ रूप में अव्यक्ता है और पराची भी कहलाती है; यही उक्त अद्वैतधर्मस्वरूप शब्द है जो व्याकृत होकर क्रमशः अर्थमूलक क्रिया, काममूलक इच्छा तथा अपवर्गमूलक ज्ञान-शक्ति के रूप में एक से अनेक होता है; यही अव्याकृता पराची वाक् का इन्द्र² के द्वारा व्याकृता किया जाना कहलाता है। इन्द्र की यह व्याकृता वाक् केवल उक्त तीन रूपों में ही नहीं, अपितु अनेक रूपों में व्याकृत होकर विविध इंद्रिय-शक्तियों के रूप में प्रकट होती है।

अव्याकृता पराची वाक् (शब्द) जब व्याकृता-रूप ग्रहण करना प्रारम्भ करती है तब अर्थबीजा क्रिया (विविधीकरण को क्रिया) चल पड़ती है; अतः इसके प्रथम रूप में शब्द (परा) और अर्थ (क्रिया) का सम्बन्ध 'सिद्ध'³ होता है, परन्तु दूसरे रूप में अर्थ (क्रिया) के साथ काम (इच्छाशक्ति) का संयोग विशेष होने से दोनों का सम्बन्ध 'साध्य' हो जाता है। शब्दार्थ के सिद्ध सम्बन्ध का ज्ञान हमें बाह्यतः प्रकट नहीं, अपितु आभ्यन्तरिक छादन में अप्रकट रूप से होता है; 'ज्ञानं छन्दसि' कहने का यही अभिप्राय है और 'छन्द' शब्द की विचित्र व्युत्पत्ति⁴ इसी तथ्य का समर्थन करने के लिए बनी है। शब्दार्थ के साध्य सम्बन्ध का ज्ञान हमें बाह्यतः प्रकट रूप में होता है और इस ज्ञान का आधार सारी बाह्य शब्द-समष्टि (सर्वः शब्दः) तथा उसकी सारी अर्थ-समष्टि (सर्वः शब्दार्थः) है। शब्दार्थ का सिद्ध संबन्ध 'नित्य' है और 'तंत्र' रूप है, परन्तु साध्य सम्बन्ध मनसहित दशेन्द्रियों की भाषाओं में 'एकादशी अनित्य' बन कर नानारूप में प्रकट होता है। प्रथम अवस्था में 'छान्दस' सम्बन्ध है, दूसरी में 'लौकिक' जिसमें⁵ विविधीकरण विशेष रूप से होता है। छान्दस सम्बन्ध का ज्ञान 'आर्षं' (सर्व-मार्षम्) साक्षात् दर्शन से प्राप्त होता⁶ है, और इस अवस्था में आत्मा को 'पश्य' तथा उसकी वाक् को 'पश्यन्तो' कहा⁷ जाता है। छान्दस के विपरीत एक ओर तो 'लौकिक' शब्दार्थ-सम्बन्ध है जो अनेक वर्णों तथा उनसे विरचित अनेक पदों

१. वैदिकदर्शन पृ० २२-३०।

२. वाग्वै पराची अव्याकृतावदत् । ते देवा इन्द्रमब्रुवन्, इमां नो वाचं व्याकुर्विति..... तमिन्द्रो मध्यतोऽवक्रम्य व्याकरोत् ।

(तै० सं० ६, ४, ७; मै० सं० ४, ५८; का० सं० २७, ३; कपि० सं० ४२, ३)

३. सू० ५-६।

४. देखिये—'वैदिक एटिमॉलॉजी' में 'छन्दस्'।

५. लौकिकोऽत्र विशेषेण व्याकरणात्, १६-२०।

६. साक्षात्कृतधर्माणः ऋषयो बभूवुः, या० नि० १. १।

७. वै० द० (२००६ वि०) पृ० ३७।

के संबंधों में 'वैखरी' वाक् बन कर प्रकट होता है और दूसरी ओर वह अदृष्ट ज्ञान (अदृष्ट वा) वाला शब्दार्थ है जिसे ऊपर पराची या परा अव्याकृता वाक् कहा गया है। एक में स्वयं शब्द ही धर्मस्वरूप (शब्दो धर्मः) है जब कि दूसरे (लौकिक) के ज्ञान में धर्म (तज्ज्ञाने धर्मः) रहता है, क्योंकि पहले में शब्द नित्य तथा सूक्ष्म होने से वह शक्तिमान् आत्मा का 'धर्म' हो सकता है, परन्तु दूसरे में शब्द अनित्य एवं स्थूल (भाषण-ध्वनियों के रूप में) होने से वह स्वयं 'धर्म' नहीं हो सकता ; अतः वहाँ उसके ज्ञान में वह सूक्ष्मरूपेण निहित माना जा सकता है।

ऐन्द्र-व्याकरण का पूर्वपाणिनीयत्व

उपर्युक्त विवेचन से प्रतीत होता है कि पूर्वपाणिनीयम् में जिस व्याकरण का उल्लेख है वह इंद्र द्वारा अव्याकृता पराची वाक् को व्याकृता किए जाने की आध्यात्मिक कथा है; यह शब्दानुशासन उस शब्द की दार्शनिक व्याख्या प्रस्तुत करता है जो वाक्यपदीय^१ के अनुसार 'अनादिनिधनं ब्रह्म' के रूप में नित्य होकर भी अनेक अनित्य वर्ण-ध्वनियों में व्यक्त होता है और जिसे अन्यत्र^२ 'वाक् ब्रह्म' भी कहा जाता है। इसी शब्द या वाक्^३ के कभी कभी सुब्रह्म और ब्रह्म दो रूप स्मृत किये जाते हैं ; इनमें से पहला आत्मा है तथा दूसरा उसकी वह शक्ति जिसके द्वारा वह स्वयं अवर्ण होता हुआ भी अनेक वर्णों के रूप में अभिव्यक्त होता^४ है। पहला धर्मी है, दूसरा^५ उसका धर्म; पहला शक्तिमान् है, दूसरा शक्तिरूप। विष्णुसंहिता के शब्दों में ये दोनों ही पुरुष (आत्मा) ज्योति के दो रूप हैं, एक परदेवता और दूसरा अपरदेवता। एक मायी और दूसरी माया, और पहला दूसरे के सहारे ही लोक में 'बहुधा' भिन्न^६ होता है। अहिर्बुध्न्य-संहिता^७ में यही माया पारमात्मिका अहंता तद्धर्म-

१. १, १।

२. गो० ब्रा० १, २, १०; वाग्वि ब्रह्म, ऐ० ब्रा० २, १५; ४, २१, वाग्वै ब्रह्म ऐ० ब्रा०-६, ३; श० ब्रा० २, १, ४, १०; १४, ४, १, २३; १४, ६, १०, ५; वागिति तद् ब्रह्म-जे० ३०, २, ६, ६; २, १३, २, तै० ब्रा० ३, ६, ५, ५; ऐ० ब्रा०-६, ३ इत्यादि।

३. वाग्वै ब्रह्म च सुब्रह्म चेति ऐ० ब्रा० ६, ३।

४. एकोऽवर्णः बहुधा शक्तियोगात्, श्वे० उ०, ३०।

५. शब्दो धर्मः, पू० पा० १।

६. देवतेऽपरं ज्योतिरेक एव परः पुमान्।
स एव बहुधा लोके मायया भिद्यते स्वया ॥

७. सर्वभावात्मिका लक्ष्मीरहंता पारमात्मिका।
तद्धर्ममभिणी देवी भूत्वा सर्वमिदं जगत् ॥

धर्मिणी देवी होकर 'सर्वजगत्' के नानात्व में प्रकट होती हुई बतलाई गई है । यही वह पराशक्ति है जो इच्छा, ज्ञान, क्रिया-शक्तियों के रूप में प्रकट होती है और इसी को महार्थमञ्जरीकार ने 'सूक्ष्मा' तथा इसके भेदों को पश्यन्ती, मध्यमा तथा वैखरी कहा है ।

स्फोटवाद^२ के अनुसार प्रणव या शब्दब्रह्म के दो रूप हैं, एक पर और दूसरा अपर । स्फोट या आत्मारूप में यह परब्रह्मशब्द 'वाच्य' है और उसकी 'वाचक' शक्ति को नाद या प्राकृता^३ ध्वनि कहते हैं जो अनेक 'वैकृत' ध्वनियों में व्यक्त होकर व्याकृता बनती है, परन्तु यह केवल 'वृत्तिभेद' है, स्फोटात्मा स्वयं फिर भी 'अभिन्न'^४ रहता है । आत्मा पहले नाद या प्राकृता ध्वनि के रूप में व्यक्त होता है (वा० प० १, २, ३०-३१; १, ७६), फिर वही शक्ति बुद्धि तथा प्राण आदि के सहारे नानारूप धारण कर लेती है (वा० प० १, ७७) ये । विकार वस्तुतः नाद या ध्वनि में ही होते हैं, जो 'वाच्य' रूप आत्मा का 'वाचक' है, परन्तु फिर भी 'वाच्य' ओंकार या आत्मा (पर शब्द ब्रह्म प्रणव) में इनकी प्रतीति समझी (वा० प० १, ४८-४९) जाती है । कोई कोई आगमग्रंथ सच्चिदानन्द निर्विकार ओंकार से शक्ति, शक्ति से नाद और नाद से बिन्दु की उत्पत्ति बतलाते हैं (आसीच्छक्तिस्ततो नादो नादाद्विन्दुसमुद्भवः); शक्ति से सर्वप्रथम उत्पन्न होने वाला यह नाद महानाद कहलाता है । अष्टप्रकरणकार के अनुसार उक्त बिन्दु का नाम अनाहत नाद भी है (बिन्दुरेव समाख्यातो व्योमानाहतमित्यपि); इसी अनाहत नाद या परबिन्दु से नाद उत्पन्न होता है (भिद्यमानात् परात् बिन्दोर्व्यक्तात्मा रवोऽभवत्); यह अव्याकृत नाद व्याकृत

१. वा० प०, ७१-७३ ।

२. परः परतरं ब्रह्म ज्ञानानन्दादिलक्षणम् ।

प्रकर्षेण प्रणवः यस्मात् परं ब्रह्म स्वभावतः ॥

अपरः प्रणवः साक्षाच्छब्दस्य सुनिर्मलः ।

प्रकर्षेण नवत्वस्य हेतुत्वात् प्रणवः स्मृतः ॥ (सूतसंहिता-१, २)

३. स्फोटस्याभिन्नकालस्य ध्वनिकालानुपातिनः

ग्रहणोपाधिभेदेन वृत्तिभेदं प्रकाशते ।

स्वभावभेदो नित्यत्वे ह्रस्वदीर्घप्लुतादिषु

प्राकृतस्य ध्वनेः कालः शब्दस्येत्युपचर्यतः (वा० प०, १, ३०-३१)

४. शब्दस्योर्ध्वमभिव्यक्तं वृत्तिभेदे तु वैकृताः ।

ध्वनयः सप्रपोहन्ते स्फोटात्मा तैर्न भिद्यते । (व० प०, १, ७७)

होकर नानावर्णों को जन्म देता है जो 'कार्य-नाद' कहलाते हैं (वर्णात्मना-विर्भवति गद्यपद्यादिभेदशः)।

कुछ शैवागमों में आत्मा से उत्पन्न होने वाली वर्णादि की इस बहुमुखी सृष्टि को एक दूसरे ढंग से भी बतलाया गया है। आत्मा शिव है, उसकी शक्ति का नाम ज्ञान-शक्ति है जो सारी सृष्टि का निमित्त कारण है। शिव और शक्ति मिलकर एक संयुक्त शिव-शक्ति-तत्त्व बनता है जिससे परमेश्वर की परिग्रह-शक्ति या क्रिया-शक्ति का जन्म होता है। परिग्रह-शक्ति बिन्दु कहलाती है और सृष्टि का उपादान कारण है। यह बिन्दु शुद्ध तथा अशुद्ध दो प्रकार का है। शुद्ध बिन्दु के अपर नाम महाबिन्दु तथा महामाया और अशुद्धबिन्दु के बिन्दु एवं माया भी हैं। शक्ति तथा बिन्दु के सम्बन्ध को 'भेदज्ञान' या विकल्प कहते हैं। इसी विकल्प का आश्रय लेकर शिव (आत्मा) शुद्धबिन्दु में क्षोभ उत्पन्न करता है जिसके फलस्वरूप उससे शब्द और अर्थ की दो धारायें चलती हैं। इन दोनों की पृथक्-पृथक् चार अवस्थायें परा, पश्यन्ती, मध्यमा तथा वैखरी होती हैं। शुद्ध-बिन्दु से होने वाली यह सृष्टि 'शुद्ध सृष्टि' कहलाती है। अशुद्ध बिन्दु भी, इसी प्रकार शिव (आत्मा) द्वारा क्षुब्ध किये जाने पर, अशुद्ध सृष्टि को जन्म देता है और उससे उद्भूत शब्द एवं अर्थ की धारायें भी परा, पश्यन्ती, मध्यमा तथा वैखरी, इन चार अवस्थाओं में व्यक्त होती हैं। ये दोनों प्रकार की सृष्टियाँ जिसे बिन्दु से उत्पन्न हुई वह 'अचित्' है। अतः इन दोनों को पार करके ही 'चित्' स्वरूप शिव (आत्मा) का साक्षात्कार होता है; ओंकार प्रत्यक्ष हो जाता है।

वेद का व्याकरण

यह आत्मा अथवा प्रणव (ओंकार) की शक्ति वाक् के अव्याकृता से व्याकृता होने की कथा कही गई है। इसी को एक दूसरे रूप में भी कहा जाता है। आत्मा या ओंकार देव है जो अपने को वेद द्वारा व्यक्त करता है; इसीलिए 'वेदेन देवोऽसि' का मंत्र प्रचलित हुआ। अतः वेद भी वाक् का पर्यायवाची हुआ और जिस प्रकार वाक् के नानारूप ओंकार (अपरप्रणव) से प्रसूत होते हैं (ओंकार एव सर्वा वाक्.....सैषा पूज्यमाना बह्वी भवति), उसी प्रकार 'सभी वाक्' वेद में अनुप्रविष्ट बताई जाती है (सर्वाः वाचः वेदमनुप्रविष्टाः) वेद के द्वारा जब आत्मा (पुरुष) व्यक्त होता है, तो सबसे पहले वह 'छन्दस्य' पुरुष होता है; फिर ऋङ्मय, यजुर्मय तथा साममय-नाम से 'त्रिवृत' होता (एष वै छन्दस्यः प्रथमो पुरुषः.....स उ एव एष ऋङ्मयः यजुर्मयः साममयः

वैराजः पुरुषः) जब प्रसिद्ध पुरुषसूक्त^१ में पुरुष से छन्दस, ऋक्, यजु और साम की सृष्टि हुई बताई जाती है अथवा जब बृहदारण्यक^२ उपनिषद् में आत्मा को 'वाक्' द्वारा छन्द, ऋक्, यजु और साम की सृष्टि (स तथा वाचा तेनात्मनेदं सर्वमसृजत् यदिदं किं चर्चो यजूषि सामानि छन्दांसि) हुई कही जाती है, तो यही बात अभिप्रेत समझी जानी चाहिए। यहां यह कहने की आवश्यकता नहीं कि उक्त उद्धरणों में 'छन्द' शब्द 'अथर्ववेद' के लिए ही प्रयुक्त हुआ है, क्योंकि सृष्टि-प्रसंग^३ में ऋक् आदि के साथ अथर्ववेद का ही प्रयोग मिलता है, और इसीलिए हरिवंशपुराण में अथर्ववेद को निश्चित रूप से छन्द कहा गया है:—

ऋचो यजूषि सामानि छन्दस्याथर्वणानि च ।

चत्वारस्त्वखिला वेदाः सरहस्यास्तविस्तराः ॥

इस प्रकार वेद की यह चतुर्धा व्याकृति होती है। स्फोटवाद की एक दृष्टि से स्फोटात्मा (पर शब्दब्रह्म) अपनी वाक् (शक्ति) का स्फुरण करके अपर शब्दब्रह्म अथवा 'वेदबीज, ओंकार को ब्रह्म परमात्मन् के साक्षात् वाचक के रूप में प्रकट करता है जिसके अ, उ, म् तीन वर्ण (जो क्रमशः ऋक्, यजु, साम के प्रतीक हैं) सत्व, रजस्, तमस् नामक गुणों की अर्थवृत्तियों (ज्ञान, क्रिया, इच्छा) तथा अन्तस्थ, ऊष्म, स्वर, स्पर्श, दीर्घ, ह्रस्व आदि लक्षण से युक्त समस्त वर्ण-समूह में परिणत हो जाते हैं:—

शृणोति य इमं स्फोटं सुप्ते श्रोत्रे च शून्यवृक् ।

येन वाग् व्यज्यते यस्य व्यतिराकाश आत्मनः ॥

स्वधाम्ना ब्रह्मणः साक्षाद्वाचकः परमात्मनः ।

स सर्वमन्त्रोपनिषद्देवबीजं सनातनम् ॥

तस्य ह्यासन् त्रयो वर्णा अकाराद्या भूगूढहाः ।

धार्यन्ते यैस्त्रयो गुणानामर्थवृत्तयः ॥

ततोऽक्षरसमाम्नायमसृजद् भगवान् स्वयम् ।

अन्तस्थोऽमस्वरस्पर्शदीर्घह्रस्वादिलक्षणम् ॥

वेद की इस व्याकृति की तुलना ऊपर उल्लिखित पूर्वपाणिनीयम् के शब्दार्थसम्बन्ध से वर्ण-पदादिरूप में होने वाले नानारूपात्मक व्याकरण से भली-भाँति की जा सकती है। सनत्सृजातीय में 'यज्ञसंतति' के लिये एक वेद की

१. ऋ० १०, ६०, ६

२. १, २, २

३. तु० क०

यस्मादृचो अपातक्षन् यजुर्यस्मादपाकषन् ।

सामानि यस्य लोमानि अथर्वार्ज्जरसो मुखम् ॥ (अ० वे० १०, ७, २०)

चतुर्विध व्याकृति (व्यदधात् यज्ञसंतत्यै वेदमेकं चतुर्विधम्) तथा वायुपुराण में एक वेद का चतुर्धा विभाजन (वेदमेकं चतुष्पादं चतुर्धा व्यभजत् प्रभुः) इसी वेद-व्याकरण के अन्य संस्करण हैं जिसका रूपांतर वाक् के चतुर्धा व्याकृत होकर परा, पश्यन्ती, मध्यमा और वैखरी अथवा पराशक्ति, त्रियाशक्ति, ज्ञानशक्ति और इच्छाशक्ति के रूप में ऊपर प्रस्तुत किया जा चुका है। जिस प्रकार त्रिया, ज्ञान और इच्छा का संयुक्तसूक्ष्मत्रयी रूप परा में है उसी प्रकार ऋक्, यजु और साम की त्रयी का संयुक्त रूप अथर्ववेद में माना जा सकता है; संभवतः इसीलिए अथर्ववेद का प्रतिनिधि ब्रह्मा अन्य तीनों वेदों के ऋत्विजों की अपेक्षा यज्ञ में अधिक गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त करता है। उक्त त्रयी के संयुक्त सूक्ष्म-रूप का प्रतीक होने से, उसमें त्रिया (ऋक्) यजु (ज्ञान) तथा साम (इच्छा)-रूप से हमारे अंगों की सारी सारभूत शक्तियाँ आ जाती हैं; इसीलिये उसे 'आंगिरस' अर्थात् 'अंगों का रस' कहा जाता है और उसी संयुक्त सूक्ष्मरूप से समस्त निम्नगामिनी (अर्वाक्) नानात्वमयी सृष्टि का प्रारंभ (अथ) होता है, इसलिए उसे 'अथर्वा' (अथ+अर्वाक्) की संज्ञा भी दी जा सकती है। अतः त्रयी के संयुक्त रूप को अथर्वागिरस^१ भी कहा जाता है और चारों वेदों में त्रयी की ही स्थिति स्वीकार की जाती^२ है, परन्तु यह स्थूलत्रयी तो 'अपरा विद्या' है जो ब्रह्म की प्राप्ति कराने वाली सूक्ष्म 'परा विद्या' से निष्कृष्ट मानी^३ गई है। प्रश्नोपनिषद्^४ का कथन है कि 'शांत, अजर, अमृत, अभय, पर' लोक की प्राप्ति तो ओंकार से होती है, ऋक्, यजु, तथा साम से नहीं। छान्दोग्य^५ उपनिषद् में कहा गया है कि जैसे कोई जल में देख ले, वैसे ही मृत्यु ने देवताओं को ऋक्, यजु तथा साम में देख लिया; देवतालोक यह जानकर ऋक्, यजु तथा साम से ऊपर उठकर 'स्वर' (ओंकार) में चले गये, तो वे मृत्यु की पहुँच के परे पहुँच गये। जो ऋक्, यजु साम अथवा क्रिया, ज्ञान, इच्छा को ही साध्य मान लेता है वह केवल क्षणिक सुख का ही भागी होता है; अतः श्रीमद्भगवद्-

१. देखिये—वैदिक एटिमॉलॉजी में 'अथर्वा'

२. तु० क० यस्माद्ब्रह्म अपातक्षन् यजुर्यस्मादपाकषन्,
सामानि यस्य लोमानि अथर्वागिरसो मुखम् ॥ १०, ७, २० ॥

३. मु० उ० १, १, ४।

४. त्रयीं विद्यामवेक्षेत वेदे सूक्तमथाङ्गतः।
ऋक्सामवर्णाक्षरता यजुषोऽथर्वणस्तथा। (म० भा० शा० प० २३५)

५. प्र० उ० ५, ५।

६. छां० उ० १, ४, २।

गीता में केवल इन्हीं को सर्वसाध्य समझनेवाले 'वेदवादरत' लोगों की कड़े शब्दों में आलोचना की गई है और ब्रह्म-ज्ञानी के लिए इन वेदों (क्रिया आदि के प्रतीक ऋक् आदि) को निरर्थक कहा गया है:—

यावानथं उवपाने सवन्तः संप्लुतोवके ।
तावान्सर्वेषु वेदेषु ब्राह्मणस्य विजानतः ॥

पूर्वपाणिनीयम् का रहस्य

अतः स्पष्ट है कि जिस शब्दानुशासन को पूर्वपाणिनीयम् की संज्ञा दी गई है उसी का रूपांतर इन्द्र द्वारा वाक् की व्याकृति किये जाने की कथा में है और उसी को वेद-विभाजन अथवा व्याकरण भी कहा जा सकता है। इसका सारांश है—अव्यक्त आत्मा की प्राकृता वाक् का व्याकृता होना, नित्य और एक शब्द का अनित्य वर्णों और पदों की एकादशी-अनेकता में विभक्त होना। ऐतरेय उपनिषद्^१ में इसी बात को प्रकारान्तर से इस प्रकार व्यक्त किया गया है:—

कोऽयमात्मेति वयमुपास्महे, कतरः स आत्मा ? येन वा पश्यति, येन वा शृणोति, येन वा गंधानाजिघ्रति, येन वा वाच्यं व्याकरोति, येन वा स्वादु चाऽस्वादु च विजानाति, यदेतद् हृदयं मनश्चैतत् संज्ञानम्, आज्ञानं, विज्ञानं, प्रज्ञानं, मेधा, दृष्टिः, धृतिः, मतिः, मनीषा, जूतिः, स्मृतिः, संकल्पः, ऋतुः, असुः, कामः, वशः इति सर्वाणि एतानि प्रज्ञानस्य नामधेयानि भवन्ति ।

एष ब्रह्म एष इन्द्र एष प्रजापतिः

इस उद्धरण से स्पष्ट है कि प्रज्ञानस्वरूप आत्मा ही पांचों ज्ञानेन्द्रियों, हृदय, मन तथा वाक् द्वारा अपने 'वाच्य' को 'व्याकृत' करने वाला ब्रह्म, इन्द्र अथवा प्रजापति कहलाता है और संभवतः ऋक्तंत्रोक्त^२ ब्राह्म, ऐन्द्र तथा प्राजापत्य व्याकरण इसी वाक् या प्रज्ञान व्याकृति की ओर संकेत करते हैं। ब्राह्मणों और उपनिषदों में बृहस्पति^३ की व्युत्पत्ति करते हुये भी उसे वाक् का पति तथा

१. ऐ० उ० २, २ ।

२. ब्राह्मशानमैन्द्रं च प्राजापत्यं बृहस्पतिम् ।
त्वाष्ट्रमापिशलं चेति पाणिनीयमथाष्टमम् ॥

३. वाग्वै त्वष्टा वाग्धीदं सर्वं त्वाष्टीव (ऐ० ब्रा० २, ४); त० क० इन्द्रो वै त्वष्टा (ऐ० ब्रा० ६, १०,; ऋ. १, १२, ६)

ब्रह्म^१ बताया जाता है और त्वष्टा^२ को तो स्वयं वाक् या इंद्र ही कहा जाता है; ऐसी स्थिति में ऋक्तंत्रोक्त आठ व्याकरणों में से बार्हस्पत्य एवं त्वाष्ट्र व्याकरण का तात्पर्य भी उक्त 'वाक्-व्याकृति' ही प्रतीत होता है। जैसा कि उक्त उद्धरण से प्रकट है, यह सारी वाक्-व्याकृति अक्षरों या वर्णों की उत्पत्ति से आगे नहीं बढ़ती, क्योंकि यही 'प्रज्ञान' की अभिव्यक्ति है; इसके आगे वर्णों से पदों (पदानि वर्णभ्यः) की सृष्टि हो जाती है, जो प्रज्ञान की परिधि से बाहर स्थूल ध्वनि के क्षेत्र की घटना है। अपिशलि का 'अक्षरतंत्र' और ईशान या महेश्वर के प्रसिद्ध माहेश्वरसूत्र भी अक्षरों या वर्णों की व्याकृति की ओर ही संकेत करते प्रतीत होते हैं; अतः ऋक्तन्त्र के अपिशलि एवं ऐशान व्याकरण भी उक्त उसी प्रज्ञान अथवा वाक् की व्याकृति के क्षेत्र में आते हैं, जिसका संबन्ध ब्रह्म, इन्द्र, बृहस्पति तथा प्रजापति से बतलाया गया है; इस प्रकार ऋक्तंत्रोक्त आठ व्याकरणों में से सात केवल उक्त उसी वाक्-व्याकृति के आध्यात्मिक तथ्यों को सूचित करते हैं, जिसे 'पूर्वपाणिनीयम्' में शब्दानुशासन कहा गया है। अब केवल आठवाँ व्याकरण जिसे ऋक्तंत्र में 'पाणिनीय' कहा गया अवशिष्ट रहता है:—

ब्राह्मं शानमेन्द्रं च प्राजापत्यं बृहस्पतिम् ।

त्वाष्ट्रमापिशलिं चेति पाणिनीयमथाष्टमम् ॥

पाणिनीयम् का पाणिनीयत्व

इस अष्टम व्याकरण को पूर्वपाणिनीयम् से बाहर मानने का कारण संभवतः यह है कि पूर्वपाणिनीयम् के अन्तर्गत केवल वर्ण-पर्यन्त वाक्-व्याकृति मानी जाती थी और वर्णों से उद्भूत पदों और वाक्यों की मीमांसा को पाणिनीय व्याकरण माना जाता था। इसका संकेत पूर्वपाणिनीयम् के अन्तिम दो सूत्रों में स्पष्ट है, जब कि 'पदानि^३ वर्णभ्यः' कहते ही तुरंत 'ते प्राक्^४' कह कर वर्णों को पूर्वपाणिनीय नित्यक्षेत्र का स्वीकार कर 'पदानि' को उस क्षेत्र से बाहर

१. वाग्वै बृहती बृहत्यै पतिस्तस्माद् बृहस्पतिः (श० ब्रा० १४, ४, १, २३, जं० उ०-२, २।

२. ब्रह्म वै बृहस्पतिः ऐ० ब्रा० १, १३, १, १६; २, ३८; ४, ११; की० ब्रा० ७, १०; १२, ८; १८, २; श० ब्रा० ३, १, ४, १५; ३, ६, १, ११ इत्यादि।

३. पू० पा० २३।

४. वही २४।

अनित्य^१ एवं लौकिक^२ 'व्याकरण'^३ का विषय माना गया है ।

यहाँ पाणिनि-शब्द की व्युत्पत्ति की ओर एक स्वाभाविक संकेत दिखाई पड़ता है । श्रीयुधिष्ठिर^४ मीमांसक ने पाणिनि-शब्द पर विचार करते हुये, पाणिनीय-शिक्षा के याजुषं पाठ में उपलब्ध 'पाणिनेय' नाम का उल्लेख किया है । पूर्वपाणिनीयम् के क्षेत्र की उपर्युक्त आभ्यन्तरिकता के विपरीत, पदादि की मीमांसा में स्वतः प्राप्त बाह्यता को देखते हुये पाणिनेय शब्द सार्थक प्रतीत होता है । संस्कृत में पाणि का अर्थ प्रायः हाथ होता है, और दूसरा अर्थ (जो प्रयोग में प्रायः नहीं मिलता) 'बाज़ार' है । जो हाथ से किया जाता है वह मनुष्यकृत है, कृत्त्रिम है; अतः पदों आदि की मीमांसा मनुष्यकृत या कृत्त्रिम होने से पाणिनेय (हस्तकार्य) कहला ही सकती है, जबकि परा, पश्यन्ती तथा मध्यमा के रूप में व्याकृत होती हुई प्राण से संयुक्त होकर स्थानप्रयत्न के संयोग से वर्णोत्पत्ति तक की व्याकृति को स्वभाव-नेय कहा जा सकता है । यदि पाणि को बाज़ार के अर्थ में ग्रहण करें, तो पाणि को एक 'व्यवहारभूमि' मानना पड़ेगा जहाँ विविध लोगों के बीच सम्पर्क होने से भाषा के व्याकरण की आवश्यकता पड़ती है ; अतः व्याकरण को पाणि (बाज़ार) द्वारा जन्य माना जा सकता है । पाणिनेय (पाणिनीय) व्याकरण वह व्याकरण है जो स्वभावजन्य के विपरीत मनुष्यजन्य अथवा जन-सम्पर्कजन्य है । इसका अभिप्राय यह नहीं कि पाणिनि नाम का कोई वैयाकरण नहीं, परन्तु यह सम्भव है कि उसका अपना नाम कुछ और ही हो, परन्तु 'पाणिनेय' व्याकरण का सफल आचार्य होने के कारण उसको 'पाणिनेय' उपाधि मिली हो, जो कालान्तर में पाणिनि-रूप में बदल गई हो ।

पूर्वपाणिनीयता

अस्तु, इसमें कोई संदेह नहीं कि पाणिनीय-व्याकरण के आठ अध्यायों में सुबन्त और तिङन्त पदों की जो विस्तृत रचनाविधि दी गई है वह मनुष्य के कृतित्व का महान् चमत्कार है, लेकिन वर्ण-ध्वनियों द्वारा पदों के अस्तित्व में आने से पूर्व मन, प्राण तथा उच्चारण के स्थान और प्रयत्न के माध्यम से आत्मा की शक्ति (वाक्^५), जिन वर्णों के रूप में व्याकृत होती है, वह मनुष्य के आभ्यं-

१. पू०पा०—१७-१८ ।

२. वही १६ ।

३. वही २० ।

४. संस्कृत व्याकरणशास्त्र का इतिहास, पृ० १७५-१७६ ।

५. जिसे पूर्व-पाणिनीयम् में 'शब्दो धर्मः' कहा है (पू० पा० २) ।

तरिक व्यक्तित्व का महत्तर चमत्कार है। इस आभ्यन्तरिक वाक्-व्याकृति से बाह्य व्याकृति तक की मीमांसा हमें सर्वप्रथम ऋग्वेद में प्राप्त होती है, जहाँ व्याकृति विविध अवस्थाओं की दृष्टि से वाक् को कद्रीची, पराची, सध्रीची एवं विषूची संज्ञा दी गई है और एक सुन्दर रूप द्वारा उसे एकपदी से नवपदी तथा एकाक्षरा से सहस्राक्षरा-रूप में व्याकृत होता हुआ दिखाया गया है। उपनिषदों और ब्राह्मणों में इसी के संयोग से अवर्ण आत्मा बहुवर्ण^३ अथवा 'सर्व' रूप में वाङ्मय^४ होने वाला है।

सर्व और सर्वज्ञ

आत्मा का उक्त बहुवर्ण अथवा सर्वरूप वाङ्मय और व्याकृत होते हुए भी 'अनिरुक्त'^५ और अक्षय्य^६ होता है। इस वाङ्मय-रूप का वाचक 'सर्वम्' नपुंसकलिङ्गी है, जबकि इसमें व्याप्त आत्मा का अवाङ्मय-रूप 'सर्वः'^७ पुलिङ्गी है और सर्वज्योति^८ परमयज्ञ^९ कहलाता है। इसी सर्वः सर्वज्योति को अन्यत्र सर्वजित^{१०} की संज्ञा दी गई है और इसी को संभवतः चन्द्रगोमि ने सर्वज्ञ सिद्ध तथा उक्त सर्व को सर्वीयं गुरुं कह कर नमस्कार किया है—

सिद्धं प्रणम्य सर्वज्ञं सर्वीयं जगतो गुरुम्।

इस प्रसंग में यह भी उल्लेखनीय है कि पूर्वोक्त पूर्वपाणिनीयम् में भी 'सिद्ध'^{११} और 'सर्व'^{१२} नाम से शब्द को पृथक्-पृथक् दो रूपों में देखा है। जब चन्द्रगोमि ने

१. ऋ० वे० १, १६४, १७ इत्यादि तु० क० वं० द०, पृष्ठ ५१-६८।

२. ऋ० वे० १, १६४, ३६-४१।

३. एकोऽवर्णः बहुधा शक्तियोगात् (स्वे० उ० ४, १)।

४. तत्सर्वं आत्मा वाचमप्येति वाङ्मयो भवति की० ब्रा० २, ७ तु० क० श० ब्रा० ८, ७, २, ११।

५. सर्वं वा अनिरुक्तम् (श० ब्रा० १, ३, ५, १०; १, ४, १, २१; २, २, १, ३; ७, २, २, १४; १०, १, ३, ११; १२, ४, २, १)।

६. सर्वं वाऽअक्षय्यम् (श० ब्रा० १, ६, १, १६; ११, १, २, १२)।

७. श० ब्रा० (६, १, ३, १८; ६, १, ३, ११)।

८. तां ब्रा० (१६, ६, १)।

९. वही (१६, ६, २)।

१०. वही (१६, ७, २; २२, ८, ४)।

११. सर्वो धर्मः...सिद्धः।

१२. सर्वः शब्दः नित्यः।

सिद्ध और सर्वोय को नमस्कार करने से पूर्व नमः वागीश्वराय लिखा, तो संभवतः शब्द-ब्रह्म का कोई तृतीय रूप भी अभिप्रेत था जिसमें उक्त दोनों रूपों का समावेश होता हो। इसकी तुलना श्वे० उ० के उस अग्र्य पुरुष से कर सकते हैं जो सब का वेत्ता है परन्तु उसका वेत्ता कोई नहीं है (स वेत्ति वेद्यं न च तस्यास्ति वेत्ता); वही सर्वात्मा तथा सर्वगत होकर भी नित्य है—

वेदाहमेतमजरं पुराणं सर्वात्मानं सर्वगतं विभुत्वात् ।

जन्मनिरोधं प्रवदन्ति यस्य ब्रह्मवादिनो हि प्रवदन्ति नित्यम् ॥

कात्यायनसूत्र

आत्मा अपने चरम सत् रूप में अनिर्वचनीय होने से वेद में कः (पुंलिंग) अथवा कत् (नपुंसकलिंग) कहलाता है ; इस अवस्था में उसकी शक्ति अथवा वाक् उसी में लीन होने से कद्रीची कही जाती है, क्योंकि इस रूप में यह कह सकना कठिन है कि वाक् कहाँ गई (सा कद्रीची कंस्विदधं परागात्, ऋ० वे० १, १६४, १७); उक्त कत् के प्रथम (कारण) व्यक्त रूप को कात्य तथा द्वितीय (सूक्ष्म) व्यक्त रूप को कात्यायन कहा जा सकता है। कारणशरीर एवं सूक्ष्म-शरीर में व्यक्त होने वाले वाक्-संयुक्त आत्मा की अभिव्यक्ति को ही अवर्ण से नानावर्ण में रूपांतरित होने वाला कहा गया है और यही उक्त पूर्वपाणिनीयम् का विषय है। अतः इसी विषय को कात्यायन तथा पूर्वपाणिनीयम् के सूत्रों को कात्यायनसूत्र कहना सर्वथा युक्तियुक्त है।

कात्यायन और पाणिनेय

इस दृष्टि से पूर्वोक्त कात्यायन एवं पाणिनि का संघर्ष एक प्रतीक आख्यान के रूप में ही लिया जा सकता है। मनुष्य के अभिव्यक्तिशील व्यक्तित्व को वेद में प्रायः वृषभ या वृषन् इन्द्र के रूप में देखा गया है और इस अभिव्यक्ति को आधारभूता वाक् के व्यापार को वर्षा के रूपक^१ द्वारा चित्रित किया गया है। अतएव इस रूप में मानव को वर्ष ऋषि तथा उसकी सूक्ष्म एवं स्थूल अभिव्यक्तियों को क्रमशः कात्यायन एवं पाणिनेय कहा जा सकता है। स्थूल अभिव्यक्ति में जब सुबन्तों और तिङन्तों की सृष्टि होने लगती है, तो स्वतः सूक्ष्म अभिव्यक्ति का पर्यवसान ही तो स्थूल पदादि की अभिव्यक्ति में होता है। अतएव कात्यायन एवं पूर्वपाणिनेय शब्दों द्वारा एक ही मानवशक्ति की क्रमशः सूक्ष्म एवं स्थूल

अभिव्यक्तियों का विवेचन उसी प्रकार अभिप्रेत है जिस प्रकार दूसरी दृष्टि से क्रमशः पूर्वमीमांसा एवं उत्तरमीमांसा में । अतः काशिका ६, २, १०४ में उल्लिखित पूर्वपाणिनीयं शास्त्रम् तथा हरदत्त द्वारा उसे 'पाणिनीयशास्त्रं पूर्व-चिरन्तनम्' कहा जाना इसी सूक्ष्म अभिव्यक्ति की ओर संकेत करता प्रतीत होता है ।

पूर्वसूत्र - परम्परा

उक्त पूर्वपाणिनेय अथवा कात्यायन की सूक्ष्म व्याकृति की एक निश्चित परम्परा रही प्रतीत होती है, जिसके पारिभाषिक शब्द पाणिनेय-परम्परा से कुछ भिन्न माने जाते थे । पतंजलि के महाभाष्य में भी जहाँ-जहाँ पूर्वसूत्र का उल्लेख है वहाँ-वहाँ इसी प्रकार की भिन्नता के दर्शन होते हैं । उदाहरण के लिये उसके अनुसार पूर्वसूत्र-परम्परा में वर्ण की अक्षर^१, तथा गोत्र^२ की वृद्ध-संज्ञा होती है । पतंजलि द्वारा प्रयुक्त 'पूर्वसूत्र' शब्द के निम्नलिखित प्रयोग भी सम्भवतः इसी दृष्टि से समझे जा सकते हैं—

पूर्वसूत्रनिर्देशो वापिशलमधीत इति । पूर्वसूत्रनिर्देशो पुनरयं द्रष्टव्यः । सूत्रेऽ-
प्रधानस्योपसर्जनमिति संज्ञा क्रियते (४, ४, १४)

पूर्वसूत्रनिर्देशश्च । चित्त्वान् चित इति (६, १, १६३)

अथवा पूर्वसूत्रनिर्देशोऽयं पूर्वसूत्रेषु च येऽनुबन्धा न तैरिहेतत्कार्याणि क्रियन्ते
(७, १, १८)

पूर्वसूत्रनिर्देशश्च (८, ४, ७)

निर्देशोऽयं पूर्वसूत्रेण वा स्यात् (७, १, १८)

शिक्षा, प्रातिशाख्य तथा निरुक्त

प्रारंभ में उक्त पूर्वपाणिनीयसूत्र-परंपरा का क्षेत्र सूक्ष्मवाक् की वर्णों या अक्षरों में व्याकृति तथा उनकी ध्वनियों तक ही सीमित रहा प्रतीत होता है । अतः शिक्षा एवं प्रातिशाख्यों की छन्दोबद्ध रचनाएँ इसी परंपरा में मानो जा सकती हैं । जैसा कि पूर्वपाणिनीयम् के "वर्णभ्यः पदानि" तथा 'ते प्राक' सूत्रों से पता चलता है, वर्णों की व्याकृतिमात्र ही इस परंपरा का क्षेत्र होते हुये भी, किसी सीमा तक पदों को भी इसके क्षेत्र में घसीटने का प्रयत्न किया जाता था ।

१. म० भा० १, १, २ ।

२. म० भा० १, २, ६८ ।

संभवतः यह अतिक्रमण प्रारंभ में पदों के संकलन तथा वर्गीकरण तक ही सीमित रहा हो और निघंटु, पुष्पसूत्र, फिट्सूत्र आदि की रचना इसी परंपरा में हुई हो। जैसा कि पहले निर्देश हो चुका है, सूक्ष्मवाक् की व्याकृति ही इंद्र का व्याकरण है, अतः कोई आश्चर्य नहीं कि परंपरा में ऐन्द्रव्याकरण वर्णसमूह^१ और अधिक से अधिक पदसमष्टि^२ से संबद्ध माना जाय। परन्तु पदसमूह के संकलन तथा वर्गीकरण के साथ ही उनके निर्वचन के प्रति जिज्ञासा होना स्वाभाविक है; अतः निरुक्त का आविर्भाव हुआ और उसके परिणामस्वरूप हुई शब्द की धातु-जिज्ञासा।

काशकृत्स्न - व्याकरण

अतः अब प्राचीन सूक्ष्मवाक् की वर्णों में व्याकृतिमात्र को अथवा कुछ आगे बढ़ कर वर्णसमूह से बने पदों के संकलनमात्र को व्याकरण मानना पर्याप्त नहीं था। वर्ण और पदों की अभिव्यक्ति तो वाक् की आंशिक अभिव्यक्ति (काश, प्रकाश) है; उसके आगे पदों के मूल में स्थित धातु और प्रत्यय की व्याकृति को व्याकरण के क्षेत्र में लिए बिना वाक् की अभिव्यक्ति (काश) में कृत्स्नता सम्भव नहीं थी। अतः वर्ण, पद एवं धातु-प्रत्यय के समावेश से ही व्याकरण को संभवतः त्रिकं काशकृत्स्नम्^३ या काशकृत्स्नीयम्^४ की संज्ञा प्राप्त हुई। पं० युधिष्ठिर मीमांसक^५ का मत है कि काशकृत्स्न-व्याकरण को पहले काशकृत्स्न-तंत्र कहते थे और उसी का संक्षिप्त नाम 'कातंत्र' है जो मूलतः^६ तीन अध्यायों वाला ही था।

काशकृत्स्नं गुरुलाघवम्

अस्तु व्याकरण के काशकृत्स्न होने पर उसके विकास का क्षेत्र खुल गया। अब उसमें व्याकरण की लघुता और गुरुता, सूक्ष्मता और स्थूलता दोनों का

१. पं० युधिष्ठिर मीमांसक द्वारा उद्धृत चरकव्याख्या—

शास्त्रेष्वपि अथ वर्णसमूह इति ऐन्द्रव्याकरणस्य। (सं० व्या० ६० पृ० ८६)

२. तु० क०—नैकं पदजातम् यथा अर्थः पदम् इत्येन्द्राणाम्।

(दुर्गः-निरुक्तवृत्ति, पृ० १०; सं० व्या० ३०, पृ० ८६)

३. काशिका ५, १, ५८।

४. शाकटायन, अमोघावृत्ति ३, २, १६१।

५. सं० व्या० ६० (द्वि० सं०) पृ० ५०४-५०५।

६. वही, पृ० ११७।

समावेश हो सकता था। इंद्र द्वारा सूक्ष्मवाक् की व्याकृति का उल्लेख हो चुका है; इसी के एक लघुरूप का उल्लेख वा० सं० १६, ७७ में है जहाँ प्रजापति^१ को सत्य एवं अनृत का व्याकरण करने वाला कहा गया है और इसी के अन्य रूप का निरूपण वाक् के एकपदी से नवपदी अथवा एकाक्षरा से सहस्राक्षरा होने में देखा^२ जा सकता है। शिक्षा, प्रातिशाख्य और निरुक्त में इसी लघुरूप की स्थूलतम अवस्था मानी जा सकती है, परन्तु जब धातु, प्रातिपदिक, नामाख्यात के साथ-साथ लिङ्ग, वचन, विभक्ति, प्रत्यय, उपसर्ग, निपात, विकार आदि पारिभाषिक^३ शब्दों का उल्लेख होने लगा तो निस्संदेह व्याकरण की उक्त लघुता पूर्णतया गुरुता में बदल गई और उसका विषय वर्णों की उत्पत्ति अथवा पदों की साधारण व्युत्पत्ति तक सीमित न रहकर वाक्य में विभिन्न शब्दों के पारस्परिक सम्बन्ध पर आधारित अनेक नियमों की सृष्टि होने लगी। अतः कोई भी ग्रंथकार यदि सम्पूर्ण (कृत्स्न) व्याकरण को लिखने का दावा करे, तो उसे विषय के लघु और गुरु, सूक्ष्म एवं स्थूल दोनों पहलुओं को लेना पड़ेगा। अतः काश-कृत्स्न-व्याकरण के गुरुलाघवम् का यही रहस्य प्रतीत होता है।

चान्द्र-व्याकरण को लघुता और सम्पूर्णता

चान्द्र-व्याकरण के रचयिता ने भी अपने 'शब्दलक्षण' को लघु एवं संपूर्ण कह कर सम्भवतः इसी अभिप्राय को व्यक्त किया है। यद्यपि पूर्वोत्लिखित मीमांसकजी का अनुमान भी पूर्णतया युक्तियुक्त है, परन्तु शिवसूत्र, वर्णसूत्र, धातुपाठ तथा उणादि के द्वारा यदि चन्द्रगोमि ने व्याकरण के लाघव को साधा है, तो शुद्ध व्याकरण के छः अध्यायों में उसके गौरव का भी निर्वह हुआ है। इस दृष्टि से पाणिनि की अष्टाध्यायी में भी किसी सीमा तक 'गुरुलाघवम्' का समावेश है, परन्तु उसमें जिन नई संज्ञाओं और पारिभाषिक शब्दों का प्रवेश हुआ है और जिस नई वैज्ञानिक पद्धति को अपनाया गया है उसके व्याख्यास्वरूप निर्मित विशाल व्याकरण-साहित्य ने उक्त 'लघु' पक्ष को गौण ही नहीं, विस्मृत ही कर दिया। अष्टाध्यायी के 'गुरु' पक्ष में प्रविष्ट उक्त वैज्ञानिकता ने जहाँ उसे यथार्थतः पाणिनेय (पाणिसाध्य अथवा कृत्रिम) बना दिया, वहाँ अपने 'लघु' पक्ष को पाणिनेय से विपरीत 'अनुमेय' बनाकर व्याकरण दर्शन की गोद

१. दृष्ट्वा रूपे सत्यावृते व्याकरोत् प्रजापतिः।

२. ऋ० वे०—१, १६४।

३. गो० आ०—१, २४।

में जा बिठाया । यह होना विकास की दृष्टि से स्वाभाविक ही नहीं, आवश्यक था ।

पाणिनि की ऐतिहासिकता

उक्त विवेचन से यह कदापि अभिप्रेत नहीं कि पाणिनि-नाम का कोई व्यक्ति ही नहीं हुआ । यद्यपि अष्टाध्यायी के कर्त्ता को पाणिन, पाणिनि, दाक्षी-पुत्र, शालङ्कि, शालातुरीय, आहिक तथा पणिपुत्र कहा गया है, परन्तु इसमें कोई संदेह नहीं कि उसका लोक-प्रचलित नाम 'पाणिनि' ही था और संभवतः जब पाणिनीय-साहित्य की विशालता और गुरुता में व्याकरण के 'लघु' पक्ष को तिरोहित-सा होता हुआ पाया गया, तो उसे 'पूर्वपाणिनीय' नाम दे कर पृथक् विषय बनाने का प्रयत्न किया गया और पाणिनीय-साहित्य की नवीनता, वैज्ञानिकता एवं कृत्रिमता को ध्यान में रख कर उक्त 'पूर्वपाणिनीय' के विपरीत उसे विनोद के लिये पाणिनीय के स्थान पर पाणिनेय कहा गया हो ।

चन्द्रगोमि और बौद्धधर्म

चन्द्रगोमि को विद्वानों ने प्रायः बौद्धमतावलम्बी माना है । इसका प्रथम आधार चान्द्रव्याकरण के प्रारम्भ में उपलब्ध श्लोक है जिसमें सिद्ध और सर्वोय गुरु को नमस्कार किया गया है । जैसा ऊपर लिखा जा चुका है, सिद्ध और सर्व-शब्दों का प्रयोग वैदिक परंपरा में भी प्राप्त है और उनको 'नमः वागोश्वराय' के संदर्भ में वैदिक ही समझना चाहिए । दूसरा आधार यह है कि चान्द्रव्याकरण में स्वर और वैदिक व्याकरण का अभाव है । इस प्रसंग में पं० युधिष्ठिर मीमांसक ने प्रमाण दे कर बताया है कि चान्द्रव्याकरण में उक्त दोनों विषयों का भी समावेश अवश्य था, क्योंकि चान्द्रवृत्ति १, १, १०८ में 'स्वरं वक्ष्यामः' तथा सूत्र ३, ४, ६८ में 'स्वरं तु वक्ष्यामः' आदि कई स्थानों पर वैदिक स्वरविधान करने की प्रतिज्ञा प्राप्त होती है और इसकी आवश्यकता तभी पड़ती जब वैदिक शब्दों की रचना का भी समावेश होता । इससे स्पष्ट है कि चान्द्रव्याकरण में किसी समय वैदिक व्याकरण का भी समावेश अवश्य था ।

चन्द्रगोमि के बौद्ध होने का एक अन्य प्रमाण चान्द्रव्याकरण के अन्त में उपलब्ध 'शुभमस्तु सर्वजगताम्' आशीर्वाद वाक्य भी है, परन्तु इस प्रकार की

१. डॉ० वेल्वेल्कर—सिस्टम आव संस्कृत ग्रामर, पृ० ५९; ए० के० दे० इंडि० हि० क्वा० जून १९३८, पृ० २५८ ।

मंगल कामना पर एकमात्र बौद्ध-धर्म का ही आधिपत्य मानने के लिए कोई ठोस प्रमाण नहीं है। किसी ग्रंथ के अंत में 'शुभमस्तु' लिखने की परिपाटी तो अब तक चली आती है और प्रायः धर्मनिरपेक्ष ही मानी जा सकती है। उदाहरण के लिए आत्रेय-संहिता आदि अनेक ग्रंथों का उल्लेख किया जा सकता है।

—फतहसिंह

एम०ए०, डी०लिट्०

प्रास्ताविक

इस छोटे से प्रास्ताविक में दो-तीन मुद्दों पर लिखने का विचार है ।

(१) मुख्य व्याकरणों का संक्षिप्त परिचय और चान्द्रव्याकरण के सम्पादन का वृत्तान्त ।

(२) प्रकाशित चान्द्रव्याकरण की सम्पादन-शैली का परिचय ।

(३) चान्द्रव्याकरण के कर्त्ता का परिचय ।

महाभाष्यकार श्रीपतंजलिमुनि ने जिस भाषा को 'लौकिक-भाषा' का नाम दिया है, ऐसी संस्कृत-भाषा के अनेकानेक छोटे-मोटे व्याकरण हमारे देश में और विदेशों में भी पूर्व में बने हैं और आज भी बनते जा रहे हैं । इन सब में निम्न आठ व्याकरण प्रधान गिने जाते हैं ।

"इन्द्रश्चन्द्रः काशकृत्स्नापिशली शाकटायनः ॥

पाणिन्यमरजैनेन्द्रा जयन्त्यष्ट दिशाब्दिकाः ॥"

अर्थात् इन्द्र, चन्द्र, काशकृत्स्न, अपिशलि, शाकटायन, पाणिनि, अमर और जैनेन्द्र ये आठ आदिशाब्दिक माने जाते हैं ।

इस श्लोक में बताए हुए आदिशाब्दिकों के निर्देश में किसी प्रकार का कालक्रम या छोटे बड़े की कल्पना नहीं रखी गई है, परन्तु मात्र गणना करने का ही आशय रहा है ।

आदिशाब्दिक— सर्वप्रथम व्याकरण की रचना करने वाले आद्यवैयाकरणों में प्रथम स्थान 'इन्द्र' का आता है । इन्द्र-नाम के उस महापण्डित द्वारा बनाया गया व्याकरण 'ऐन्द्र' नाम से प्रसिद्ध हुआ । आज यह व्याकरण उपलब्ध नहीं है, पर प्राचीनतम पाणिनीय व्याकरण के महाभाष्य में इसका नाम-निर्देशमात्र पाया जाता है । 'ऐन्द्र' व्याकरण इतना प्राचीन है कि इसके सम्बन्ध में अनेक किंवदन्तियाँ चल पड़ी हैं । जैन-सम्प्रदाय के अनुयायी प्राचीन पण्डित कहते हैं कि जब भगवान् महावीर लेखशाला (पाठशाला) में प्रथम पढ़ने बैठे तब स्वर्ग में से 'इन्द्र' भगवान् के पास आया और उनके साथ शब्दशास्त्र के सम्बन्ध में जो चर्चा भगवान् ने की उसका नाम ऐन्द्र व्याकरण हुआ । ऐसी दंतकथा श्वेताम्बर-जैनपरम्परा में बहुत समय से चली आती है ।

वास्तव में 'इन्द्र' नाम का कोई विद्वान् इस व्याकरण का कर्त्ता था । स्वर्ग

में बसने वाले वज्रपाणि पुरन्दर शक्र का भी एक नाम 'इन्द्र' है, नामसाम्य पर उपर्युक्त किंवदन्ती प्रचलित होगई हो, यह स्वाभाविक है ।

'चन्द्रगोमी' नाम के बौद्ध महापण्डित ने जो व्याकरण लिखा वह 'चान्द्र-व्याकरण' कहलाता है । प्रस्तुत प्रकाश्यमान यही व्याकरण है ।

'काशकृत्स्न' और 'अपिशलि' इन दो नामों का निर्देशमात्र पाणिनीय-व्याकरण के मूलसूत्रों में कहीं-कहीं मिलता है तथा अन्य व्याकरणकारों ने भी नामस्मरण करके इनके मत का उल्लेख किया है । इससे मालूम होता है कि ये महानुभाव अवश्य ही कोई विशिष्ट वैयाकरण हो गये हैं, बाकी वर्तमान में इनके व्याकरणों की उपलब्धि आज तक तो नहीं हुई है ।

शाकटायन-नाम का निर्देश भी पाणिनि के सूत्रों में मिलता है । ये कोई वेदानुयायी प्राचीन वैयाकरण हैं । एक जैन शाकटायन भी हुए हैं, परन्तु वे तो अर्वाचीन हैं । नामसाम्य से जैन-धर्म की प्राचीनता सिद्ध करने के लिये 'शाकटायन' का नाम लिया जाता है, पर यह भ्रम है और इतिहास ने इस भ्रम का परिमार्जन भी कर दिया है ।

पाणिनिकृत अष्टाध्यायी-सूत्रपाठ प्रसिद्ध व्याकरण है । इसके ऊपर पातञ्जलमहाभाष्य, वाक्यपदीय, काशिका, शब्देन्दुशेखर, सिद्धांतकौमुदी, मंजूषा तथा वैयाकरणभूषण इत्यादि अनेकानेक विवेचनात्मक ग्रंथ बने हुए हैं ।

अमरसिंह-नामक बौद्धपण्डित का बनाया हुआ कोशों में सबसे प्राचीन 'अमरकोश' तो आज भी प्राप्त है । इस पर भी अनेकानेक संस्कृत-टीकायें बनी हुई हैं तथा देश-भाषा में भी इसकी टीकायें प्राप्त हैं । सारे भारत में इस कोश का अच्छा प्रचार है । कोश भी व्याकरण का एक अंग ही है । बाकी, इनका बनाया हुआ कोई व्याकरण उपलब्ध नहीं है ।

जैनेन्द्र-आचार्य देवनन्दिमुनि अथवा पूज्यपादस्वामी के बनाये हुये व्याकरण का नाम जैनेन्द्र-व्याकरण है । जैन-परम्परा में इससे पूर्व का कोई संस्कृत-व्याकरण उपलब्ध नहीं है । जैन-परम्परा की अपेक्षा ये आदिशाब्दिक ही हैं । इनकी रचना पाणिनीय व्याकरण की पद्धति पर की गई है और इसकी संज्ञायें बड़ी अटपटी हैं ।

इन आठों व्याकरणों का निर्देश कालक्रम से इस प्रकार हो सकता है—

ऐन्द्र, काशकृत्स्न, अपिशलि, शाकटायन, पाणिनीय, चान्द्र, जैनेन्द्र, अमर ।

प्रस्तुत चान्द्रव्याकरण भारत देश में ही बना है पर कहीं बना, इसका पता नहीं । भारतीय होने पर भी चान्द्रव्याकरण का प्रथम प्रकाशन भारत में न

होकर जर्मनी में हुआ, यह हमारी विद्योपासना या विद्याप्रियता कितनी है, इसके मापदण्ड का सूचक है। जर्मनी में महापण्डित ब्राउनो लाइबिश (Bruno Liebich) ने लिपजिग शहर से चान्द्रव्याकरण को सर्वप्रथम प्रकाशित किया। सूत्र और वृत्तिसहित संपूर्णरूप से रोमनलिपि में यह व्याकरण उपलब्ध कराने का श्रेय महापण्डित ब्राउनो को ही मिला है। मेरे इस सम्पादन का मुख्य आधार वही रोमनलिपि में मुद्रित जर्मन-आवृत्ति है। अतः इस कार्य के लिये महापण्डित ब्राउनो का मैं बहुत-बहुत आभारी हूँ।

हमारे स्नेहास्पद एवं श्रद्धेय आचार्य श्रीजिनविजयजी पुरातत्व के तो प्रकाण्ड पण्डित हैं ही, तदुपरांत उसके अनुसन्धान में पुरातत्वविद्या की अनेकानेक उपयोगी पुस्तकों के प्रकाशन के भी उत्कट प्रेमी हैं और दुर्लभ, अलभ्य प्राचीन ग्रन्थों को प्रकाश में लाने का भी उनका अत्युत्कट प्रयत्न रहता है। उनका सम्पूर्ण जीवन ही इसी प्रवृत्ति में व्यतीत हुआ है। उमर लगभग अस्सी के आसपास है, आँखें भी बहुत कमजोर हैं, शरीर भी काम देने से इन्कार कर रहा है तो भी दृढसंकल्पी आचार्यश्री अपने प्रियकार्य से रुकते नहीं हैं। मेरा और उनका परिचय १९२० ई. से पहले का है। तबसे मैं आज तक देख रहा हूँ कि लगातार अविरत भाव से उनकी प्रवृत्ति में पूर्णविराम तो नहीं ही है, पर अर्द्धविराम और अल्पविराम तक मैंने नहीं देखा। उनकी यह प्रवृत्ति भारत ही नहीं भारत से बाहर भी सुविश्रुत है। उन्होंने आज तक 'सिन्धी-जैन-ग्रन्थमाला' में और 'राजस्थान-पुरातन-ग्रन्थमाला' में सैकड़ों ग्रन्थ प्रकाशित कर दिये हैं। और आज भी यह कार्य चल ही रहा है। वे खुद ग्रन्थों का संशोधन-संपादन करते हैं तथा तत्तद्विषय के साक्षरों द्वारा भी यह कार्य कराते हैं। उनके मन में खयाल हुआ कि चान्द्रव्याकरण भारतीय ग्रन्थ है, उसके विधाता भी भारतीय ही हैं, फिर भी यह ग्रन्थ रोमनलिपि में सर्वप्रथम जर्मनी में प्रकाशित हो गया। भारत में इसका नाम केवल "इन्द्रश्चन्द्रः" वाले श्लोक में ही देखा जाता है, पर इस ग्रन्थ का न किसी ने संशोधन-सम्पादन किया और न प्रकाशन ही किया। यह भारी लज्जा की बात है। इस शर्म को दूर करने के लिये उन्होंने निश्चय किया कि 'राजस्थान-पुरातन-ग्रन्थमाला' में इसको स्थान दिया जाय और प्रारंभ में इसके मूल सूत्रपाठ को ही प्रकाशित किया जाय।

मेरी रुचि व्युत्पत्तिविद्या में होने से वे जानते थे कि व्याकरणशास्त्र के सम्पादन और संशोधन में भी मेरी विशेष प्रीति है, अतः यह कार्य उन्होंने मुझे सौंपा। मैंने बड़े रस के साथ इसका संशोधन और सम्पादन कर दिया और अब यह पाठकों के सामने आ रहा है।

हमारे देश में इस प्रवृत्ति का सर्वप्रथम प्रारम्भ करने वाले तो आचार्यश्री ही हैं, परन्तु कई एक कारणों से इसका प्रकाशन विलम्ब से हुआ अतः । इस बीच में डेक्कन कॉलेज, पूना से भी इसका प्रकाशन हो गया ।

इस प्रकाशन 'चान्द्रमूलसूत्रपाठ' के संशोधन—सम्पादन की शैली का परिचय इस प्रकार है:—

यह सारा व्याकरण छह अध्यायों में विभक्त है, जब कि पाणिनीय व्याकरण आठ अध्यायों में है । ग्रन्थकार चन्द्रगोमी महामुनि ने अपनी इस कृति के प्रारम्भ में ही सूचित किया है कि 'लघु-विस्पष्ट-सम्पूर्णमुच्यते शब्दलक्षणम्' अर्थात् "पाणिनीय की अपेक्षा लघु, विशेषरूप से स्पष्ट और सम्पूर्ण ऐसा शब्दलक्षण कहता हूँ" । ग्रन्थकार अपनी इस सूचना को बराबर सार्थक करता हुआ "एकमात्रालाघवमपि पुत्रोत्सवम्मन्यन्ते वैयाकरणाः" इस न्याय को अक्षरशः सफल कर दिखाया है ।

प्रस्तुत प्रकाशन में सर्वप्रथम चान्द्र का मूलसूत्रपाठ दिया गया है तथा साथ में पाणिनीय-अष्टाध्यायी के समान सूत्रों के साथ तुलना बताने के लिये उसके अध्याय, पाद और सूत्रांक दिये हैं तथा कई स्थानों पर वार्तिक के अंक तथा महाभाष्य, काशिकावृत्ति, और सिद्धान्तकीमुदी का भी उपयोग किया गया है ।

इस प्रकार प्रस्तुत संस्करण में मूलसूत्रपाठ ७५ पृष्ठों में पूरा होता है ।

इसके पश्चात् ८०वें पृष्ठ तक चान्द्र में आये हुए गणों के केवल नामों की ही अकारादिक्रम से सूची दी गई है और साथ में जिस सूत्र में जिस गण का उपयोग हुआ है उस सूत्र के अध्याय, पाद, और अंक का निर्देश कर दिया गया है ।

८१ वें पृष्ठ में चन्द्रगोमिकृत वर्णसूत्र दिया गया है, जिसमें स्वरों तथा व्यञ्जनों के स्थान-प्रयत्न और भेद दिखाये गये हैं ।

१०४ वें पृष्ठ तक आचार्यचन्द्रगोमिकृत तीन पादों में सम्पूर्ण उणादिसूत्र दिया गया है । इसके अन्त में आचार्य ने 'शुभमस्तु सर्वजगताम्' का शुभाशीर्वाद देते हुए भगवान् बुद्ध की परमकारुणिकता की प्रतिध्वनि कर दी है ।

१२६ वें पृष्ठ तक चन्द्रगोमिकृत सम्पूर्ण धातुपाठ दिया है, साथ में पाणिनीय-धातुओं के तत्तद्गण के अंक देकर तुलना भी बताई है । धातुपाठ के अन्त में आचार्य ने लिखा है कि यद्यपि प्रत्येक धातु का एक ही अर्थ दिखाया है, परन्तु वास्तव में "अनेकार्था हि धातवः" अर्थात् प्रयोगानुसार एक-एक धातु के अनेक अर्थ हैं ।

१८८ वें पृष्ठ तक चान्द्र के सब सूत्रों का अकारादिक्रम से तथा इसी प्रकार उणादिसूत्रों का भी अनुक्रम निर्देश किया है ।

२०५ वें पृष्ठ तक उणादि द्वारा साधित शब्दों की अकारादिक क्रम से पूरी सूची दी है । उणादिसाधितशब्दों से उनकी ठीक व्युत्पत्ति का पता नहीं चल सकता, क्योंकि धातुओं से शब्दों की साधना विशेषतः कल्पना पर ही निर्भर है । वैयाकरणों ने 'कूप' शब्द की व्युत्पत्ति करते हुए भिन्न-भिन्न शैली का आश्रय लिया; किसी ने कूपशब्द की साधना 'कु' धातु से बताई है, तब निरुक्तकार यास्कने 'कूप' शब्द का सम्बन्ध 'कूप' धातु से भी लगाया है, अथवा 'कु+आप' से 'कूप' शब्द की साधना की है । अमरकोश के प्राचीन वृत्तिकार क्षीरस्वामी ने भी 'कु+आप' से 'कूप' शब्द को साधित किया है । इस प्रकार उणादिशब्दों की व्युत्पत्ति कल्पना पर निर्भर होने से पूरी तरह विश्वस्त नहीं मानी जा सकती । उक्त व्युत्पत्तियों के आधार पर 'कूप' शब्द के ये अर्थ होते हैं—

'कु' धातु से कूप—प्रतिध्वनि द्वारा शब्द करने वाला ।

'कु+आप' से कूप—जिसमें पानी अल्प है वा कुत्सित—अच्छा नहीं है ।

'कुप' धातु से कूप—जहाँ कोप होता है अर्थात् पानी भरने वालियाँ अनेक होने से जहाँ स्त्रियाँ परस्पर कुपित होती रहती हैं ।

'सिह' शब्द की साधना उणादि में एक प्रकार की नहीं है—

चान्द्र 'सिच्' धातु से 'सिह' की व्युत्पत्ति दिखाता है;

दूसरे वैयाकरण 'हिस्' धातु का विपर्यय करने से 'सिह' शब्द की साधना दिखाते हैं ।

इस प्रकार उणादिसूत्रदर्शित साधना ठीक व्युत्पत्ति के लिये प्रामाणिक आधार नहीं बन सकती । इतना प्रासंगिक सूचन बीच में कर दिया है इससे किसी पाठक को अरुचि हो तो क्षमा करने की कृपा करें ।

करीब २३२ वें पृष्ठ तक धातुपाठ के सब धातुओं की अकारादि-अनुक्रमणिका का निर्देश किया है और साथ में गण तथा धातु के अंक भी दे दिये हैं ।

इस प्रकार करीब २३२ पृष्ठों में यह संस्करण समाप्त होता है ।

सर्वत्र जहाँ उपयुक्तता मालूम हुई वहाँ आवश्यक टिप्पण भी दिये गये हैं । टिप्पणों में चान्द्रसूत्रों की तुलना तथा मतान्तर-सम्बन्धी सूचन किया गया है ।

ला. द. आर्ट्स कॉलेज तथा विद्यासभा, अहमदाबाद के पुस्तकालयों से

पुस्तकें ला-ला कर यह काम कर सका हूँ, अतः इन सब संस्थाओं का ऋण मैं अवश्य स्वीकारता हूँ ।

चान्द्र-व्याकरण के कर्त्ता का समय—

इस व्याकरण के कर्त्ता का नाम आचार्य चन्द्र है, उनका दूसरा नाम चन्द्र-गोमी भी है । 'गोमी' शब्द पूज्यता-सूचक है । महान् वैयाकरण भर्तृहरि ने अपने वाक्यपदीय में द्वितीय काण्ड, श्लोक ४८५ से ४९० तक के उल्लेख में व्याकरण-महाभाष्य के विच्छेद का वृत्तान्त और विच्छेद पाए हुए महाभाष्य को चन्द्र आचार्य ने सुरक्षित रखा और उसके पठन-पाठन का फिर प्रचार किया, ऐसा भी निर्देश किया है । उससे मालूम होता है कि भर्तृहरिनिर्दिष्ट चन्द्र आचार्य यही हैं, जिन्होंने प्रस्तुत चान्द्रव्याकरण का निर्माण किया । अतः जब तक अन्य कोई बाधक प्रमाण न हो तब तक यह मानना अबाधित है कि वाक्यपदीय-निर्दिष्ट चन्द्र आचार्य यही चन्द्रगोमी हैं और भर्तृहरि के ये पूर्ववर्ती रहे हैं ।

अन्त में इस कार्य के प्रेरक आचार्य श्रीजिनविजयजी का बारम्बार अभिनन्दन करता हुआ इस छोटे से प्रास्ताविक को यहीं पूरा कर रहा हूँ और सुज्ञ पाठकों से नम्र सूचना भी करता हूँ कि इस संस्करण में जहां कहीं अशुद्धि रह गई हो तो शुद्ध कर लेने की कृपा करें और हो सके तो मुझे भी सूचन करने की मेहरबानी करें ।

१२/ब भारती निवास सोसायटी
अहमदाबाद ६

}

बेचरदास दोशी

चान्द्र - व्याकरणम्

चन्द्रगोमि-नाम-आचार्यविरचितं चा न्द्र व्या क र ण म्

नमो वागीश्वराय

सिद्धं प्रणम्य सर्वज्ञं सर्वीयं^१ जगतो गुरुम् ।
लघुविस्पष्टसंपूर्णमुच्यते शब्दलक्षणम् ॥

[प्रथमः अध्यायः, प्रथमः पादः]

- | | |
|---|---------------------------------------|
| १ अइउण् ॥ शिवसूत्र ^२ १॥ | ७ सप्तम्यां पूर्वस्य । पा० १।१।६६। |
| २ ऋलृक् ॥ २॥ | ८ पञ्चम्यां परस्य । पा० १।१।६७। |
| ३ एओङ् ॥ ३॥ | ९ आदेः । पा० १।१।५४। |
| ४ ऐऔच् ॥ ४॥ | १० षष्ठ्याऽन्त्यस्य । पा० १।१।५२। |
| ५ हयवरलण् ॥ ५॥ | ११ डित् । पा० १।१।५३। |
| ६ वमङ्गणम् ॥ ६॥ | १२ शिदनेकाल् सर्वस्य । पा० १।१।५५। |
| ७ झभच् ॥ ७॥ | १३ टकितावाद्यन्तौ । पा० १।१।४६। |
| ८ घढधष् ॥ ८॥ | १४ मिदचोऽन्त्यात् परः । पा० १।१।४७। |
| ९ जवगडदश् ॥ ९॥ | १५ ऋकोऽणो रलौ । पा० १।१।५१। |
| १० खफछठथचटतव् ॥ १०॥ | १६ विप्रतिषेधे । पा० १।४।२। |
| ११ कपय् ॥ ११॥ | १७ तिजः क्षान्तौ सन् । पा० ३।१।५। |
| १२ शषसर् ॥ १२॥ | १८ कितः संशय-चिकित्सयोः । पा० ३।१।५। |
| १३ हल् ॥ १३॥ | १९ गुपो निन्दायाम् । पा० ३।१।५। |
| १ आदिरिता समध्यः । ^३ पा० १।१।७१। | २० बध एः ई च । पा० ३।१।६। |
| २ उता सवर्गः । पा० १।१।६६। | २१ शान्-दान्-मानः । पा० ३।१।६। |
| ३ ता तत्कालः । पा० १।१।७०। | २२ तुमो लुक् च इच्छायाम् । पा० ३।१।७। |
| ४ दोऽपः । पा० १।१।२०। | २३ व्याप्यात् काम्यच् । पा० ३।१।६, ७। |
| ५ अनंशचिह्नमित् । पा० १।३।२-६। | २४ ससंख्यादमः क्यच् वा । |
| ६ विधिर्विशेषणान्तस्य । पा० १।१।७२। | पा० ३।१।८+ ^४ वा० १। |

१ सर्वेभ्यः प्राणिभ्यो हितः सर्वीयः “सर्वाणो वा” । ४-१-१३ इति चान्द्रं सूत्रम् ।

२ “नृत्तावसाने नटराजराजो ननाद ढक्कां नव-पञ्चवारम् ।

उद्धर्तुकामः सनकादिसिद्धान् एतद् विमर्शं शिवसूत्रजालम्” ॥ इति शिवसूत्रविषये किंवदन्ती ।

३ ‘पा०’ इत्यनेन पाणिनीयं व्याकरणम् । ४ वा० इति वार्तिकम् ।

- २५ उपमानादाचारे । पा०३।१।१०।
 २६ आधारात् । पा०३।१।१०+वा०१।
 २७ कर्तुर्विप् । पा०३।१।११, भा०^१।
 २८ गल्भ-क्लीब-होडेभ्यो ङित् ।
 पा०३।१।११+वा०३।
 २९ क्यङ् । पा०३।१।११।
 ३० च्व्यर्थे भृशादिभ्यः स्तलोपश्च ।
 पा०३।१।१२।
 ३१ डाच् लोहितादिभ्यः क्यष् ।
 पा०३।१।१३।
 ३२ कष्ट-कक्ष-सत्र-गहनाय पापे क्रमणे ।
 पा०३।१।१४+वा०१।
 ३३ रोमन्थं वर्तयति हनुचाले ।
 पा०३।१।१५+भा०।
 ३४ बाष्प-उष्म-फेनमुद्रमति ।
 पा०३।१।१६+भा०।
 ३५ सुखादीनि वेदयते । पा०३।१।१८।
 ३६ शब्दादीन् करोति । पा०३।१।१७।
 ३७ नमस्-तपस्-वरिवसः क्यच् ।
 पा०३।१।१९, १५+वा०१।
 ३८ चित्रङः आश्चर्ये ।
 पा०३।१।१९+वा०३+भा०।
 ३९ कण्ड्वादिभ्यो यक् । पा०३।१।२७।
 ४० एकाचो हलादेः क्रियार्थाद्
 भृशाभीक्ष्ण्ये यङ् । पा०३।१।२२।
 ४१ ऋ-सूत्रि-मूत्रि-सूचि-अट-अश-
 ऊर्णुभ्यः । पा०३।१।२२, भा० ।
 ४२ गत्यर्थात् कौटिल्य एव । पा०३।१।२३।
 ४३ लुप-सद-चर-गृ-जप-जभ-
 दह-दशो गह्यात् । पा०३।१।२४।
 ४४ न शुभ-रुचः । पा०३।१।२२, भा०।

- ४५ चुरादिभ्यो णिच् । पा०३।१।२५।
 ४६ प्रयोजकव्यापारे ।
 पा०३।१।२६। पा०१।४।५५।
 ४७ गुप्-धूप-विछ-पण-पनः
 आयो वा । पा०३।१।२८, ३१।
 ४८ ऋत ईयङ् । पा०३।१।२९।
 ४९ कमो णिङ् । पा०३।१।३०।
 ५० शिति आयादयः । पा०३।१।३१।
 ५१ अनेकाचो लिटः आम्
 कृ-भू-अस्ति लिट् चानु ।
 पा०३।१।३५+भा०। पा०३।१।
 ४०+वा०३, ८, ९।
 ५२ इजादेर्गुरुमतोऽनृच्छ-ऊर्णोः ।
 पा०३।१।३६+वा०६।
 ५३ कास्-अय-दय-आसः ।
 पा०३।१।३५, ३७।
 ५४ जागृ-उषो वा । पा०३।१।३८।
 ५५ भी-ह्री-हूनां द्वे च । पा०३।१।३९।
 ५६ बिभराम् । पा०३।१।३९।
 ५७ विदाम् । पा०३।१।३८+वा०१।
 ५८ लोटः कृलोट् । पा०३।१।४१।
 ५९ स्य-तासौ लृ-लुटोः । पा०३।१।३३।
 ६० लुङि सिच् । पा०३।२।४३, ४४।
 ६१ स्पृश-मृश-कृष-तृप-दृपो वा ।
 पा०३।१।४४। वा०७।
 ६२ दा-धा-गाति-स्था-भू-पोऽतङि लुक् ।
 पा०२।४।७७।
 ६३ घ्रा-धे-शा-च्छा-सो वा । पा०२।४।७८।
 ६४ तनादिभ्यः त-थासोः । पा०२।४।७९।
 ६५ शलः इगुपान्तात् अदृशोऽनिटः कसः ।
 पा०३।१।४५, ४७।
 ६६ शिल्षः । पा०३।१।४६।

६७ सत्त्वाश्लेषे । पा०३।१।४६+वा०४।

६८ णि-श्रि-द्भु-स्तु-कमः कर्तरि चङ ।

पा०३।१।४८+वा०१।

६९ धे-श्चेर्वा । पा०३।१।४९।

७० ऋ-सृ-शास्-असु-ख्या-वचः अङ ।

पा०३।१।५२, ५६।

७१ ह्वा-लिप्-सिचः । पा०३।१।५३।

७२ तङि वा । पा०३।१।५४।

७३ लृदिद्-द्युतादि-पुष्यत्यादिभ्योऽतङि ।

पा०३।१।५५। तथा काशिका ।

७४ इरितो वा । पा०३।१।५७।

७५ जृ-श्वि-स्तम्भु-ञ्चु-म्लुचु-ग्लुचः ।

पा०३।१।५८।

७६ चिण् ते पदः । पा०३।१।६०।

७७ दीप-जन-बुध-पूरि-तायि-प्यायो वा ।

पा०३।१।६१।

७८ भाव-आप्ययोः । पा०३।१।६६।

७९ न अनोस्तपः । पा०३।१।६५।

८० तिङ्शिति यक् अलिङाशीलिङि ।

पा०३।१।६७। पा०३।४।

११३, ११५, ११६।

८१ तपः तपआप्यात् । पा०३।१।८८।

८२ कर्तरि शप् । पा०३।१।६८।

८३ अदादिभ्यो लुक् । पा०२।४।७२।

पा०२।४।५८।

८४ हूनां द्वे च । पा०२।४।७५।

पा०६।१।१०।

८५ चिणः । पा०६।४।१०४।

८६ यङो बहुलम् । पा०२।४।७४।

८७ दिवादिभ्यः श्यन् । पा०३।१।६९।

८८ आश-भ्लाश-भ्रमु-क्रमु-वलमु-त्रसि-

त्रुटि-लषो वा । पा०३।१।७०।

८९ यसः । पा०३।१।७१।

९० समः । पा०३।१।७२।

९१ कुषि-रजः आप्ये । पा०३।१।९०।

९२ तुदादिभ्यः शः । पा०३।१।७७।

९३ रुधादीनां श्नम् । पा०३।१।७८।

९४ तनादिभ्यः उः । पा०३।१।७९।

९५ स्वादिभ्यः श्नः । पा०३।१।७३।

९६ श्रु-कृव्-धिवां शृ-कृ-धि च ।

पा०३।१।७४, ८०।

९७ अक्षो वा । पा०३।१।७५।

९८ तनूकृतौ तक्षः । पा०३।१।७६।

९९ स्तम्भु-स्तुम्भु-स्कम्भु-स्कुम्भु-स्कुम्भ्यः ।

पा०३।१।८२।

१०० श्नाः । पा०३।१।८२।

१०१ ऋयादिभ्यः । पा०३।१।८१।

१०२ हलो हौ शानच् । पा०३।१।८३।

१०३ बहुलम् । पा०३।३।११३।

१०४ भाव-आप्ययोः । पा०३।४।७०।

१०५ तव्य-अनीयर्-केलिमरः ।

पा०३।१।९६।+वा०१।

१०६ वास्तव्यः । पा०३।१।९६वा०२।

१०७ यत् । पा०३।१।९७।

१०८ पु-शकि-तकि-चति-यति-शसि-

सहि-यजः । पा०३।१।९८, ९९, ९७भा०।

१०९ गद-मद-यमोऽप्रादेः । पा०३।१।१००।

११० चरः । पा०३।१।१००।

१११ अगुरौ आङः ।

पा०३।१।१००वा०१।

११२ अवद्य-पण्य-वर्याः गर्ह्य-विक्रेय-

अनिरोधेषु । पा०३।१।१०१।

११३ बह्वं करणम् । पा०३।१।१०२।

११४ अर्यः स्वामि-वैश्ययोः ।

पा०३।१।१०३।

११५ ऋतुमती उपसर्या । पा०३।१।१०४।

११६ अजर्यं संगतम् । पा०३।१।१०५।

- ११७ वदः सुपः क्यप् च । पा० ३।१।१०६। १३६ घाद्या-पाय्य-आनाय्य-सानाय्य-
निकाय्या नास्ति ।
११८ भुवः । पा० ३।१।१०७। पा० ३।१।१२६, १२७।
११९ भावे हनस्त च ।
पा० ३।१।१०८, १०७।
१२० इण्-स्तु-शासु-वृञ्-दृ-जुषः । १३७ ऋतौ कुण्डपाय्य-संचाय्यौ ।
पा० ३।१।१०९+वा० १। पा० ३।१।१३०।
१२१ ऋदुपान्ताद् अक्लृपि-चृतः । १३८ अग्नौ चित्या-उपचाय्य-
परिचाय्याः । पा० ३।१।१३१, १३२।
पा० ३।१।११०। १३९ कर्तरि ण्वुल्-तृच्-अचः ।
१२२ खेयम् । पा० ३।१।१११। पा० ३।१।१३३, १३४वा० १।
१२३ भृञः असंज्ञायाम् । पा० ३।१।११२। पा० ३।४।६७।
१२४ समो वा । पा० ३।१।११२वा० ४।
१२५ कृ-वृषि-मृजि-शंसि-दुहि-गुहः । १४० नन्दि-ग्रहादिभ्यो ल्यु-णिनी ।
पा० ३।१।१२०, ११३। पा० ३।१।१३४।
तथा काशिका ३।१।१०६। १४१ ज्ञा-कृ-प्री-इगुपान्तात् कः ।
पा० ३।१।१३५।
१२६ राजसूय-रुच्य-कृष्टपच्य-अव्यध्याः १४२ आतः प्रादिभ्यः । पा० ३।१।१३६।
पा० ३।१।११४। १४३ पा-घ्रा-ध्मा-धेद्-दृशः शः ।
पा० ३।१।१३७।
१२७ कुप्य-आज्य-भिद्य-उद्धच-सिध्य- १४४ धारि-पारि-वेदि-उदेजि-चेति-
युग्यानि नास्ति । पा० ३।१।११४, १०६। साति-साहि-विन्दः अप्रादेः ।
वा० २ । पा० ३।१।११५, ११६, १२१। पा० ३।१।१३८+वा० २+भा० १।
१२८ जित्या-विपूय-विनीया हलि- १४५ लिपोनेश्च । पा० ३।१।१३८+वा० १।
मुञ्ज-कल्केषु । पा० ३।१।११७। १४६ ज्वलादिभ्यो णो वा ।
पा० ३।१।१४०, १३६।
१२९ पद-अस्वैरि-पक्ष्य-बाह्यासु १४७ श्या-आत्-इण्-व्यध-श्चस-तनः ।
ग्रहः । पा० ३।१।११६। पा० ३।१।१४१, १४०वा० १।
१३० ऋ-हलो ण्यत् । पा० ३।१।१२४। १४८ आ-समः स्त्रोः । पा० ३।१।१४१।
१३१ पाणि-समवाभ्यां सृजः । १४९ ह्र-सः अवात् । पा० ३।१।१४१।
पा० ३।१।१२४वा० १, २। १५० दु-न्यः अप्रादेः । पा० ३।१।१४२।
१३२ ओः आवश्यके । पा० ३।१।१२५। १५१ भुवो वा । काशिका ३।१।१४३।
१३३ आसु-यु-वपि-रपि-लपि-त्रपि-चमि- १५२ ग्रहः । पा० ३।१।१४३।
दभः । पा० ३।१।१२६, १२४वा० ३।

१ अत्र काशिकायाम् अस्मिन् सूत्रे “भवतेश्च इति वक्तव्यम्” इत्येवं निर्दिश्य भुवः ग्रहणम् ।

- १५३ गेहे कः । पा० ३।१।१४४। १५७ नृति-खनि-रजः शिल्पिनि ष्वुन् ।
 १५४ गः थकन् । पा० ३।१।१४६। पा० ३।१।१४५+भा०।
 १५५ ण्युट् । ३।१।१४७। १५८ प्रु-सृ-त्वः वुन् । पा० ३।१।१४६।
 १५६ हः व्रीहि-कालयोः । पा० ३।१।१४८। १५९ आशिषि । पा० ३।१।१५०।

[प्रथमस्य अध्यायस्य प्रथमः पादः समाप्तः]

[द्वितीयः पादः]

- १ व्याप्याद् अण् । पा० ३।२।१। १६ वह-अभ्राद् लिहः । पा० ३।२।३२।
 २ आतः अप्रादेः कः । पा० ३।२।३। १७ परिमाणात् पचः । पा० ३।२।३३।
 ३ सुपः । पा० ३।२।४+वा०+भा०। १८ मित-नखात् । पा० ३।२।३४।
 ४ चरेः टः । पा० ३।२।१६। १९ विधु-अरुस्-तिलात् तुदः ।
 ५ पुरस्-अग्रतस्-अग्रेभ्यः सतैः । पा० ३।२।३५। पा० ३।२।२८+वा०१।
 ६ पूर्वात् कर्तुः । पा० ३।२।१६। २० वातमज-शर्धजह-इरंमद-परंतप-
 ७ कृवः हेतु-शील-अनुलोमेषु । द्विषंतप-भगंदर-पुरंदराः । पा० ३।२।
 पा० ३।२।२०। २८+वा०१। पा० ३।२।३७, ३६,
 ८ स्तम्भ-शकृ-द्व्यां व्रीहि-वत्सयोः इन् । ४१। काशिका ३।२।४१।
 पा० ३।२।२४+वा०१। २१ उग्र-असूर्याद् दृशः ।
 ९ हवः दृति-नाथात् पशौ । पा० ३।२।३७, ३६।
 पा० ३।२।२५। २२ ललाटात् तपः । पा० ३।२।३६।
 १० फलेग्रहिः आत्मंभरिः कुक्षिभरिः । २३ प्रिय-वशाद् वदः । पा० ३।२।३८।
 पा० ३।२।२६+वा०१। २४ वाचंयमो व्रते । पा० ३।२।४०।
 ११ एजेः खश् । पा० ३।२।२८। २५ सर्वात् सहः । पा० ३।२।४१।
 १२ शुनी-स्तनात् घेटः । पा० ३।२।२८। २६ कूल-अभ्र-करीषाच्च कषः ।
 वा०१। पा० ३।२।२६। पा० ३।२।४२।
 १३ नासिका-नाडी-मुष्टि-घटी-खरीभ्यः । २७ मेघ-श्रुति-भयात् कृवः खः ।
 पा० ३।२।२६, ३०, २६+भा०। पा० ३।२।४३।
 १४ ध्मः पाण्यादिभ्यश्च । २८ क्षेम-प्रिय-मद्राद् अण् च ।
 पा० ३।२।२६, ३०, ३७। पा० ३।२।४४।
 १५ कूलाद् उदो रुजि-वहः । २९ आशिताद् भुवः भाव-करणयोः ।
 पा० ३।२।३१। पा० ३।२।४५।

३० भृ-वृ-तृ-जि-सहि-तपि-दमो नाम्नि ।
पा० ३।२।४६।

३१ धारेर्धर् च । पा० ३।२।४६।

३२ गमः । पा० ३।२।४७।

३३ विहायसो विह च । पा० ३।२।३८
वा० २।

३४ खड् । पा० ३।२।३८वा० ३।

३५ डः । पा० ३।२।३८वा० ४।

३६ उरगः । पा० ३।२।४८वा० २।

३७ हनः । पा० ३।२।४९, ५०।

३८ शीर्ष-कुमाराद् णिनिः । पा० ३।२।५१।

३९ टक् । पा० ३।२।५२, ५३।

४० शक्तौ हस्ति-कपाटात् । पा० ३।२।५४।

४१ नगराद् अहस्तिनि ।
पा० ३।२।५३ भा०।

४२ पाणिघ-ताडघौ शिल्पिनि ।
पा० ३।२।५५।

४३ राजघः । पा० ३।२।५५वा० १।

४४ गः । पा० ३।२।८।

४५ सीधु-सुरात् पिबः ।
पा० ३।२।८वा० १।

४६ सुभग-आढ्य-स्थूल-पलित-नग्न-अन्ध-
प्रियाद् अच्चेर्भुवः खिण्णुच्-खुकञौ ।
पा० ३।२।५७, ५६।

४७ कृञः करणे ल्युन् । पा० ३।२।५६।

४८ स्पृशः अनुदकात् क्विन् ।
पा० ३।२।५८।

४९ दधृग्-उष्णिक्-क्रुञ्चः । पा० ३।२।५९।

५० अञ्चु-युजः । पा० ३।२।५९।

५१ समान-अन्य-त्यदादेः उपमानाद्
व्याप्ये दृशः कस-कञौ च । पा० ३।२।
६०+वा० १। काशिका ३।२।६०।

५२ भजो ण्विः । पा० ३।२।६२।

५३ क्विप्-क्विच्-मनिन्-क्वनिप्-वनिपः ।
पा० ३।२।७४, ७६।

५४ दुहो दुघः । पा० ३।२।७०।

५५ आवश्यके णिनिः । पा० ३।३।१७०।

५६ अजातेः शील-आभीक्ष्ण्ययोः ।
पा० ३।२।७८, ८१।

५७ साधोः । पा० ३।२।७८वा० १।

५८ कर्तुः उपमानात् । पा० ३।२।७९।

५९ व्रते । पा० ३।२।८०।

६० मनः । पा० ३।२।८२।

६१ आत्मनि खश्च । पा० ३।२।८३।

६२ भूते । पा० ३।२।८४।

६३ यजः । पा० ३।२।८५।

६४ हनः कुत्सायाम् । पा० ३।२।८६।
काशिका ३।२।८६।

६५ डः । पा० ३।२।९७।

६६ क्तवतुः । पा० ३।२।१०२।
पा० १।१।२६।

६७ भाव-आप्ययोः क्तः । पा० ३।२।१०२।
पा० ३।४।७०।

६८ कर्तरि च आरम्भे । पा० ३।४।७१।

६९ श्लिष-शीङ्-स्था-आस-वस-जन-रुह-
जृभ्यः । पा० ३।४।७२।

७० गत्यर्थान्नाप्याद् आधारे च ।
पा० ३।४।७२, ७६।

७१ आहारार्थात् । पा० ३।४।७६।

७२ जृषः अतृन् । पा० ३।२।१०४।

७३ श्रु-सद्-वसो लिट् वा ।
पा० ३।२।१०८।

७४ लिटः क्वसुः । पा० ३।२।१०७।

७५ ईयिवान्-अनाश्चान्-अनूचानः ।
पा० ३।२।१०९।

७६ लुङ् । पा० ३।२।११०।

- ७७ अनद्यतने लङ् । पा०३।२।१११। १०१ न य-दीक्षः । पा०३।२।१५२, १५३।
 ७८ स्मृत्युक्तौ लृट् । पा०३।२।११२। १०२ लष-पत-पद-स्था-भू-शृ-वृष-हन-कम-
 ७९ न यदि । पा०३।२।११३। गमः उकच् । पा०३।२।१५४।
 ८० वा आकाङ्क्षायाम् । पा०३।२।११४। १०३ जल्प-भिक्ष-कुट्ट-लुण्ट-वृडः षाकन् ।
 ८१ परोक्षे लिट् । पा०३।२।११५। पा०३।२।१५५।
 ८२ वर्तमाने लट् । पा०३।२।१२३। १०४ स्पृहि-गृहि-पति-शीडः आलुच् ।
 ८३ विदेः श्वसुः । पा०७।१।३६। पा०३।२।१५८+वा०१।
 ८४ शतृ । पा०३।२।१२४। १०५ धे-सि-शद-सदो रुः ।
 ८५ इङः शक्तौ । पा०३।२।१३०। पा०३।२।१५९।
 ८६ शानच् । पा०३।२।१२४। १०६ सू-घस्-अदः क्मरच् ।
 ८७ शक्ति-वयः-शीलेषु । पा०३।२।१२९। पा०३।२।१६०।
 ८८ तौ लृटः । पा०३।२।१२७। १०७ भञ्जि-भास-मिदो घुरच् ।
 पा०३।३।१४। पा०३।२।१६१।
 ८९ शील-साधु-धर्मेषु तृन् । १०८ विदि-भिदि-च्छिदेः कुरच् ।
 पा०३।२।१३४, १३५। पा०३।२।१६२।
 ९० निरा-अलंभ्यां कुः इष्णुच् । १०९ इण्-जि-सृ-नशः क्वरप् ।
 पा०३।२।१३६। पा०३।२।१६३।
 ९१ उदः पच-पत-मदः । पा०३।२।१३६। ११० गत्वरः । पा०३।२।१६४।
 ९२ प्रजन-रुचि-अपत्रप-वृत्तु-वृधु- १११ जागुः ऊकः । पा०३।२।१६५।
 सह-चर-भ्राजः । पा०३।२।१३६। ११२ यज-जप-दह-दशो यङः ।
 तथा काशिका३।२।१३८। पा०३।२।१६६।
 ९३ भुवः । पा०३।२।१३८। ११३ सहि-चलि-वहः कि-किनौ ।
 ९४ जि-ग्लश्च वस्तुः । पा०३।२।१३९। पा०३।२।१७१भा०।
 ९५ स्थास्तुः । पा०३।२।१३९। ११४ पापतिः । पा०३।२।१७१वा०४।
 ९६ त्रसि-गृधि-धृषि-क्षिपेः क्तुः । ११५ चक्रि-सस्त्रि-जज्ञयः ।
 पा०३।२।१४०। पा०३।२।१७१वा०३।
 ९७ चाल-शब्दार्थाद् अनाप्याद् युच् । ११६ स्मि-अजस-हिंस-दीप-नम-कम-
 पा०३।२।१४८। कम्पो रः । पा०३।२।१६७।
 ९८ तङ्त्वतो हलादेरङः । पा०३।२।१४९। ११७ सन्-आशंस उः । पा०३।२।१६८।
 ९९ जु-चङ्क्रम्य-दन्द्रम्य-सृ-गृधि-ज्वल- ११८ विन्दुः इच्छुः । पा०३।२।१६९।
 शुच-लष-पत-पदः । पा०३।२।१५०।
 १०० क्रुध-भूषार्थात् । पा०३।२।१५१।

- ११६ स्वप्नक्-तृष्णक् । पा०३।२।१७२। १२२ स्था-भास-पिस-कसो वरच् ।
 १२० शृ-वन्देः आरुः । पा०३।२।१७३। पा०३।२।१७५।
 १२१ भियः क्रुः । पा०३।२।१७४। १२३ यो यङः । पा०३।२।१७६।

[प्रथमस्य अध्यायस्य द्वितीयः पादः समाप्तः]

[तृतीयः पादः]

- १ उणादयः । पा०३।३।१। २२ नीवाराः । पा०३।३।४८।
 २ भविष्यति लृट् । पा०३।३।१३,३। २३ यज्ञे संस्तावः । पा०३।३।३१।
 ३ अनद्यतने लुट् । पा०३।३।१५। २४ प्रस्त्रोऽन्यत्र । पा०३।३।३२।
 ४ माङि लुङ् । पा०३।३।१७५। २५ प्रथने वेः अशब्दे । पा०३।३।३३।
 ५ स्मपरे लङ् च । पा०३।३।१७६। २६ छन्दोनाम्नि । पा०३।३।३४।
 ६ तुमुन् भावे क्रियायां तदर्थायाम् । २७ अवात् त्रश्च । पा०३।३।१२०।
 पा०३।३।१०+भा०। २८ न्यायो नये । पा०३।३।३७।
 ७ घञ् कारके च । २९ पर्यायः क्रमे । पा०३।३।३८।
 पा०३।३।१६,१८,१९। ३० वि-उपात् शीङः । पा०३।३।३९।
 ८ संख्यातात् । पा०३।३।२०। ३१ हस्तप्राप्ये चेः अस्तेये ।
 पा०३।३।४०।
 ९ इङः षिद् वा । पा०३।३।२१+वा०१। ३२ चिति-राशि-वास-देहेषु चः कः ।
 पा०३।३।४१।
 १० शृ वायु-वर्ण-निवृत्तेषु । ३३ संघे अनुत्तराऽधरे । पा०३।३।४२।
 पा०३।३।२१+वा०२। ३४ उदः श्रि-यु-पू-दुवः । पा०३।३।४६।
 ११ प्रादिभ्यो रुवः । पा०३।३।२२। ३५ आक्रोशे नि-अवाद् ग्रहः ।
 पा०३।३।४५।
 १२ समो यु-दु-दुवः । पा०३।३।२३। ३६ समः मुष्टौ । पा०३।३।३६।
 १३ वेः क्षु-श्रुवः । पा०३।३।२५। ३७ परेः यज्ञे । पा०३।३।४७।
 १४ श्रि-भुवः अप्रादेः । पा०३।३।२४। ३८ प्रात् लिप्सायाम् । पा०३।३।४६।
 १५ नियः । पा०३।३।२४। ३९ वा वर्णिजाम् । पा०३।३।५२,५०।
 १६ अव-उदः । पा०३।३।२६। ४० रश्मौ । पा०३।३।५३।
 १७ परेर्द्युते । पा०३।३।३७। ४१ अवाद् वर्षविवन्धे । पा०३।३।५१।
 १८ प्रात् लु-दु-स्तुवः । पा०३।३।२७। ४२ आङो रु-प्लोः । पा३।३।५०।
 १९ निर्-अभेः पू-ल्वः । पा०३।३।२८।
 २० नि-उदो ग्रः । पा०३।३।२९।
 २१ कृ धान्ये । पा०३।३।३०।

४३ वृचः आच्छादे । पा०३।३।५४।

४४ परेर्भुवः अवज्ञाने । पा०३।३।५५।

४५ एः अच् । पा०३।३।५६।

४६ स्था-स्ना-पा-व्यधि-हनि-युधः कः ।

पा०३।३।५८वा०४।

४७ ऋत्-ओः अप् । पा०३।३।५७।

४८ ग्रह-वृ-दृ-निश्चि-गम-वश-रणः ।

पा०३।३।५८+वा०३।

४९ प्रादिभ्यः अदः । पा०३।३।५९।

५० नेर्ण च । पा०३।३।६०।

५१ व्यध-जपः अप्रादेः । पा०३।३।६१।

५२ स्वन-हसो वा । पा०३।३।६२।

५३ यमः सं-वि-उपाच्च । पा०३।३।६३।

५४ नेः । पा०३।३।६३।

५५ गद-नद-पठ-स्वनः । पा०३।३।६४।

५६ क्वणो वीणायाश्च । पा०३।३।६५।

५७ पणः परिमाणे । पा०३।३।६६।

५८ मदः अप्रादेः । पा०३।३।६७।

५९ प्र-संभ्यां हर्षे । पा०३।३।६८।

६० सम्-उद्भ्याम् अजः पशुषु ।

पा०३।३।६९।

६१ प्रजने सर्तेः । पा०३।३।७१।

६२ हवः । पा०३।३।७५।

६३ निपानम् आहावः । पा०३।३।७४।

६४ वधः घातः । पा०३।३।७६।

६५ मूर्तो घनः । पा०३।३।७७।

६६ गृहांशे प्रघाणः । पा०३।३।७९।

६७ परिघ-उद्घ-निघाः ।

पा०३।३।८४,८६,८७।

६८ डिवतः कित्रः । पा०३।३।८८।

६९ टिवतः अथुच् । पा०३।३।८९।

७० विछ-रक्षो नङ् । पा०३।३।९०।

७१ प्रादिभ्यः दा-धः किः ।

पा०३।३।९२।

७२ व्याप्याद् आधारे । पा०३।३।९३।

७३ अभिविधौ इनुण् । पा०३।३।९४।

७४ स्त्रियां क्तिन् । पा०३।३।९४।

७५ ऊति-यूति-जूति-साति-हेति-कीर्तयः ।

पा०३।३।९७।

७६ व्यतिहारे णच् । पा०३।३।९३।

७७ नाम्नि क्तिच् । पा०३।३।१७४।

७८ समज-मन-विद-सु-शी-भृञ्-इणः भावे

क्यप् । पा०३।३।९९।

७९ नेः सत्-पतः । पा०३।३।९९।

८० कृ-व्रज-यजः । पा०३।३।१००,९८।

८१ मृगया-अटाट्ये । पा०३।३।१०१भा०।

८२ परेः सू-चरो यः । पा०३।३।१०१भा०।

८३ जागुः । पा०३।३।१०१भा०।

८४ अः सनाद्यन्ताच्च ।

पा०३।३।१०१भा०।१०२।

८५ गुरोर्हलः । पा०३।३।१०३।

८६ भिदादिषितोऽङ् । पा०३।३।१०४।

८७ आतः अन्तः-प्रादिभ्यः । पा०३।३।

१०६ तथा काशिका ३।३।१०६।

८८ कुम्बि-चर्चिभ्याम् । पा०३।३।१०५।

८९ णि-श्रन्थ-ग्रन्थ-विद-आस-घट्ट-

वन्दो युच् । पा०३।३।१०७+वा०१।

९० इषः अनिच्छायाम् ।

पा०३।३।१०७ वा०२।

९१ ण्वुच् । पा०३।३।१११।

९२ प्रश्न-आख्यानयोः इन् च ।

पा०३।३।११०।

९३ संपदादिभ्यः क्विप् ।

पा०३।३।१०८ वा०९।

- ६४ आक्रोशे नवः अनिः । ११५ आश्चर्ये । पा०३।३।१५०।
 पा०३।३।११२। ११६ शेषे लृट् । पा०३।३।१५१।
 ६५ ग्ला-हा-ज्यः । पा०३।३।१५ वा०४। ११७ उत्त-अप्योः बाढार्थे लिङ् ।
 ६६ इ-कि-श्तिपः स्वरूपे । पा०३।३।१५२।
 पा०३।३।१०८ वा०२। तथा काशिका३।३।१५२।
 ६७ ल्युट् । पा०३।३।११५। ११८ संभावने अलमर्थे तदर्थप्रयोगे ।
 ६८ ण्विबु-सिवो दीर्घश्च । पा०३।३।१५४।
 ६९ कृञः कर्तरि । ११९ धातूक्तौ अयदि वा ।
 १०० घः । पा०३।३।११८। पा०३।३।१५५।
 १०१ व्रज-व्यजौ । पा०३।३।११९। १२० हेतु-फलयोः । पा०३।३।१५६।
 १०२ खनः डर-इकौ च । १२१ विधि-संप्रश्न-प्रार्थनेषु ।
 पा०३।३।१२५+भा०। पा०३।३।१६१।
 १०३ ईषद्-दुःसुभ्यः खल् । १२२ लोट् । पा०३।३।१६२।
 पा०३।३।१२६। १२३ प्रेष-अनुज्ञा-प्राप्तकालेषु ।
 १०४ कर्तृ-आप्याभ्यां च भू-कृञः । पा०३।३।१६३।
 पा०३।३।१२७। १२४ लिङ् च ऊर्ध्वमौहूर्तिके ।
 १०५ आतः युच् । पा०३।३।१२८। पा०३।३।१६४।
 १०६ शासि-युधि-दृशि-धृषि-मृषः । १२५ स्मे लोट् । पा०३।३।१६५।
 पा०३।३।१३० वा०१+भा०। १२६ अधीष्टौ । पा०३।३।१६६।
 १०७ लिङि अतिपत्तौ लृङ् । १२७ काल-समय-वेलासु लिङ् यदि ।
 पा०३।३।१३९। पा०३।३।१६७, १६८।
 १०८ आ शेषाद् भूते वा । १२८ अर्ह-शक्त्योः ।
 पा०३।३।१४०, १४१। पा०३।३।१६९, १७२।
 १०९ गर्हायां कथमि लिङ् । १२९ अलं-खल्वोः प्रतिषेधे क्त्वा वा ।
 पा०३।३।१४३, १४२। पा०३।४।१८।
 ११० किमि लृट् च । पा०३।३।१४४। १३० मेङ् । पा०३।४।१९।
 १११ क्रोध-अश्रद्धयोः । पा०३।३।१४५। १३१ एककर्तृकयोः पूर्वात् ।
 ११२ किकिल-अस्त्यर्थयोः लृट् । पा०३।४।२१।
 पा०३।३।१४६। १३२ आभीक्ष्ये णमुल् च । पा०३।४।२२।
 ११३ यद्-यदि-यदा-जातुषु लिङ् । १३३ पूर्व-अग्रे-प्रथमेषु । पा०३।४।२४।
 पा०३।३।१४७+वा०१। १३४ व्याप्याद् आक्रोशे कृञः खमुच् ।
 ११४ यच्च-यत्रयोगर्हयां च । पा०३।४।२५।
 पा०३।३।१४८, १४९।

- १३५ स्वाद्वर्थात् अदीर्घात् ।
पा० ३।४।२६+वा० १।
१३६ जीवाद् ग्रहो णमुलू स चानु ।
पा० ३।४।३६, ४६।
१३७ हस्तेन । पा० ३।४।३६।
१३८ उपमानात् कर्तुश्च ।
पा० ३।४।४५, ४३।
१३९ उपदंशस्तृतीयायाम् । पा० ३।४।४७।
१४० हिंसार्थात् एकाप्यात् । पा० ३।४।४८।
१४१ सप्तम्यां च उपात् पीड-रुध-कर्षः ।
पा० ३।४।४९।
१४२ आसत्तौ । पा० ३।४।५०।
१४३ प्रमाणे । पा० ३।४।५१।
१४४ पञ्चम्यां त्वरायाम् । पा० ३।४।५२।
१४५ द्वितीयायाम् । पा० ३।४।५३।
१४६ अध्रुवे स्वाङ्गे । पा० ३।४।५४।
१४७ पीडायाम् । पा० ३।४।५५।
१४८ विशि-पति-पदि-स्कन्दां बीप्सा-
आभीक्ष्ण्ययोः । पा० ३।४।५६।
१४९ असु-तृषः कालेषु विच्छेदे ।
पा० ३।४।५७।
१५० नाम्नि ग्रह-आदिशः ।
पा० ३।४।५८।

[प्रथमस्य अध्यायस्य तृतीयः पादः समाप्तः]

[चतुर्थः पादः]

- १ लः तिप्-तस्-झि-सिप्-थस्-थ-मिप्-
वस्-मस्-ता-तां-झ-थास्-आथां-ध्वम्-
इट्-वहि-महिङ् । पा० ३।४।७७, ७८।
२ अतः आतः इत् ।
पा० ७।२।८१, ८०। पा० ६।१।६६।
३ झः अन्तः । पा० ७।१।३।
४ द्विरुक्ताद् अत् । पा० ७।१।४।
५ जक्षादिभ्यः पञ्चम्यः । पा० ६।१।६, ५।
६ तङि अनतः । पा० ७।१।५।
७ शीङो रत् । पा० ७।१।६।
८ वेत्तेर्वा । पा० ७।१।७।
९ लिटः इरच् । पा० ३।४।८१।
१० तस्य एश् । पा० ३।४।८१।
११ अतङां णल्-अनुस्-उस्-
थल्-अथुस्-अण्-अल्-व-माः ।
पा० ३।४।८२।
१२ विदो लटो वा । पा० ३।४।८३।
१३ ब्रुवः पञ्चानामादित आह च ।
पा० ३।४।८४।
१४ आतो णल औः । पा० ७।१।३४।
१५ टित् तङाम् एत् । पा० ३।४।७६।
१६ आमः । पा० ३।४।७६।
१७ थासः से । पा० ३।४।८०।
१८ लुट आद्यानां डा-रौ-रसः ।
पा० २।४।८५।
१९ तङाम् । पा० २।४।८५।
२० लोट एः उः । पा० ३।४।८६, ८५।
२१ सेः हिङ् । पा० ३।४।८७।
२२ आशिषि तु-ह्योः तातङ् वा ।
पा० ७।१।३५।
२३ मेः आनिः । पा० ३।४।८६।
२४ आम् एतः । पा० ३।४।८०।

२५ स्-वो वा-ऽमौ । पा०३।४।६१।

२६ इडादीनाम् ऐप् । पा०३।४।६३।

२७ व्-मोः टाप् । पा०३।४।६२।

२८ त-स्थ-स्थानां तां-तं-ता डित्श्च ।

पा०३।४।१०१।

२९ वस्-मसोर्लोपः ।

पा०३।४।६६, ६८, ६७।

३० इतः अतडि । पा०३।४।१००, ६७।

३१ मिपः अम् । पा०३।४।१०१।

३२ लिङः सीयुट् । पा०३।४।१०२।

३३ यासुट् अतङः कित् ।

पा०३।४।१०४, १०३।

३४ डित् अनाशिषि । पा०३।४।१०३।

३५ अत् इय् । पा०७।२।८०।

३६ सो लोपः अनन्त्यस्य । पा०७।२।७६।

३७ झस्य रन् । पा०३।४।१०५ ।

३८ इटः अत् । पा०३।४।१०६।

३९ सुट् त-थोः । पा०३।४।१०७।

४० झेः जुस् । पा०३।४।१०८।

४१ सिचः । पा०३।४।१०९।

४२ आतः । पा०३।४।११०।

४३ लङो द्विषश्च वा ।

पा०३।४।१११, ११२।

४४ विदः । पा०३।४।१०९।

४५ अति । पा०३।४।१०९।

४६ तङाना यथापाठम् । पा०१।३।१२।

४७ भाव-आप्ययोः । पा०१।३।१३।

४८ डितः । पा०१।३।१२।

४९ विनिमये । पा०१।३।१४।

५० न गति-हिंसा-शब्दार्थहसः ।

पा०१।३।१५+वा०१।

५१ नेर्विशः । पा०१।३।१७।

५२ परि-वि-अवात् क्रियः । पा०१।३।१८।

५३ वि-पराभ्यां जेः । पा०१।३।१९।

५४ आङः दः । पा०१।३।२०।

५५ न स्वप्रसारणे ।

पा०१।३।२०+वा०१, २।

५६ गमेः क्षान्तौ । पा०१।३।२१ वा०२।

५७ नु-प्रच्छः । पा०१।३।२१ वा०६।

५८ क्रीडः अनु-परिभ्यां च ।

पा०१।३।२१।

५९ समः अकूजने । पा०१।३।२१ वा०१।

६० अपस्करः । पा०१।३।२१ वा०४।

६१ ह्रजः गतिशीले । पा०१।३।२१ वा०५।

६२ आशिषि नाथः । पा०१।३।२१ वा०७।

६३ शपः शपथे । पा०१।३।२१ वा०८।

६४ स्थः प्रतिज्ञा-निर्णय-प्रकाशनेषु ।

पा०१।३।२२ वा०१। पा०१।३।२३।

६५ सं-वि-प्र-अवात् । पा०१।३।२२।

६६ उदः अनुध्वेहायाम् ।

पा०१।३।२४+वा०१।

६७ उपात् मन्त्रेण । पा०१।३।२५।

६८ पथि-आराधनयोः ।

पा०१।३।२५ भा०।

६९ वालिप्सायाम् । पा०१।३।२५ वा०२।

७० अव्याप्यात् । पा०१।३।२६।

७१ समः गम्-ऋछि-प्रछि-स्वृ-श्रु-वेत्ति-

अर्ति-दृशः । पा०१।३।२६+वा०१, २।

७२ प्रादिभ्यः असु-ऊहो वा ।

पा०१।३।२६ वा०३।

७३ आङः यम-हनः स्वाङ्गाप्याच्च ।

पा०१।३।२८+वा०१।

७४ व्युदस्तपः । पा०१।३।२७।

७५ तपआप्यात् । पा०३।१।८८।

- ७६ नि-सं-वि-उपेभ्यः द्वः । पा० १।३।३०। १०० किरादि-श्रन्थ-ग्रन्थ-सनाम् आप्ये ।
 ७७ स्पर्धायाम् आङः । पा० १।३।३१। पा० ३।१।८७ वा० १८।
 ७८ सूचन-अवक्षेपण-सेवा-साहस-
 यत्न-कथा-उपयोगेषु कृञः । पा० ३।१।८६ भा०।
 पा १।३।३२। १०१ लुङि अचः । पा० ३।१।६२।
 ७९ अधेः शक्तौ । पा० १।३।३३। पा० ३।१।४३।
 ८० वेः शब्दाप्यात् । पा० १।३।३४। १०२ स्नु-नमः स्वयम् ।
 ८१ अव्याप्यात् । पा० १।३।३५। पा० ३।१।८६। पा० ३।१।८७।
 ८२ पूजा-उत्सङ्ग-उपनयन-ज्ञान-भृति-
 व्यय-विगणनेषु नियः । पा० १।३।३६। १०३ सृजः श्राद्धे ।
 ८३ कर्तृस्थामूर्ताप्यात् । पा० १।३।३७। पा० ३।१।८७ वा० १५+भा०।
 ८४ वृत्ति-उत्साह-तायनेषु क्रमः । १०४ शे इयन् ।
 पा० १।३।३८। पा० ३।१।८७ वा० १५+भा०।
 ८५ परा-उपात् । पा० १।३।३९। १०५ लुङि ते चिण् ।
 ८६ आङो ज्योतिरुद्गतौ । १०६ उदश्चरः साप्यात् ।
 पा० १।३।४०+वा० १। पा० १।३।५३।
 ८७ वेः पादाभ्याम् । पा० १।३।४१। १०७ समस्तृतीयायुक्तात् । पा० १।३।५४।
 ८८ प्र-उपाद् आरम्भे । पा० १।३।४२। १०८ दाणः सा चेत् चतुर्थ्यर्थे ।
 ८९ अप्रादेः वा । पा० १।३।४३। पा० १।३।५५।
 ९० निह्लवे ज्ञः । पा० १।३।४४। १०९ उपयम उद्वाहे ।
 ९१ अव्याप्यात् । पा० १।३।४५। पा० १।३।५६ तथा काशिका १।३।५६।
 ९२ सं-प्रतेः अस्मृतौ । पा० १।३।४६। ११० आमः कृञः प्राग्वत् ।
 ९३ ज्ञान-यत्न-उपच्छन्दनेषु वदः । पा० १।३।६३। पा० १।३।६२।
 पा० १।३।४७। १११ सनः । पा० १।३।६२।
 ९४ अनोः अव्याप्यात् । पा० १।३।४८। ११२ स्मृ-दृशः । पा० १।३।५७।
 ९५ विमतौ । पा० १।३।५०। ११३ अननोर्ज्ञः । पा० १।३।५८।
 ९६ व्यक्तं सहोक्तौ । पा० १।३।४८। ११४ श्रुवः अनाङ्ग-प्रतेः । पा० १।३।५९।
 ९७ तयोर्वा । पा० १।३।५०। ११५ शदेः शिति । पा० १।३।६०।
 पा० १।३।४८ भा०। ११६ मृडो लुङ्-लिङोश्च । पा० १।३।६१।
 ९८ अवाद् गिरः । पा० १।३।५१। ११७ प्रादेः अजाद्यन्ताद् युजेः अयज्ञपात्रेषु ।
 ९९ समः प्रतिज्ञायाम् । पा० १।३।५२। पा० १।३।६४+भा०।
 ११८ समः क्षणुवः । पा० १।३।६५।
 ११९ भुजः अपालने । पा० १।३।६६।
 १२० प्रयोजकाद् भी-स्मेर्णः ।
 पा० १।३।६८। पा० १।३।६७।

- १२१ गृधि-वञ्चेः प्रलम्भने । १३५ रमो वि-आडोश्च । पा० १।३।८३।
 पा० १।३।६६। १३६ उपात् । पा० १।३।८४।
 १२२ लियः पूजा-अभिभवयोश्च । १३७ अव्याप्याद् वा । पा० १।३।८५।
 पा० १।३।७०। १३८ अणौ चित्तवत्कर्तृकाद् णेः ।
 १२३ मिथ्यायोगे कृवः अभ्यासे । पा० १।३।८८, ८६।
 पा० १।३।७१। १३९ चलन-आहारार्थात् । पा० १।३।८७।
 १२४ फलवति । पा० १।३।७२। १४० प्रु-दु-लु-बुध-युध-इङ्-नश-जनः ।
 १२५ पाठे विभाषितात् । पा० १।३।७२। पा० १।३।८६।
 १२६ वितः । पा० १।३।७२। १४१ न पा-दम-आयम-आयस-परिमुह-
 १२७ अपवदः । पा० १।३।७३। अत्ति-रुचि-नृति-धेट्-वद-वसः ।
 १२८ सम्-उद्-आङ्म्यो यमेः अग्रन्थे । पा० १।३।८९+वा० १
 पा० १।३।७५। तथा काशिका १।३।८७।
 १२९ अप्रादेर्ज्ञः । पा० १।३।७६। १४२ वा क्यषः । पा० १।३।९०।
 १३० शब्दान्तरगतौ वा । पा० १।३।७७। १४३ द्यु-द्व्यो लुङि । पा० १।३।९१।
 १३१ न अनु-पराभ्यां कृवः । १४४ वृ-द्व्यः स्थ-सन्तोः । पा० १।३।९२।
 पा० १।३।७९, ७८। १४५ लुटि क्लृपः । पा० १।३।९३।
 १३२ प्रति-अति-अभीनां क्षिपः । १४६ युष्मदि मध्यमत्रयम् ।
 पा० १।३।८०। पा० १।४।१०५, १०१।
 १३३ प्राद् वहः । पा० १।३।८१। १४७ अस्मदि उत्तमम् । पा० १।४।१०७।
 १३४ परेर्मुषश्च । पा० १।३।८२ तथा १४८ एक-द्वि-बहुषु ।
 काशिका १।३।८२। पा० १।४।१०२। पा० १।४।२१, २२।

[प्रथमस्य अध्यायस्य चतुर्थः पादः समाप्तः]

[चान्द्रे व्याकरणे प्रथमः अध्यायः समाप्तः]

[द्वितीयः अध्यायः प्रथमः पादः]

- १ सु-औ-जस्-अम्-औट्-शस्-
टा-भ्यां-भिस्-डे-भ्यां-भ्यस्-
डसि-भ्यां-भ्यस्-डस्-ओस्-आम्-
डि-ओस्-सुप् । पा०४।१।२।
- २ अतो भिस ऐस् । पा०७।१।६।
- ३ इदम्-अदसोः कात् । पा०७।१।११।
- ४ टा-डसोः इन-स्यौ । पा०७।१।१२।
- ५ डे-डस्योः य-आतौ ।
पा०७।१।१३,१२।
- ६ सर्वादिभ्यः स्मै-स्मातौ ।
पा०७।१।१४,१५।
- ७ डेः स्मिन् । पा०७।१।१५।
- ८ जसः शीः । पा०७।१।१७।
- ९ आत् आमः साम् । पा०७।१।५२,५०।
- १० न अन्यच्च नामा-ऽप्रधानात् ।
पा०१।१।२७ वा०२।
- ११ तृतीयार्थयोगे । पा०१।१।३०+भा०।
- १२ चार्थसमासे । पा०१।१।३१।
- १३ शी वा । पा०१।१।३२।
- १४ प्रथम-चरम-तय-अय-अल्प-अर्ध-नेम-
कतिपयात् । पा०१।१।३३।
- १५ पूर्वादिभ्यो नवभ्यः स्मात्-स्मिनौ च ।
पा०७।१।१६। पा०१।१।३४-३६।
- १६ स्मै च तीयात् । पा०१।१।३६ वा०३।
- १७ आपः औतः शीः । पा०७।१।१८,१७।
- १८ नपुंसकात् । पा०७।१।१९।
- १९ जस्-शसोः शिः । पा० ७।१।२०।
- २० अष्टाभ्यः औश् । पा ७।१।२१।
- २१ ष्-णः संख्याया लुक् ।
पा०७।१।२२। पा०१।१।२४,२३।
- २२ कतेः । पा०१।१।२५।
- २३ सु-अमोः नपुंसकात् । पा०७।१।२३।
- २४ अतः अम् । पा०७।१।२४।
- २५ डतरादिभ्यः पञ्चभ्यः अनेकतरात् तः।
पा०७।१।२५,२६ वा०१।
- २६ युष्मद्-अस्मद्भ्यां डसः अश् ।
पा०७।१।२७।
- २७ डे-सुटः अम् । पा०७।१।२८।
- २८ शसः नः । पा०७।१।२९।
- २९ भ्यसः अभ्यम् । पा०७।१।३०।
- ३० डसेश्च अत् । पा०७।१।३१,३२।
- ३१ आमः आकम् । पा०७।१।३३।
- ३२ ह्रस्व-आपो नुट् । पा०७।१।५४।
- ३३ संख्याया अनतः । पा०७।१।५५।
- ३४ त्रयाणाम् । पा०७।१।५३।
- ३५ स्त्री-यूभ्याम् । पा०७।१।५४।
पा०१।४।३।
- ३६ सेयुवो वा । पा०१।४।५।
- ३७ स्त्रीणाम् । पा०१।४।४।
- ३८ सुपः असंख्याद् लुक् ।
पा०२।४।८२,५८।
- ३९ ऐकार्थ्ये । पा०२।४।७१।
पा०१।२।४५,४६।
- ४० ततः प्राक् कारकात् ।
पा०१।१।४१,३७।
- ४१ न अतः अम् अपञ्चभ्याः ।
पा०२।४।८३।
- ४२ तृतीया-सप्तम्योर्वा । पा०२।४।८४।
- ४३ क्रियाप्ये द्वितीया । पा०२।३।२।
पा०१।४।४६-५१।

- ४४ गति-बोध-आहार-शब्दार्थ-
अनाप्यानां प्रयोज्ये । पा० १।४।५२।
- ४५ हु-क्रोर्वा । पा० १।४।५३।
- ४६ दृश्-अभिवाद्योः तडाने ।
पा० १।४।५३ वा० १।
- ४७ न नी-खादि-अदि-ह्ला-शब्दाय-ऋन्दः ।
पा० १।४।५२ वा० ५, १भा०।
- ४८ वहेः अनियन्तृके ।
पा० १।४।५२ वा० ६।
- ४९ भक्षेः अहिंसायाम् ।
पा० १।४।५२ वा० ७।
- ५० समया-निकषा-हा-धिग्-अन्तरा-
अन्तरेणयुक्तात् पा० २।३।२
वा० १+भा०।पा० २।३।४।
- ५१ द्वित्वे अध्यादिभिः ।
पा० २।३।२ भा०।
- ५२ सर्व-अभि-परि-उभयात् तसा ।
पा० २।३।२ भा०।
- ५३ एनपा । पा० २।३।३१।
- ५४ लक्षण-वीप्सा-इत्थंभूतेषु अभिना ।
पा० १।४।६१, ६०, ८३। पा० २।३।८।
- ५५ प्रति-परिभ्यां भागे च । पा० १।४।६०।
- ५६ अनुना । पा० १।४।६०।
- ५७ सहार्थे । पा० १।४।८५।
- ५८ हीने । पा० १।४।८६।
- ५९ उपेन । पा० १।४।८७।
- ६० सप्तमी आधिक्ये । पा० २।३।६।
- ६१ स्वाम्ये अधिना । पा० २।३।६।
पा० १।४।६७।
- ६२ कर्तरि तृतीया । पा० २।३।१८।
- ६३ करणे । पा० २।३।१८।
- ६४ परिक्रियश्चतुर्थी च । पा० १।४।४४।
- ६५ सहार्थेन । पा० २।३।१६।
- ६६ लक्षणे । पा० २।३।२१।
- ६७ संज्ञः व्याप्ये वा । पा० २।३।२२।
- ६८ हेतौ । पा० २।३।२३।
- ६९ ऋणे पञ्चमी । पा० २।३।२४।
- ७० गुणे वा । पा० २।३।२५।
- ७१ षष्ठी हेतुना । पा० २।३।२६।
- ७२ सर्वाः सर्वादिभ्यः हेत्वर्थः ।
पा० २।३।२७+भा०।
- ७३ संप्रदाने चतुर्थी । पा० २।३।१३।
- ७४ रुचिमति । पा० १।४।३३।
- ७५ धारेः उत्तमर्णे । पा० १।४।३५।
- ७६ कोपस्थाने अनाप्ये ।
पा० १।४।३७, ३८।
- ७७ प्रति-अनुभ्यां गृणः व्याप्ये ।
पा० १।४।४१।
- ७८ नमः-स्वस्ति-स्वाहा-स्वधा-वषट्-
शक्तार्थः । पा० २।३।१६+वा० २।
- ७९ तादर्थ्ये । पा० २।३।१३ वा० १।
- ८० मन्याप्ये कुत्सायाम् अनावादौ वा ।
पा० २।३।१७+भा०।
- ८१ अवधेः पञ्चमी ।
पा० २।३।२८।पा० १।४।२४।
- ८२ परि-अपाभ्यां वर्जने ।
पा० २।३।१०।पा० १।४।८८।
- ८३ प्रतिना प्रतिनिधि-प्रतिदानयोः ।
पा० २।३।११। पा० १।४।६२।
- ८४ ऋते द्वितीया च । पा० २।३।२६।
- ८५ विना तृतीया च । पा० २।३।३२।
तथा काशिका २।३।३२।
- ८६ पृथग्-नानाभ्याम् । पा० २।३।३२।
- ८७ स्तोक-अल्प-कृच्छ्र-कतिपयाद्
असत्त्वार्थात् करणे । पा० २।३।३३।

- ८८ सप्तमी आधारे । पा० २।३।४७।
 ८९ निमित्ताद् व्याप्येन । पा० २।३।५०। तथा काशिका २।३।५०।
 ९० यत्क्रिया क्रियाचिह्नम् । पा० २।३।३७।
 ९१ षष्ठी च अनादरे । पा० २।३।३८।
 ९२ यतः निर्धारणम् । पा० २।३।४१।
 ९३ अर्थमात्रे प्रथमा । पा० २।३।४६।
 ९४ संबोधने । पा० २।३।४७।
 ९५ षष्ठी संबन्धे । पा० २।३।५०। तथा काशिका २।३।५०।
 ९६ तुल्यार्थस्तृतीया वा । पा० २।३।७२।
 ९७ हित-सुखाभ्यां चतुर्थी च । पा० २।३।७३।
 ९८ आशिषि आयुष्य-भद्रार्थ-कुशलार्थे । पा० २।३।७३। तथा काशिका २।३।७३।

[द्वितीयस्य अध्यायस्य प्रथमः पादः समाप्तः]

[द्वितीयः पादः]

- १ सुप् सुपा एकार्थम् । पा० २।१।४।
 २ असंख्यं विभक्ति-समीप-अभाव-
 ख्याति-पश्चात्-यथा-युगपत्-संपत्-
 साकल्यार्थे । पा० २।१।६।
 ३ यथा न तुल्ये । पा० २।१।७।
 ४ यावद् इयत्त्वे । पा० २।१।८।
 ५ प्रतिना मात्रार्थे । पा० २।१।९।
 ६ संख्या-अक्ष-शलाकाः परिणा द्यूते
 अन्यथावृत्तौ । पा० २।१।१०+भा०।
 ७ परि-अप-आङ्-बहिर्-अञ्चः
 पञ्चम्या वा । पा० २।१।११-१३।
 ८ लक्षणेन अभि-प्रती । पा० २।१।१४।
 ९ अनुः सामीप्य-आयामयोः । पा० २।१।१५, १६।
 १० तिष्ठद्गु-आदीनि । पा० २।१।१७।
 ११ पारे मध्ये षष्ठ्या वा । पा० २।१।१८।
 १२ संख्या वश्येन । पा० २।१।१९।
 १३ नदीभिः । पा० २।१।२०।
 १४ अन्यार्थे नास्मि । पा० २।१।२१।
 १५ तन्नपुंसकम् । पा० २।१।१८।
 १६ कारकं बहुलम् । पा० २।१।२४-४८।
 १७ चतुर्थी प्रकृत्या । पा० २।१।३६ भा०।
 १८ विशेषणम् एकार्थेन । पा० २।१।५७।
 १९ प्राप्त-आपन्नौ द्वितीयया अत्वं च । पा० २।२।४+भा०।
 २० नञ् । पा० २।२।६।
 २१ ईषद् गुणेन । पा० २।२।७+वा०१।
 २२ षष्ठी । पा० २।२।८।
 २३ न ल-निर्धार्य-पूरण-भाव-तृप्तार्थः । पा० २।२।११, १०।
 २४ कु-प्रादयः असुप्विधौ नित्यम् । पा० २।२।१८+वा०१।
 २५ ऊर्यादिकारिकाच्चिडाचः क्रियार्थः । पा० १।४।६१, ६० वा०१।
 २६ अनुकरणम् । पा० १।४।६२।
 २७ भूषण-आदर-अनादरेषु
 अलं-सत्-असतः । पा० १।४।६३, ६४।
 २८ अग्रहे अन्तः । पा० १।४।६५।
 २९ कणे-मनसी तृप्तौ । पा० १।४।६६।

- ३० पुरस्-अस्तम् असंख्यम् ।
पा० १।४।६७, ६८।
- ३१ अच्छ गत्यर्थ-वदिभिः । पा० १।४।६९।
- ३२ अदः अनुपदेशे । पा० १।४।७०।
- ३३ तिरः अन्तर्धौ । पा० १।४।७१।
- ३४ कृत्वा वा । पा० १।४।७२।
- ३५ उपाजे-अन्वाजे । पा० १।४।७३।
- ३६ साक्षात्-आदीनि । पा० १।४।७४।
- ३७ अनत्याधाने उरसि-मनसि-मध्ये-पदे-
निवचने । पा० १।४।७५, ७६।
- ३८ नित्यं हस्ते-पाणौ उद्वाहे ।
पा० १।४।७७।
- ३९ प्राध्वं बन्धे । पा० १।४।७८।
- ४० जीविका-उपनिषदौ औपम्ये ।
पा० १।४।७९।
- ४१ असंख्यं वा अनभिप्रेताख्याने क्त्वा ।
पा० ३।४।५९।
- ४२ तिर्यक् समाप्ती । पा० ३।४।६०।
- ४३ स्वाङ्गात् तस्-ना-धार्थं भुवा च ।
पा० ३।४।६१, ६२।
- ४४ तूष्णीम् । पा० ३।४।६३।
- ४५ अन्वग् आनुकूल्ये । पा० ३।४।६४।
- ४६ अनेकम् अन्यार्थे । पा० २।२।२४।
- ४७ तत्र गृहीत्वा तेन प्रहृत्य युद्धे सरूपम् ।
पा० २।२।२७।
- ४८ चार्थे । पा० २।२।२९।
- ४९ समाहारे नपुंसकम् । पा० २।४।१७।
- ५० अनुवादे चरणानां स्था-इणोर्लुङि ।
पा० २।४।३५-वा० १, २।
- ५१ अध्वर्यु-ऋतुनामनपुंसकानाम् ।
पा० २।४।४।
- ५२ संनिकृष्टपाठानाम् । पा० २।४।५।
- ५३ अप्राणिजातीनाम् । पा० २।४।६।
- ५४ नदी-देश-नगराणां भिन्नलिङ्गानाम् ।
पा० २।४।७।
- ५५ नित्यं वैरिणाम् । पा० २।४।८।
- ५६ कारुणाम् । पा० २।४।१०।
- ५७ गवाश्च-आदीनाम् । पा० २।४।११।
- ५८ प्राणि-तूर्याङ्गानाम् । पा० २।४।२।
- ५९ सेनाङ्गानां बहुत्वे ।
पा० २।४।२+१२वा० १।
- ६० क्षुद्रजन्तूनाम् । पा० २।४।८।
- ६१ फलानाम् । पा० २।४।१२ वा० १।
- ६२ वा वृक्ष-तृण-धान्य-मृग-शकुनि-
विशेषाणाम् । पा० २।४।१२।
- ६३ व्यञ्जनानाम् । पा० २।४।१२।
- ६४ अश्ववडवौ । पा० २।४।१२, २७।
- ६५ विरोधिनाम्-अद्रव्याणाम् ।
पा० २।४।१३।
- ६६ नदधिपय-आदीनाम् । पा० २।४।१४।
- ६७ नास्मि षष्ठ्याः कन्था उशीनरेषु ।
पा० २।४।२०।
- ६८ उपज्ञा-उपक्रमं तदादित्वे ।
पा० २।४।२१।
- ६९ ईश्वरार्थात् अराज्ञः सभा ।
पा० २।४।२३। काशिका २।४।२३।
- ७० अमनुष्यात् । पा० २।४।२३।
- ७१ अशाला । पा० २।४।२४।
- ७२ सेना-सुरा-शाला-निशा वा ।
पा० २।४।२५।
- ७३ छाया । पा० २।४।२५।
- ७४ बाहुल्ये । पा० २।४।२२।
- ७५ पथः असंख्यात् ।
पा० २।४।३०-वा० १।

७६ संख्यादिः समाहारे ।

पा० २।४।३० वा० २।

७७ अः स्त्री । पा० २।४।३० भा० ।

७८ वा आप् । पा० २।४।३० वा० ३।

७९ अनो लोपः । पा० २।४।३० भा० ।

८० न पात्रादयः । पा० २।४।३० भा० ।

८१ रात्र-अह्न-वाकाः पुंसि ।

पा० २।४।२६+वा० १।

८२ अहः असुदिन-पुण्यात् ।

पा० २।४।२६, ३० भा० ।

८३ नपुंसके च अर्धर्च-आदयः । पा० २।४।३१ ।

८४ सुपि ह्रस्वः । पा० १।२।४७ ।

८५ गोः अप्रधानस्य अन्त्यस्य ।

पा० १।२।४८ ।

८६ ड्यादीनाम् । पा० १।२।४८ ।

८७ लुक् अणादिलुकि अगोण्यादीनाम् ।

पा० १।२।४९, ५०+भा० ।

[द्वितीयस्य अध्यायस्य द्वितीयः पादः समाप्तः]

[तृतीयः पादः]

१ स्त्रियाम् । पा० ४।१।३।

२ ऋ-नो ङीप् । पा० ४।१।५।

३ उगितः । पा० ४।१।६।

४ अञ्चः । पा० ४।१।६ वा० २।

५ अहशो वनो र च ।

पा० ४।१।७+वा० १।

६ अन्यार्थे वा । पा० ४।१।७ वा० २।

७ पादः । पा० ४।१।८ ।

८ अनः । पा० ४।१।२८ ।

९ ऊधसो नश्च । पा० ४।१।२५। तथा

पा० ५।४।१३१।

१० दाम्नः संख्यादेः । पा० ४।१।२७।

११ हायनाद् वयसि । पा० ४।१।२७+भा० ।

१२ नोपान्तवतः । पा० ४।१।२२।

१३ मनः । पा० ४।१।११।

१४ ताभ्यां डाप् । पा० ४।१।१३।

१५ अजाद्यतः । पा० ४।१।१४।

१६ स्वार्थे । पा० ४।१।१४।

१७ टित्-ठ-अण्-अव्-ठक्-ठव्-नव्-

स्नव्-कव्-क्वरप्-ख्युनः ।

पा० ४।१।१५+वा० ६+भा० ।

१८ यवोष्वावटात् । पा० ४।१।१६, ७४

वा० १।पा० ४।१।७५।

१९ ष्फो वा । पा० ४।१।१७।

२० लोहितादिभ्यः शकलान्तेभ्यः ।

पा० ४।१।१८+वा० १।

२१ कौरव्य-आसुरि-माण्डूकात् ।

पा० ४।१।१९+वा० १।

२२ वयसि अचरमे । पा० ४।१।२० भा० ।

२३ संख्यादेः । पा० ४।१।२१।

२४ परिमाणाल्लुकि असंख्या-काल-विस्ता-
आचित-कम्बल्यात् ।

पा० ४।१।२२+भा० ।

२५ काण्डाद् अक्षेत्रे । पा० ४।१।२३।

२६ पुरुषाद् वा । पा० ४।१।२४।

२७ केवल-मामक-भागधेय-पाप-अवर-

समान-आर्यकृत-सुमङ्गल-भेषजाद्

नाम्नि । पा० ४।१।३०।

२८ अन्तर्वत्नी गर्भिण्याम् ।

पा०४।१।३२+वा०१।

२९ पतिवत्नी भार्यायाम् ।

पा०४।१।३२+वा०१।

३० पत्युर्न ऊढायाम् । पा०४।१।३३।

३१ सपूर्वस्य वा । पा०४।१।३४।

३२ अन्यार्थे । पा०४।१।३४ वा०१।

३३ समानादिभ्यः । पा०४।१।३५।

३४ श्येत-एत-हरित-रोहितात् तो नः ।

पा०४।१।३६।

३५ कनः असित-पलितात् ।

काशिका ४।१।३६१।

३६ षितः डीष् । पा०४।१।४१।

३७ गौरादिभ्यः । पा०४।१।४१।

३८ भाज-गोण-नाग-स्थल-कुण्ड-काल-

कुश-कामुक-कबरात् पक्व-आवपन-

स्थूल-अकृत्रिम-अमत्र-कृष्ण-आयसी-

रिरंसु-केशवेषु । पा०४।१।४२।

३९ नीलात् प्राणि-ओषधयोः ।

पा०४।१।४२ वा०१,२।

४० वा नाम्नि । पा०४।१।४२ वा०३।

४१ शोणादिभ्यः । पा०४।१।४३,४५।

४२ एः अक्षितनः । काशिका ४।१।४५२।

पा०४।१।४५।

४३ ओः गुणाद् अखरु-संयोगोपान्तात् ।

पा०४।१।४४+वा०२।

४४ पुंनाम्नो योगाद् अपालकान्तात् ।

पा०४।१।४८+भा०।

४५ पूतक्रतु-वृषाकपि-अग्नि-कुसित-
कुसीदानाम् ऐ च ।

पा०४।१।३६,३७।

४६ मनोः औ वा । पा०४।१।३८।

४७ सूर्या देवी । पा०४।१।४८ भा०।

४८ इन्द्र-वरुण-भव-शर्व-रुद्र-मृडानाम्

आनुक् च । पा०४।१।४९।

४९ आचार्यानी । पा०४।१।४९ वा०६।

५० मातुल-उपाध्यायाद् वा ।

पा०४।१।४९ वा०४।

५१ आर्य-क्षत्रियाच्च पा०४।१।४९।वा०७।

५२ हिम-अरण्याद् महत्त्वे ।

पा०४।१।४९ वा०१।

५३ यवाद् दोषे । पा०४।१।४९ वा०२।

५४ यवनात् लिप्याम् ।

पा०४।१।४९ वा०३।

५५ क्रीतात् करणादेः । पा०४।१।५०।

५६ क्ताद् अल्पोक्तौ । पा०४।१।५१।

५७ स्वाङ्गात् अकृत-मित-जात-

प्रतिपन्नात् अन्यार्थे । पा०४।१।५४।

पा०६।२।१७०।पा०४।१।५२ वा०१।

५८ पाणिगृहीती ऊढा ।

पा०४।१।५२ वा०२।

५९ जातेः अनाच्छादाद् वा ।

पा०४।१।५३। पा०६।२।१७०।

६० संज्ञायाम् । पा०४।१।५२। वा०३,४।

६१ स्वाङ्गाद् अप्रधानात् । पा०४।१।५४।

६२ नासिका-उदर-ओष्ठ-जङ्घा-दन्त-कर्ण-

शृङ्ग-अङ्ग-गात्र-कण्ठात् ।

पा० ४।१।५५। काशिका ४।१।५४।

१ अस्य सूत्रस्य वृत्ती “भाषायामपीष्यते” इति निर्दिश्य ‘असिक्नी-पलिक्नी’ रूपसिद्धि-
बोधिता ।

२ अत्रापि काशिकायाम् अस्मिन् सूत्रे ‘कृदिकारात् अक्षितनः’ इति वार्तिकम् ।

- ६३ पुच्छात् । पा० ४।१।५५ वा० १। ७६ अप्राणिनाम् अरज्ज्वादिभ्यः ।
 ६४ कबर-मणि-विष-शरात् । पा० ४।१।६६ वा० १।
 पा० ४।१।५५ वा० २। ७७ बाह्वन्त-कद्रु-कमण्डलुभ्यो नाम्नि ।
 ६५ उपमानादेः । पा० ४।१।५५ वा० ३। पा० ४।१।६७, ७२।
 ६६ पक्षात् । पा० ४।१।५५ वा० ३। ७८ पङ्क्तूः श्वभूः । पा० ४।१।६८।
 ६७ न क्रोडादिभ्यः । पा० ४।१।५६। काशिका ४।१।६८।
 ६८ सह-नञ्-विद्यमानादेः । ७९ ऊरोः उपमा-संहित-सहित-सह-शफ-
 पा० ४।१।५७। वाम-लक्ष्मणादेः । पा० ४।१।६९, ७०।
 ६९ नख-मुखाद् नाम्नि । पा० ४।१।५८। ७० भा०।
 ७० सखी अशिखी । पा० ४।१।६२। ८० यङश्चाप् । पा० ४।१।७४।
 ७१ जातेः अस्त्रीविषयाद् अयोपान्तात् । ८१ यूनस्तिः । पा० ४।१।७७।
 पा० ४।१।६३। ८२ अनृषेर्गुणोत्तमाद् गोत्रे अणिबोः
 ७२ पाक-कर्ण-पर्ण-पुष्प-फल-मूल-
 बालान्तात् । पा० ४।१।६४। ष्यङ् । पा० ४।१।७८।
 ७३ इतः नृजातेः । पा० ४।१।६५। ८३ कुलनाम्नः । पा० ४।१।७९।
 ७४ इञ् । पा० ४।१।६५ वा० १। ८४ क्रौड्यादीनाम् । पा० ४।१।८०।
 ७५ ऊङ् उतः । पा० ४।१।६६। ८५ दैवयज्ञि-शौचिवृक्षि-सात्यमुषि-
 काण्ठेविद्धीनां वा । पा० ४।१।८१।

[द्वितीयस्य अध्यायस्य तृतीयः पादः समाप्तः]

[चतुर्थः पादः]

- १ प्राग्जिताद् अण् । पा० ४।१।८३। १० बहिषः टीकक् च ।
 २ दिति-अदिति-आदित्य-यमाद् ण्यः । पा० ४।१।८५ वा० ५, ४।
 पा० ४।१।८५। काशिका ४।१।८५। ११ संख्यादेः संख्येयाद् अनपत्ये अजादेर्लुङ्
 ३ पत्युरनश्वाद्यादेः । पा० ४।१।८५, ८४। अद्विः । पा० ४।१।८८+भा०।
 ४ अः स्थाम्नः । पा० ४।१।८५ वा० ७। १२ प्राग् वतेः अग्नि-कलिभ्यां ढक् ।
 ५ लोम्नः अपत्येषु । पा० ४।१।८५ वा० ८। पा० ४।२।७ भा०।
 ६ पृथिव्या नः । पा० ४।१।८५ वा० २। १३ स्त्री-पुंसाभ्यां नञ्-स्त्वौ ।
 ७ उत्सादिभ्यः अब् । पा० ४।१।८६। पा० ४।१।८७+वा० १।
 ८ देवात् । पा० ४।१।८५ वा० ३। १४ भावे वा । पा० ४।१।८७ वा० २।
 ९ यञ् । पा० ४।१।८५ वा० ३। १५ गोः अचि यत् । पा० ४।१।८५ वा० ६।
 १६ तस्य अपत्यम् । पा० ४।१।८२।

- १७ आद्यात् । पा०४।१।६३। ४३ कुञ्चा-कोकिलाभ्याम् ।
 १८ पौत्रादेः अस्त्रियां गुर्वयित्ते । पा०४।१।१२० भा०।
 पा०४।१।६४। ४४ ऋषि-कुरु-वृष्णि-अन्धकात् ।
 १९ अतः इव् । पा०४।१।६५। पा०४।१।११४।
 २० बाह्वादिभ्यो गोत्रादिभ्यः । ४५ मातुः उत् संख्या-सं-भद्रादेः ।
 पा०४।१।६६ वा०१। पा०४।१।११५।
 २१ व्यासादीनाम् अकङ् च । ४६ कन्यायाः कनीन च ।
 पा०४।१।६७ भा०। पा०४।१।११६।
 २२ विदादिभ्यः अव् । पा०४।१।१०४। ४७ शुङ्ग-च्छगल-विकर्णाद् भारद्वाज-
 २३ ऋषेः पौत्रादौ । पा०४।१।१०४। वात्स्य-आत्रेयेषु । पा०४।१।११७।
 २४ गर्गादिभ्यो यव् । पा०४।१।१०५। ४८ पीला-मण्डूकाद् वा ।
 २५ मधोर्बाह्मणे । पा०४।१।१०६। पा०४।१।११८, ११९।
 २६ बभ्रोः कौशिके । पा०४।१।१०६। ४९ ढक् । पा०४।१।११९।
 २७ कपेः आङ्गिरसे । पा०४।१।१०७। ५० डी-आप्-ति-ऊङः । पा०४।१।१२०।
 २८ बोधात् । पा०४।१।१०७। ५१ द्व्यचः । पा०४।१।१२१।
 २९ वतण्डात् । पा०४।१।१०८। ५२ इतोऽनिचः । पा०४।१।१२२।
 ३० स्त्रियां लुक् । पा०४।१।१०९। ५३ शुभ्रादिभ्यः । पा०४।१।१२३।
 ३१ अश्वदिभ्यः फक् । पा०४।१।११०। ५४ विकर्ण-कुषीतकात् काश्यपे ।
 ३२ भर्गात् त्रैगर्ते । पा०४।१।१११। पा०४।१।१२४।
 ३३ कुञ्जादिभ्यः फ्यव् । ५५ भ्रौवेयः । पा०४।१।१२५।
 पा०४।१।६८ भा०। ५६ कल्याण्यादीनाम् इनङ् ।
 ३४ स्त्रीबहुषु फक् । पा०५।३।११३। पा०४।१।१२६।
 पा०४।१।६८ भा०। ५७ कुलटाया वा । पा०४।१।१२७।
 ३५ नडादिभ्यः । पा०४।१।६९। ५८ चटकात् ऐरक् ।
 ३६ हरितादिभ्यः अवः । पा०४।१।१००। पा०४।१।१२८+वा०१।
 ३७ यन्निचः । पा०४।१।१०१। ५९ लुक् स्त्रियाम् ।
 ३८ शरद्वत्-शुनक-दर्भाद् भार्गव-वात्स्य-
 आग्रायणेषु । पा०४।१।१०२। पा०४।१।१२८ वा०२।
 ३९ पर्वत-जीवन्ताद् वा । पा०४।१।१०३। ६० जाण्ड-पाण्डाद् आरक् ।
 ४० द्रोणात् । पा०४।१।१०३। पा०४।१।१३० भा०।
 ४१ शिवादिभ्यः अण् । पा०४।१।११२। ६१ गोधायाः । पा०४।१।१३०।
 ४२ नदी-मानुषीनाम्नः अनादैजाद्यचः । ६२ ऐरक् । पा०४।१।१२९।
 पा०४।१।११३। ६३ क्षुद्राभ्यो वा । पा०४।१।१३१।

६४ भ्रातुर्व्यत् । पा०४।१।१४४।

६५ छः । पा०४।१।१४४।

६६ स्वमुः । पा०४।१।१४३।

६७ पितृ-मात्रादेः छण् ।

पा०४।१।१३२, १३४।

६८ ढकि लोपः । पा०४।१।१३३।

६९ क्षत्रात् जातौ घः । पा०४।१।१३८।

काशिका ४।१।१३८।

७० राज्ञो यत् । पा०४।१।१३७+वा०१।

७१ श्वशुरात् । पा०४।१।१३७।

७२ कुलात् ढकञ् च । पा०४।१।१४०।

७३ खः पदान्ताच्च । पा०४।१।१३६ ।

७४ दुरः ढक् वा । पा०४।१।१४२।

७५ महाकुलाद् अञ्-खञौ ।

पा०४।१।१४१।

७६ चतुष्पाद्भ्यो ढञ् । पा०४।१।१३५।

७७ गृष्ट्यादिभ्यः । पा०४।१।१३६।

७८ रेवत्यादिभ्यः ठक् । पा०४।१।१४६।

७९ पौत्रादेः स्त्रियाः कुत्सिते ण च ।

पा०४।१।१४७।

८० सौवीरेषु वा । पा०४।१।१४८।

८१ फेष्ट्रञ् च । पा०४।१।१४९।

८२ फाण्टाहुतेः ण-फिञौ । पा०४।१।१५०।

८३ मिमतात् । पा०४।१।१५०।

८४ कुर्वादिभ्यो ण्यः । पा०४।१।१५१।

८५ सेनान्त-कारु-लक्ष्मणाद् इञ् च ।

पा०४।१।१५२, १५३।

८६ तिकादिभ्यः फिञ् । पा०४।१।१५४।

८७ दगु-कोशल-कर्मारि-च्छाग-वृषाद्

युट् च । पा०४।१।१५५ वा०१।

८८ द्व्यचोऽणः । पा०४।१।१५६।

८९ त्यदादिभ्यो वा ।

काशिका ४।१।१५६१।

९० अगोत्रादादैजाद्यचः । पा०४।१।१५७।

९१ वाकिनादीनां कुक् च ।

पा०४।१।१५८।

९२ पुत्रान्ताद् वा । पा०४।१।१५९।

९३ फिन् बहुलम् । पा०४।१।१६०।

९४ मनोजातौ यत् सुक् च ।

पा०४।१।१६१।

९५ अञ् । पा०४।१।१६१।

९६ जनपदनाम्नः क्षत्रियाद् राज्ञि च ।

पा०४।१।१६८+वा०३।

९७ गान्धारि-शाल्वेयात् ।

पा०४।१।१६९।

९८ आदैजाद्यचो व्यङ् । पा०४।१।१७१।

९९ इत् कोशल-आजादात् ।

पा०४।१।१७१।

१०० द्व्यच्-मगध-कलिङ्ग-शूरमसाद्^२

अण् । पा०४।१।१७०।

१०१ कुरु-नादिभ्यः ण्यः ।

पा०४।१।१७२।

१०२ पाण्डोर्द्व्यण् । पा०४।१।१६८ भा०।

१०३ शाल्वाङ्ग-प्रत्यग्रथ-कलकूट-

अश्मकात् इञ् । पा०४।१।१७३।

१०४ कम्बोजादिभ्यो लुक् ।

पा०४।१।१७५+वा०१।

१०५ स्त्रियां कुरु-कुन्ति-अवन्तिभ्यः ।

पा०४।१।१७६।

१०६ अतः अप्राच्य-भर्गादिभ्यः ।

पा०४।१।१७७, १७८।

१. अत्र सूत्रे “त्यदादीनां वा फिन् वक्तव्यः” इति वार्तिकम् ।

२. अत्र सवृत्तिके चान्द्रव्याकरणे ‘शूरमसाद्’ इति पाठः ।

- १०७ यञ्-अञोः बहुषु अस्त्रियाम् । ११५ तिक-कितवादिभ्यश्च अर्थैकार्थ्ये ।
 पा० २।४।६४, ६२। पा० २।४।६८।
- १०८ कुण्डिनाः । पा० २।४।७०। ११६ न गोपवनादिभ्यः अष्टभ्यः ।
 पा० २।४।६७+वा० १।
- १०९ व्यादीनाम् । पा० ४।१।१७४। ११७ प्राग्जितीये अचि । पा० ४।१।८६।
 पा० २।४।६२। ११८ गोत्राद् लुक् । पा० ४।१।९०।
- ११० यस्कादिभ्यः । पा० २।४।६३। ११९ फक्-फिञोर्वा । पा० ४।१।९१।
- १११ अत्रि-भृगु-कुत्स-वसिष्ठ-अङ्गिरस्- १२० अब्राह्मणात् । पा० २।४।५८ भा०।
 गोतमात् । पा० २।४।६५। १२१ पैलादिभ्यः । पा० २।४।५९।
- ११२ अगस्तयः । पा० २।४।७०। १२२ प्राच्याद् इञः अतौल्वलिभ्यः ।
 पा० २।४।६६। १२३ जिद्-आर्षण्याद् अणिञोः ।
 पा० २।४।५८।
- ११४ उपकादिभ्यो वा । पा० २।४।६६।

[द्वितीयस्य अध्यायस्य चतुर्थः पादः समाप्तः]

[चान्द्रे व्याकरणे द्वितीयः अध्यायः समाप्तः]

[तृतीयः अध्यायः, प्रथमः पादः]

- १ तेन रक्तं रागात् । पा०४।२।१।
 २ लाक्षा-रोचनात् ठक् । पा०४।२।२।
 ३ शकल-कर्मदाद् वा । पा०४।२।२।
 वा०१।
 ४ नील-पीताद् अन्-कनौ ।
 पा०४।२।२ वा०२,३।
 ५ नक्षत्रैरिन्दुयुक्तैः कालः ।
 पा०४।२।३+वा०१।
 ६ चार्थात् छः । पा०४।२।६।
 ७ दृष्टं साम डित् वा ।
 पा०४।२।७+भा०।
 ८ गोत्रात् अङ्कवत् । पा०४।२।७ भा०।
 ९ वामदेव्यम् । पा०४।२।९।
 १० परिवृतो रथः । पा०४।२।१०।
 ११ कौमारी प्राथम्ये । पा०४।२।१३।
 १२ तत्र उद्धृतं पात्रेभ्यः । पा०४।२।१४।
 १३ स्थण्डिले शेते व्रती । पा०४।२।१५।
 १४ संस्कृतं भक्ष्यम् । पा०४।२।१६।
 १५ शूल-उखात् यत् । पा०४।२।१७।
 १६ दध्नः ठक् । पा०४।२।१८।
 १७ क्षीरात् ढञ् । पा०४।२।२०।
 १८ साज्य पौर्णमासी । पा०४।२।२१।
 १९ आग्रहायणी-अश्वत्थात् ठक् ।
 पा०४।२।२२।
 २० फाल्गुनी-श्रवणा-कार्तिकी-चैत्रीभ्यो
 वा । पा०४।२।२३।
 २१ देवता । पा०४।२।२४।
 २२ कस्य इत् । पा०४।२।२५।
 २३ शुक्रात् घन् । पा०४।२।२६।
 २४ पैङ्गाक्षीपुत्रादिभ्यः छः ।
 पा०४।२।२८ वा०१।
 २५ शतरुद्रात् घञ् । पा०४।२।२८ वा०२।
 २६ अपोनपात्-अपांनपातोः तृ चातः ।
 पा०४।२।२७,२८।
 २७ महेन्द्राद् वा । पा०४।२।२९।
 २८ सोमात् ट्यण् । पा०४।२।३०।
 २९ वायु-ऋतु-पितृ-उषसो यत् ।
 पा०४।२।३१।
 ३० द्यावापृथिवी-शुनासीर-मस्त्वत्-
 अग्नीषोम-वास्तोष्पति-गृहमेधात्
 छञ् । पा०४।२।३२।
 ३१ कालेभ्यो भववत् । पा०४।२।३४।
 ३२ महाराज-प्रोष्ठपदात् ठञ् ।
 पा०४।२।३५।
 ३३ आदेश्छन्दसः प्रगाथे । पा०४।२।५५।
 ३४ योद्धृप्रयोजनात् संग्रामे ।
 पा०४।२।५६।
 ३५ प्रहरणात् अस्यां क्रीडायां णः ।
 पा०४।२।५७।
 ३६ भावघञो ज्ञः । पा०४।२।५८।
 ३७ तद् अधीते तद् वेद । पा०४।२।५९।
 ३८ ऋतु-उक्थादिभ्यः ठक् । पा०४।२।६०।
 ३९ शत-षष्ठेः पथः ष्ठन् ।
 पा०४।२।६०। भा० (कारिका?)
 ४० क्रमादिभ्यो वुन् । पा०४।२।६१।
 ४१ प्रोक्तात् लुक् । पा०४।२।६४।

१ इयं च कारिका श्रीकिलहोर्नमहाशयसंपादिते व्याकरणमहाभाष्ये एवं वर्तते:—
 “अनुसूक्ष्मलक्षणे सर्वसादेर्द्विगोश्च लः । इकन् पदोत्तरपदात् शत-षष्ठेः पिकन् पथः” ॥
 —द्वितीय भागे पृ० २८४ । काशिकायां तु ४।२।६० सूत्रे इदं वार्तिकम्—“शत-षष्ठेः पिकन्
 पथो बहुलम्” ।

- ४२ सूत्रात् संख्याकात् ।
पा० ४।२।६५+भा०।
- ४३ तस्य समूहः । पा० ४।२।३७।
- ४४ भिक्षादिभ्यः अण् । पा० ४।२।३८।
- ४५ गोत्र-उक्ष-उष्ट्र-उरभ्र-राज-राजपुत्र-
वत्स-अज-वृद्धात् वुञ् ।
पा० ४।२।३९+भा०।
- ४६ केदारात् यञ् च । पा० ४।२।४०।
- ४७ कवचिनश्च ठक् । पा० ४।२।४१।
- ४८ हस्ति-अचित्तात् । पा० ४।२।४७।
- ४९ धेनोरनञः । पा० ४।२।४५ भा० ।
काशिका ४।२।४७ वा०।
- ५० गणिका-ब्राह्मण-माणव-वाडवात् यञ् ।
पा० ४।२।४० भा०। पा० ४।२।४२।
- ५१ केशाद् वा । पा० ४।२।४८।
- ५२ अश्वात् छः । पा० ४।२।४८।
- ५३ पार्श्व-पौरुषेये । पा० ४।२।४३ वा० ३।
पा० ५।१।१० भा०।
- ५४ पृष्ठ्य-अहीनौ ऋतौ । पा० ४।२।४२
वा० १। पा० ४।२।४३ वा० १, २।
- ५५ वातात् ऊलः । पा० ५।२।१२२ वा० ६।

- ५६ पाशादिभ्यः यः । पा० ४।२।४६।
- ५७ खलादिभ्यः इनिः ।
पा० ४।२।५१ वा० १।
- ५८ गोत्रा । पा० ४।२।५१।
- ५९ ग्राम-जन-गज-बन्धु-सहायात् तल् ।
पा० ४।२।४३+भा०।
- ६० पितृव्य-मातामह-पितामहाः ।
पा० ४।२।३६।
- ६१ विषये देशे । पा० ४।२।५२।
- ६२ राजन्यादिभ्यः वुञ् । पा० ४।२।५३।
- ६३ भौरिकि-ऐषुकार्यादिभ्यः विधल्-
भक्तलौ । पा० ४।२।५४।
- ६४ निवासे तन्नाम्नि । पा० ४।२।६६, ६७।
- ६५ अदूरभवे । पा० ४।२।७०।
- ६६ तेन निर्वृत्ते । पा० ४।२।६८।
- ६७ तद् इह अस्ति च । पा० ४।२।६७।
- ६८ वुञ्-छण्-क-ठच्-इल-स-इनि-र-ढञ्-
ण्य-य-फक्-फिञ्-इञ्-ज्य-कक्-ठक्-
छ-कीय-ड्मतुप्-ड्वलचः ।
पा० ४।२।८०, ८०, ८१, ८७, ८८।

[तृतीयस्य अध्यायस्य प्रथमः पादः समाप्तः]

[द्वितीयः पादः]

- १ शेषे । पा० ४।२।६२।
- २ राष्ट्राद् घः । पा० ४।२।६३।
- ३ पारावार-अवारपारात् खः ।
पा० ४।२।६३ वा० १, २।
- ४ ग्रामात् य-खञौ । पा० ४।२।६४।
- ५ कत्र्यादिभ्यश्च ढक् ।
पा० ४।२।६५+भा०।
- ६ नद्यादिभ्यः ढक् । पा० ४।२।६७।
- ७ दक्षिणा-पश्चात्-पुरसः त्यक् ।
पा० ४।२।६८।
- ८ बल्लि-उदि-पदि-कापिशीभ्यः ष्फक् ।
पा० ४।२।६९+भा०।
- ९ रङ्गोः प्राणिनि वा । पा० ४।२।१००।
काशिका ४।२।१००।
- १० द्यु-प्राग्-अपाग्-उदक्-प्रतीचो यत् ।
पा० ४।२।१०१

- ११ कन्थायाः ठक् । पा०४।२।१०२। ३४ बाहीकग्रामात् । पा०४।२।११७।
 १२ वर्णौ बुक् । पा०४।२।१०३। ३५ वा उशीनरेषु । पा०४।२।११८।
 १३ क्व-अमा-इह-त्र-तसः त्यप् । ३६ प्रस्थ-वह-पुरान्त-योपान्त-धन्वार्थात्
 पा०४।२।१०४ भा०। बुक् । पा०४।२।१२२, १२१।
 १४ निसो गते । पा०४।२।१०४ भा०। ३७ रोपान्त-ईतः प्राच्यात् ।
 १५ ऐषमस्-ह्यस्-श्वसो वा । पा०४।२।१२३।
 पा०४।२।१०५। ३८ जनपदेभ्यः । पा०४।२।१२४।
 १६ द्वरेत्य-औत्तराहौ । ३९ बहुत्वविषयेभ्यः । पा०४।२।१२५।
 पा०४।२।१०४ भा०। ४० कच्छ-अग्नि-वक्त्र-वर्तन्तात्^१।
 १७ णः अरण्यात् । पा०४।२।१०४ भा०। पा०४।२।१२६।
 १८ रूप्यान्तात् ञः । पा०४।२।१०६। ४१ धूमादिभ्यः । पा०४।२।१२७।
 १९ दिगादेरनाम्नि अमद्रात् । ४२ नगरात् कुत्सा-प्रावीण्ययोः ।
 पा०४।२।१०७, १०८। पा०४।२।१२८।
 २० बाहीकादिभ्यः अण् । पा०४।२।११०। ४३ अरण्यात् पथि-न्याय-अध्याय-हस्ति-
 २१ शकलादिभ्यः गोत्रात् । नर-विहारेषु । पा०४।२।१२९+भा०।
 पा०४।२।१११। ४४ वा गोमये । पा०४।२।१२९ भा०।
 २२ इञः । पा०४।२।११२। ४५ कुरु-युगन्धरात् । पा०४।२।१३०।
 २३ न द्व्यचः प्राच्यात् । पा०४।२।११३। ४६ वृजि-मद्रात् कन् । पा०४।२।१३१।
 २४ आदैजाद्यचश्छः । पा०४।२।११४। ४७ कोपान्ताद् अण् । पा०४।२।१३२।
 २५ एङाद्यचः प्राग्देशात् । ४८ कच्छादिभ्यः । पा०४।२।१३३।
 पा०१।१।७५। ४९ नृ-तत्स्थयोर्बुक् । पा०४।२।१३४।
 २६ नृनाम्नो वा । पा०१।१।७३ वा०५। ५० शाल्वाद् गो-यवाग्नोः ।
 २७ गोत्रान्तात् तद्वद् अजिह्वाकात्य- पा०४।२।१३६।
 हरितकात्यात् । पा०१।१।७३
 वा०७, ८।
 २८ त्यदादिभ्यः । पा०१।१।७४। ५१ न पदातौ । पा०४।२।१३५।
 २९ भवतो दश्च । पा०४।२।११५। ५२ गर्तान्तात् छः । पा०४।२।१३७।
 पा०१।४।१६। ५३ कटादेः प्राच्यात् । पा०४।२।१३९।
 ३० ठक् । पा०४।२।११५। ५४ क-खोपान्त-कन्था-पलद-नगर-ग्राम-
 ३१ ओः देशात् । पा०४।२।११६। ह्रदान्तात् छे । पा०४।२।१४१, १४२।
 ३२ प्राच्यात् छे । पा०४।२।१२०। ५५ पर्वतात् । पा०४।२।१४३।
 ३३ काश्यादिभ्यः ञिकश्च । ५६ अनरे वा । पा०४।२।१४४।
 पा०४।२।११६। ५७ कृकण-पर्णाद् भारद्वाजात् ।
 पा०४।२।११६। पा०४।२।१४५। ५८ गहादिभ्यः । पा०४।२।१३८।

^१ पाणिनीये तु - 'वक्त्र-गर्तोत्तरपदात्' इति पाठः । उदाहरणमपि-चाक्रगर्तकः ।

५६ पृथिवीमध्यस्य मध्यमश्च ।

पा० ४।२।१३८ वा० १।

६० निवासस्य चरणे अण् च ।

पा० ४।२।१३८ वा० २।

६१ वेणुकादिभ्यः छण् ।

काशिका ४।२।१३८१।

६२ युष्मद्-अस्मदोः खञ् युष्माक-

अस्माकौ च । पा० ४।३।१, २।

६३ अण् । पा० ४।३।१।

६४ तवक-ममकौ एकत्वे । पा० ४।३।३।

६५ द्वीपादनुसमुद्रात् ज्यः । पा० ४।३।१०।

६६ अर्धात् यत् । पा० ४।३।४।

६७ पर-अवर-अधम-उत्तमादेः ।

पा० ४।३।५।

६८ दिगादेः ठञ् च । पा० ४।३।६।

६९ ग्राम-जनपदांशात् अण् च ।

पा० ४।३।७।

७० सपूर्वात् । पा० ४।३।४। वा० १।

७१ कालेभ्यः । पा० ४।३।११।

७२ शरदः श्राद्धे । पा० ४।३।१२।

७३ रोग-आतपयोः वा । पा० ४।३।१३।

७४ निशा-प्रदोषात् । पा० ४।३।१४।

७५ श्वसः तुट् च । पा० ४।३।१५।

७६ प्राह्णे-प्रगे-सायं-चिरम्-असंख्यात् ट्युः ।

पा० ४।३।२३।

७७ पूर्वाह्न-अपराह्णात् वा ।

पा० ४।३।२४।

७८ परत्-परारि-चिरात् त्तः ।

पा० ४।३।२३। भा० ।

७९ सन्ध्यादि-ऋतु-नक्षत्रात् अण् ।

पा० ४।३।१६।

८० हेमन्ताद् वा तलोपश्च ।

पा० ४।३।२१, २२।

८१ वर्षा-प्रावृड्भ्यां ठक्-एण्यौ ।

पा० ४।३।१८, १७।

८२ मध्य-आदिभ्यां मः । पा० ४।३।८।

काशिका ४।३।८ वा० ।

८३ अग्र-अन्त-पश्चाद् इमच् ।

पा० ४।३।२३ भा० ।

[तृतीयस्य अध्यायस्य द्वितीयः पादः समाप्तः]

[तृतीयः पादः]

१ तत्र जाते प्रावृषः ठप् ।

पा० ४।३।२५, २६।

२ पूर्वाह्ण-अवराह्ण-आर्द्रा-मूल-प्रदोष-

अवस्करात् कन् नास्ति ।

पा० ४।३।२८, २७।

३ पन्थकः । पा० ४।३।२६।

४ सिन्धु-अपकरात् वा ।

पा० ४।३।३२, ३३।

५ अमावस्यार्थात् अश्च ।

पा० ४।३।३०, ३१।

तथा काशिका ४।३।३०, ३१।

६ स्थानान्त-गोशाल-खरशालात् लुक् ।

पा० ४।३।३५।

१ काशिकायाम् अस्मिन् सूत्रे “वेणुकादिभ्यः छण् वक्तव्यः,” इति वार्तिकनिर्देशे
अस्य चान्द्रसूत्रस्य समावेशः ।

७ वत्स-शाल-नक्षत्रेभ्यः बहुलम् ।

पा० ४।३।३६, ३७।

८ डिदण् । पा० ४।२, ७ भा०।

९ श्रविष्ठा-आषाढात् छण् ।

पा० ४।३।३४ वा० ३।

१० फल्गुन्याः टः । पा० ४।३।३४ वा० २।

११ आश्वयुज्याम् उप्ते वुञ् ।

पा० ४।३।४५, ४४।

१२ ग्रीष्म-वसन्ताद् वा । पा० ४।३।४६।

१३ कालाद् देयम् ऋणम् ।

पा० ४।३।४७, ४३।

१४ कलापि-अश्वत्थ-यववुसाद् वुन् ।

पा० ४।३।४८।

१५ ग्रीष्म-अवरसमात् वुञ् ।

पा० ४।३।४९।

१६ संवत्सर-आग्रहायण्याः ठञ् च ।

पा० ४।३।५०।

१७ दिगादिभ्यः भवे यत् ।

पा० ४।३।५४, ५३।

१८ देहांशात् । पा० ४।३।५५।

१९ दृति-कुक्षि-कलशि-वस्ति-अस्ति-अहेः

ढञ् । पा० ४।३।५६।

२० ग्रीवातः अण् च । पा० ४।३।५७।

२१ गम्भीर-पञ्चजनात् ज्यः ।

पा० ४।३।५८, ६० भा०।

२२ चातुर्मास्यं यज्ञे । पा० ५।१।६४

वा० ६।

२३ परिमुखादिभ्यः । पा० ४।३।५८

वा० १।

२४ अन्तःपूर्वात् तदर्थत् ठञ् ।

पा० ४।३।६०।

२५ परि-अनुभ्यां ग्रामात् । पा० ४।३।६१।

२६ समानात् । पा० ४।३।६० भा०।

२७ तदादेः । पा० ४।३।६० भा०।

२८ लोकान्तात् । पा० ४।३।६० भा०।

२९ अध्यात्मादिभ्यः । पा० ४।३।६० भा०।

३० जिह्वामूल-अङ्गुलेः छः ।

पा० ४।३।६२।

३१ वर्गान्तात् । पा० ४।३।६३।

३२ अशब्दे यत्-खौ च । पा० ४।३।६४।

३३ मध्यात् मण्-मीयौ च ।

पा० ४।३।६० भा०।

३४ ललाटात् भूषणे कन् ।

पा० ४।३।६५।

३५ कर्णात् । पा० ४।३।६५।

३६ उपादेः ठक् । पा० ४।३।४०।

३७ जानु-नीवीभ्याम् । पा० ४।३।४०।

३८ तस्य व्याख्याने च व्याख्येयनाम्नः ।

पा० ४।३।६६।

३९ बह्वचः अन्तोदात्तात् ठञ् ।

पा० ४।३।६७।

४० यज्ञेभ्यः । पा० ४।३।६८।

४१ अध्यायेषु एव ऋषेः । पा० ४।३।६९।

४२ पौरोडाश-पुरोडाशात् णञ् ।

पा० ४।३।७०।

४३ छन्दसो यत् । पा० ४।३।७१।

४४ अण् । पा० ४।३।७१।

४५ ऋगयनादिभ्यः । पा० ४।३।७३।

४६ द्व्यच्-ऋत्-ऋग्-ब्राह्मण-प्रथम-अध्वर-
-पुरश्चरण-नाम-आख्यातात् ठक् ।

पा० ४।३।७२।

४७ आयस्थानात् आगते ।

पा० ४।३।७५, ७४।

४८ शुण्डिकादिभ्यः अण् । पा० ४।३।७६।

४९ विद्या-योनि-संबन्धात् वुञ् ।

पा० ४।३।७७।

५० ऋतः कञ् । पा०४।३।७८।

५१ पित्र्यं वा । पा०४।३।७९।

५२ नृ-हेतुभ्यो रूप्यः । पा०४।३।८१।

५३ मयट् । पा०४।३।८२।

५४ गोत्रात् अङ्कुवत् । पा०४।३।८०।

५५ वैदूर्यम् । पा०४।३।८४।

५६ शिशुकन्दादीन् अधिकृत्य कृते ग्रन्थे
छः । पा०४।३।८८, ८७।

५७ चार्थान् अदेवासुरादीन् ।

पा०४।३।८८+वा०१।

५८ सोऽस्य अभिजनः गिरिभ्यः

शस्त्रजीविषु । पा०४।३।९०, ९१।

५९ शालातुरीयः । पा०४।३।९४।

६० शण्डिकादिभ्यः ज्यः । पा०४।३।९२।

६१ सिन्ध्वादिभ्यः अण् । पा०४।३।९३।

६२ तुदी-वर्मतीभ्यां ढञ् । पा०४।३।९४।

६३ तत्र भक्तिर्महाराजात् ठक् ।

पा०४।३।९५, ९७।

६४ अचित्तात् अदेश-कालात् ।

पा०४।३।९६।

६५ वासुदेव-अर्जुनात् कन् । पा०४।३।९८।

६६ गोत्रात् बहुलं वुञ् । पा०४।३।९९।

६७ क्षत्रियात् । पा०४।३।९९।

६८ जनपदवत् सर्वं तत्सङ्ख्यात् बहुत्वे ।

पा०४।३।१००।

६९ तेन प्रोक्तं वेदं वेत्ति अधीते ।

पा०४।३।१०१। पा०४।२।६६।

७० तित्तिरि-वरतन्तु-खण्डिक-उखात्

छण् । पा०४।३।१०२।

७१ काश्यप-कौशिकाभ्यामृषिभ्यां कल्पं च

णिनिः । पा०४।३।१०३।

पा०४।२।६६ वा० ६।

७२ शौनकादिभ्यः । पा०४।३।१०६।

७३ कलापि-वैशम्पायनशिष्येभ्यः ।

पा०४।३।१०४।

७४ कठ-चरकात् लुक् । पा०४।३।१०७।

७५ कलापिनः अण् । पा०४।३।१०८।

७६ छगलिनः ढितुक् । पा०४।३।१०९।

७७ कर्मन्द-कृशाश्वभ्यां भिक्षु-नटसूत्रम्
इतिः । पा०४।३।१११।

७८ पाराशर्य-शिलालिभ्यां णिनिः ।

पा०४।३।११०।

७९ पुराणर्षेर्ब्राह्मणम् । पा०४।३।१०५।

८० कल्पे । पा०४।३।१०५।

८१ अथर्वणः अण् वेदे ।

पा०४।३।१३१वा०२।

८२ पुरुषात् कृते ढञ् । पा०५।१।१०भा०।

८३ संज्ञायां वातपात् अञ् ।

पा०४।३।११७, ११९।

८४ कुलालादिभ्यः वुञ् । पा०४।३।११८।

८५ तस्य स्वं रथात् यत् ।

पा०४।३।१२०, १२१।

८६ यानादेः अञ् । पा०४।३।१२२।

८७ यानात् पा०४।३।१२३।

८८ हल-सीरात् ठक् । पा०४।३।१२४।

८९ चार्थाद् वैरे वुन् अदेवासुरादिभ्यः ।

पा०४।३।१२५+वा०१।

९० विवाहे । पा०४।३।१२५।

९१ नटात् ज्यः नृत्ये । पा०४।३।१२६।

९२ छन्दोग-औक्थिक-याज्ञिक-बह्वृचात्
धर्म-आम्नाय-संगेषु ।

पा०४।३।१२६, १२० वा०११।

९३ आथर्वणः । पा०४।३।१३१वा०२।

९४ चरणात् वुञ् । पा०४।३।१२६।

६५ गोत्रात् अदण्डमाणव-अन्तेवासिषु पा०४।३।१२६,१३०।	१०९ मयट् अभक्ष-आच्छादने । पा०४।३।१४३।
६६ रैवतिकादिभ्यः छः । पा०४।३।१३१।	११० एकाचः । काशिका ४।३।१४४ ^१ ।
६७ कौपिञ्जल-हास्तिपदात् अण् । पा०४।३।१३१ वा०१।	१११ छे । पा०४।३।१४४।
६८ संघ-अङ्कु-घोष-लक्षणेषु अञ् यञिञः । पा०४।३।१२७+वा०१।	११२ व्रीहेः पुरोडाशे । पा०४।३।१४८।
६९ शाकलात् वा । पा०४।३।१२८।	११३ तिल-यव-पिष्टात् असंज्ञायाम् । पा०४।३।१४६,१४६।
१०० बहेः तुः इट् च । पा०४।३।१२० वा०८।	११४ शरादिभ्यः । पा०४।३।१४४।
१०१ आग्नीध्रं शरणे । पा०४।३।१२० वा०६।	११५ क्रीतवत् परिमाणात् । पा०४।३।१५६।
१०२ समिधः आधाने षेण्यण् । पा०४।३।१२० वा०१०।	११६ शम्याः ष्लञ् । पा०४।३।१४२।
१०३ विकारे । पा०४।३।१३४।	११७ उष्ट्रात् बुञ् । पा०४।३।१५७।
१०४ वृक्ष-ओषधिभ्यः अंशे च । पा०४।३।१३५।	११८ उमा-ऊर्णात् वा । पा०४।३।१५८।
१०५ प्राणिभ्यः अञ् । पा०४।३।१५४,१३५ ।	११९ एणी-कोशात् ढञ् । पा०४।३।१५६। पा०४।३।४२ वा०१।
१०६ तालादिभ्यः अण् । पा० ४।३।१५२।	१२० पुरुषाद् वधे च । पा०५।१।१० वा०२।
१०७ हेमार्थात् परिमाणे । पा०४।३।१५३।	१२१ हैयंगवीनं संज्ञायाम् । पा०५।२।२३+वा०१।
१०८ त्रपु-जतुनोः षुक् । पा०४।३।१३८।	१२२ पयसः यत् । पा०४।३।१६० ।
	१२३ आप्यं वा० । पा०४।३।१४४ ^२ ।
	१२४ द्रोः । पा०४।३।१६१।
	१२५ माने वयः । पा०४।३।१६२।
	१२६ कांस्य-पारशवौ । पा०४।३।१६८।
	१२७ न द्विः । पा०४।३।१५५ भा० ।

[तृतीयस्य अध्यायस्य तृतीयः पादः समाप्तः]

१. इदं सूत्रं त्वेवम् “नित्यं वृद्ध-शरादिभ्यः” तथापि तद्वृत्ती “एकाचो नित्यं मयट् इच्छन्ति तद् अनेन क्रियते” इति निर्देशेन प्रस्तुतस्य चान्द्रस्य सूत्रस्य अस्मिन् सूत्रे समावेशः ।

२. अस्य सूत्रस्य वृत्ती सिद्धान्तकौमुद्याम् एवं निर्देशः—“कथं तर्हि आप्यम् अम्मयम्? इति । तस्येदम् पा०४।३।१२०। इति अणन्तात् स्वार्थे ष्यञ् ” अत्र च निर्देशे अस्य सूत्रस्य समावेशः ।

[चतुर्थः पादः]

- १ प्राग् यतः ठक् । पा०४।४।१।
 २ तेन जितं जयति दीव्यति खनति ।
 पा०४।४।२।
 ३ संस्कृते । पा०४।४।३।
 ४ कुलत्थ-कोपान्तात् अण् ।
 पा०४।४।४।
 ५ तरति । पा०४।४।५।
 ६ द्व्यच्-नौभ्यां ठन् । पा०४।४।७।
 ७ चरति । पा०४।४।८।
 ८ पर्पादिभ्यः ष्ठन् । पा०४।४।१०।
 ९ श्रवणाद् वा । पा०४।४।११।
 १० वेतनादिभ्यो जीवति । पा०४।४।१२।
 ११ वस्न-क्रय-विक्रयात् ठन् ।
 पा०४।४।१३।
 १२ छश्च आयुधात् । पा०४।४।१४।
 १३ व्रातात् खञ् । पा०५।२।२१।
 १४ हरति उत्सङ्गादिभ्यः । पा०४।४।१५।
 १५ भस्त्रादिभ्यः ष्ठन् । पा०४।४।१६।
 १६ विवध-वीवधाद् वा ।
 पा०४।४।१७+भा०।
 १७ अण् कुटिलिकायाः । पा०४।४।१८।
 १८ निर्वृत्ते अक्षद्युतादिभ्यः ।
 पा०४।४।१९।
 १९ भावात् इमप् । पा०४।४।२०भा०।
 २० त्रेः । पा०४।४।२०।
 २१ अपमित्य कक् । पा०४।४।२१।
 २२ संसृष्टे । पा०४।४।२२।
 २३ चूर्णात् इनिः । पा०४।४।२३।
 २४ लवणात् लुक् । पा०४।४।२४।
 २५ मुद्रात् अण् । पा०४।४।२५।
 २६ ओजस्-सहस्-अम्भसा वर्तते ।
 पा०४।४।२७।
 २७ तं प्रत्यनोः ईप-लोम-कूलात् ।
 पा०४।४।२८।
 २८ परेः मुख-पार्श्वान् । पा०४।४।२९।
 काशिका ४।४।२९।
 २९ उञ्छति । पा०४।४।३०।
 ३० रक्षति । पा०४।४।३१।
 ३१ शब्द-दर्दरं करोति । पा०४।४।३२।
 ३२ पक्षि-मत्स्य-मृगान् हन्ति ।
 पा०४।४।३३।
 ३३ परिपन्थं तिष्ठति च । पा०४।४।३४।
 ३४ माथान्त-पदवी-अनुपद-आक्रन्दं
 धावति । पा०४।४।३७,३८।
 ३५ पदान्त-प्रतिकण्ठ-अर्थ-ललामं
 गृह्णाति । पा०४।४।३९,४०।
 ३६ गह्ये । पा०४।४।३०भा०।
 ३७ वृद्धेर्वधुषः । पा०४।४।३० वा०३।
 ३८ दश-एकादश-कुसीदात् ष्ठन् ।
 पा०४।४।३१।
 ३९ धर्म-अधर्मं चरति । पा०४।४।४१+
 वा०१।
 ४० प्रतिपथमेति ठञ्च । पा०४।४।४२।
 ४१ समाजार्थान् समवेति । पा०४।४।४३।
 ४२ परिषदः ण्यः । पा०४।४।४४।
 ४३ सेनाया वा । पा०४।४।४५।
 ४४ लालाटिक-कौक्कुटिकौ ।
 पा०४।४।४६।
 ४५ परदारादीन् गच्छति ।
 पा०४।४।१ वा०४।

- ४६ सुस्नातादीन् पृच्छति ।
पा० ४।४।१ वा० ३।
- ४७ प्रभूतादीन् आह । पा० ४।४।१ वा० २।
- ४८ माशब्द इत्यादिभ्यः ।
पा० ४।४।१ वा० १।
- ४९ तस्य धर्म्यम् । पा० ४।४।४७।
- ५० ऋ-महिष्यादिभ्यः अण् ।
पा० ४।४।४९, ४८।
- ५१ वैशस्त्र-वैभाजित्रे ।
पा० ४।४।४९, वा० २, ३।
- ५२ अवक्रयः । पा० ४।४।५०।
- ५३ तदस्य पण्यम् । पा० ४।४।५१।
- ५४ लवणात् ठञ् । पा० ४।४।५२।
- ५५ किशरादिभ्यः ष्ठन् । पा० ४।४।५३।
- ५६ शलालुनो वा । पा० ४।४।५४।
- ५७ शिल्पम् । पा० ४।४।५५।
- ५८ मङ्गुल-शर्करात्-अण् वा ।
पा० ४।४।५६।
- ५९ प्रहरणम् । पा० ४।४।५७।
- ६० शक्ति-यष्टयोः टीकक् । पा० ४।४।५९।
- ६१ अस्ति नास्ति दिष्टमिति मतिः ।
पा० ४।४।६०।
- ६२ शीलम् । पा० ४।४।६१।
- ६३ छत्रादिभ्यः णः । पा० ४।४।६२।
- ६४ कर्म अध्ययने वृत्तम् । पा० ४।४।६३।
- ६५ बह्वच्-पूर्वपदात् ठच् । पा० ४।४।६४।
- ६६ हिता भक्षाः । पा० ४।४।६५।
- ६७ दीयते नियुक्तम् । पा० ४।४।६६।
- ६८ ओदनात् ठट् । पा० ४।४।६७।
- ६९ भक्ताद् अण् वा । पा० ४।४।६८।
- ७० तत्र नियुक्तम् । पा० ४।४।६९।
- ७१ अगारान्तात् ठन् । पा० ४।४।७०।
- ७२ अदेश-कालात् अधीते ।
पा० ४।४।७१।
- ७३ कठिनान्त-प्रस्तार-संस्थानात् व्यवहरति ।
पा० ४।४।७२।
- ७४ निकटादिषु वसति । पा० ४।४।७३।
- ७५ सतीर्थ्यः । पा० ४।४।१०७।
- ७६ प्राग् हितात् यत् । पा० ४।४।७५।
- ७७ तद् वहति युग-प्रासङ्गात् ।
पा० ४।४।७६।
- ७८ धुरः ढक् च । पा० ४।४।७७।
- ७९ सर्व-उत्तर-दक्षिणादेः खः ।
पा० ४।४।७८। काशिका ४।४।७८।
- ८० एकादेलुक् च । पा० ४।४।७९।
- ८१ नाम्नि जन्याः । पा० ४।४।८२।
- ८२ विध्यति अकरणेन ।
पा० ४।४।८३ वा० १।
- ८३ धन-गणं लब्धा । पा० ४।४।८४।
- ८४ अन्नात् णः । पा० ४।४।८५।
- ८५ वशं गतः । पा० ४।४।८६।
- ८६ पदम् अस्मिन् दृश्यम् ।
पा० ४।४।८७।
- ८७ मूलम् अस्य अदृढम् । पा० ४।४।८८।
- ८८ धेनुष्या-गार्हपत्यौ नाम्नि ।
पा० ४।४।८९, ९०।
- ८९ मूलेन आनाम्ये । पा० ४।४।९१।
- ९० वयसा च तुल्ये । पा० ४।४।९१।
- ९१ नौ-तुला-विषः तार्य-संमित-वध्येषु ।
पा० ४।४।९१।
- ९२ सीतया समिते । पा० ४।४।९१।
- ९३ धर्मेण प्राप्ये । पा० ४।४।९१।
- ९४ पथि-अर्थ-न्यायाच्च अनपेते ।
पा० ४।४।९२।
- ९५ छन्दसा निर्मिते । पा० ४।४।९३।

९६ उरसा अण् च । पा०४।४।९४।	१०२ भक्तात् णः । पा०४।४।१००।
९७ हृदयस्य प्रिये । पा०४।४।९५।	१०३ परिषदः ण्यश्च । पा०४।४।१०१।
९८ मत-जनयोः करण-जल्पयोः ।	काशिका ४।४।१०१।
पा०४।४।९७।	१०४ कथादिभ्यः ठक् । पा०४।४।१०२।
९९ हलस्य कर्षे । पा०४।४।९७।	१०५ पथि-अतिथि-वसति-स्वपतेः ढञ् ।
१०० तत्र साधुः । पा०४।४।९८।	पा०४।४।१०४।
१०१ प्रतिजनादिभ्यः खञ् ।	१०६ समानोदरे शयितः ।
पा०४।४।९९।	पा०४।४।१०८।

[तृतीयस्य अध्यायस्य चतुर्थः पादः समाप्तः]

[चान्द्रे व्याकरणे तृतीयः अध्यायः समाप्तः]

[चतुर्थः अध्यायः, प्रथमः पादः]

- १ प्राक् क्रीतात् छः । पा०५।१।१। २५ आर्हात् । पा०५।१।१६।
 २ उ-गवादिभ्यः यत् । पा०५।१।२। २६ कंस-अर्धात् ठट् ।
 ३ वा हविर्-यूपादिभ्यः । पा०५।१।४। पा०५।१।२५+वा०१।
 ४ तस्मै हितम् । पा०५।१।५। २७ कार्षापणात् । पा०५।१।२५ वा०२।
 ५ न राज-आचार्य-वृषन्-ब्राह्मणात् । २८ प्रतिर्वास्य । पा०५।१।२५ वा०२।
 काशिका ५।१।७। २९ शूर्पात् अञ् । पा०५।१।२६।
 ६ देहांशात् यत् । पा०५।१।६। ३० सहस्र-वसन-विंशतिक-शतमानात्
 ७ खल-यव-माष-तिल-वृष-ब्रह्म-रथात् । अण् । पा०५।१।२७।
 पा०५।१।७। ३१ शतात् केवलात् ठन्-यतौ अतस्मिन् ।
 ८ अज-अविभ्यां थ्यन् । पा०५।१।८। पा०५।१।२१+वा०१।
 ९ भोगान्त-आत्मनः खः । पा०५।१।९। ३२ संख्याया अतिशतः कन् ।
 १० पञ्च-विंशत् जनान्तात् तदर्थत् । पा०५।१।२२।
 पा०५।१।९+वा०४। ३३ कति-गणौ तद्वत् । पा०५।१।२३।
 काशिका ५।१।९। ३४ वतोः । पा०५।१।२३।
 ११ सर्वात् । पा०५।१।९ वा०५। ३५ इड् वा । पा०५।१।२३ ।
 १२ महतश्च ठञ् । पा०५।१।९ वा०६। ३६ विंशति-त्रिंशद्भ्याम् ।
 १३ सर्वात् णः वा । पा०५।१।१०+वा०१। पा०५।१।२४+भा०।
 १४ पुरुषात् ढञ् । पा०५।१।१०। ३७ अनास्मि ड्वुन् । पा०५।१।२४।
 १५ माणक्-चरकात् खञ् । पा०५।१।११। ३८ संख्या-अध्यधदिः संख्येयात् लुक् अद्धिः।
 १६ विकृतेः प्रकृतौ । पा०५।१।१२। पा०५।१।२८+भा०।
 १७ ऋषभ-उपानहो ज्यः । पा०५।१।१४। ३९ कार्षापण-सहस्र-सुवर्ण-शतमानात् वा ।
 १८ चर्मणि अञ् । पा०५।१।१५। पा०५।१।२९+वा०१।
 १९ छदिर्-बलिभ्यां ढञ् । पा०५।१।१३। ४० द्वि-त्रि-बह्वादेर्निष्क-विस्तात् ।
 २० उपधेः । पा०५।१।१३। पा०५।१।३०,३१+वा०२।
 २१ तद् अस्य अत्र स्यादिति । ४१ विंशतिकात् खः । पा०५।१।३२।
 पा०५।१।१६। ४२ खारी-काकणीभ्यः ईकन् ।
 २२ परिखाया ढञ् । पा०५।१।१७। पा०५।१।३३+वा०१-३।
 २३ प्राग् वतेः ठञ् । पा०५।१।१८। ४३ पण-पाद-माषात् यत् । पा०५।१।३४।
 २४ संख्यादेश्चालुकः । पा०५।१।२० वा०२।

१ काशिकायाम् अस्मिन् सूत्रे वृत्तौ एतस्य चान्द्रस्य सूत्रस्य समावेशः ।

४४ शताद् वा ।

पा० ५।१।३४+३५ वा० १।

४५ शाणात् । पा० ५।१।३५।

४६ द्वि-त्र्यादेः अण् च । पा० ५।१।३६।

४७ तेन क्रीतं मूल्यात् । पा० ५।१।३७।

काशिका ५।१।३७।

४८ तस्य वापः । पा० ५।१।४५।

४९ पात्रात् षठ् । पा० ५।१।४६।

५० वात-पित्त-श्लेष्म-संनिपातात् शमन-

कोपने । पा० ५।१।३८ वा० १, २।

५१ निमित्ते संयोग-उत्पाते ।

पा० ५।१।३८।

५२ द्व्यचः असंख्यापरिमाण-अश्वादेर्यत् ।

पा० ५।१।३९।

५३ ब्रह्मवर्चसात् । पा० ५।१।३९ वा० १।

५४ पुत्रात् छश्च । पा० ५।१।४०।

५५ पृथिवी-सर्वभूमेः अन्-अणौ ।

पा० ५।१।४१।

५६ ईश्वरे । पा० ५।१।४२।

५७ तत्र विदिते । पा० ५।१।४३।

५८ लोक-सर्वलोकात् । पा० ५।१।४४।

५९ तद् अत्र अस्मै वृद्धि-आय-लाभ-शुल्क-

उपदं दीयते । पा० ५।१।४७+वा० १।

६० पूरण-अर्धात् ठन् । पा० ५।१।४८।

६१ भागात् यच्च । पा० ५।१।४९।

६२ तद् अस्य परिमाणम् । पा० ५।१।५७।

६३ पञ्चत्-दशत् वर्गे वा । पा० ५।१।६०।

६४ स्तोमे डट् । पा० ५।१।५८ वा० ८।

६५ त्रिशत्-चत्वारिंशतः ब्राह्मणाख्यायां

डण् । पा० ५।१।६२।

६६ भूति-वस्न-अंशाः । पा० ५।१।५६।

६७ तत् पचति द्रोणात् अण् च ।

पा० ५।१।५२+वा० १।

६८ संभवति-अवहरति च । पा० ५।१।५२।

६९ पात्र-आचित-आढकात् खो वा ।

पा० ५।१।५३।

७० संख्यादेः ष्ठश्च । पा० ५।१।५४।

७१ कुलिजात् वा । पा० ५।१।५५।

७२ वंशादिभ्यः हरति वहति आवहति

भारात् । पा० ५।१।५०।

७३ द्रव्य-वस्नात् कन्-ठनौ ।

पा० ५।१।५१।

७४ अर्हति । पा० ५।१।६३।

७५ छेदादिभ्यः नित्यम् । पा० ५।१।६४।

७६ शीर्षच्छेदात् यच्च । पा० ५।१।६५।

७७ यज्ञात् घः । पा० ५।१।७१।

७८ पात्रात् यश्च । पा० ५।१।६८।

७९ दण्डादिभ्यः । पा० ५।१।६६।

८० दक्षिणा-कडङ्गर-स्थाली-बिलात् छश्च ।

पा० ५।१।६९, ७०।

८१ आर्त्विजीनः । पा० ५।१।७१।

८२ अधृष्ट-अकार्ययोः शालीन-कौपीने ।

पा० ५।२।२०।

८३ पारायण-तुरायण-चान्द्रायणं वर्तयति ।

पा० ५।१।७२।

८४ संशयमापन्नः । पा० ५।१।७३।

८५ योजनं गच्छति । पा० ५।१।७४।

८६ क्रोश-योजनादेः शतात् अभिगमनार्हे

च । पा० ५।१।७४ वा० १, २।

८७ पथः षठ् । पा० ५।१।७५।

८८ णः पन्थश्च नित्यम् । पा० ५।१।७६।

८९ अज-शङ्कु-उत्तर-वारि-जङ्गल-

कान्तारादिना आहूते च ।

पा० ५।१।७७+वा० १, २।

९० स्थलादिना । पा० ५।१।७७ वा० १।

- ६१ मधुक-मरीचयोः अण् ।
पा० ५।१।७७ वा० ३।
- ६२ कालात् । पा० ५।१।७८।
- ६३ तेन निर्वृत्तः । पा० ५।१।७९।
- ६४ तस्मै भूतः अधीष्टः ।
पा० ५।१।८०+वा० २।
- ६५ तं भूतः भावी । पा० ५।१।८०।
- ६६ मासाद् वयसि यत्-खञौ ।
पा० ५।१।८१।
- ६७ संख्यादेर्यप् । पा० ५।१।८२।
- ६८ षष्ठो ण्यञ्च वा । पा० ५।१।८३।
- ६९ ठञ्चान्यत्र । पा० ५।१।८४।
- १०० समायाः खः । पा० ५।१।८५।
- १०१ संख्यादेर्वा । पा० ५।१।८६।
- १०२ रात्री-अहः-संवत्सरात् ।
पा० ५।१।८७।
- १०३ वर्षात् लुक् च । पा० ५।१।८८।
- १०४ प्राणिनि । पा० ५।१।८९।
- १०५ तेन सुकर-कार्य-लभ्य-परिजय्यम् ।
पा० ५।१।९३।
- १०६ तत् अस्य ब्रह्मचर्ये । पा० ५।१।९४।
- १०७ महानाम्नादीनाम् ।
पा० ५।१।९४ वा० १।
- १०८ तत् चरति । पा० ५।१।९४ वा० २।
- १०९ देवव्रतादिभ्यः डितिः ।
पा० ५।१।९४ वा० ३।
- ११० अष्टाचत्वारिंशतो ड्वुञ्श्च ।
पा० ५।१।९४ वा० ४।
- १११ चातुर्मास्यात् यलोपश्च ।
पा० ५।१।९४ वा० ५।
- ११२ तस्य दक्षिणा यज्ञेभ्यः ।
पा० ५।१।९५।
- ११३ तत्र दीयते । पा० ५।१।९६।
- ११४ कालात् कार्यं च भववत् ।
पा० ५।१।९६+भा०।
- ११५ व्युष्टादिभ्यः अण् । पा० ५।१।९७।
- ११६ यथाकथाचात् णः । पा० ५।१।९८।
- ११७ तेन हस्तात् यत् । पा० ५।१।९८।
- ११८ शोभते । पा० ५।१।९९।
- ११९ कर्म-वेशात् यत् । पा० ५।१।१००।
- १२० तस्मै प्रभवति संतापादिभ्यः ।
पा० ५।१।१०१।
- १२१ योगात् यत् च । पा० ५।१।१०२।
- १२२ कर्मणः उक्ञ् । पा० ५।१।१०३।
- १२३ सोऽस्य प्राप्तः समयात् ।
पा० ५।१।१०४।
- १२४ ऋत्वादिभ्यः अण् ।
पा० ५।१।१०५, ९७ भा०।
- १२५ कालात् यत् । पा० ५।१।१०७।
- १२६ प्रकृष्टः । पा० ५।१।१०८।
- १२७ प्रयोजनम् पा० ५।१।१०९।
- १२८ एकागारात् चौरे । पा० ५।१।११३।
- १२९ आकालात् ठञ्च ।
पा० ५।१।११४ वा० २।
- १३० चूडादिभ्यः अण् ।
पा० ५।१।११७ भा०।
- १३१ विशाखा-आषाढात् मन्थ-दण्डयोः ।
पा० ५।१।११०।
- १३२ उत्थापनादिभ्यः छः ।
पा० ५।१।१११+वा० १।
- १३३ स्वर्गादिभ्यः यत् ।
पा० ५।१।१११ वा० २।
- १३४ पुण्याहवाचनादिभ्यः लुक् ।
पा० ५।१।१११ वा० ३।
- १३५ इवे वतिः । पा० ५।१।११५, ११६।

- १३६ तस्य भावः त्व-तलौ । पा०५।१।११६।
 १३७ नञः अनन्यार्थे । पा०५।१।१२१।
 १३८ चतुर-संगत-लवण-वड-बुध-कतर-
 सलसात् वा । पा०५।१।१२१।
 १३९ पृथ्वादिभ्यः इमनिच् । पा०५।१।१२२।
 १४० वर्ण-दृढादिभ्यः ष्यञ् च । पा०५।१।१२३।
 १४१ गुणवचन-ब्राह्मणादिभ्यः कर्मणि च । पा०५।१।१२४।
 १४२ सखि-दूत-वणिग्भ्यः यः । पा०५।१।१२६। काशिका
 ५।१।१२६।
 १४३ स्तेयम् । पा०५।१।१२५।
 १४४ कपि-ज्ञात्योः ढक् । पा०५।१।१२७।
 १४५ प्राणिजाति-वयोऽर्थ-उद्गात्रादिभ्यः
 अञ् । पा०५।१।१२६।
 १४६ हायनान्त-युवादिभ्यः अण् । पा०५।१।१३०।
 १४७ लघोः इकः अकवेः । पा०५।१।१३१। काशिका
 ५।१।१३१।
 १४८ योपान्तात् गुरुपोत्तमात् असुप्रख्याद्
 वुञ् । पा०५।१।१३२। पा०२।४।५४
 वा०४।
 १४९ चार्थसमास-मनोज्ञादिभ्यः । पा०५।१।१३३।
 १५० गोत्रचरणात् श्लाघा-अधिकेप-
 अवगतेषु । पा०५।१।१३४।
 १५१ ऋत्विग्भ्यः छः । पा०५।१।१३५।
 १५२ ब्रह्मणः त्वः । पा०५।१।१३६।

[चतुर्थस्य अध्यायस्य प्रथमः पादः समाप्तः]

[द्वितीयः पादः]

- १ धान्येभ्यः क्षेत्रे खञ् । पा०५।२।१।
 २ व्रीहि-शालेः ढक् । पा०५।२।२।
 ३ यव-यवक-षष्टिकात् यत् । पा०५।२।३।
 ४ वा तिल-माष-उमा-भङ्गा-अणुभ्यः । पा०५।२।४।
 ५ अश्वात् एकाहगमे खञ् । पा०५।२।१६।
 ६ गोष्ठाद् भूते । पा०५।२।१८।
 ७ साप्तपदीनं सख्ये । पा०५।२।२२।
 ८ सर्वचर्मणा कृतः । पा०५।२।५।
 ९ खः । पा०५।२।५।
 १० यथामुख-संमुखं दृश्यते अस्मिन् । पा०५।२।६।
 ११ सर्वादिपथि-अङ्ग-कर्म-पत्त्र-पात्रं
 व्याप्नोति । पा०५।२।७।
 १२ आप्रपदं प्राप्नोति । पा०५।२।८।
 १३ अनुपदं बद्धा । पा०५।२।९।
 १४ अयानयं नेयः । पा०५।२।९।
 १५ सर्वास्मिन् अस्ति । पा०५।२।९।
 १६ परोवर-परंपर-पुत्रपौत्रम् अनुभवति । पा०५।२।१०।
 १७ पारावार-अवारपार-अत्यन्त-अनुकामं
 गामी । पा०५।२।११।
 काशिका ५।२।११।

- १८ अनुग्वलम् । पा०५।२।१५।
 १९ अध्वानं यच्च । पा०५।२।१६।
 २० अभ्यमित्रं छश्च । पा०५।२।१७।
 २१ समांसमीन-अंछश्चीन-आगवीनाः ।
 पा०५।२।१२-१४।
 २२ अषडक्ष-आशितंगु-अलंकर्म-अलंपुरुष-
 अध्यन्तात् । पा०५।४।७।
 २३ अदिशि अञ्चो वा । पा०५।४।८।
 २४ पील्वादीनां पाके कुणप् ।
 पा०५।२।२४।
 २५ कर्णादीनां मूले जाहच् ।
 पा०५।२।२४।
 २६ पक्षस्य तितः । पा०५।२।२५।
 २७ तेन वित्तः चुञ्चुप्-चणपौ ।
 पा०५।२।२६।
 २८ विना नाना । पा०५।२।२७।
 २९ वेः शालच्-शङ्कुटचौ । पा०५।२।२८।
 ३० सं-प्र-उत्-नेश्च कटच् । पा०५।२।२९।
 ३१ अवात् कुटारच्च । पा०५।२।३०।
 ३२ नासानतौ टीटञ्-नाटच्-भ्रटच्चः ।
 पा०५।२।३१।
 ३३ निबिड-निबिरीष-चिक्र-चिकिन-
 चिपिटाः । पा०५।२।३२, ३३+वा०१।
 ३४ किलन्नक्षुषि चिल्ल-पिल्ल-चुल्लाः ।
 पा०५।२।३३ वा०२+भा०।
 ३५ उपत्यका-अधित्यके । पा०५।२।३४।
 ३६ कर्मणि घटते अठच् । पा०५।२।३५।
 ३७ तत् अस्य संजातं तारकादिभ्यः इतच् ।
 पा०५।२।३६।
 ३८ माने मात्रट् । पा०५।२।३७।
 ३९ ऊर्ध्वं दघ्नट्-द्वयसट् च ।
 पा०५।२।३७+भा०।
 ४० हस्ति-पुरुषात् अण् च ।
 पा०५।२।३८।
 ४१ संख्यादेः संख्येयात् लुक् ।
 पा०५।२।३७ भा०।
 ४२ शन्-शत्-शतेः डिनिर्वा ।
 पा०५।२।३७ भा०।
 ४३ यत्-तद्-एतद्-वतुप् । पा०५।२।३९।
 ४४ इयत्-कियत् । पा०५।२।४०।
 ४५ कतिः संख्यायाम् । पा०५।२।४१।
 ४६ अंशे संख्यायाः तयट् । पा०५।२।४२।
 ४७ द्वि-त्रिभ्याम् अयट् वा । पा०५।२।४३।
 ४८ उभात् । पा०५।२।४४।
 ४९ निमान-निमेययोः मयट् ।
 पा०५।२।४७+वा०५।
 ५० शति-शद्-दशान्ताद् अधिका अस्मिन्
 शतसहस्रे डः । पा०५।२।४५+भा०।
 ५१ तस्य पूरणे डट् । पा०५।२।४८।
 ५२ विंशत्यादिभ्यः तमट् वा ।
 पा०५।२।५६।
 ५३ शतादिमास-अर्धमास-संवत्सरात् ।
 पा०५।२।५७।
 ५४ षष्ट्यादेः असंख्यादेः । पा०५।२।५८।
 ५५ नो मट् । पा०५।२।४९।
 ५६ षट्-कति-कतिपयात् थट् ।
 पा०५।२।५१।
 ५७ चतुरः । पा०५।२।५१।
 ५८ यत्-छौ चलोपश्च ।
 पा०५।२।५१ वा०१।
 ५९ द्वितीय-तृतीयौ । पा०५।२।५४, ५५।
 ६० बहु-पूग-गण-संघात् तिथट् ।
 पा०५।२।५२।
 ६१ वतोः इथट् । पा०५।२।५३।

- ६२ भागे अष्टमात् वो वा ।
पा० ५।३।५०।
- ६३ षष्ठात् । पा० ५।३।५०।
- ६४ माने कंश्च । पा० ५।३।५१।
- ६५ तेन गृह्णातीति लुक् च ।
पा० ५।२।७७ वा० २।
- ६६ ग्रहणे वा । पा० ५।२।७७।
- ६७ एकाद् आकिनिच्च असहाये ।
पा० ५।३।५२।
- ६८ आकर्षादिषु कुशलः । पा० ५।२।६४।
- ६९ पथकः । पा० ५।२।६३।
- ७० धन-हिरण्ये कामः । पा० ५।२।६५।
- ७१ स्वाङ्गेषु सक्तः । पा० ५।२।६६।
- ७२ औदरिकः अलसे । पा० ५।२।६७।
- ७३ सस्येन परिजातः । पा० ५।२।६८।
- ७४ अंशं हारी । पा० ५।२।६९।
- ७५ तन्त्रात् नवोद्धृते । पा० ५।२।७०।
- ७६ ब्राह्मणात् नाम्नि । पा० ५।२।७१।
- ७७ उष्णात् । पा० ५।२।७१।
- ७८ शीतात् च कारिणि । पा० ५।२।७२।
- ७९ अधिकम् । पा० ५।२।७३।
- ८० अनुक-अभिक-अभीकं कमिता ।
पा० ५।२।७४।
- ८१ पार्श्वेन अन्विच्छति । पा० ५।२।७५।
- ८२ अयःशूल-दण्डाजिनाभ्यां ठक् ।
पा० ५।२।७६।
- ८३ सोऽस्य ग्रामणीः । पा० ५।२।७८।
- ८४ शृङ्खलं बन्धनं करभे । पा० ५।२।७९।
- ८५ उत्क उन्मताः । पा० ५।२।८०।
- ८६ काल-हेतु-फलात् नाम्नि ।
पा० ५।२।८१। काशिका ५।२।८१।
- ८७ प्रायः अन्नमस्मिन् । पा० ५।२।८२।
- ८८ कुल्माषात् अण् । पा० ५।२।८३।
- ८९ बटकात् इतिः । पा० ५।२।८२ वा० १।
- ९० साक्षात् द्रष्टा । पा० ५।२।९१।
- ९१ श्राद्धमनेन अद्य भुक्तं ठञ्च ।
पा० ५।२।८५+वा० १।
- ९२ पूर्वात् । पा० ५।२।८६।
- ९३ सपूर्वात् । पा० ५।२।८७।
- ९४ इष्टादिभ्यः । पा० ५।२।८८।
- ९५ अनुपदी अन्वेष्टा । पा० ५।२।९०।
- ९६ क्षेत्रियच् परक्षेत्रे चिकित्स्यः ।
पा० ५।२।९२।
- ९७ इन्द्रियम् । पा० ५।२।९३।
- ९८ तद् अस्य अस्ति अत्रेति मनुप् ।
पा० ५।२।९४।
- ९९ प्राण्यङ्गात् आतो लच् वा ।
पा० ५।२।९६+भा०।
- १०० सिध्मादिभ्यः । पा० ५।२।९७।
- १०१ वत्स-अंसात् स्नेह-बलिनोः ।
पा० ५।२।९८।
- १०२ फेनात् । पा० ५।२।९९।
- १०३ पिच्छादिभ्यश्च इलच् ।
पा० ५।२।१००, ९९।
- १०४ लोमादि-पामादिभ्यः श-नौ ।
पा० ५।२।१००।
- १०५ प्रज्ञा-श्रद्धा-अर्चा-वृत्तिभ्यो णः ।
पा० ५।२।१०१+वा० १।
- १०६ तपः-सहस्राभ्याम् अण् ।
पा० ५।२।१०३।
- १०७ ज्योत्स्नादिभ्यः । पा० ५।२।१०३
वा० २।
- १०८ सिकता-शर्कराभ्याम् ।
पा० ५।२।१०४।
- १०९ इलच् देशे । पा० ५।२।१०५।
- ११० दन्तुरः । पा० ५।२।१०६।

- १११ ऊवादिभ्यः रः । पा० ५।२।१०७। १३० हस्त-वन्तात् जातौ । पा० ५।२।१३३।
 ११२ द्यु-द्रुभ्यां मः । पा० ५।२।१०८। १३१ दणाद् ब्रह्मचारिणि ।
 ११३ केशादिभ्यो वः । पा० ५।२।१३४।
 पा० ५।२।१०९+वा० १+भा०। १३२ पुष्करादिभ्यो देशे । पा० ५।२।१३५।
 ११४ मेधा-रथात् इरः । १३३ मन्-मात् नास्मि । पा० ५।२।१३७।
 पा० ५।२।१०९ वा० ३। १३४ शिखादिभ्यः वा । पा० ५।२।१३६।
 ११५ काण्ड-अण्डात् ईरच् । १३५ रूपात् आहत-प्रशस्ययोः यप् ।
 पा० ५।२।१११। पा० ५।२।१२०।
 ११६ कृष्यादिभ्यो वलच् । १३६ हिमादिभ्यः ।
 पा० ५।२।११२। पा० ५।२।१२० वा० १।
 ११७ ज्योत्स्ना-तमित्र-ऊर्जस्विन्- १३७ अस्-माया-मेधा-स्त्रजो विनिः ।
 ऊर्जस्वल-मलीमत्ताः । पा० ५।२।११४। पा० ५।२।१२१।
 ११८ नावादिभ्यः ठन् । पा० ५।२।११६। १३८ आमयावी ।
 भा०। काशिका ५।२।११६। पा० ५।२।१२२ वा० २।
 ११९ ब्रीह्यादि-अत इतिश्च । १३९ वृन्दात् आरकन् ।
 पा० ५।२।११६, ११५। पा० ५।२।१२२ वा० ३।
 १२० नैकाचः । पा० ५।२।११५ वा० १। १४० शृङ्गात् । पा० ५।२।१२२ वा० ३।
 १२१ सप्तभ्याम् । पा० ५।२।११५ भा०। १४१ फल-बर्ह-मलाच्च इनच् ।
 १२२ एक-गोपूर्वात् ठन् । पा० ५।२।११८। पा० ५।२।१२२ वा० ४।
 १२३ तिष्कादेः शत-सहस्रात् । पा० ५।२।११४।
 पा० ५।२।११९। १४२ पर्व-मरुद्भ्यां तप् ।
 १२४ नवयज्ञादिभ्यः । पा० ४।२।३५। पा० ५।२।१२२ वा० १०।
 वा० १। १४३ स्वामिन् ईशे । पा० ५।२।१२६।
 १२५ चार्थ-रोग-गहितात् प्राणिस्थात् १४४ गोमिन् पूज्ये । पा० ५।२।११४।
 अस्वाङ्गात् इतिः । पा० ५।२।१२८। १४५ वाचो गिमनिः । पा० ५।२।१२४।
 काशिका ५।२।१२८। १४६ आलच्-आटचौ कुत्सायाम् ।
 १२६ वात-अतिसार-पिशाचानां कुक् च । पा० ५।२।१२५+भा०।
 पा० ५।२।१२९+भा०। १४७ अर्शआदिभ्यः अच् ।
 १२७ वयसि पूरणात् । पा० ५।२।१३०। पा० ५।२।१२७।
 १२८ सुखादिभ्यः । पा० ५।२।१३१। १४८ तुण्डि-वलि-वटेर्भः ।
 १२९ धर्म-शील-वर्णान्तात् । पा० ५।२।१३६।
 पा० ५।२।१३२। १४९ कं-शंभ्याम् । पा० ५।२।१३८।

- १५० ति-तु-व-यस्-ताः । पा०५।२।१३८। १५६ गोसदादिभ्यः वृत् । पा०५।२।६२।
 १५१ युस् । पा०५।२।१३८। १५७ निद्रा-तन्द्रा-श्रद्धा-दया-हृदयत् वा
 १५२ ऊर्णा-अहं-शुभंभ्यः । आलुच् । पा०३।२।१५८।
 पा०५।२।१२२ वा०५।
 १५३ सूक्त-साम्नोः छः । १५८ शीत-उष्ण-तृप्रां न सहते ।
 पा०५।२।१२२ वा०६।
 पा०५।२।५६। १५९ हिमं सहते चेलुः ।
 १५४ अव्याय-अनुवाकयोः लुग् वा । पा०५।१।१२२ वा०७।
 पा०५।२।६०+वा०१। १६० बल-वातं बूलः ।
 १५५ विमुक्तादिभ्यः अण् । पा०५।२।६१। पा०५।२।१२२ वा०८, ६।

[चतुर्थस्य अध्यायस्य द्वितीयः पादः समाप्तः]

[तृतीयः पादः]

- १ षष्ठ्याः व्याधये तत् । १३ सर्व-एक-अन्य-कि-यत्-तदः काले दा ।
 पा०५।४।४८। पा०५।३।१५।
 २ रोगात् प्रतीकारे । पा०५।४।४९। १४ तदा अक्षुना इदानीं तदानीम् ।
 ३ क्षेत्र-अतिग्रह-अव्ययनेषु अकर्तरि पा०५।३।६, १७, १८, १९।
 तृतीयायाः । पा०५।४।४६। १५ कि-यद्-अन्याद् अनद्यतने हिल् वा ।
 ४ हीयमान-पापयुक्तात् । पा०५।४।४७। पा०५।३।२१।
 ५ प्रतिना पञ्चम्याः । पा०५।४।४४। १६ तर्हि एतर्हि सद्यः परेद्यवि । -
 ६ अवधौ अहात्-रुहोः । पा०५।४।४५। पा०५।३।२१, १६, २२।
 ७ सर्वादि-बहुभ्यः अट्ट्यादिभ्यः । १७ पूर्व-अन्य-अन्यतर-इतर-अपर-अधर-
 उत्तराद् एद्युस् । पा०५।३।२२
 पा०३।२।७। (वा०६)।
 ८ कुतः अतः इतः । पा०३।३।५। १८ उभयाद् द्युश्च ।
 पा०७।२।१०४। पा०५।३।२२ वा०६, ७।
 ९ आद्यादिभ्यः । पा०५।४।४४ वा०१। १९ प्रकारे थाल् । पा०५।३।२३।
 १० सप्तम्याः त्रल् । पा०५।३।१०। २० धा संख्यायाः । पा०५।३।४२।
 ११ क्व कुत्र इह-अत्र । २१ षोढा वा । पा०६।३।१०६ वा०४।
 पा०५।३।१२, ११, ५, ३। २२ ऐक्यम् । पा०५।३।४४।
 १२ भवद्-दीर्घयिष्-आयुष्मत्-देवानांप्रियैः २३ द्वि-त्रेर्धमुच् । पा०५।३।४५।
 ते अन्याभ्यश्च । पा०५।३।१४ भा०। २४ एधा । पा०५।३।४६।

- २५ तद्वति धण् । पा० ५।३।४५ वा० १। ४७ गुणात् ईयसुन्-इष्टनौ च ।
 २६ जातीयर् । पा० ५।३।६६। पा० ५।३।५८।
 २७ स्थूलादिभ्यः कन् । पा० ५।४।३। ४८ विन्-सतोरुक् । पा० ५।३।६५।
 २८ दिक्शब्दाद् दिग्-देश-कालार्थात् ४९ प्रशस्यस्य श्रः । पा० ५।३।६०।
 सप्तमी-पञ्चमी-प्रथमाभ्यः अस्तातिः । ५० वृद्धस्य च उयः । पा० ५।३।६१, ६२।
 पा० ५।३।२७। ५१ बाढ-अन्तिकयोः साध-देदौ ।
 २९ अञ्चो लुक् । पा० ५।३।३०। पा० ५।३।६३।
 ३० उपरि-उपरिष्ठात् । पा० ५।३।३१। ५२ युव-अल्पयोः कन् वा । पा० ५।३।६४।
 ३१ पूर्व-अधरयोः पुर-अधौ च । ५३ तिङ्श्च रूपम् । पा० ५।३।६६+वा० १।
 पा० ५।३।४०। ५४ किञ्चिदूने कल्प-देश-देशीयरः ।
 ३२ अस् । पा० ५।३।३६। पा० ५।३।६७।
 ३३ अवरस्य अच् । पा० ५।३।३६। ५५ प्राग् ढञः कः । पा० ५।३।७०।
 ३४ वा अस्ताति । पा० ५।३।४१। ५६ तिङ्-असंख्यातास् अचः अप्रात् पूर्वः
 ३५ पश्चात् । पा० ५।३।३२। अकच् । पा० ५।३।७१। काशिका
 ३६ पश्चाद्यत् । पा० ५।३।३२ वा० ४। ५।३।७१।
 ३७ पर-अवरात् तस् वा । पा० ५।३।२६। ५७ कश्च दः । पा० ५।३।७२।
 ३८ दक्षिण-उत्तरात् आच्च । ५८ तूष्णीकम् । पा० ५।३।७२ वा० १।
 पा० ५।३।३६, २८, ३८। ५९ शीले तूष्णीकः । पा० ५।३।७२
 ३९ आहि च द्वे । पा० ५।३।३७, ३८। वा० २।
 ४० अधरात् चात् । पा० ५।३।३४। ६० सर्वादीनाम् । पा० ५।३।७१।
 ४१ एनप् अद्वे वा । पा० ५।३।३५। ६१ सुयः । पा० ५।३।७२ भा०।
 ४२ निन्द्ये पाशप् । पा० ५।३।४७। ६२ अज्ञात-कुत्सयोः । पा० ५।३।७३, ७४।
 ४३ भूतपूर्वे चरट् । पा० ५।३।५३। ६३ दयायाम् । पा० ५।३।७६।
 ४४ षष्ठ्याः रूप्य च । पा० ५।३।५४। ६४ नृनाम्नि ठञ्-घञ्-इलञो वा ।
 ४५ द्वि-बहुषु प्रकर्षे तरप्-तमपौ । पा० ५।३।७८, ७९।
 पा० ५।३।५७, ५५। ६५ उश्च उपात् । पा० ५।३।८०।
 ४६ किम्-ए-तिङ्-असंख्यात् आमन्तो ६६ षषः । काशिका ५।३।८३।
 अद्रव्ये । पा० ५।४।११। ६७ ऋतः ल-यौ । काशिका ५।३।८३।
 ६८ उदन्तात् । काशिका ५।३।८३।

१ “ कथं षडङ्गुलिदत्तः षडिकः ? इति ” । “ षषः ठाजादिवचनात् सिद्धम् ” । इत्येवमस्य सूत्रस्य वृत्ती अस्य चान्द्रस्य सूत्रस्य नामग्राहं समावेशः ।

२ अस्मिन् सूत्रे पितृदत्तः पितृकः इत्यादिके उदाहरणे अस्य चान्द्रस्य समावेशः ।

३ काशिकायाम् अस्मिन् सूत्रे “ उवर्णात् ल इलस्य च ” इति वार्तिके अस्य चान्द्रस्य अन्तर्भावः तथा च तद्विषया कारिकाऽपि अत्रैव सूत्रे —

“ चतुर्धादिनजादौ च लोपः पूर्वपदस्य च । अप्रत्यये तथैवेष्टः उवर्णात् ल इलस्य च ॥ ”

६९ अल्पे । पा० ५।३।८५।

७० ह्रस्वे । पा० ५।३।८६।

७१ कुटी-शमी-शुण्डाभ्यः रः ।

पा० ५।३।८८।

७२ कुतुपः । पा० ५।३।८९।

७३ कासू-गोणीभ्यां ष्टरच् ।

पा० ५।३।९०।

७४ वत्स-उक्ष-अश्व-ऋषभाणां तनुत्वे ।

पा० ५।३।९१।

७५ यत्-तद्-एकात् द्वाभ्यां निर्धारणे

डतरच् पा० ५।३।९२, ९४ ।

७६ जातौ डतमच् बहुभ्यः ।

पा० ५।३।९३, ९४।

७७ तौ किमः । पा० ५।३।९२, ९३।

७८ इवे संज्ञा-प्रतिकृत्योः ।

पा० ५।३।९६, ९७।

७९ वस्तेः ढञ् । पा० ५।३।१०१।

८० शिलायाः ढश्च । पा० ५।३।१०२।

काशिका ५।३।१०२।

८१ शाखादिभ्यः यः । पा० ५।३।१०३।

८२ कुशाग्रात् छः । पा० ५।३।१०५।

८३ आकस्मिके । पा० ५।३।१०६।

८४ शर्करादिभ्यः अण् । पा० ५।३।१०७।

८५ अङ्गुल्यादिभ्यः ठक् । पा० ५।३।१०८।

८६ एकशालायाः ठच्च । पा० ५।३।१०९।

८७ कर्क-लोहितात् ईकक् ।

पा० ५।३।११०।

८८ पूगात् ज्यः । पा० ५।३।११२।

८९ ब्राताद् अस्त्रियाम् । पा० ५।३।११३।

९० 'वाहीकेषु अब्राह्मण-राजन्यात्

शस्त्रजीविसंघात् ज्यट् ।

पा० ५।३।११४।

९१ वृकात् णेयट् । पा० ५।३।११५।

९२ दामन्यादिभ्यः छः । पा० ५।३।११६।

९३ पश्वदिभ्यः अण् अस्त्रियाम् ।

पा० ५।३।११७।

९४ ज्यादीनां बहुषु लुक् ।

पा० ५।३।११८। पा० २।४।६२।

९५ अभिजित्-विदभृत्-शालावत्-

शिखावत्-शमीवत्-ऊर्णावत्-श्रुमद्भ्यः

अपत्याणः यञ् । पा० ५।३।११८।

[चतुर्थस्य अध्यायस्य तृतीयः पादः समाप्तः]

[चतुर्थः पादः]

१ बहु-अल्पार्थात् कारकात् मङ्गले शस्

वा । पा० ५।४।४२+वा० १।

२ संख्या-एकार्थात् वीप्सायाम् ।

पा० ५।४।४३।

३ संख्यादेः वुन् । पा० ५।४।१।

४ दण्ड-दानयोः । पा० ५।४।२।

५ वारसंख्यायाः कृत्वसुच् ।

पा० ५।४।१७।

६ बहोः धा च अविप्रकर्षे ।

पा० ५।४।२०।

१ काशिकायाम् अत्र सूत्रे (५।३।११४) 'वाहीकेषु' इति ।

- ७ द्वि-त्रि-चतुरः सुच् । पा० ५।४।१८। २६ भागात् यत् च ।
 ८ सकृत् । पा० ५।४।१९। पा० ५।४।३६^२ वा० २।
 ९ प्रकृते मयट् । पा० ५।४।२१। २७ सूर-मर्त-क्षेम-यविष्ठात् ।
 १० अनन्त-आवसथ-इतिह-भेषजात् व्यः । पा० ५।४।३६^३ वा० ७, ८।
 पा० ५।४।२३। २८ नवात् । पा० ५।४।३६^४ वा० ७।
 ११ तीयात् ईकग् न विद्या चेत् । २९ तनप्-तन-खा नू च ।
 पा० ४।२।७^१। भा०। पा० ५।४।३०^४ वा० ६।
 १२ यावादिभ्यः कन् । पा० ५।४।२६। ३० प्रात् पुराणे नश्च ।
 १३ लोहितात् मणौ । पा० ५।४।३०। पा० ५।४।३०^५ वा० ७।
 १४ रक्त-अनित्ययोः । पा० ५।४।३१, ३२। ३१ देवतान्तात् तदर्थे यत् ।
 १५ कालात् । पा० ५।४।३३। पा० ५।४।२४।
 १६ क्तात् अनात्यन्तिके । पा० ५।४।४। ३२ अर्घात् । पा० ५।४।२५।
 १७ विनयादिभ्यः ठक् । पा० ५।४।३४। ३३ पाद्यम् । पा० ५।४।२५।
 १८ वाचः संदेशे । पा० ५।४।३५। ३४ अतिथेः ण्यः । पा० ५।४।२६।
 काशिका ५।४।३५ ३५ अभूततद्भावे कृ-भू-अस्तियोगे
 (“वाचो व्याहृतार्थायाम्”) विकारात् च्विः । पा० ५।४।५०+
 १९ तथा कर्मणः अण् । पा० ५।४।३६। वा० १।
 २० ओषधेः अजातौ । पा० ५।४।३७। ३६ अरुप्-मनस्-चक्षुष्-चेतस्-रहस्-रजसां
 २१ णच्-इनुणः । पा० ५।४।१४, १५। लोपश्च पा० ५।४।५१।
 २२ प्रज्ञादिभ्यः वा । पा० ५।४।३८। ३७ अभिविधौ संपदा च सातिर्वा ।
 २३ मूदः तिकन् । पा० ५।४।३९। पा० ५।४।५३, ५२।
 २४ स-स्नौ स्तुतौ । पा० ५।४।४०। ३८ तदधीने । पा० ५।४।५४।
 २५ नाम-रूपात् धेयः । ३९ देये त्रा च । पा० ५।४।५५।
 पा० ५।४।३६^२ वा० २।

१ काशिकायाम् ४।२।८। सूत्रे “तीयात् ईकक् स्वार्थे वा वक्तव्यः” “न विद्यायाः” इत्येवं वार्तिकद्वयम् । तथा च तत्रैव कारिका —

“दृष्टे सामनि जते च द्विरण् डिद् वा विधीयते । तीयात् ईकक् न विद्यायाः गोत्रादङ्कुवदिष्यते” ॥

२ काशिकायाम् ५।४।२५। सूत्रे “भाग-रूप-नामभ्यो धेयः प्रत्ययो वक्तव्यः” इति वार्तिकम् ।

३ अत्रापि ५।४।२५। काशिकायां वार्तिकम् ।

४ अत्रापि काशिकायाम् ५।४।२५। सूत्रे वार्तिकम् :— “नवस्य नू आदेशः तनप्-तनप्-खाश्च प्रत्ययाः” ।

५ अत्रापि काशिकायाम् ५।४।२५। सूत्रे वार्तिकम् :— “नश्च पुराणे प्रात्” ।

- ४० देवादिभ्यः द्वितीया-सप्तम्योः बहुलम् । पा० ५।४।५६।
 ४१ अव्यक्तानुकरणात् अनेकाच्चः अनितौ डाच् । पा० ५।४।५७।
 ४२ कृत्रा द्वितीय-तृतीय-शतव-बीजात् कृषौ । पा० ५।४।५८।
 ४३ संख्यावेर्गुणात् । पा० ५।४।५९।
 ४४ समयात् यापनायाच् । पा० ५।४।६०।
 ४५ सप्तत्र-निष्पत्त्यात् अतिव्यथने । पा० ५।४।६१।
 ४६ निष्कुलात् निष्कोषणे । पा० ५।४।६२।
 ४७ प्रिय-मुखात् आनुकूल्ये । पा० ५।४।६३।
 ४८ कुःखात् प्रातिकूल्ये । पा० ५।४।६४।
 ४९ शूलात् पाके । पा० ५।४।६५।
 ५० सरयात् अक्षपथे । पा० ५।४।६६।
 ५१ मद्र-भद्रात् वनने । पा० ५।४।६७।+भा०।
 ५२ समाप्तान्तः । पा० ५।४।६८।
 ५३ न किमः क्षेपे । पा० ५।४।७०।
 ५४ पूजायां सु-अतेः प्राग् अन्यायात् । पा० ५।४।६९ वा० १, २।
 ५५ नवः अन्तर्यामि । पा० ५।४।७१।
 ५६ पयः वा । पा० ५।४।७२।
 ५७ पुर्-अप्-धुरश्च अनक्षस्य अच् । पा० ५।४।७४।
 ५८ ऋचः । पा० ५।४।७४।
 ५९ तन्-बहोः भाणव-चरणयोः । पा० ५।४।७४। वा० ("अनृचो
 भाणवको ज्ञेयः, बह्वृचः चरणा-
 स्त्रायाम्") ।
 ६० प्रति-अनु-अवात् साम-लोक्तः । पा० ५।४।७५।
 ६१ अक्षणः अक्षयुजः । पा० ५।४।७६।
 ६२ धेन्वनडुह-ऋग्यजुष-अक्षिभुव-
 दारणव-अर्धधीव-पदधीव-नवतंदिद-
 रात्रिदिद-आर्दिद-सरजस-पुरुषायुष-
 द्वयायुष-अप्यायुष-जातोक्ष-नहोक्ष-
 वृद्धोक्ष-उपकुन-गोष्ठथाः । पा० ५।४।७७।
 ६३ ब्रह्म-हस्ति-राज-पत्न्यात् वर्धसः । पा० ५।४।७८+भा०।
 ६४ सम्-अव-अन्वात् तमसः । पा० ५।४।७९।
 ६५ श्वसो वसीयसः । पा० ५।४।८०।
 ६६ निसश्च श्वेयसः । पा० ५।४।८०, ७७।
 ६७ तप्त-अनु-अवात् रहसः । पा० ५।४।८१।
 ६८ प्रतेः उरसः आधारात् । पा० ५।४।८२।
 ६९ अनुगवम् आयागे । पा० ५।४।८३।
 ७० द्विस्तावा त्रिस्तावा वेदिः । पा० ५।४।८४।
 ७१ प्रादिभ्यः अध्वनः । पा० ५।४।८५।
 ७२ पाण्डु-उदक्-कृष्णाद् भूमेः । काशिका ५।४।७५१।
 ७३ संख्याया नदी-गोदावर्याश्च । काशिका ५।४।७५१।
 ७४ असंख्याच्च अङ्गुलेः अन्तर्यासंख्यार्थे । पा० ५।४।८६।
 ७५ अहः-सर्व-एकदेश-संख्यात-पुण्य-वर्षा-
 दीर्घाच्च रात्रेः । पा० ५।४।८७।

१. अत्र च कारिका—

“कृष्ण-उदक्-पाण्डुपूयाः भूमेः अच् प्रत्ययः स्मृतः । गोदावर्याश्च नद्याश्च संख्याया उत्तरे यदि ॥”

- ७६ सखि-अहर्-राज्ञां टच् । पा०५।४।१११। ६७ अङ्गुलेर्दारिणि । पा०५।४।११४।
 ७७ गोः अङ्गुकि अङ्गार्थे । पा०५।४।११२। ६८ द्वि-त्रिभ्यां सूम्नः । पा०५।४।११५।
 ७८ उरसः अङ्गे । पा०५।४।११३। ६९ अष्-पूरण्याः ताभु ।
 ७९ अनस्-अश्म-अयः-सरसां जाति- पा०५।४।११६+वा०१।
 नाम्नोः । पा०५।४।११४। १०० प्रमाण्याः । पा०५।४।११६।
 ८० ग्राम-कौटात् तक्षणः । पा०५।४।११५। १०१ अन्तर्-बहिर्भ्यां लोम्नः ।
 ८१ अतेः शूनः । पा०५।४।११६। पा०५।४।११७।
 ८२ उपमानात् अप्राणिनि । पा०५।४।११७। १०२ नक्षत्रात् नेतुः ।
 ८३ मृग-पूर्व-उत्तरात्र सङ्गमः । पा०५।४।११६ वा०२।
 पा०५।४।११८। १०३ नम्-सु-वि-उप-त्रेः चतुरः अच् ।
 ८४ संख्या-अर्थात् तानः एकावर्थात् । पा०५।४।११७+वा०१।
 पा०५।४।११८, १००। १०४ नाभेः । पा०५।४।११९।
 ८५ खार्पा वा । पा०५।४।१०१। १०५ सुप्तात्-सुष-सुवि-कारिकुक्ष-
 ८६ द्वि-त्रिभ्याम् अङ्गलेः । पा०५।४।१०२। चतुरभ्याः । पा०५।४।१२०।
 ८७ कु-महद्भ्यां ब्रह्मणः । पा०५।४।१०५। १०६ नञ्-सु-दुर्भ्यः सङ्गमो वा ।
 ८८ जनपदात् । पा०५।४।१०४। पा०५।४।१२१।
 ८९ चार्थे चु-व-व-हः समाहारे । १०७ प्रजाया असिच् । पा०५।४।१२२।
 पा०५।४।१०६। १०८ मन्त्र-अल्पाच्च मेधायाः ।
 ९० शरदादिभ्यः असंख्यार्थे । पा०५।४।१२२।
 पा०५।४।१०७। १०९ नाम्नि नासाया नसः अस्थूलात् ।
 ९१ अनः । पा०५।४।१०८। पा०५।४।११८।
 ९२ नपुंसकात् वा । पा०५।४।१०९। ११० प्रादिभ्यः । पा०५।४।११९।
 ९३ गिरि-नदी-पौर्णमासी-आग्रहायणी- १११ वे ज्ञः । पा०५।४।११९ भा०।
 ज्ञयः । पा०५।४।११०-११२। ११२ खुर-खरात् नस् वा ।
 ९४ निसः शतो डच् । पा०५।४।१०३ वा०१। पा०५।४।११८ भा०।
 ९५ संख्याया अवहोः अन्यार्थे । ११३ धर्मात् अनिच् केदलात् ।
 पा०५।४।१०३। पा०५।४।१२४।
 ९६ सङ्घि-अक्षणः स्वाङ्गात् पच् । ११४ सु-हरित-तृण-सोमात् जम्भात् ।
 पा०५।४।११३। पा०५।४।१२५।

१ अत्र सूत्रे काशिकायाम् "अन्यत्राणि च दृश्यते । पञ्चनाभः ऊर्गनाभः दीर्घपात्रः समरात्रः अरात्रः । तदेतत् सर्वमिह योगविभागं कृत्वा साधयन्ति" इत्येवं निर्देशे अस्य चान्द्रस्य समावेशः ।

- ११५ दक्षिणेर्मा लुब्धयोगे । पा०५।४।१२६।
 ११६ इच् व्यतिहारे । पा०५।४।१२७।
 ११७ द्विदण्ड्यादीनि । पा०५।४।१२८।
 ११८ भृति-मासात् ठच् । पा०५।४।१२९ वा०४।
 ११९ सं-प्रात् जानुनो ज्ञः । पा०५।४।१२९।
 १२० ऊर्ध्वत् वा । पा०५।४।१३०।
 १२१ धनुर्नाम्नि । पा०५।४।१३१।
 १२२ जायाया निङ् । पा०५।४।१३४।
 १२३ सु-उत्-पूति-सुरभेः गन्धस्य इत् । पा०५।४।१३५।
 १२४ आगन्तोर्वा । पा०५।४।१३५ वा०१।
 १२५ अल्पे । पा०५।४।१३६।
 १२६ उपमानात् । पा०५।४।१३७।
 १२७ पादस्य पात् अहस्त्यादिभ्यः । पा०५।४।१३८।
 १२८ कुम्भदद्यादयः । पा०५।४।१३९।
 १२९ सु-संख्यादेः । पा०५।४।१४०।
 १३० वयसि दन्तस्य दत् । पा०५।४।१४१।
 १३१ षोडन् । पा०६।३।१०९ वा०३।
 १३२ स्त्रीनाम्नि । पा०५।४।१४३।
 १३३ अग्रान्त-शुद्ध-शुभ्र-वृष-वराह-अहि-
 मूषिक-श्याव-शिखर-अरोकात् वा । पा०५।४।१४५, १४६। काशिका
 ५।४।१४५, १४४।
 १३४ ककुत् ककुदस्य अवस्थायाम् । पा०५।४।१४६।
 १३५ त्रिककुत् पर्वते । पा०५।४।१४७।
 १३६ वि-उदः काकुत् काकुदस्य । पा०५।४।१४८।
 १३७ पूर्णात् वा । पा०५।४।१४९।
 १३८ सुहृद्-दुर्हृदौ मित्र-अभिन्नयोः । पा०५।४।१५०।
 १३९ उरोभ्यः कप् । पा०५।४।१५१।
 १४० इनः स्त्रियाम् । पा०५।४।१५२।
 १४१ डी-ऊङ्-ऋतः अभ्रुवः । पा०५।४।१५३।
 १४२ शेषात् वा । पा०५।४।१५४।
 १४३ न नाम्नि । पा०५।४।१५५।
 १४४ ईयसः । पा०५।४।१५६।
 १४५ ड्यः ईत् । पा०५।४।१५६ वा०१।
 १४६ स्तुतौ भ्रातुः । पा०५।४।१५७।
 १४७ नाडी-तन्त्रयोः स्वाङ्गे । पा०५।४।१५८।
 १४८ निष्प्रवाणिः । पा०५।४।१६०।

[चतुर्थस्य अध्यायस्य चतुर्थः पादः समाप्तः]

[चान्द्रे व्याकरणे चतुर्थः अध्यायः समाप्तः]

[पञ्चमः अध्यायः, प्रथमः पादः]

- १ सन्-यङोः आद्यम् एकाच् द्विः ।
पा०६।१।६,१।
- २ चङ-लिटोः । पा०६।१।११,८।
- ३ आद्यात् अचः । पा०६।१।२।
- ४ न न्दो हलि । पा०६।१।३।
काशिका ६।१।३।
- ५ अयि रः । पा०६।१।३।१।
- ६ पुनः ।
- ७ ईर्ष्यः यिः सन् वा ।
पा०६।१।३ वा०२+भा०।
- ८ सुपो यथेष्टम् । पा०६।१।३ भा०।
- ९ दाश्चान् साह्वान् मीढ्वान् चिकिल्दं
चक्नसम् । पा०६।१।१२+वा०
५+भा०।
- १० चराचर-चलाचल-पतापत-वदावद-
घनाघन-पाटूपाटा वा ।
पा०६।१।१२ वा०६-८।
- ११ व्यङः प्रधानस्य पुत्र-पत्योः स्वयोः
इक् यणः । पा०६।१।१३।
- १२ बन्धौ अन्यार्थे । पा०६।१।१४।
- १३ मात-मातृक-मातृषु वा ।
पा०६।१।१४ भा०।
- १४ वचि-स्वपि-यजादीनां लिटि अपिति ।
पा०६।१।१५। पा०१।२।५।
- १५ ग्रहि-व्यधोः । पा०६।१।१६।
- १६ शिन्डितोः । पा०६।१।१६।
पा०१।२।४।
- १७ ज्या-व्रश्च-प्रछ-भ्रस्जाम् ।
पा०६।१।१६।
- १८ वशः तिङ्गिति अपिति ।
पा०६।१।१६।
- १९ व्यचः अङ्गिति अनसि ।
पा०६।१।१६,१७ वा०४।
- २० किति तेषाम् । पा०६।१।१५।
- २१ लिटि अश्वेद्विरुक्ते । पा०६।१।१७।
- २२ ग्रहि-प्रछोः सनि । पा०१।२।८।
- २३ स्वपः । पा०१।२।८।
- २४ चङि । पा०६।१।१८।
- २५ यङि । पा०६।१।१६।
- २६ व्ये-स्यमोः । पा०६।१।१६।
- २७ चायः कीः । पा०६।१।२१।
- २८ प्रे स्तयः त-तवतोः । पा०६।१।२३।
- २९ स्पर्श-द्रवमूर्त्योः इयः । पा०६।१।२४।
- ३० प्रतेः । पा०६।१।२५।
- ३१ वा अभि-अवात् । पा०६।१।२६।
- ३२ स्फायः स्फीः । पा०६।१।२२।
- ३३ शृतं क्षीर-हविषोः ।
पा०६।१।२७+भा०।
- ३४ प्यायः पीः । पा०६।१।२८।
- ३५ आङः अन्धु-ऊधसोः ।
पा०६।१।२८ वा०१।
- ३६ लिट्-यङोः । पा०६।१।२६।
- ३७ वा श्वेः । पा०६।१।३०।
- ३८ णौ सन्-चङोः । पा०६।१।३१।
- ३९ ह्वः । पा०६।१।३२।
- ४० द्वित्वे । पा०६।१।३३।
- ४१ न तस्मिन् । पा०६।१।३७।
- ४२ लिटि । पा०६।१।३८।

१. काशिकायाम् अस्मिन् सूत्रे “ यकारपरस्य रेफस्य प्रतिषेधो न भवतीति वक्तव्यम् ”
इत्येवं निर्देशो अस्य चान्द्रस्य समावेशः ।

- ४३ वयो यः । पा०६।१।३८।
 ४४ वेः अपिति वा । पा०६।१।३९, ४०।
 ४५ ल्यपि च । पा०६।१।४१।
 ४६ ज्यः । पा०६।१।४२।
 ४७ व्यः । पा०६।१।४३।
 ४८ परेर्वा । पा०६।१।४४।
 ४९ एचः अशिति आत् । पा०६।१।४५।
 ५० अलिटि व्यः । पा०६।१।४६।
 ५१ स्फुरि-स्फुलोर्घञि । पा०६।१।४७।
 ५२ दीङः अक्ङि-त्सनि ल्यपि ।
 पा०६।१।५०।
 ५३ मि-म्योः अखल्-अचि ।
 पा०६।१।५०+वा०२।
 ५४ लियो वा । पा०६।१।५१।
 ५५ अपगुरो णमुलि । पा०६।१।५३।
 ५६ चि-स्फुरोः णौ । पा०६।१।५४।
 ५७ प्रजने वियः । पा०६।१।५५।
 ५८ भियः प्रयोजकात् । पा०६।१।५६।
 ५९ स्मेञ्च । पा०६।१।५७।
 ६० क्री-इङ्-जीनाम् । पा०६।१।५८।
 ६१ अष्ठिवु-ष्वक्कादेः षः सः ।
 पा०६।१।६४+वा०१।
 ६२ णः नः । पा०६।१।६५।
 ६३ यः वलि लोपः । पा०६।१।६६।
 ६४ वेः अनचः । पा०६।१।६७।
 ६५ हलः ति-सिपः । पा०६।१।६८।
 ६६ सोः । पा०६।१।६८।
 ६७ डी-आपो दीर्घात् । पा०६।१।६८।
 ६८ एङ्-ह्रस्वात् संबुद्धौ अतः ।
 पा०६।१।६९+वा०१।
 ६९ ह्रस्वस्य अतिङि पिति तुक् ।
 पा०६।६।७१।
 ७० छे । पा०६।१।७३।
 ७१ आङ्-माङः । पा०६।१।७४।
 ७२ दीर्घस्य । पा०६।१।७५।
 ७३ पदान्तस्य वा । पा०६।१।७६।
 ७४ इकः यण् अचि । पा०६।१।७७।
 ७५ एचः अय्-अव्-आय्-आवः ।
 पा०६।१।७८।
 ७६ यि परे अव्-आवौ । पा०६।१।७९।
 ७७ धातोस्तत्रैव । पा०६।१।८०।
 ७८ गव्यूतिः अध्वमाने ।
 पा०६।१।७९ वा०३।
 ७९ शक्ये क्षि-ज्योः अय् । पा०६।१।८१।
 ८० क्रियः क्रयार्थे । पा०६।१।८२।
 ८१ द्वयोः एकः । पा०६।१।८४।
 ८२ आत् अदेङ् । पा०६।१।८७।
 ८३ आर्देजेवाद्यटः । पा०६।१।९०।
 ८४ एचि । पा०६।१।८८।
 ८५ इण्-एधोः । पा०६।१।८९।
 ८६ ऊठि । पा०६।१।८९।
 ८७ अक्षात् ऊहिन्याम् ।
 पा०६।१।८९वा०३।
 ८८ स्वात् ईर्-ईरिणोः ।
 पा०६।१।८९ वा०५।
 ८९ प्रात् ऊढ-ऊढि-एष-एष्येषु ।
 पा०६।१।८९ वा०४।
 ९० ऋते तृतीयासमासे ।
 पा०६।१।८९ वा०६।
 ९१ प्र-दश-ऋण-वसन-कम्बल-वत्सरात्
 ऋणे । पा०६।१।८९ वा०७, ८।
 ९२ ओतः अम्-शसोः आत् ।
 पा०६।१।९३।
 ९३ प्रादीनाम् ऋति धातौ ।
 पा०६।१।९१।
 ९४ वा सुपि लृति च ।
 पा०६।१।९२। काशिका ६।१।९२।
 ९५ एङि पररूपम् । पा०६।१।९४।
 ९६ अनियोगे एवे । पा०६।१।९४ वा०३।

९७ ओष्ठ-ओत्वोः समासे वा ।

पा०६।१।९४ वा०५।

९८ शकन्ध्वादयः । पा०६।१।९४ वा०४।

९९ ओम्-आडोः । पा०६।१।९५।

१०० उसि अनादौ । पा०६।१।९६।

१०१ अतः अदेडि । पा०६।१।९७।

१०२ अव्यक्तानुकरणस्य अनेकाचः अतः
इती । पा०६।१।९८+वा०१।

१०३ न द्वित्वे । पा०६।१।९९।

१०४ तः वा । पा०६।१।९९।

१०५ डाचि पूर्वस्य । पा०६।१।९९ वा०१।

१०६ अकः अकिदीर्घः । पा०६।१।१००।

१०७ ऋति ऋतः ऋर्वा ।

पा०६।१।१०१ वा०१।

१०८ लृति लृः । पा०६।१।१०१ वा०२।

१०९ प्रथमयोः अचि । पा०६।१।१०२।

११० ततः शसो नः पुंसि ।

पा०६।१।१०३।

१११ न आत् इचि । पा०६।१।१०४।

११२ दीर्घात् जसि च । पा०६।१।१०५।

११३ अमि पूर्वः । पा०६।१।१०७।

११४ यण् इकः । पा०६।१।१०८।

११५ एङः अतिपदादौ । पा०६।१।१०९।

११६ डसि-डसोः । पा०६।१।११०।

११७ ऋतः उत् । पा०६।१।१११।

११८ सख्युः पत्युः । पा०६।१।११२।

११९ हशि च अतः रोः ।

पा०६।१।११३, ११४।

१२० गोः ओ वा । पा०६।१।१२२।

१२१ अचि अवङ् । पा०६।१।१२३।

१२२ अक्ष-इन्द्रे । पा०६।१।१२४।

काशिका ६।१।१२४, १२३।

१२३ न प्लुतः अनितौ ।

पा०६।१।१२५, १२६।

१२४ क्वचिद् वा । पा०६।१।१३०।

१२५ ईत्-ऊत्-एत् द्विवचनम् ।

पा०६।१।१२५। पा०१।१।११।

१२६ अमू अमी । पा०१।१।१२।

१२७ अच् अनाङ् । पा०१।१।१४।

१२८ ओत् । पा०१।१।१५।

१२९ सौ वा इतौ । पा०१।१।१६।

१३० उञ् । पा०१।१।१७।

१३१ ऊँ । पा०१।१।१८।

१३२ इकः असस्थाने ह्रस्वश्च असमासे ।

पा०६।१।१२७+वा०१।

१३३ ऋत्-लृति अकः । पा०६।१।१२८।

१३४ एतत्-तदोः सुलोपः अकोः

अनञ्समासे हलि । पा०६।१।१३२।

१३५ दिवः अन्ते च उत् ।

पा०६।१।१३३।

काशिका ६।१।१३३।

१३६ सं-परेः कृञः सुट् ।

पा०६।१।१३७, १३५।

१३७ उपात् भूषण-समवाय-यत्न-वैकृत्य-
अध्याहारेषु । पा०६।१।१३७, १३६।

१३८ किरः लवने । पा०६।१।१४०।

१३९ हिंसायां प्रतेश्च । पा०६।१।१४१।

१४० अपात् चतुष्पात्-शकुनिषु हृष्ट-

अन्न-कुलार्थाधिषु । पा०६।१।१४२+

वा०१।

१४१ अपरस्पराः सातत्ये ।

पा०६।१।१४४।

१४२ पारस्करादीनि नास्मि ।

पा०६।१।१५७।

[द्वितीयः पादः]

- १ अलुग् उत्तरपदे । पा०६।३।१।
 २ पञ्चम्याः स्तोकादिभ्यः । पा०६।३।२।
 ३ ब्राह्मणाच्छंसी । पा०६।३।२ वा०१।
 ४ खिति इच एकाचः अमः ।
 पा०६।३।६८।
 ५ ओजस्-सहस्-अम्भस्-तपस्-अञ्जसः
 तृतीयायाः । पा०६।३।३+वा०१।
 ६ मनसो नास्मि । पा०६।३।४।
 ७ आज्ञायिनि । पा०६।३।५।
 ८ पुम्-जनुभ्याम् अनुज-अन्धयोः ।
 पा०६।३।३ वा०२।
 ९ आत्मनः पूरणे । पा०६।३।५ वा०१।
 १० नास्मि पराच चतुर्थ्याः ।
 पा०६।३।७,८।
 ११ सप्तम्या बहुलम् । पा०६।३।१४।
 १२ षष्ठ्या आक्रोशे । पा०६।३।२१।
 १३ पुत्रे वा । पा०६।३।२२।
 १४ वाग्-दिक्-पश्यद्भ्यः युक्ति-दण्ड-
 हरेषु । पा०६।३।२१ वा०१।
 १५ अदसः फग्-बुबोः ।
 पा०६।३।२१ वा०२+भा०।
 १६ शुनः शोफ-पुच्छ-लाङ्गूलेषु नास्मि ।
 पा०६।३।२१ वा०४।
 १७ दिघो दासे । पा०६।३।२१ वा०५।
 १८ ऋतः विद्या-योनिसंबन्धात् तत्र ।
 पा०६।३।२३+वा०१।
 १९ स्वसृ-पत्योर्वा । पा०६।३।२४।
 २० मातर-पितरौ चार्थे । पा०६।३।३२।
 २१ ऋतः तत्र-आनङ्ग । पा०६।३।२५।
 २२ पुत्रे । पा०६।३।२५ वा०१।
 २३ देवतानाम् अवायूनां वेदे सह
 श्रुतानाम् । पा०६।३।२६+ वा०१+
 भा०।
 २४ न आदैचि अग्नेरविष्णौ ।
 पा०६।३।२८+वा०१।
 २५ सोम-वरुणयोः ईत् । पा०६।३।२७।
 २६ दिवः द्यावा । पा०६।३।२८।
 २७ दिवस्पृथिव्यां वा । पा०६।३।३०।
 काशिका ६।३।३०।
 २८ उषासा उषसः । पा०६।३।३१।
 २९ स्त्रियां पुंवत् उक्तपुंस्कम् अनूङ् एकार्थे
 स्त्रियाम् अप्रधानपूरणी-प्रियादौ ।
 पा०६।३।३४+वा०८।
 ३० प्रसूता-प्रजाता-गभिण्यः ।
 पा०६।३।३४ भा०।
 ३१ त्र-तस्-तर-तम-चरट्-कल्पप्-देश्य-
 रूपप्-पाशप्-शस्-थ्यन्-व्यङ्-मानिषु ।
 पा०६।३।३५ वा०१-५,८,९।
 पा०६।३।३६।
 ३२ यचि अणादौ । पा०६।३।३५ वा०११।
 ३३ ढे अगनायी ।
 पा०६।३।३५ वा०११+भा०।
 ३४ न त्यादि-बु-कोपान्तम् ।
 पा०६।३।३७+वा०१।
 ३५ संज्ञा-पूरण्योः । पा०६।३।३८।
 ३६ अच आदैऽङ्क्षेतुः^१ अरक्त-विकारे ।
 पा०६।३।३९।
 ३७ स्वाङ्गात् ईत् अमानिनि ।
 पा०६।३।४०+वा०१।

^१ आदैचः हेतुः आदैच्-हेतुः इति पदविभागः ।

- ३८ जातिः अष्कादौ च । पा०६।३।४१। ६२ यति अवर्णे । पा०६।२।६३
 ३९ पुंवत् स्वपदार्थ-जातीय-देशीयेषु । वा०२+भा०।
 पा०६।३।४२। ६३ शिरसः शीर्षन् वा ।
 ४० त्व-तलोर्गुणः । पा०६।३।३५ वा०१०। पा०६।१।६१+वा०२।
 ४१ सर्वादयः वृत्तिमात्रे । पा०६।३।३५। ६४ शीर्षः अचि । पा०६।१।६१ वा०३।
 ४२ तर-तम-रूप-कल्प-चेलट्-ब्रुव-गोत्र- ६५ नाम्नि उदकस्य उदः ।
 मत-हते ड्यो ह्रस्वः । पा०६।३।४३। पा०६।३।५७।
 ४३ वा एकाचः । पा०६।३।४४। ६६ उत्तरस्य । पा०६।३।५७ वा०१।
 ४४ उगितः । पा०६।३।४५। ६७ वास-वाहने । पा०६।३।५८।
 ४५ ऊङः । पा०६।३।४४। ६८ पेषे पिषौ । पा०६।३।५८।
 ४६ आत् महतः जातीय-एकार्थयोः ६९ एकह्लादौ भाण्डे वा । पा०६।३।५९।
 अच्यर्थे । पा०६।३।४६+भा०। ७० मन्थ-ओदन-सक्तु-बिन्दु-वज्र-भार-
 ४७ घास-कर-विशिष्टे पुंवच्च । हार-वीर्यध-गाहेषु । पा०६।३।६०।
 पा०६।३।४६ वा०१। ७१ इको ह्रस्वः । पा०६।३।६१।
 ४८ इचि । पा०६।३।१३७। ७२ न च्चिडीयण्-इयुवाम् अभ्रकुं-
 ४९ नाम्नि अष्टनः । पा०६।३।१२५। सादीनाम् । पा०६।३।६१ वा०३।
 ५० कपाले हविषि । पा०६।३।४६ वा०२। पा०६।३।६१+भा०।
 ५१ गवि युवते । पा०६।३।४६ वा०३। ७३ डी-आपोस्तु अनाम्नोर्बहुलम् ।
 ५२ द्वेश्व संख्यायां प्राक् शतात् अनन्यार्थ- पा०६।३।६३,६४।
 अशीत्योः । पा०६।३।४७+भा०। ७४ इष्टका-इषीका-मालानां चित्त-तूल-
 ५३ त्रेः त्रयस् । पा०६।३।४८। भारिषु । पा०६।३।६५।
 ५४ चत्वारिंशदादौ वा । पा०६।३।४९। ७५ खिति ससंख्यस्य सुम् च ।
 ५५ हृदयस्य अणि हृत् । पा०६।३।५०। पा०६।३।६६,६७।
 ५६ लेखे । पा०६।३।५०। ७६ अरुषः । पा०६।३।६७।
 ५७ लास-यतोः । पा०६।३।५०। ७७ कारे अस्तु-सस्य-अगदस्य ।
 ५८ पादस्य आजि-आति-ग-उप-हते पदः । पा०६।३।७०+वा०१।
 पा०६।३।५२। ७८ लोकस्य पृणे । पा०६।३।७० वा०४।
 ५९ हिम-हति-काषि-ष्ठन्-यति पद् । ७९ इत्ये अनभ्यासस्य ।
 पा०६।३।५३,५४,५३ वा०१। पा०६।३।७० वा०५।
 ६० ऋचः शि । पा०६।३।५५। ८० भ्राष्ट्र-अग्न्योः इन्धे ।
 ६१ नस् नासिकायाः तस्-क्षुद्रे । पा०६।३।७० वा०६।
 पा०६।१।६३ वा०२। ८१ अगिलस्य गिले ।
 पा०६।३।७० वा०७।

८२ भद्र-उष्णयोः करणे ।

पा०६।३।७० वा०८।

८३ मध्यस्य दिने ।

८४ श्येन-तिलयोः पाते अे ।

पा०६।३।७१।

८५ रात्रेर्धर्तौ वा । पा०६।३।७२।

८६ धेनोर्भव्यायाम् ।

पा०६।३।७० वा०३।

८७ मांसस्य पचि घञ्-ल्युटोर्लोपः ।

काशिका^१ ६।१।१४४।

८८ समः तते । पा०६।१।१४४^१ वा०१।

८९ तुमश्च काम-मनसोः ।

पा०६।१।१४४^१ वा०२+भा०।

९० तव्यादिषट्के अवश्यमः ।

पा०६।१।१४४^१ वा०३।

९१ नवः नः । पा०६।३।७३।

९२ तिङि अवक्षेपे । पा०६।३।७३ वा०१।

९३ ततः अचि नुट् । पा०६।३।७४।

९४ एकात् अन्न-अद्वौ संख्यायाम् ।

पा०६।३।७६+भा०।

९५ नखादयः । पा०६।३।७५।

९६ नगः अप्राणिनि वा । पा०६।३।७७।

९७ सहस्य सः अन्यार्थे । पा०६।३।८२।

९८ नास्मि । पा०६।३।७८।

९९ अनुपाख्ये । पा०६।३।८०।

१०० अकाले स्वार्थे । पा०६।३।८१।

१०१ ग्रन्थान्ताधिक्ये । पा०६।३।७९।

१०२ न आशिषि अगो-वत्स-हले ।

पा०६।३।८३ + वा०१ + भा० ।

१०३ समानस्य पक्षादिषु । पा०६।३।८५,

८६ । काशिका ६।३।८४।

१०४ नाम-गोत्र-रूप-स्थान-वर्ण-वयस्-

वचन-धर्म-जातीये वा ।

पा०६।३।८५। काशिका ६।३।८४।

१०५ उदरे ये । पा०६।३।८८।

१०६ दृग्-दृश-दृक्षे ।

पा०६।३।८९+वा०१।

१०७ वतौ च इदम्-किमोः ईश्-की ।

पा०६।३।८९, ९०।

१०८ आः सर्वादीनाम् । पा०६।३।९१।

१०९ विष्वग्-देवयोश्च डङ्गिगोश्च वौ ।

पा०६।३।९२।

११० समः समिः । पा०६।३।९३।

१११ सहस्य सद्भिः । पा०६।३।९५।

११२ तिरसः तिरि अति । पा०६।३।९४।

११३ द्वि-अन्तर्-प्रादेः अनात् अपः ईत् ।

पा०६।३।९७+भा०।

११४ देशे अनुपः । पा०६।३।९८।

११५ समापः नास्मि ।

पा०६।३।९७ वा०१।

११६ छ-कारके अन्यस्य दुक् ।

पा०६।३।९९।

११७ अषष्ठी-तृतीयस्य आशीर्-आशा-

आस्था-आस्थित-उत्सुक-ऊति-

रागेषु । पा०६।३।९९।

११८ अर्थे वा । पा०६।३।१००।

११९ कोः कत् अचि उत्तरार्धे ।

पा०६।३।१०१।

१२० त्रि-रथ-वदेषु ।

पा०६।३।१०२, १०१ वा०१।

१२१ तृणे जातौ । पा०६।३।१०३।

१ अत्र काशिकायाम् इयं कारिका —

“लुम्पते अवश्यमः कृत्ये तुम्-काम-मनसोरपि । समो वा हित-ततयोः मांसस्य पचि-युद्-घवोः” ॥

- १२२ का अक्ष-पथोः । पा०६।३।१०४।
 १२३ ईषदर्थे । पा०६।३।१०५।
 १२४ पुरुषे वा । पा०६।३।१०६।
 १२५ कवङ्ग च उष्णे । पा०६।३।१०७।
 १२६ दिक्शब्दात् तीरस्य तारः ।
 पा०६।३।१०८ वा०१।
 १२७ पृषोदरादीनि । पा०६।३।१०९।
 १२८ संख्या-वि-सायादेः अल्लस्य अहन्
 डौ वा । पा०६।३।११०।
 १२९ विश्वस्य वसु-राटोः दीर्घः ।
 पा०६।३।११२ ।
 १३० नरे नाम्नि । पा०६।३।१२६।
 १३१ ऋषौ मित्रे । पा०६।३।१३०।
 १३२ वन-गिर्योः कोटर-अञ्जनादीनाम् ।
 पा०६।३।११७।
 १३३ मतौ बह्वचः अनजिरादीनाम् ।
 पा०६।३।११६।
 १३४ शरादीनाम् । पा०६।३।१२०।

- १३५ वले । पा०६।३।११८।
 १३६ चित्तेः कपि । पा०६।३।१२७।
 १३७ द्रुलोपे अणः । पा०६।३।१११।
 १३८ सहि-बहोः ओत् । पा०६।३।११२।
 १३९ कर्णे चित्तस्य अविष्ट-अष्ट-पञ्च-
 भिन्न-च्छिन्न-च्छिन्न-स्रुव-स्वस्तिकस्य ।
 पा०६।३।११५।
 १४० नहि-वृत्ति-वृषि-व्यधि-रुचि-सहि-
 तनिषु क्वौ । पा०६।३।११६।
 १४१ प्रादीनां घञि बहुलम् ।
 पा०६।३।१२२।
 १४२ इकः काशे । पा०६।३।१२३।
 १४३ दः ति । पा०६।३।१२४।
 १४४ वहे । पा०६।३।१२१।
 १४५ अन्येषामपि । पा०६।३।१३७।
 १४६ चौ । पा०६।३।१३८।
 १४७ यण इकः । पा०६।३।१३६।

[पञ्चमस्य अध्यायस्य द्वितीयः पादः समाप्तः]

[तृतीयः पादः]

- १ प्रकृतेः । पा०६।४।१।
 २ हलः । पा०६।४।२।
 ३ अलुकि ।
 ४ नामि अतिसृ-चतस्रोः ।
 पा०६।४।३,४।
 ५ नुर्वा । पा०६।४।६।
 ६ नः । पा०६।४।७।
 ७ शि-सुटि । पा०६।४।८।
 ८ स्-महतोर्नुमि । पा०६।४।१०।

- ९ अप्-तृ-स्वसृ-नप्तृ-नेष्टृ-त्वष्टृ-क्षत्तृ-
 होतृ-पोतृ-प्रशास्त्रृणाम् ।
 पा०६।४।११।
 १० सौ असंबुद्धौ । पा०६।४।८।
 ११ अतु-असोः । पा०६।४।१४।
 १२ इन्-हन्-पूष-अर्यम्णां शौ च ।
 पा०६।४।१२,१३।
 १३ अच्-हनोः सनि झलि ।
 पा०६।४।१६,१५।

- १४ इडो गमः । पा०६।४।१६+वा०१। ३६ मो वा । पा०६।४।३७ वा०२।
 १५ तनो वा । पा०६।४।१७। ३७ झलि तिडि अपिति ।
 १६ क्रमः त्वि । पा०६।४।१८। पा०६।४।३७। पा०१।२।४।
 १७ वमः किति बौ च । पा०६।४।१५। ३८ किडिति । पा०६।४।३७।
 १८ जमि च चछ-वोः शूठ । ३९ जन-सन-जनाम् आत् । पा०६।४।४२।
 पा०६।४।१६। ४० सनि । पा०६।४।४२।
 १९ ज्वर-त्वर-अव-श्रिवु-मवांसोपान्तस्य । ४१ ये वा । पा०६।४।४३।
 पा०६।४।२०। ४२ तनो यकि । पा०६।४।४४।
 २० रात् लोपः । पा०६।४।२१। ४३ सनः कित्चि लोपश्च । पा०६।४।४५।
 २१ प्राग्युवोः अवुग्युग् अतिद्धं समाना- ४४ लिडि तडि गमः । पा०१।२।१३, ११।
 श्रये । पा०६।४।२२+वा०१२, १४। ४५ सिचि । पा०१।२।१३।
 २२ इनान्नः । पा०६।४।२३। ४६ हनः । पा०१।२।१४।
 २३ हलः अनिदितः ड्ङिति उपान्तस्य । ४७ यमः सूचने । पा०१।२।१५।
 पा०६।४।२४। ४८ वा उद्वाहे । पा०१।२।१६।
 २४ शिति अपिति । पा०१।२।४। ४९ गमादीनां वचो । पा०६।४।४०+भा०।
 २५ लिटि इन्धि-श्रन्थ-ग्रन्थाम् । ५० न अञ्चः पूजायाम् । पा०६।४।३०।
 पा०१।२।६। काशिका १।२।६। ५१ कित्चि दीर्घश्च । पा०६।४।३६।
 २६ दम्भः स्सनि च । काशिका १।२।१११। ५२ कित्त्व स्कन्द-स्यन्दोः । पा०६।४।३१।
 २७ स्वञ्जः । पा०१।२।६। काशिका ५३ सेटि । पा०१।२।१८।
 १।२।६। ५४ वञ्चि-लुञ्चि-थ-फो वा ।
 २८ शपि दंश-सञ्जेश्च । पा०६।४।२५। पा०१।२।२४, २३।
 २९ रञ्जः । पा०६।४।२६। ५५ ज-नशः । पा०६।४।३२।
 ३० णौ भृगरमणे । पा०६।४।२४ वा०३। ५६ भञ्जेः चिणि । पा०६।४।३३।
 ३१ घञि भाव-करणयोः । पा०६।४।२७। ५७ शासः किडिति शिस् । पा०६।४।३४।
 ३२ स्यदो जवे । पा०६।४।२८। ५८ तिडि हलि अपिति । पा०१।२।४।
 ३३ अवोद-एध-ओद्म-प्रश्रथ-हिमश्रथाः। ५९ शा हौ । पा०६।४।३५।
 पा०६।४।२६। ६० हनो जः । पा०६।४।३६।
 ३४ लङ्गि-कम्प्योः उपताप-शरीर- ६१ लिट्-आशीर्लिङ्-अतिङ्शिति ।
 विकारयोः । पा०६।४।२४ वा०१। पा०६।४।४६।
 ३५ तनादिअनिट्-वनां ल्यपि वमः । ६२ भ्रस्जो भर्ज् वा । पा०६।४।४७।
 पा०६।४।३७, ३८। ६३ लोपः अतः । पा०६।४।४८।

१ अत्र काशिकायाम् सूत्रवृत्ती "दम्भेर्हल्ग्रहणस्य जातिवाचकत्वात् सिद्धम् — धीप्सति, धिप्सति" इति निर्देशः ।

- ६४ यकि ।
 ६५ यस्य हलः । पा०६।४।४६।
 ६६ क्यस्य वा । पा०६।४।५०।
 ६७ जेः अनिटि । पा०६।४।५१।
 ६८ त-तवति इटि । पा०६।४।५२।
 ६९ अय् आम्-अन्त-आलु-आय्य-इत्नुषु ।
 पा०६।४।५५।
 ७० ल्यपि लघोः । पा०६।४।५६।
 ७१ आपः वा । पा०६।४।५७।
 ७२ क्षेः क्षीः । पा०६।४।५८।
 ७३ उपदेशे अच्-हन-ग्रह-दृग्भ्यः स्य-सिच्-
 सीयुट्-तासां भाव-आप्ययोः चिण्वत्
 इट् वा । पा०६।४।६२।
 ७४ दीङः लिटि युक् । पा०६।४।६३।
 ७५ लोपः अचि किङिति च आतः ।
 पा०६।४।६४।
 ७६ ईद् यति । पा०६।४।६५।
 ७७ मा-स्था-सा-गा-पिब-हाग्-दा-धां हलि ।
 पा०६।४।६६।
 ७८ लिङि एत् । पा०६।४।६७।
 ७९ वा संयोगादेः अस्थः । पा०६।४।६८।
 ८० न ल्यपि । पा०६।४।६९।
 ८१ मेङः इद् वा । पा०६।४।७०।
 ८२ लुङ्-लङ्-लृङ्क्षु अट् अमाङ्योगे ।
 पा०६।४।७१,७४।
 ८३ अचि ऋ-धातु-भ्रुवां य्-वोः इय्-उवौ ।
 पा०६।४।७७।
 ८४ द्वित्वे पूर्वस्य असमे । पा०६।४।७८।
 ८५ स्त्रियाः । पा०६।४।७९।
 ८६ वा अस्-शसोः । पा०६।४।८०।
 ८७ इणः यण् । पा०६।४।८१।
 ८८ एः असंयोगात् अनेकाचः ।
 पा०६।४।८२।
 ८९ कारक-असंख्यात् ओश्च सुपि
 असुधियः । पा०६।४।८३,८५।
 काशिका ६।४।८३।
 ९० वर्षा-ट्-पुनः-कारात् भुवः ।
 पा०६।४।८४+भा०।
 ९१ हु-ऋ-नुवोः अलिटि । पा०६।४।८७।
 ९२ भुवः वुग् लुङ्-लिटोः । पा०६।४।८८।
 ९३ ऊद् गोहः अचः । पा०६।४।८९।
 ९४ दुषः णौ । पा०६।४।९०।
 ९५ वा चित्ते । पा०६।४।९१।
 ९६ गम-जन-खन-घसां ले लोपः अपिति ।
 पा०६।४।९८।
 ९७ किति च हनः । पा०६।४।९८।
 ९८ हु-झलः अनिटः हेः धिः ।
 पा०६।४।१०१+वा०१।
 ९९ अतः लुक् । पा०६।४।१०५।
 १०० उतः असंयोगात् अधातोः ।
 पा०६।४।१०६।
 १०१ वाऽस्य व्-मोः । पा०६।४।१०७।
 १०२ कृञः ये च । पा०६।४।१०८,१०९।
 १०३ अत उत् तत्रापिति ।
 पा०६।४।११०।
 १०४ इन-सोर्लोपः । पा०६।४।१११।
 १०५ इना-द्विरुक्तयोः आतः ।
 पा०६।४।११२।
 १०६ ई हलि तिङि अदा-धः ।
 पा०६।४।११३।
 १०७ इद् दरिद्रः । पा०६।४।११४।
 १०८ भियो वा । पा०६।४।११५।
 १०९ हाकः । पा०६।४।११६।
 ११० हौ वा । पा०६।४।११७।
 १११ यि लोपः । पा०६।४।११८।

११२ दरिद्रः किति ।

पा०६।४।११४ वा०१।

११३ अचि अयुवौ । पा०६।४।११४भा०।

११४ लुङि वा । पा०६।४।११४ वा०३।

११५ अस्-दा-धां हौ एत् अद्विश्वा ।

पा०६।४।११६।

११६ लिटि अनादेशादेः एकहल्मध्ये

अतः । पा०६।४।१२०।

११७ थलि इटि । पा०६।४।१२१।

११८ तृ-फल-भज-त्रयः । पा०६।४।१२२।

११९ राधः हिंसायाम् । पा०६।४।१२३।

१२० वा जृ-भ्रम-त्रसाम् ।

पा०६।४।१२४।

१२१ फणादीनां सप्तानाम् ।

पा०६।४।१२५।

१२२ दम्भ-श्रन्थ-ग्रन्थाम् ।

पा०६।४।१२० वा०५। काशिका
१।२।६।

१२३ मनि-पचि-मचां नास्ति ।

१२४ नशः अङि । पा०६।४।१२० भा०।

१२५ न शस-दद-वादि-अदेङाम् ।

पा०६।४।१२६।

१२६ यचि अशि-मुटि । पा०६।४।१२६।

१२७ पादः पत् । पा०६।४।१३०।

१२८ वसोर्व उत् । पा०६।४।१३१।

१२९ श्र-युवन्-मघोनाम् अनणादौ ।

पा०६।४।१३३+वा०१।

१३० अल्लोपः अनः । पा०६।४।१३४।

१३१ षपूर्व-हन्-धृतराज्ञाम् अणि ।

पा०६।४।१३५।

१३२ डि-इयोर्वा । पा०६।४।१३६।

१३३ न संयोगात् व-मः । पा०६।४।१३७।

१३४ अचः । पा०६।४।१३८।

१३५ उदः ईत् । पा०६।४।१३९।

१३६ आतः । पा०६।४।१४०।

१३७ विशतेर्डिति तेः । पा०६।४।१४२।

१३८ अन्त्याज्जादेः । पा०६।४।१४३।

१३९ नः अणादौ । पा०६।४।१४४।

१४० कलाप्यादीनाम् ।

पा०६।४।१४४ वा०१-५।

१४१ अह्नः खे । पा०६।४।१४५।

१४२ असर्व-असंख्य-एकदेशात् टे ।

पा०५।४।८६, ८८।

१४३ समाहारे । पा०५।४।८६।

१४४ एकात् । पा०५।४।९०।

१४५ अन्तिकस्य तमे तादेः ।

पा०६।४।१४६ वा०६।

१४६ कादेर्वहुलम् ।

पा०६।४।१४६ वा०८।

१४७ ओः ओत् । पा०६।४।१४६।

१४८ ढे । पा०६।४।१४७।

१४९ यस्य । पा०६।४।१४८।

१५० ड्याम् । पा०६।४।१४८।

१५१ मत्स्यस्य यः ।

पा०६।४।१४९ वा०५।

१५२ हलः यच्चादेः । पा०६।४।१५०।

१५३ सूर्य-अगस्त्ययोः छे च ।

पा०६।४।१४९ वा०६।

१५४ तिष्य-पुष्ययोर्नक्षत्रे अणि ।

पा०६।४।१४९ वा०७।

१५५ आपत्यस्य अनाति अणादौ ।

पा०६।४।१५१।

१५६ क्य-क्योः । पा०६।४।१५२।

१५७ बित्त्वकीयादीनाम् ईयः ।

पा०६।४।१५३।

- १५८ इष्ट-इम-ईयस्सु अन्त्याऽजादेः ।
पा० ६।४।१५४, १५५।
- १५९ स्थूल-द्वर-युव-क्षिप्र-क्षुद्राणां यणा-
देव्योः एङ् च । पा० ६।४।१५६।
- १६० बहोः एः भू च । पा० ६।४।१५८।
- १६१ इष्टे यिक् च । पा० ६।४।१५९।
- १६२ ज्यायान् । पा० ६।४।१६०।
- १६३ प्रिय-स्थिर-स्फिर-उरु-गुरु-बहुल-
तृप्र-दीर्घ-ह्रस्व-वृद्ध-वृन्दारकाणां प्र-
स्थ-स्फ-वर-गर-बंह-त्रप-द्राघ-लृस्-
वर्ष-वृन्दाः । पा० ६।४।१५७, १५६।
- १६४ रः ऋतः पृथु-मृदु-कृश-भृश-दृढ-
परिवृढानाम् । पा० ६।४।१६१+
भा०।
- १६५ नैकाचः । पा० ६।४।१६३।
- १६६ अके राजन्य-मनुष्य-यूनाम् ।
पा० ६।४।१६३ वा०३।
- १६७ आत्म-अध्वनोः खे ।
पा० ६।४।१६६।
- १६८ अभाव-कर्मणोः अनो ये ।
पा० ६।४।१६८।
- १६९ अणि । पा० ६।४।१६७।
- १७० कर्मणः अशीले । पा० ६।४।१७२।
- १७१ मात् वर्मणः अपत्ये ।
पा० ६।४।१७०।
- १७२ हितनाम्नो वा ।
पा० ६।४।१७० वा०१।
- १७३ ब्रह्मणो जातौ । पा० ६।४।१७१।
- १७४ उक्षणः । पा० ६।४।१७३।
- १७५ संयोगात् इनः असमूहे ।
पा० ६।४।१६६। काशिका
६।४।१६६।
- १७६ गाथि-विदथि-केशि-गणि-पणिनाम् ।
पा० ६।४।१६५।
- १७७ अनपत्ये च । पा० ६।४।१६४।
- १७८ दाण्डिनायन-हास्तिनायन-
जैह्याशिनेय-वासिनायनि-भ्रौण-
हत्य-धैवत्य-सारव-ऐक्ष्वाक-
हिरण्मयानि । पा० ६।४।१७४।

[पञ्चमस्य अध्यायस्य तृतीयः पादः समाप्तः]

[चतुर्थः पादः]

- १ युवोः अन-अको असः । पा० ७।१।११।
- २ आयन्-एय्-ईन्-ईय्-इयः फ-ढ-ख-छ-घां
ष्फाद्यादीनाम् । पा० ७।१।२।
- ३ ठस्य इकः । पा० ७।३।५०।
- ४ इस्-उस्-उग्-दोभ्यः कः ।
पा० ७।३।५१+भा०।
- ५ तः अशश्वतः । पा० ७।३।५१।
- ६ अनञ्समासे क्त्वः ल्यप् ।
पा० ७।१।३७।
- ७ ऋत इत् धातोः । पा० ७।१।१००।
- ८ उभान्तस्य । पा० ७।१।१०१।
- ९ उत् ओष्ठ्यात् । पा० ७।१।१०२।
- १० इदितः नुम् । पा० ७।१।५८।
- ११ शे मुचादीनाम् । पा० ७।१।५९।
- १२ नशः झलि । पा० ७।१।६०।
- १३ मस्जः अन्त्यात् पूर्वः ।
पा० ७।१।६०। काशिका ७।१।६०।
- १४ जभः अचि । पा० ७।१।६१।

- १५ रधः । पा०७।१।६१। ४० थः न्थः । पा०७।१।८७।
 १६ इटि लिटि । पा०७।१।६२। ४१ इनः अचि लोपः । पा०७।१।८८।
 १७ रभः अशप्-लिटोः । पा०७।१।६३। ४२ पुंसः अमुङ् । पा०७।१।८९।
 १८ लभः । पा०७।१।६४। ४३ गोः औः स्वार्थे । पा०७।१।९०।
 १९ आङो यि । पा०७।१।६५। ४४ सख्युः अशौ ऐत् । पा०७।१।९१।
 २० उपात् स्तुतौ । पा०७।१।६६। ४५ ऋत्-उशनस्-पुरुदंशस्-अनेहसां चानङ्
 २१ प्रादिभ्यः खल्-घञोः । पा०७।१।६७। सौ । पा०७।१।९३,९४।
 २२ न सु-दुरः केवलात् । पा०७।१।६८। ४६ न संबुद्धौ । पा०७।१।९२।
 २३ चिण्-णमोः अप्रादेर्वा । ४७ वा उशनसः । काशिका ७।१।९४।
 पा०७।१।६९+वा०१। ४८ क्रुशस्तुनः तृच् । पा०७।१।९५।
 २४ पुंसुटि उगितः । पा०७।१।७०। ४९ स्त्रियाम् । पा०७।१।९६।
 २५ अञ्चः । पा०७।१।७०। ५० चतुर्-अनङ्हुहोः आम् । पा०७।१।९८।
 २६ युजेः अतमासे । पा०७।१।७१। ५१ अम् सौ संबुद्धौ । पा०७।१।९९।
 २७ शौ अयमः । पा०७।१।७२। ५२ अष्टनः वा सुपि आत् ।
 २८ बहर्जि बहर्जि । पा०७।१।७२। पा०७।२।८४। काशिका ७।२।८४।
 वा०४,५। ५३ रायः हलि । पा०७।२।८५।
 २९ इकः अचि सुपि । पा०७।१।७३। ५४ युष्मद्-अस्मदोः अनादेशे ।
 ३० उक्तपुंस्कस्य रादौ वा । पा०७।२।८६।
 पा०७।१।७४। ५५ औ-शस्-अम्सु । पा०७।२।८७,८८।
 ३१ अस्थि-दंधि-सक्थि-अक्षणाम् अनङ् । ५६ यः अचि । पा०७।२।८९।
 पा०७।१।७५। ५७ शेषे लोपः अदः । पा०७।२।९०।
 ३२ न अञ्ज्ञोः शतुः । पा०७।१।७८। ५८ मान्तस्य युव-आवौ द्विवचने ।
 ३३ शौ वा । पा०७।१।७९। पा०७।२।९१,९२।
 ३४ आत् शी-ङ्योः । पा०७।१।८०। ५९ यूय-वयौ जसि । पा०७।२।९३।
 ३५ शप्-इयनः । पा०७।१।८१। ६० त्व-अहौ सौ । पा०७।२।९४।
 ३६ सौ अनङ्हुहः । पा०७।१।८२। ६१ तुभ्य-मह्यौ डयि । पा०७।२।९५।
 ३७ दिवः औत् । पा०७।१।८४। ६२ तव-ममौ डसि । पा०७।२।९६।
 ३८ पथि-मथि-ऋभुक्षाम् आत् । ६३ त्व-मौ एकस्मिन् । पा०७।२।९७।
 पा०७।१।८५। ६४ त्रि-चतुरोः स्त्रियां तिसृ-चतसृ ।
 ३९ शि-मुटि एः । पा०७।१।८६। पा०७।२।९९।

१ “संबोधने तूशनसस्त्रिरूपं सान्तं तथा नान्तमथाप्यदन्तम्” । इत्येवं कारिका वर्तते काशिकायाम् ।

- ६५ तिसृका । पा०७।२।६६ वा०१।
 ६६ ऋतः रः अचि । पा०७।२।१००।
 ६७ जराया जरस् वा । पा०७।२।१०१।
 ६८ त्यदां तसादिषु च आ द्वेः अः ।
 पा०७।२।१०२+वा०१।
 ६९ किमः कः । पा०७।२।१०३।
 ७० तः सः सौ । पा०७।२।१०६।
 ७१ असौ असुकः असकौ ।
 पा०७।२।१०६,१०७+वा०१।
 ७२ इदम् अयम् इयम् ।
 पा०७।२।१०८,१११,११०।
 ७३ दः मः । पा०७।२।१०९।
 ७४ टा-ओसि अकः अनः ।
 पा०७।२।११२।
 ७५ हलि अश् । पा०७।२।११३।
 ७६ एतस्य चान्वादेशे द्वितीयायां चैनः ।
 पा०२।४।३२,३४।
 ७७ पत्-निश्-मास्-हृद्-यूषन्-दोषन्
 शसादौ वा । पा०६।१।६३।
 काशिका ६।१।६३।
 ७८ लिट्-आशीलिङ्-अतिङ्गिति ।
 पा०२।४।३५।
 ७९ अस्तेः भूः । पा०२।४।५२।
 ८० ब्रुवः वच् । पा०२।४।५३।
 ८१ चक्षः ख्याच् । पा०२।४।५४।
 ८२ वा लिटि । पा०२।४।५५।
 ८३ न अस्-अन-वर्जनेषु ।
 पा०२।४।५४ वा०१०,६।
 ८४ अजेः वी अयु-वच्-अप्-क्येषु ।
 पा०२।४।५६ वा०१। पा०२।४।५७।
 ८५ ति किति अदः जग्धः ।
 पा०२।४।३६।
 ८६ ल्यपि । पा०२।४।३६।
 ८७ लुङ्-सन्-अच्-घञ्-अप्सु घस्लृः ।
 पा०२।४।३७+वा०१। पा०२।४।३८।
 ८८ वेचः लिटि वय् वा ।
 पा०२।४।४०,४१।
 ८९ हनः वध लिङि । पा०२।४।४२।
 ९० लुङि । पा०२।४।४३।
 ९१ तङि वा । पा०२।४।४४।
 ९२ एतेः गाः । पा०२।४।४५।
 ९३ णौ गम् अबोधे । पा०२।४।४६।
 ९४ सनि । पा०२।४।४७।
 ९५ इङः । पा०२।४।४८।
 ९६ गाङ् लिटि । पा०२।४।४९।
 ९७ वा लुङ्-लृङोः । पा०२।४।५०।
 ९८ णौ संश्चङोः । पा०२।४।५१।
 ९९ वलादेः इट् । पा०७।२।३५।
 १०० ग्रहः अस्य अलिटि ईत्
 पा०७।२।३७+वा०३।
 १०१ वृ-ऋतो वा । पा०७।२।३८।
 १०२ न लिङि । पा०७।२।३९।
 १०३ सिचि अतङि । पा०७।२।४०।
 १०४ इट् सनो वा । पा०७।२।४१।
 १०५ लिङ्-सिचोः तङि । पा०७।२।४२।
 १०६ ऋतः संयोगादेः । पा०७।२।४३।
 १०७ स्वं-सूङ्-ऊदितः । पा०७।२।४४।
 १०८ रधादिभ्यः । पा०७।२।४५।
 १०९ निष्कुषः । पा०७।२।४६।
 ११० त-तवतोः । पा०७।२।४७।
 १११ पू-क्लिशः त्वश्च ।
 पा०७।२।५१,५०।
 ११२ वस-क्षुध इट् । पा०७।२।५२।
 ११३ अञ्चः ने । पा०७।२।५३।
 ११४ लुभ आकुले । पा०७।२।५४।

- ११५ जृषः त्वः । पा०७।२।५५। १३४ य-र-ण-गात्मः । पा०७।२।१०भा०
 ११६ व्रश्चित्वा । पा०७।२।५५। १३५ शकादिभ्यः । पा०७।२।१० भा०।
 ११७ उदितो वा । पा०७।२।५६। १३६ श्वि-उग्-ऊर्णोः कितः ।
 ११८ ति-इषु-सह-लुभ-रुष-रिषः । पा०७।२।११। काशिका ७।२।११।
 पा०७।२।४८। काशिका ७।२।४८। १३७ सनः ग्रह-गुहश्च । पा०७।२।१२।
 ११९ सनि इवन्त-ऋध-भस्ज-दम्भु-श्वि- १३८ स्वार्थे ।
 स्व-यु-ऊर्णु-भर-ज्ञपि-सनि-तनि-पति- १३९ श्वि-ईदितः त-तवतोः ।
 दरिद्रः । पा०७।२।४९। काशिका पा०७।२।१४।
 ७।२।४९। १४० यतः अपतेर्वा । पा०७।२।१५।
 १२० स्य-सिचि कृत-चृत-च्छृद-तृद-नृतः । काशिका ७।२।१५।
 पा०७।२।५७। १४१ आदितः । पा०७।२।१६।
 १२१ अनिङ्गामेः इट् । १४२ भाव-आरम्भयोर्वा । पा०७।२।१७।
 पा०७।२।५८+वा०१। १४३ जपि-वमः । काशिका ७।२।१६१।
 १२२ न तङानंः । पा०७।२।५८। १४४ वि-आङः श्वसः ।
 १२३ वृद्भ्य इट् । पा०७।२।५९। काशिका ७।२।१६।
 १२४ तासश्च क्लृपः । पा०७।२।६०। १४५ क्षुब्ध-स्वान्त-ध्वान्तं मन्थ-मनस्-
 १२५ न स्तोः । पा०७।२।३६। तमः । पा०७।२।१८।
 १२६ क्रमः । पा०७।२।३६। १४६ विरिब्ध-फाण्ट-बाढ-म्लिष्टानि
 १२७ तड्विषयात् कर्तरि अतिङः । स्वर-अनायास-भृश-अस्पष्टेषु ।
 पा०७।२।३६ वा०५। पा०७।२।१८।
 १२८ वशि । पा०७।२।८। १४७ धृष-शसः प्रागल्भ्ये ।
 १२९ तेः अग्रहादिभ्यः । पा०७।२।९। पा०७।२।१९।
 वा०१। १४८ दृढः स्थूल-बलिनोः ।
 १३० एकाचः अश्वि-श्वि-डी-शीङ्-ऊ-य्वा- पा०७।२।२०।
 दिषट्कात् । पा०७।२।१०+भा०। १४९ प्रभौ परिवृढः । पा०७।२।२१।
 १३१ सिधि-बुधि-स्विदि-मनि-पुष-श्रिषः १५० कृच्छ्र-गहनयोः कषः ।
 श्यना । पा०७।२।१० भा०। काशिका पा०७।२।२२।
 ७।२।१०। १५१ घुषेः अविशब्दने । पा०७।२।२३।
 १३२ विदेः अलुकः । पा०७।२।१० भा०। १५२ सम्-नि-वेः अर्दः । पा०७।२।२४।
 १३३ य-र-लाद् भः । पा०७।२।१० भा०। १५३ अभेः अविहूरे । पा०७।२।२५।

१ अत्र सूत्रे "चकारः अनुक्तसमुच्चयार्थः" इति निर्देशः अत्र च एतस्य चान्द्रसूत्रस्य समावेशः ।

- १५४ णेः वृत्तं ग्रन्थे । पा०७।२।२६। १६५ क्वसोः एकाच्-आत्-घसः ।
 १५५ वा दान्त-शान्त-पूर्ण-दस्त-स्पष्ट-
 च्छन्न-ज्ञप्ताः । पा०७।२।२७। १६६ वा हन-गम-विद-विश-दृशः ।
 १५६ रुष-हृष-अम-त्वर-संयुष-आस्वनः । पा०७।२।२८+भा०।
 पा०७।२।२८,२९। १६७ ऋ-हनः स्ये । पा०७।२।३०।
 १५७ अपव्रितिः । पा०७।२।३० भा०। १६८ अञ्जेः सिचः । पा०७।२।३१।
 १५८ सृ-भृ-वृ-स्तु-द्रु-स्रु-श्रुवः लिटः । १६९ स्तु-सुचः अतडि । पा०७।२।३२।
 पा०७।२।३३। १७० यम-रम-नम-आतां सकृ च ।
 १५९ कृत्रः असुटः । पा०७।२।३३ वा०१। पा०७।२।३३।
 १६० ऋतः तासि नित्यानिटस्थलः । १७१ ऋ-स्मि-पूङ्-अञ्ज्-अशः सनः ।
 पा०७।२।३३,६१। पा०७।२।३४।
 १६१ अचो वा । पा०७।२।३३। १७२ कृभ्यः पञ्चभ्यः । पा०७।२।३५।
 काशिका ७।२।३३।^१ १७३ रुद्र्यः तिङः । पा०७।२।३६।
 १६२ पाठे अत्वतः । पा०७।२।३४। १७४ जनि-ईशि-ईडः स्-ध्वे ।
 १६३ सृ-जि-दृशः । पा०७।२।३५। पा०७।२।३७,३८+भा०
 १६४ ऋ-वृ व्येञ्-अदः । पा०७।२।३६, १७५ आने मुग् अतः । पा०७।२।३८।
 ६४ भा०। १७६ आसीनः । पा०७।२।३९।

[पञ्चमस्य अध्यायस्य चतुर्थः पादः समाप्तः]

[चान्द्रे व्याकरणे पञ्चमः अध्यायः समाप्तः]

^१ अत्र सूत्रे "ऋत एव भारद्वाजस्य नान्येषां धातूनाम्" । इति निर्देशे अस्य चान्द्रसूत्रस्य समावेशः ।

[षष्ठः अध्यायः, प्रथमः पादः]

- १ मृजेः आत् । पा०७।२।११४।
 २ ऋतः अचि वा । पा०७।२।११४।
 ३ अजागृ-णि-श्वीनां लिचि अतडि
 आदेच् । पा०७।२।५,१।
 ४ हलः अचः । पा०७।२।३।
 ५ न इटि । पा०७।२।४।
 ६ वा ऊर्णोः । पा०७।२।६।
 ७ हलदेः उपान्तस्य अश्वस-क्षण-ह्-म्-
 य्-एदितः अतः । पा०७।२।७,५।
 ८ वद-व्रज-ल्-रः । पा०७।२।३,२।
 ९ ङिति । पा०७।२।११५,११६।
 १० अचः । पा०७।२।११५।
 ११ किति च अपत्यादौ अचाम् आदेः ।
 पा०७।२।११८,११७।
 १२ देविका-शिशपा-दीर्घसत्र-श्रेयसामात् ।
 पा०७।३।१।
 १३ केकय-मित्रयु-प्रलयानां यादेरियः ।
 पा०७।३।२।
 १४ ऐज्भाविनः य्-वः पदान्तात्
 प्राग् ऐच् । पा०७।३।३।
 १५ द्वारादीनाम् । पा०७।३।४।
 १६ न्यग्रोधस्य केवलस्य । पा०७।३।५।
 १७ न व्यतिहारे । पा०७।३।६।
 १८ स्वागतादीनाम् । पा०७।३।७।
 १९ श्वदेरिति । पा०७।३।८।
 २० पदस्य वा । पा०७।३।९।
 २१ उत्तरस्य । पा०७।३।१०।
 २२ अंशात् ऋतोः । पा०७।३।११।
 २३ सु-सर्व-अर्धात् जनपदस्य ।
 पा०७।३।१२।
 २४ अमद्राणां दिशः । पा०७।३।१३।
 २५ प्राचां ग्रामाणाम् । पा०७।३।१४।
 २६ संख्यायाः संवत्सर-परिमाणस्य असंज्ञा-
 शाण-कुलिजस्य । पा०७।३।१५,१७।
 काशिका ७।३।१५,१७।
 २७ वर्षस्याभावनि । पा०७।३।१६।
 २८ जाते प्रोष्ठ-भद्रात् पदस्य ।
 पा०७।३।१८। काशिका ७।३।१८।
 २९ हृद्-भग-सिन्धोः पूर्वस्य च ।
 पा०७।३।१९।
 ३० अनुशतिकादीनाम् । पा० ७।३।२०।
 ३१ देवतानां चार्थे सूक्त-हविषोः ।
 पा०७।३।२१। काशिका ७।३।२१।
 ३२ नेन्द्रस्य परस्य । पा०७।३।२२।
 ३३ दीर्घात् वरुणस्य । पा०७।३।२३।
 ३४ प्राचां नगरस्य । पा०७।३।२४।
 ३५ जङ्गल-धेनु-बलजस्य वा ।
 पा०७।३।२५।
 ३६ अर्धात् परिमाणस्य पूर्वस्य तु वा ।
 पा०७।३।२६।
 ३७ नातः । पा०७।३।२७।
 ३८ प्रात् वाहनस्य ढे । पा०७।३।२८।
 ३९ नवः शुचि-ईश्वर-क्षेत्रज्ञ-कुशल-
 निपुणानाम् । पा०७।३।३०।
 ४० हनः तः अचिण्-णलोः । पा०७।३।३२।
 ४१ आतो युग् अणलि ।
 पा०७।३।३३+भा०।
 ४२ सः सेटः न अवमि-अमि-कम-आचम-
 विश्रमः । पा०७।३।३४+भा०।
 ४३ जनि-वधोः । पा०७।३।३५।

- ४४ मेर्णलि वा । पा०७।१।६१। ७० अधातोः कीदतोऽमुप आपि ।
 ४५ ऋ-री-व्ली-ह्रौ-व्यू-क्षमायि-आतां पा०७।३।४४।
 पुग् णौ । पा०७।३।३६। ७१ य-काभ्यामापः अत्यक्-त्यपो वा ।
 ४६ शा-छा-सा-ह्ला-व्या-वे-पां युक् । पा०७।३।४६, ४४ वा० ५।
 पा०७।३।३७। ७२ भस्त्रा-एषा-अजा-ज्ञा-द्वा-स्वानाम् ।
 ४७ वः विधूनने जुक् । पा०७।३।३८। पा०७।३।४७+वा०२।
 ४८ धूञ्-प्रीञोर्नुक् । पा०७।३।३७ वा० १। ७३ अनुक्तपुंस्कात् आच्च ।
 ४९ लिथः स्नेह-विलापने वा । पा०७।३।४८, ४९।
 पा०७।३।३९। ७४ वर्तका शकुनौ । पा०७।३।४५ वा० ८।
 ५० लो लुक् । पा०७।३।३९। ७५ सूतका-पुत्रका-वृन्दारकाः ।
 ५१ पातेः । पा०७।३।३७ वा० २। पा०७।३।४५ वा० १०।
 ५२ प्रयोक्तुभियः षुक् । पा०७।३।४०। ७६ तरिका । पा०७।३।४४ वा० ४।
 ५३ स्फायो वः । पा०७।३।४१। ७७ न यत्-तदोः । पा०७।३।४५।
 ५४ शदेः अगतौ तः । पा०७।३।४२। ७८ आशिषि । पा०७।३।४५ वा० ३।
 ५५ सत्य-अर्थ-वेदानाम् आपुक् । ७९ क्षिपकादीनाम् । पा०७।३।४५ वा० ५।
 पा०३।१।२५ वा० २। ८० तारका ज्योतिषि ।
 ५६ मितां ह्रस्वः । पा०६।४।६२। पा०७।३।४५ वा० ६।
 ५७ चिण्-णमोः दीर्घश्च । पा०६।४।६३। ८१ वर्णकातान्तवे । पा०७।३।४५ वा० ७।
 ५८ छादेः घे । पा०६।४।६६। ८२ अष्टका पितृणाम् ।
 ५९ प्रादौ एकस्मिन् । पा०६।४।६६। पा०७।३।४५ वा० ९।
 ६० इस्-मन्-त्रन्-क्विषु । पा०६।४।६७। ८३ च-जोः कुः घित्-ण्यतोः ।
 ६१ चङि उपान्तस्य । पा०७।४।१। पा०७।३।५२।
 ६२ न अग्लोपि-शासू-ऋदिताम् । ८४ न्यङ्कुआदयः । पा०७।३।५३।
 पा०७।४।२। ८५ ङ्गित्-नि हनो हः ।
 ६३ भ्राज-भास-भाष-दीप-जीव- पा०७।३।५४।
 मील-पीडां वा । पा०७।४।३। ८६ द्वित्वहेतोः । पा०७।३।५५।
 ६४ कणादीनाम् । पा०७।४।३ भा०। ८७ हेः अचङि । पा०७।३।५६।
 ६५ उः ऋत् । पा०७।४।७। ८८ सन्-लिटोः जेः । पा०७।३।५७।
 ६६ घः इत् । पा०७।४।६। ८९ चेर्वा । पा०७।३।५८।
 ६७ स्थः । पा०७।४।५। ९० न क्वादेः । पा०७।३।५९।
 ६८ पिबः पीप्यः । पा०७।४।४। ९१ अजि-न्नजोः । पा०७।३।६०।
 ६९ वेङ्गः दिगि लिटि । पा०७।४।९। ९२ वञ्चेर्गतौ । पा०७।३।६३।

- ६३ ण्ये आवश्यके । पा०७।३।६५। १०२ शमामष्टानां श्ये दीर्घः ।
 ६४ ऋच-एच-याच-त्यजाम् । पा०७।३।७४।
 पा०७।३।६६+वा०३। १०३ णिबु-बलम्-आचमां शिति ।
 ६५ वचः अशब्दाख्यायाम् । पा०७।३।६७। पा०७।३।७५+वा०१।
 ६६ प्रयोज्य-नियोज्यौ शक्ये । १०४ क्रमः अतडाने । पा०७।३।७६।
 पा०७।३।६८। १०५ इषु-गमि-यमां छः । पा०७।३।७७।
 काशिका ७।३।७७।
 ६७ भोज्यम् अन्ने । पा०७।३।६९। १०६ पा-घ्रा-ध्मा-स्था-स्ना-दाण्-दृश-शद-
 ६८ यजः बहुलम् । पा०७।३।६६, ६२। सदां पिब-जिघ्र-धम-तिष्ठ-मन-यच्छ-
 ६९ ओलोपः श्ये । पा०७।३।७१। पश्य-शीय-सीदाः । पा०७।३।७८।
 १०० वसस्य अचि । पा०७।३।७२। १०७ ज्ञा-जनोः जाः । पा०७।३।७९।
 १०१ लुग् वा दुह-दिह-लिह-गुहां तडि १०८ प्यादीनां ह्रस्वः । पा०७।३।८०।
 दन्त्ये । पा०७।३।७३। १०९ मिदेः एत् । पा०७।३।८१।

[षष्ठस्य अध्यायस्य प्रथमः पादः समाप्तः]

[द्वितीयः पादः]

- १ इकः अदेड क्रियार्थायाः । १२ अतिडि आच तल्लोपे ।
 पा०७।३।८४। पा०१।१।४+वा०७।
 २ उ-श्नोः । पा०७।३।८४। १३ कुटादीनाम् अङ्गिति । पा०१।२।१।
 ३ जुस्-पुकोः । पा०७।३।८३, ८६। १४ विजः इटि । पा०१।२।२।
 ४ लघोः उपान्तस्य । पा०७।३।८६। १५ वा ऊर्णोः पा०१।२।३।
 ५ सृजि-दृशोः झलिअम् । पा०६।१।५८। १६ त-तवतोः अपू-शी-स्विदि-मिदि-
 ६ स्पृश-मृश-कृष-तृप-दृप-सृपां वा । क्विदि-धृषः । पा०१।२।१६, २२।
 पा०६।१।५९। १७ मृषः अक्षान्तौ । पा०१।२।२०।
 ७ द्विरुक्तस्य न अचि अलिटि । १८ उत्पान्तस्य शव्वतः भाव-
 पा०७।३।८७। आरम्भयोर्वा । पा०१।२।२१+वा०१।
 ८ तिडिशिति अपिदाशीलिडि । १९ मृड-मृद-गुध-कुष-विलश-वद-वस-
 पा०१।२।४, ५। लुच-ग्रहां वित्व । पा०१।२।७, २४, ८।
 ९ जागुः अलिटि । पा०७।३।८५। २० ऋत-तृष-मृष-कृशां वा ।
 पा०१।२।२४, २५।
 १० चिण्णलिडित्सु । पा०७।३।८५। २१ रलः हलादेः इदुतोः सनि च ।
 पा०१।२।२६।
 ११ किडिति । पा०१।१।५।

२२ रुद-विद-मुव-ग्रहाम् । पा०१।२।८।

२३ इकः अनिटि । पा०१।२।९।

२४ उपान्तस्य । पा०१।२।१०।

२५ लिङ-सिचोः तडि । पा०१।२।११।

२६ उः । पा०१।२।१२।

२७ सिचि दा-धा-स्थाम् इच्च ।

पा०१।२।१७।

२८ गाङ ईत् स्ये च । पा०१।२।१।

२९ भू-सुवः अद्वेः तिडि ।

पा०७।३।८८+वा०१।

३० हलि षिति उत्तः औत् । पा०७।३।८९।

३१ वा ऊर्णोः । पा०७।३।९०।

३२ न अलि । पा०७।३।९१।

३३ तृगहः इन् । पा०७।३।९२।

३४ ब्रुव ईट् । पा०७।३।९३।

३५ यडो वा । पा०७।३।९४।

३६ अस्ति-सिचः अलः । पा०७।३।९६।

३७ रुङ्ग्यः पञ्चभ्यः अट् च ।

पा०७।३।९८+९९।

३८ अदः । पा०७।३।१००।

३९ अतः आत् यञि । पा०७।३।१०१।

४० सुषि । पा०७।३।१०२।

४१ बहुषु झलि एत् । पा०७।३।१०३।

४२ ओसि । पा०७।३।१०४।

४३ टि च आपः । पा०७।३।१०५।

४४ संबोधने सौ । पा०७।३।१०६।

४५ अम्बार्वाताम् अडलेकानां ह्रस्वः

पा०७।३।१०७+भा०।

४६ डी-ऊङः । पा०७।३।१०७।

४७ मातुः मातृच् पुत्रे श्लाघ्ये ।

पा०७।३।१०७ भा०।

४८ इत्-उतोः एङ् । पा०७।३।१०८।

४९ जसि । पा०७।३।१०९।

५० डिति असख्युः । पा०७।३।१११।

पा०१।४।७।

५१ पत्युः समासे । पा०१।४।८।

५२ स्त्रियां वा । पा०१।४।९।

५३ ई-ऊभ्यां च आट् । पा०७।३।११२।

५४ सेयुवो वा । पा०१।४।९,९।

५५ स्त्रियाः । पा०१।४।९।

५६ याङ् आपः । पा०७।३।११३।

५७ स्मैवतः स्याङ् अत् च ।

पा०७।३।११४।

५८ द्वितीया-तृतीयात् वा ।

पा०७।३।११५।

५९ डेः आम् तत्र । पा०७।३।११६,११७।

६० नियः । पा०७।३।११६।

६१ इत्-उङ्ग्याम् औत् । पा०७।३।११८।

६२ एङः अत् च । पा०७।३।११९।

६३ टः अस्त्रियां ना । पा०७।३।१२०।

६४ ऋतः डि-मुटि अत् । पा०७।३।१२०।

६५ संयोगादेः ङिति । पा०७।४।१०+

वा०२।

६६ स्कृञः । पा०७।४।१० वा०१।

६७ ऋत्-ऋछ्-ऋणाम् । पा०७।४।११।

६८ ऋ-श्चि-दृशः अङि । पा०७।४।१६,१८।

६९ अमु-पत-वचां थुक्-पुम्-उमः

पा०७।४।१७,१८,२०।

७० के अणो ह्रस्वः । पा०७।४।१३।

७१ न कषि । पा०७।४।१४।

७२ आपः वा । पा०७।४।१५।

७३ शीङः एत् अलिटि । पा०७।४।२१।

७४ यि ङिति अयङ् । पा०७।४।२२।

७५ प्रादिभ्य ऊहः हरवः । पा०७।४।२३।

७६ लिङि इणः । पा०७।४।२४।

१०१ ह एति । पा०७।४।५२।

७७ आशिषि दीर्घः । पा०७।४।२५।

१०२ क्यङि वा । पा०३।१।११ वा०१।

७८ च्वि-यङ्-यक्-क्येषु ।

१०३ ओजस्-अप्सरसोः ।

पा०७।४।२६,२५।

पा०३।१।११ वा०२।

७९ रीङ् ऋतः ये च । पा०७।४।२७।

१०४ य्-इवर्णयोः दीधी-वेद्योः ।

८० रिङ् श-यग्-आशीलिङि ।

पा०७।४।५३।

पा०७।४।२८।

१०५ यण् अचि । पा०१।१।६।

८१ ऋ-संयोगाद्योः अत् । पा०७।४।२९।

१०६ मि-मी-मा-रभ-लभ-शक-पत-पद-दा-

८२ यङि । पा०७।४।३०।

धाम् अचः सि सनि इस् ।

८३ हनः ग्री हिंसायाम् ।

पा०७।४।५४। काशिका ७।४।५४।

पा०७।४।३० वा०१।

१०७ राघः हिंसायाम् । पा०७।४।५४

८४ ई घ्रा-ध्मोः । पा०७।४।३१।

वा०१।

८५ अस्य च्वौ । पा०७।४।३२।

१०८ जपि-आप्-ऋधाम् ईत् ।

८६ क्यचि । पा०७।४।३३।

पा०७।४।५५।

८७ न क्षुधि अशनस्य । पा०७।४।३४।

१०९ दम्भः इत् च । पा०७।४।५६।

८८ धनस्य तृष्णायाम् । पा०७।४।३४।

११० अव्याप्यस्य मुचेः ओत् वा ।

८९ उदन्यः । पा०७।४।३४।

पा० ७।४।५७।

९० वृष-अश्रयोः सैथुने सुक् ।

१११ द्वित्वे पूर्वस्यात्र लोपः ।

पा०७।१।५१ वा०१।

पा०७।४।५८।

९१ असुक् च अत्तुम् ।

११२ हलः अनादेः । पा०७।४।६०।

पा०७।१।५१ भा०।

११३ खयि खरः । पा०७।४।६१+वा०१।

९२ दो-सो-मा-स्याम् इत् ति किति ।

११४ चर् । पा०८।४।५४।

पा०७।४।४०।

११५ झषः जश् पा०८।४।५४,५३।

९३ छो वा । पा०७।४।४१।

११६ कु-होः चुः । पा०७।४।६२।

९४ धावः हिः । पा०७।४।४२।

११७ न कुङः यङि । पा०७।४।६३।

९५ हाकः त्वि । पा०७।४।४३।

११८ उः अत् । पा०७।४।६६।

९६ दो दत् । पा०७।४।४६।

११९ ह्रस्वः । पा०७।४।५९।

९७ प्रादेः अचः तः । पा०७।४।४७।

१२० द्युति-स्वाप्योः यणः इक् ।

९८ अपो भि । पा०७।४।४८।

पा०७।४।६७।

९९ सि सः लिङितिङि । पा०७।४।४९।

१२१ व्यथः लिटि । पा०७।४।६८।

१०० तास्-असोः रि च लोपः

१२२ दीर्घः अपिति इणः । पा०७।४।६९।

पा०७।४।५०,५१।

१२३ अतः आदेः । पा०७।४।७०।

- १२४ नुक् च अनेकहलः । पा० ७।४।७१। १३५ जप-जभ-दह-दश-भञ्ज-पशाम् ।
 १२५ अश्नोतेः । पा० ७।४।७२। पा० ७।४।८६।
 १२६ भुवः अत् । पा० ७।४।७३। १३६ चर-फलोः । पा० ७।४।८७।
 १२७ निजां लुकि एत् । पा० ७।४।७५। १३७ ति च उत् अतः । पा० ७।४।८८, ८९।
 १२८ ऋ-पृ-भृ-मा-हाडाम् इत् । १३८ रीग् ऋत्वतः । पा० ७।४।९०+
 पा० ७।४।७७, ७६। वा० १।
 १२९ सनि अतः । पा० ७।४।७९। १३९ रुग्-रिकौ च लुकि । पा० ७।४।९१।
 १३० ओः पु-यण्-जि अपरे । पा० ७।४।८० । १४० सन्वत् लघुनि णौ चङि अनग्लोपे ।
 १३१ स्तु-भु-दु-प्रु-प्लु-च्यूनां वा । पा० ७।४।८३।
 पा० ७।४।८१। १४१ दीर्घः लघोः । पा० ७।४।९४।
 १३२ आ-अदेङ् यङि । पा० ७।४।८२, ८३। १४२ स्मृ-दृ-त्वर-प्रथ-भ्रद-स्तृ-स्पशाम्
 १३३ नीग् वञ्च-लंसु-ध्वंसु-भ्रंशु-कस-पत-
 पद-स्कन्दाम् । पा० ७।४।८४। अत् । पा० ७।४।९५।
 १३४ ञमः अतः नुक् । पा० ७।४।८५। १४३ वा वेष्टि-चेष्ट्योः । पा० ७।४।९६।
 १४४ ईत् च गणः । पा० ७।४।९७।

[षष्ठस्य अध्यायस्य द्वितीयः पादः समाप्तः]

[तृतीयः पादः]

- १ वीप्सा-आभीक्ष्ण्ययोः द्वे । पा० ८।१।४। ९ व्यतिहारे सर्वादीनां सुबहुलम् ।
 पा० ८।१।११। पा० ८।१।१२ वा० ११।
 २ परेः वर्जने वाक्ये वा । पा० ८।१।५+ १० परस्य अपुंसि आम् ।
 वा० १, २। पा० ८।१।१२ वा० १२।
 ३ अधि-उपरि-अधसां सामीप्ये । ११ यथास्वे यथायथम् । पा० ८।१।१४।
 पा० ८।१।७। १२ द्वन्द्वं रहस्य-मर्यादा-व्युत्क्रान्ति-यज्ञ-
 ४ वाक्यादेः आमन्त्रितस्य असूया-
 पात्रप्रयोगेषु । पा० ८।१।१५।
 संमत्योः । पा० ८।१।८। १३ अत्यन्तसहचरिते लोकविज्ञाते ।
 पा० ८।१।१५ वा० १।
 ५ एकस्य सुप्लुक् । पा० ८।१।९+वा० ३। १४ संभ्रमे यावद्वोधम् ।
 ६ आवाधे पुंवच्च । पा० ८।१।१०+९ वा० ३। पा० ८।१।१२ वा० ५+भा०।
 ७ प्रकारे गुणस्य । पा० ८।१।१२। १५ अपादादौ पदादेकवाक्ये ।
 ८ अकृच्छ्रे प्रिय-सुखयोर्वा । पा० ८।१।१३। पा० ८।१।१८, १७, १८ वा० ५।

१६ युष्मद्-अस्मदोः षष्ठी-चतुर्थी-
द्वितीयान्तयोः जाम्-नौ वा ।

पा० ८।१।२०, २६ भा०।

१७ बहुवचनस्य वस्-नसौ । पा० ८।१।२१।

१८ एकवचनस्य ते-मे । पा० ८।१।२२।

१९ त्वा-मौ द्वितीयायाः । पा० ८।१।२३।

२० अन्वादेशे । पा० ८।१।२६ वा० १।

२१ सपूर्वात् प्रथमान्तात् वा ।

पा० ८।१।२६।

२२ न ज-जा-ह-अह-एवयोगे ।

पा० ८।१।२४।

२३ दृश्यर्थे अनालोचने । पा० ८।१।२५।

२४ आसन्निधत्तं पूर्वम् असद्वत् ।

पा० ८।१।७२।

२५ न सामान्यवचनमेकार्थे ।

पा० ८।१।७४ भा०।

२६ बहुत्वे वा । पा० ८।१।७४।

२७ पूर्वत्र असिद्धम् । पा० ८।२।१।

२८ सुषि न लोपः । पा० ८।२।२।

२९ न नि मुः । पा० ८।२।३।

३० सिज्जलोपः एकादेशे । पा० ८।२।६

वा० ५।

३१ ष-ठनि क्तादेशः । पा० ८।२।६ वा० ७।

३२ प्लुतस्तुकि । पा० ८।२।६ वा० ११।

३३ धुटि श्चुः । पा० ८।२।६ वा० १२।

३४ द्वित्वे परसवर्णः । पा० ८।२।६

वा० १४।

३५ मात् उपान्ताच्च मतोर्वः । पा० ८।२।११।

३६ झयः । पा० ८।२।१०।

३७ नास्मि । पा० ८।२।११।

३८ न यवादिभ्यः । पा० ८।२।११।

३९ अष्ठीवत्-क्कीवत्-कक्षीयत्-उदन्वत्-
रमण्वत्-शर्मण्वती ।

पा० ८।२।१२, १३।

४० राजन्वान् सौरास्थे । पा० ८।२।१४।

४१ कृपो रो लोऽकृपणादीनाम् ।

पा० ८।२।१८+भा०।

४२ प्रादीनाम् अयत्नौ । पा० ८।२।१९।

४३ ओ यङि । पा० ८।२।२०।

४४ अचि वा । पा० ८।२।२१।

४५ परेः घ-अङ्क-योगेषु ।

पा० ८।२।२२+भा०।

४६ कश्चिरिकादीनाम् ।

पा० ८।२।१८ भा०।

४७ डः ।

४८ सुपः प्रकृतेर्नो लोपः । पा० ८।२।७।

४९ न संबुद्धौ । पा० ८।२।८।

५० नपुंसके वा । पा० ८।२।८ वा० २।

५१ लुपि बलि तद्वत् । पा० १।४।१७, १८।

५२ संयोगस्य पदस्य । पा० ८।२।२३।

५३ रात् सः । पा० ८।२।२४।

५४ धि सङि । पा० ८।२।२५, २२ वा० १।

५५ झलः झलि । पा० ८।२।२६।

५६ ह्रस्वात् । पा० ८।२।२७।

५७ इटः ईटि । पा० ८।२।२८।

५८ स्-कोः संयोगाद्योः अन्ते च ।

पा० ८।२।२९।

५९ चोः कुः । पा० ८।२।३०।

६० क्त्रिनः । पा० ८।२।३१।

६१ नग् वा । पा० ८।२।३३।

६२ हः ङः । पा० ८।२।३१।

६३ दादेर्वातोः घः । पा० ८।२।३२।

६४ वा द्रुह-मुह-स्तुह-स्निहाम् ।

पा० ८।२।३३।

६५ नह-आहो धः । पा० ८१३४, ३५।

६६ ऋश्च-भ्रज्ज-सृज-मृज-यज-राज-भ्राज-
शां षः । पा० ८१३६।

६७ झलः जश् । पा० ८१३६।

६८ ल-सोस्त-सौ भत्वर्थे । पा० ११४। १६।

६९ झषः एकाचः रु-ध्वोः बशो भष् ।
पा० ८१३७।

७० धस्त-थोश्च । पा० ८१३८।

७१ ल-थोः धः अधः । पा० ८१४०।

७२ लि ष-ढोः कः । पा० ८१४१।

७३ झो नो म्भोश्च । पा० ८१४४, ६५।

७४ र-दात् त-तवतोर्दश्च । पा० ८१४२।

७५ यण्स्वोभात् आतः । पा० ८१४३।

७६ ऋ-ल्वाविभ्यः क्तिनश्च ।
पा० ८१४४+वा० १।

७७ पूवः नाशे । पा० ८१४४ वा० ३।

७८ दु-न्वोः ऊ च । पा० ८१४४ वा० २।

७९ सेः ग्रासे । पा० ८१४४ वा० ४।

८० ओदितः । पा० ८१४५।

८१ क्षेः क्षी च । पा० ८१४६।

८२ वा भाव-आक्रोश-दैर्न्येषु ।
पा० ६। ४। ६०, ६१।

८३ द्यः अस्पशे । पा० ८१४७।

८४ अञ्चः अनदधौ । पा० ८१४८।

८५ अछूते दिवः । पा० ८१४९।

८६ अवाते निर्वाणः । पा० ८१५०।

८७ घा-त्रा-अति-ही-नुद-उन्व-विदो वा ।
पा० ८१५६, ६०।

८८ प्रस्त्यः सः । पा० ८१५४।

८९ क्षः । पा० ८१५३।

९० शुषः कः । पा० ८१५१।

९१ पचो वः । पा० ८१५२।

९२ ह्लादः ह्लाद् । पा० ६। ४। ६५।

९३ क्तिनि । काशिका ६। ४। ६५।

९४ फुल्ल-क्षीव-कृश-उल्लाघाः ।

पा० ८१५५।

९५ न ध्या-ख्या-प-मूर्छि-मदाम् ।

पा० ८१५७।

९६ क्तिनः प्रतीत-भोगयोः । पा० ८१५८।

९७ भित्तं शकले । पा० ८१५९।

९८ ससजुषः रः । पा० ८१६६।

९९ अह्नः । पा० ८१६८।

१०० लुकि अरि रः । पा० ८१६९।

१०१ प्रचेतसः राजनि वा ।

पा० ८१७०+वा० १।

१०२ पत्यादिषु अहरादीनाम् ।

पा० ८१७० भा०।

१०३ दः अनडुहः । पा० ८१७२।

१०४ वतु-स्त्रं-बु-ध्वंसां सः । पा० ८१७२।

१०५ तिपि । पा० ८१७३।

१०६ सिपि र्वर्वा । पा० ८१७४।

१०७ दः । पा० ८१७५।

१०८ धातोः र्-धोः अनचि इकः दीर्घः ।

पा० ८१७६, ७७।

१०९ न सुपि धचि । पा० ८१७९।

११० द्वित्वे । पा० ८१७८ वा० १।

१११ कुरु-च्छुरोः । पा० ८१७९।

११२ अदसः अत्वे दात् उ दः सः ।

पा० ८१८०।

११३ अद्री वा । पा० ८१८० भा०।

११४ एत ईत् । पा० ८१८१।

११५ वाक्याचां प्लुतः अन्त्यः ।

पा० ८१८२।

११६ दूराह्वाने । पा० ८१८४।

- ११७ अनन्त्येऽपि हे-है । पा०दा२।८५। १२५ विचारे । पा०दा२।६७, ६८।
 ११८ गुरु एकैकम् अनृत् वा । १२६ प्रतिश्रुतौ । । पा०दा२।६६।
 पा०दा२।८६। १२७ पूजिते । पा०दा२।१००।
 ११९ अस्त्री-शूद्रप्रत्यभिवादे । १२८ चिति उपमार्थे । पा०दा२।१०१।
 पा०दा२।८३+वा०१। १२९ निन्दा-आशीः-प्रैष्येषु तिङ्
 १२० प्रत्युक्तौ हिः । पा०दा२।६३। आकाङ्क्षम् । पा०दा२।१०४।
 १२१ उपालम्भे । पा०दा२।६४। १३० अनन्त्यस्यापि प्रश्न-आख्यानयोः ।
 १२२ अङ्गयुक्तं तिङ् आकाङ्क्षम् । पा०दा२।१०५।
 पा०दा२।६६। १३१ एचः प्रश्नान्त-पूजा-विचार-
 १२३ भर्त्सने द्विरुक्तं पर्यायेण । प्रत्यभिवादिषु आत् इत्-उत्परः
 पा०दा२।६५+वा०१। पा०दा२।१०७+वा०२+भा०।
 १२४ असूया-संमत्योः पूर्वम् । १३२ न एतो द्वित्वे । पा०दा२।१०७।
 पा०दा२।१०३। १३३ तयोः य्-वौ अचि । पा०दा२।१०८।

[षष्ठस्य अध्यायस्य तृतीयः पादः समाप्तः]

[चतुर्थः पादः]

- १ समः सुटि सः । पा०दा३।५, १। १२ ड-णोः कुक्-टुकौ शरि ।
 २ पुमः खयि अमि । पा०दा३।६। पा०दा३।२८।
 ३ नः छवि अप्रशानः^१ । पा०दा३।७। १३ डः सः धुट् । पा०दा३।२६।
 ४ कान् कानि । पा०दा३।१२। १४ नः । पा०दा३।३०।
 ५ नृन् पे रः वा । पा०दा३।१०। १५ शि तुक् । पा०दा३।३१।
 काशिका दा३।१०। १६ मयः उवः अचि वः ।
 ६ अत्र अनुनासिकः पूर्वस्य । पा०दा३।२। पा०दा३।३३, ३२।
 ७ अनुस्वारः । पा०दा३।४। १७ ड्मो ह्रस्वात् द्वे । पा०दा३।३२।
 ८ हलि मः । पा०दा३।२३, २२। १८ डे अनादौ ढलोपः ।
 ९ नश्च अनन्त्यस्य झलि । पा०दा३।२४। पा०दा३।१३+वा०१।
 १० सम्राट् । पा०दा३।२५। १९ रः रि । पा०दा३।१४।
 ११ हे म-न-य-व-लपरे ते वा । २० विरामे विसर्जनीयः । पा०दा३।१५।
 पा०दा३।२६, २७, २६ वा०१। २१ खरि । पा०दा३।१५।

^१ मूलसूत्रपाठपुस्तके 'अप्रशान्' इति ।

२२ शर्परे । पा०दा३।३५।
 २३ रोः सुपि । पा०दा३।१६।
 २४ भो-भगो-अघोभ्यः अशि लोपः ।
 पा०दा३।१७,२०।
 २५ आत् । पा०दा३।१७।
 २६ यः अचि वा अनुञि ।
 पा०दा३।१७,२१,२२।
 २७ व्-योः ईषत्स्पृष्टौ च । पा०दा३।१८।
 २८ छवि रः सः । पा० दा३।३४।
 २९ वा शरि । पा०दा३।३६।
 ३० खरि लोपः । पा०दा३।३६ वा०१।
 ३१ कु-प्वोः) (क०पौ । पा०दा३।३७।
 ३२ ससंख्यस्य अनादौ सः ।
 पा०दा३।३८+वा०१।
 ३३ रोः काम्ये । पा०दा३।३८ वा०२।
 ३४ इणः षः । पा०दा३।३९।
 ३५ निर्-दुर्-बहिर्-आविर्-चतुर्-प्रादुर्-
 पुरसाम् । पा०दा३।४१,४०।
 ३६ सुचो वा । पा०दा३।४३।
 ३७ इस्-उसोः संबन्धे । पा०दा३।४४।
 ३८ प्लुतात् तिच । पा०दा३।४१ वा०२।
 ३९ समासे अनुत्तरस्य । पा०दा३।४५।
 ४० अतः कृ-कमि-कंस-कुम्भ-पात्र-कुशा-
 कर्णीषु ससंख्यस्य । पा०दा३।४६।
 ४१ अधः-शिरसोः पदे । पा०दा३।४७।
 ४२ नमसः । पा०दा३।४०।
 ४३ कृञि वा । पा०१।४।७४।
 ४४ तिरसः । पा०१।४।७२।
 ४५ कस्कादयः । पा०दा३।४८।
 ४६ कोश्च आदेश-सनादि-शासि-वसि-घसां
 सः । पा०दा३।५७,५९,६०,५६।
 ४७ नुम्-विसर्जनीय-शर्व्यवाये ।
 पा०दा३।५८।

४८ स्तोः षणिः । पा०दा३।६१।
 ४९ णेः अस्विदि-स्वदि-सहः ।
 पा०दा३।६१,६२।
 ५० प्रादीनां सु-सू-सो-स्तु-स्तुभ-स्था-सेनि-
 सेध-सिच-सञ्ज-स्वञ्जाम् पा०दा३।६५।
 ५१ सदः अप्रतेः । पा०दा३।६६।
 ५२ स्तम्भेः । पा०दा३।६७।
 ५३ अवात् औजित्य-आलम्बन-अविद्वर्येषु ।
 पा०दा३।६८।
 ५४ वेश्व स्वनः भोजने । पा०दा३।६९।
 ५५ नि-परेश्च सेव-सिवु-सह-सुटाम्
 पा०दा३।७०।
 ५६ स्तु-स्वञ्ज-सिवादीनां वा अङ्गव्यवाये ।
 पा०दा३।७०,७१।
 ५७ स्वादीनाम् । पा०दा३।६३।
 ५८ स्थादीनां द्विरुक्तेन तस्य च ।
 पा०दा३।६४।
 ५९ नेः सय-सितयोः । पा०दा३।७०।
 ६० वि-परेः पा०दा३।७०।
 ६१ निर्-अभि-अनोश्च स्यन्दः अप्राणिनि
 वा । पा०दा३।७२।
 ६२ वेः स्कन्दः अत-तवतोः ।
 पा०दा३।७३।
 ६३ परेः । पा०दा३।७४।
 ६४ स्फुरि-स्फुलोः निर्-नि-विभ्यः ।
 पा०दा३।७६।
 ६५ वेः स्कन्तः षः । पा०दा३।७७।
 ६६ समासे अङ्गुलेः सङ्गः । पा०दा३।८०।
 ६७ भीरोः स्थानम् । पा०दा३।८१।
 ६८ अग्नेः स्तुत् । पा०दा३।८२।
 ६९ ईतः सोमः । पा०दा३।८२+वा०१।
 ७० ज्योतिर्-आयुषश्च स्तोमः ।
 पा०दा३।८३,८२।

- ७१ मातृ-पितृभ्यां स्वसा । पा०८।३।८४। ६८ सदि-स्वञ्जेः लिटि ।
 ७२ अलुकि वा । पा०८।३।८५। पा०८।३।११८+वा०१।
 ७३ अभिनिष्टानो वर्णे । पा०८।३।८६। ६९ धातोः सीलुङोश्च धः ङः ।
 ७४ प्रादुः-प्रादिभ्यः यच्चि अस्तेः । पा०८।३।७८।
 ७५ सु-वि-निर्-दुर्भ्यः सम-सूति-सुपाम् । १०० वेटः । पा०८।३।७९।
 ७६ नदीष्णः कुशले । पा०८।३।८९। १०१ र-धात् नः णः एकपदे । पा०८।४।१।
 ७७ नेः स्नातः पा०८।३।८९। १०२ पूर्वपदात् नास्मि । पा०८।४।३।
 ७८ प्रतेः सूत्रे । पा०८।३।९०। १०३ वनं पुरगा-मिश्रका-सिध्रका-
 ७९ प्रष्ठः अग्रगामी । पा०८।३।९२। शारिका-अग्ने-कोटरात् ।
 ८० वेः स्त्रः नास्मि । पा०८।३।९३, ९४। पा०८।४।४।
 ८१ गवि-युधेः स्थिरः । पा०८।३।९५। १०४ प्र-निर्-अन्तः-शर-इक्षु-प्लक्ष-आम्र-
 ८२ कपेः स्थलस्य । पा०८।३।९१। काढ्य-पीयूषा-खदिरात् ।
 ८३ वि-कु-शमि-परिभ्यः । पा०८।३।९६। पा०८।४।५।
 ८४ अम्ब-आम्ब-गो-भूमि-द्वि-त्रि-कु-शेकु-
 शङ्कु-अङ्गु-मञ्जि-पुञ्जि-बर्हिस्-दिवि-
 अग्निभ्यः स्थः । पा०८।३।९७। १०५ वा औषधिवृक्षात् द्वि-त्र्यचः
 अनिरिकादेः पा०८।४।६+भा०।
 ८५ एति संज्ञायाम् अकोः । पा०८।३।९९। १०६ अह्नः अतः । पा०८।४।७।
 ८६ नक्षत्रात् इतो वा । पा०८।३।१००। १०७ त्रि-चतुर्भ्यां हायनो वयसि ।
 ८७ ह्रस्वात् सुपः ति । पा०८।३।१०१। पा०४।१।२७ भा०। काशिका
 ८८ निसः तपि सकृत् । पा०८।३।१०२। ४।१।२७।
 ८९ सुषामादयः । पा०८।३।९८। १०८ वाहनं वाह्यात् । पा०८।४।८।
 ९० न आदि-अन्तयोः । पा०८।३।१११। १०९ पानं देशे । पा०८।४।९।
 ९१ सात् । पा०८।३।१११। ११० वा भाव-करणयोः । पा०८।४।१०।
 ९२ सिचः यङि । पा०८।३।११२। १११ गिरिनद्यादीनाम् ।
 ९३ सिधः गतौ । पा०८।३।११३। पा०८।४।१० वा०१।
 ९४ नि-प्रतेः स्तब्धः । पा०८।३।११४। ११२ समस्तान्त-समीपयोः अयुवादीनाम् ।
 ९५ सोढः । पा०८।३।११५। पा०८।४।११ वा०१, ३।
 ९६ प्रादिभ्यः स्तम्भु-सिबु-सहां चङि । ११३ कुमत्-एकाचः । पा०८।४।१२, १३।
 १०८ सोः स्य-सनोः । पा०८।३।११७। ११४ प्रादि-अन्तरः अदुरः णः ।
 पा०८।४।१४। पा०१।४।६५ वा०१।
 १०९ सोः स्य-सनोः । पा०८।३।११७। पा०१।४।६० वा०७।
 ११५ हिनु-मीना-आनि । पा०८।४।१५, १६।

- ११६ नेः गद-नद-पत-पद-डा-धा-मा-वा-
दिह-वह-शम-हन-या-सा-द्रा-प्सा-चि-
वपिषु । पा०दा४।१७।
- ११७ अक-खादौ अषान्ते पाठे वा ।
पा०दा४।१८।
- ११८ अनः अन्ते च । पा०दा४।१९, २० ।
- ११९ हनः । पा०दा४।२२।
- १२० व्-मोः वा । पा०दा४।२३।
- १२१ अन्तरः अयनस्य च अदेशे ।
पा०दा४।२४, २५।
- १२२ सुपि अचः । पा०दा४।२६।
- १२३ निर्विण्णः । पा०दा४।२६ वा०१।
- १२४ णेर्वा । पा०दा४।३०।
- १२५ हलादेः इव्उपान्तात् ।
पा०दा४।३१।
- १२६ नुमि इच्-आदेर्हलः । पा०दा४।३२।
- १२७ वा निक्ष-निस-निन्दाम् ।
पा०दा४।३३।
- १२८ न भा-भू-पूञ्-कमि-गमि-प्यायी-
वेपाम् । पा०दा४।३४+वा०१।
- १२९ षः पदे । पा०दा४।३५।
- १३० नशेः ष्-कः । पा०दा४।३६+वा०१।
- १३१ अन्ते । पा०दा४।३७।
- १३२ चु-टु-तु-ल-शर्ब्यवाये ।
पा०दा४।२।
- १३३ सुपा अनाङ्ग-मयेन । पा०दा४।३८।
पा०दा४।२। पा०दा४।३८ भा०।
- १३४ घाहः । पा०दा४।२२। पा०दा४।२।
वा०४, ५।
- १३५ क्षुम्नादीनाम् । पा०दा४।३९।

- १३६ स्-तोः श्-चु-ष्-टुभ्यां तौ ।
पा०दा४।४०, ४१।
- १३७ न टोः अनवति-नगर्योः आदेः ।
पा०दा४।४२+भा०।
- १३८ तोः षि । पा०दा४।४३।
- १३९ शात् । पा०दा४।४४।
- १४० यरः वमि वम् वा ।
पा०दा४।४५।
- १४१ अचः र-हात् द्वे । पा०दा४।४६।
- १४२ अनचि । पा०दा४।४७।
- १४३ यणः मयः । पा०दा४।४७ वा०१।
- १४४ शरः खयः । पा०दा४।४७ वा०२।
- १४५ न आक्रोशे पुत्रस्य आदिनि तत्परे
च । पा०दा४।४८+वा०१।
- १४६ शरः अचि रात् । पा०दा४।४९।
- १४७ दीर्घात् । पा०दा४।५२।
- १४८ खरि चर् झलः । पा०दा४।५५।
- १४९ वा विरामे । पा०दा४।५६।
- १५० अणः अनुनासिकः । पा०दा४।५७।
- १५१ अनुस्वारस्य ययि यम् ।
पा०दा४।५८।
- १५२ पदादौ वा । पा०दा४।५९।
- १५३ तोः लि । पा०दा४।६०।
- १५४ उवः स्था-स्तम्भोः तः ।
पा०दा४।६१।
- १५५ हलः झरां झरि सस्थाने लोपो
वा । पा०दा४।६५।
- १५६ झयः हो झय् । पा०दा४।६२।
- १५७ शः छः अमि । पा०दा४।६३।
- १५८ चयः शरि द्वितीयः ।
पा०दा४।४८। वा०३।

[षष्ठस्य अध्यायस्य चतुर्थः पादः समाप्तः]

॥ चान्द्रे व्याकरणे सूत्रस्य षष्ठः अध्यायः समाप्तः ॥

[आचार्यचन्द्रगोमिहृतं चान्द्रं व्याकरणं मूलसूत्रपाठतः समाप्तम्]

अकारादिक्रमेण चान्द्रव्याकरणसूत्रनिर्दिष्टगणानां तत्तत्सूत्रनिर्देशपूर्वकं सूचिः ।

१ अक्षद्यूतादि ३।४।१८।	२८ ऊषादि ४।२।१११।
२ अङ्गुल्यादि ४।३।८५।	२९ ऋगयनादि ३।३।४५।
३ अजादि २।३।१५।	३० ऋतुआदि ४।१।१२४।
४ अजिरादि ५।२।१३३।	३१ ऐषुकारिआदि ३।१।६३।
५ अङ्गनादि ५।२।१३२।	३२ कच्छादि ३।२।४८।
६ अदादि (धातुगण) १।१।८३।	३३ कणादि (धातुगण) ६।१।६४।
७ अध्यादि २।१।५१।	३४ कण्डूआदि (,,) १।१।३६।
८ अध्यात्मादि ३।३।२६।	३५ कत्त्रिआदि ३।२।५।
९ अनुशक्तिकादि ६।१।३०।	३६ कथादि ३।४।१०४।
१० अर्घर्चादि २।२।८३।	३७ कपिरिकादि ६।३।४६।
११ अर्शस्-आदि ४।२।१४७।	३८ कम्बोजादि २।४।१०४।
१२ अश्वादि २।४।३।	३९ कर्णादि ४।२।२५।
४।१।५२।	४० कलापिन्आदि ५।३।१४०।
१३ अश्वादि २।४।३१।	४१ कल्याणीआदि २।४।५६।
१४ अहर् (अहन्)-आदि ६।३।१०२।	४२ कस्कादि ६।४।४५।
१५ आकर्षादि ४।२।६८।	४३ काशीआदि ३।२।३३।
१६ आदिआदि ४।३।६।	४४ किसरादि ३।४।५५।
१७ इरिकादि ६।४।१०५।	४५ कुञ्जादि २।४।३३।
१८ इष्टादि ४।२।६४।	४६ कुटआदि (धातुगण) ६।२।१३।
१९ उक्थादि ३।१।३८।	४७ कुम्भपदीआदि ४।४।१२८।
२० उण् ('उण्' प्रत्यय) आदि	४८ कुरुआदि २।४।८४।
१।३।११।	४९ कुलालादि ३।३।८४।
२१ उत्थापनादि ४।१।१३२।	५० कृपणादि ६।३।४१।
२२ उत्सादि २।४।७।	५१ कृषिआदि ४।२।११६।
२३ उत्सङ्गादि ३।४।१४।	५२ कृआदि (धातुगण) १।४।१००।
२४ उद्रातृआदि ४।१।१४५।	५।४।१७२।
२५ उपक २।४।११४।	५३ केशादि ४।२।११३।
२६ उरस्-आदि ४।४।१३६।	५४ कोटरादि ५।२।१३२।
२७ ऊरीआदि २।२।२५।	५५ क्रमादि ३।१।४०।

५६ क्रीआदि (ध तुगण) १।१।१०१।	८५ तालादि ३।३।१०६।
५७ क्रोडादि २।३।६७।	८६ तिकादि २।४।८६।
५८ क्रीडाआदि २।३।८४।	८७ तिककितवादि २।४।११५।
५९ क्षिपकादि ६।१।७६।	८८ तिष्ठद्गुआदि २।२।१०।
६० क्षुब्नादि ६।४।१३५।	८९ तुदादि (धातुगण) १।१।६२।
६१ खलादि ३।१।५७।	९० तौल्वल्यादि २।४।१२२।
६२ गमादि (धातुगण) ५।३।४६।	९१ त्यदादि १।२।५१।
६३ गर्गादि २।४।२४।	२।४।८६।
६४ गवाश्चादि २।२।५७।	३।२।२८।
६५ गहादि ३।२।५८।	५।४।६८।
६६ गिरिनद्यादि ६।४।१११।	९२ दण्डादि ४।१।७६।
६७ गृष्ट्यादि २।४।७७।	९३ दधिपयस्आदि २।२।६६।
६८ गोआदि ४।१।२।	९४ दामनि-आदि ४।३।६२।
६९ गोणीआदि २।२।८७।	९५ दिवादि (धातुगण) १।१।८७।
७० गोपवनादि २।४।११६।	९६ दिश्आदि ३।३।१७।
७१ गोसदादि ४।२।१५६।	९७ दृढादि ४।१।१४०।
७२ गौरादि २।३।३७।	९८ देवादि ४।४।४०।
७३ ग्रहादि (धातुगण) १।१।१४०।	९९ देवव्रतादि ४।१।१०६।
५।४।१२६।	१०० देवासुरादि ३।३।५७।
७४ चत्वारिंशत्आदि ५।२।५४।	३।३।८६।
७५ चुरादि (धातुगण) १।१।४५।	१०१ द्युतादि १।१।७३।
७६ चूडादि ४।१।१३०।	१।४।१४३।
७७ छत्रादि ३।४।६३।	१०२ द्वारादि ६।१।१५।
७८ छेदादि ४।१।७५।	१०३ द्विदण्डिआदि ४।४।११७।
७९ जक्षादि (धातुगण) १।४।५।	१०४ धूमादि ३।२।४१।
८० ज्योत्स्नादि ४।२।१०७।	१०५ नखादि ५।२।६५।
८१ ज्वलादि (धातुगण) १।१।१४६।	१०६ नडादि २।४।३५।
८२ डतरादि (प्रत्यय) २।१।२५।	१०७ नद्यादि ३।२।६।
८३ तनादि (धातुगण) १।१।६४।	१०८ नन्दादि (धातुगण) १।१।१४०।
१।१।६४।	१०९ नवयज्ञादि ४।२।१२४।
५।३।३५।	११० निकटादि ३।४।७४।
८४ तारकादि ४।२।३७।	१११ निजादि (धातुगण) ६।२।१२७।

११२ नौ-आदि २।१।८०।	१।३।४६।
४।२।११८।	१।३।५१।
११३ न्यङ्कुआदि ६।१।८४।	१।३।५८।
११४ पक्षादि ५।२।१०३।	१।३।७१।
११५ पत्यादि ६।३।१०२।	१।३।८७।
११६ परदारादि ३।४।४५।	१।४।७२।
११७ परिमुखादि ३।३।२३।	१।४।८६।
११८ पर्पादि ३।४।८।	१।४।११७।
११९ पर्शुआदि ४।३।६३।	१।४।१२६।
१२० पाण्यादि १।२।१४।	२।२।२४।
१२१ पात्रादि २।२।८०।	४।४।७१।
१२२ पामन्-आदि ४।२।१०४।	४।४।११०।
१२३ पारस्करादि ५।१।१४२।	५।१।६३।
१२४ पाशादि ३।१।५६।	५।२।११३।
१२५ पिच्छादि ४।२।१०३।	५।२।१४१।
१२६ पील्वादि ४।२।२४।	५।४।२१।
१२७ पुण्याहवाचनादि ४।१।१३४।	५।४।२३।
१२८ पुष्आदि (धातुगण) १।१।७३।	६।१।५६।
१२९ पुष्करादि ४।२।१३२।	६।२।७५।
१३० पूआदि (धातुगण) ६।१।१०८।	६।२।६७।
१३१ पूर्वादि २।१।१५।	६।३।४२।
१३२ पृथु ४।१।१३६।	६।४।५०।
१३३ पृषोदरादि ५।२।१२७।	६।४।७४।
१३४ पिङ्गाक्षिपुत्रादि ३।१।२४।	६।४।६६।
१३५ पैलादि २।४।१२१।	६।४।११४।
१३६ प्रादि १।१।१०६।	१३७ प्रज्ञादि ४।४।२२।
१।१।१४२।	१३८ प्रतिजनादि ३।४।१०१।
१।१।१४४।	१३९ प्रभूतादि ३।४।४७।
१।१।१५०।	१४० प्रियाआदि ५।२।२६।
१।२।२।	१४१ फण् आदि (धातुगण) ५।३।१२१।
१।३।११।	१४२ बाहीकादि ३।२।२०।
१।३।१४।	१४३ बाहुआदि २।४।२०।

१४४ बिदादि २।४।२२।
 १४५ बिल्वकीयादि ५।३।१५७।
 १४६ ब्राह्मणादि ४।१।१४१।
 १४७ भर्गादि २।४।१०६।
 १४८ भस्त्रादि ३।४।१५।
 १४९ भिक्षादि ३।१।४४।
 १५० भिदादि (धातुगण) १।३।८६।
 १५१ भृशादि १।१। ३०।
 १५२ भौरिकिआदि ३।१।६३।
 १५३ भ्रूकुंसादि ५।२।७२।
 १५४ मनोज्ञादि ४।१।१४९।
 १५५ महानाम्नीआदि ४।१।१०७।
 १५६ महिषीआदि ३।४।५०।
 १५७ 'मा' शब्दादि ३।४।४८।
 १५८ मुचादि (धातुगण) ५।४।११।
 १५९ यजादि (धातुगण) ५।१।१४।
 १६० यवादि ६।३।३८।
 १६१ यस्कादि २।४।११०।
 १६२ यावादि ४।४।१२।
 १६३ युवन्आदि ४।१।१४६।
 ६।४।११२।
 १६४ यूपादि ४।१।३।
 १६५ रज्जुआदि २।३।७६।
 १६६ रधादि (धातुगण) ५।४।१०८।
 १६७ राजन्यादि ३।१।६२।
 १६८ रुदादि (धातुगण) ५।४।१७३।
 ६।२।३७।
 १६९ रुधादि (धातुगण) १।१।९३।
 १७० रेवत्यादि २।४।७८।
 १७१ रैवतिक ३।३।९६।
 १७२ लू आदि (धातुगण) ६।३।७६।

१७३ लोमन् आदि ४।२।१०४।
 १७४ लोहितादि १।१।३१।
 १७५ लोहितादि २।३।२०।
 १७६ वंशादि ४।१।७२।
 १७७ वाकिनादि २।४।९१।
 १७८ विशत्यादि ४।२।५२।
 १७९ विनयादि ४।४।१७।
 १८० विमुक्तादि ४।२।१५५।
 १८१ वृत्आदि (धातुगण) १।४।१४४।
 ५।४।१२३।
 १८२ वेणुकादि ३।२।६१।
 १८३ वेतनादि ३।४।४०।
 १८४ व्यासादि २।४।२१।
 १८५ व्युष्टादि ४।१।११५।
 १८६ व्रीहिआदि ४।२।११९।
 १८७ शकादि (धातुगण) ५।४।१३५।
 १८८ शकन्धुआदि ५।१।९८।
 १८९ शकलादि ३।२।२१।
 १९० शण्डिकादि ३।३।६०।
 १९१ शतादि ४।२।५३।
 १९२ शब्दादि १।१।३६।
 १९३ शमादि (धातुगण) ६।१।१०२।
 १९४ शरादि ३।३।११४।
 ५।२।१३४।
 १९५ शरद्आदि ४।४।९०।
 १९६ शर्करादि ४।३।८४।
 १९७ शाखादि ४।३।८१।
 १९८ शिखादि ४।२।१३४।
 १९९ शिवादि २।४।४१।
 २०० शिशुक्रन्दादि ३।३।५६।
 २०१ शुण्डिकादि ३।३।४८।
 २०२ शुभ्रादि २।४।५३।

२०३ शोणादि २।३।४१।	२१४ सिव्वादि (धातुगण) ६।४।५६।
२०४ शौनकादि ३।३।७२।	२१५ सुआदि (धातुगण) १।१।६५।
२०५ षष्टि आदि ४।२।५४।	६।४।५७।
२०६ संतापादि ४।१।१२०।	६।४।५०।
२०७ संपद्आदि १।३।६३।	२१६ सुखादि । १।१।३५।
२०८ संध्यादि ३।२।७६।	४।२।१२८।
२०९ समानादि २।३।३३।	२१७ सुषामन्आदि ६।४।८६।
२१० सर्वादि २।१।६।	२१८ सुस्नातादि ३।४।४६।
२।१।७२।	२१९ स्तोकादि ५।२।२।
४।३।७।	२२० स्याआदि (धातुगण) ६।४।५८।
४।३।६०।	६।४।५०।
५।२।४१।	२२१ स्थूलादि ४।३।२७।
५।२।१०८।	२२२ स्वर्गादि ४।१।१३३।
६।३।६।	२२३ स्वागतादि ६।१।१८।
२११ साक्षात्आदि २।२।३६।	२२४ हरितादि २।४।३६।
२१२ सिध्मादि ४।२।१००।	२२५ हस्तिन् आदि ४।४।१२७।
२१३ सिन्धुआदि ३।३।६१।	२२६ हिमादि ४।२।१३६।

[इति चान्द्रसूत्रोक्तगणसूचिः समाप्ता]

[स्वर-व्यञ्जनानां स्थान-करण-प्रयत्नपरिचयः^१]

स्थान-करण-प्रयत्नेभ्यो वर्णा जायन्ते ।

(१) तत्र स्थानम् —

कण्ठः अ-कु-ह-विसर्जनीयानाम् ।

कण्ठ-तालुकम् इत्-एत्-ऐताम् ।

कण्ठ-ओष्ठम् उत्-ओत्-औताम् ।

मूर्धा ऋ-टु-र-षाणाम् ।

दन्ता लृ-नु-ल-सानाम् ।

नासिका अनुस्वारस्य ।

स्वस्थान-अनुनासिका

ङ-ञ-ण-न-माः ।

तालु इ-चु-य-शानाम् ।

ओष्ठौ उ-पु-उपध्मानीयानाम् ।

दन्त-ओष्ठम् वकारस्य ।

जिह्वामूलम् जिह्वामूलीयस्य ॥

(२) करणम् —

जिह्वाग्रम् दन्त्यानाम् ।

जिह्वोपाग्रम् शिरस्यानाम् ।

जिह्वामध्यम् तालव्यानाम् ।

शेषाः स्वस्थानकरणाः ॥

(३) प्रयत्नः द्विविधः-आभ्यन्तरः बाह्य-

श्च । तत्र आभ्यन्तरः —

संवृतत्वम् विवृतत्वम् स्पृष्टत्वम् ।

ईषत्स्पृष्टत्वं च ।

संवृतत्वम् अकारस्य ।

विवृतत्वम् स्वराणाम् ऊष्मणां च ।

तेभ्यः विवृततरत्वम् एत्-ओतोः ।

ताभ्याम् ऐत्-औतोः । ताभ्यामपि

आकारस्य ।

स्पृष्टत्वम् स्पर्शानाम् ।

ईषत्स्पृष्टत्वम् अन्तःस्थानाम् ।

बाह्यः —

वर्गणां प्रथम-द्वितीयाः ञ-ष-स-

विसर्जनीय - जिह्वामूलीय - उपध्मानीयाश्च
विवृतकण्ठाः श्वासानुप्रदानाः अधोषाश्च ।

प्रथम-तृतीय-पञ्चमाः अन्तःस्थाश्च
अल्पप्राणाः ।

इतरे महाप्राणाः ।

तृतीय-चतुर्थ-पञ्चमाः सानुस्वार-
अन्तःस्थ-हकाराः संवृतकण्ठाः नादानु-
प्रदानाः घोषवन्तः ।

द्वितीय-चतुर्थाः ञ-ष-स-हाश्च
ऊष्माणः ।

कादयः मावसानाः स्पर्शाः ।

अन्तःस्था य-र-ल-वा इति एष बाह्य-
प्रयत्नः ।

अत्र च अवर्णः ह्रस्वः दीर्घः प्लुत
इति त्रिधा भिन्नः ।

प्रत्येकम् उदात्त-अनुदात्त-स्वरितभेदेन
सानुनासिक-निरनुनासिकभेदेन च अष्टा-
दशधा भवति ।

एवम् ईवर्ण-उवर्णौ ऋवर्णश्च ।

लृवर्णस्य दीर्घा न सन्ति तेन स
द्वादशधा भवति ।

सन्ध्यक्षराणां ह्रस्वाभावात् तानि अपि
द्वादशधा ।

एकमात्रिकः ह्रस्वः ।

द्विमात्रिकः दीर्घः ।

त्रिमात्रिकः प्लुतः ।

उच्चैः उदात्तः ।

नीचैः अनुदात्तः ।

समाहारः स्वरितः ।

स्वस्थानानुनासिकः निरनुनासिकश्च ।

अन्तःस्थाः द्विप्रभेदा रेफवर्जिताः

सानुनासिका निरनुनासिकाश्च ।

[इति चन्द्रगोमिकृतं वर्णसूत्रं समाप्तम्]

१ एतद्विषयः “इकः असंस्थाने ह्रस्वश्च असमासे” ५।२।१३२। इत्यस्मिन् सूत्रे प्रयुक्ते ‘संस्थान’ शब्दे ।

॥ नमो मञ्जुघोषाय ॥

आचार्यश्रीचन्द्रगोमिविरचितम् उणादिप्रकरणम्

- उणादयः । १।३।१।
- १ कृ-वा-पा-जि-मि-स्वदि-साधि-अशूभ्यः
उण् ।
कारुः शिल्पी ।
वायुः समीरणः ।
पायुः अपानम् ।
जायुः औषधम् ।
मायुः पित्तम् ।
गोमायुः सृगालः ।
स्वादुः मधुरम् ।
साधुः परोपकारी ।
आशु शीघ्रम् धान्यनाम च ।
- २ दृ-सनि-जनि-चरि-चटि-तलिभ्यः वृण् ।
दारु काष्ठम् ।
सानुः गिरिप्रदेशः ।
जानु जङ्घास्थानम् ।
चारु शोभनम् ।
चाटुः स्फुटवादी ।
तालुः वदनैकदेशः ।
- ३ किम्-जराभ्याम् शृ-इणः ।
किंशारुः शारः ।
जरायुः गर्भवेष्टनम् ।
- ४ कृकात् वचः कश्च ।
कृकवाकुः कुक्कुटः कृकलासश्च ।
- ५ भृ-मृ-तृ-चरि-तनि-मस्जि-शीभ्यः उः ।
भरुः भर्ता ।
मरुः निर्जलो देशः ।
तरुः पादपः ।
- चरुः हविष्यान्नम् ।
तनुः शरीरम् ।
मद्गुः पक्षिविशेषः ।
शयुः अजगरः ।
- ६ अणः ।
अणु सूक्ष्मम् ।
- ७ धान्ये नित् ।
अणुः व्रीहिः ।
- ८ पटि-असि-वसि-त्रपि-हनि-मनि-इन्दि-
कन्दि-बन्धिभ्यः ।
पटुः स्फुटवादी ।
असुः प्राणः ।
वसु द्रव्यम् ।
त्रपु सीसम् ।
हनुः वदनैकदेशः ।
मनुः प्रजापतिः ।
इन्दुः चन्द्रमाः ।
कन्दुः पाकस्थानम् ।
बन्धुः स्वजनः ।
- ९ वहि-पंसेः दीर्घश्च ।
बाहुः भुजः ।
पांसुः रेणुः ।
- १० नमि-मनि-जनां नाकि-ध-तश्च ।
नाकुः वल्मीकम् ।
मधु क्षौद्रम् ।
जतु लाक्षा ।
- ११ वलि-फलेः गुक् च ।
वल्गुः मनोज्ञः ।

फल्गुः असारः ।

१२ नेः अञ्चेः ।

न्यङ्कुकुः मृगः ।

१३ इषि-भिदि-व्यधि-गृधि-धृषि-

पृ-पृथि-मृदेः कुः ।

इषुः शरः ।

भिद्रुः वज्रम् ।

विधुः अग्निः ।

गृधुः कामः ।

धृषुः प्रगल्भः ।

पुरुः समुद्रः ।

पृथुः विस्तीर्णः ।

मृद्रुः मर्दितः ।

१४ शशि-रपयोः अतः इत् च ।

शिशुः बालः ।

रिपुः शत्रुः ।

१५ कृ-ग्नोः उत् च ।

कुरुः राजा ।

गुरुः आचार्यः ।

१६ अर्तेः ऊत् च ।

ऊरुः सन्निधौ ।

उरुः महान् ।

१७ स्यन्दः यणः इक् धश्च ।

सिन्धुः नदी ।

१८ भ्रस्जि-स्पशेः सलोपश्च ।

भृगुः प्रपातः ।

पशुः चतुष्पादः ।

१९ सृजेः असुम् च ।

रज्जुः द्वित्रिवृत्ता ।

२० आखनि-बंहैः नलोपश्च ।

आखुः मूषिकः ।

बहु भूरि ।

२१ शङ्कुआदयः ।

शङ्कुः चिह्नम्

तर्कुः कर्तनद्रव्यम् ।

शरुः आयुधम् ।

त्सरुः दर्पणदण्डः ।

धनुः शस्त्रम् ।

मयुः किन्नरः ।

अपष्टुः बालः ।

सुष्टु शोभनम् ।

दुष्टुः दुर्विनीतः ।

हरिद्रुः वृक्षजातिः ।

मितद्रुः समुद्रः ।

मित्रयुः मित्रवत्सलः ।

शतद्रुः नदी ।

देवयुः धार्मिकः ।

कुमारयुः कुमारघाती ।

मृगयुः व्याधः ।

जटायुः पक्षी ।

पटायुः वस्त्रम् ।

२२ सि-तनि-गमि-मसि-सच्चि-अवि-धाब्-

ऋशिम्यः तुन् ।

सेतुः जलबन्धः ।

तन्तुः सूत्रम् ।

गन्तुः पथिकः ।

आगन्तुः अभ्यागतः ।

मस्तु दध्यवयवः ।

सक्तुः यवविकारः ।

ओतुः विडालः ।

धातुः लोहादिः ।

क्रोष्टुः सृगालः ।

२३ वसेः णित् वा ।

वास्तुः गृहभूमिः ।

वस्तु पदार्थः ।

२४ कमि-मनि-जनि-हिभ्यः तुः ।

कन्तुः कन्दर्पः ।

मन्तुः प्रजापतिः ।

जन्तुः प्राणी ।

हेतुः कारणम् ।

२५ ऋतुआदयः ।

ऋतुः हेमन्तादिः ।

ऋतुः ससोमको यज्ञः ।

केतुः ध्वजः ।

पीतुः सूर्यः ।

गातुः उद्गाता ।

भातुः भास्करः ।

यातुः कामुकः ।

एधतुः पुरुषः ।

वहतुः अनङ्गवान् ।

जीवातुः औषधम् ।

अप्तुः याज्ञिकः ।

२६ स्तनि-हृषि-पुषि-गदि-मदिभ्यः णेः

इत्नुच् ।

स्तनयित्नुः मेघः ।

हर्षयित्नुः सुवर्णम् ।

पोषयित्नुः कोकिलः ।

गदयित्नुः वावदूकः ।

मदयित्नुः सुरा ।

२७ ह-क्रोः एणुः ।

हरेणुः गन्धद्रव्यम् ।

करेणुः हस्ती ।

२८ दा-भाभ्यां नुः ।

दानुः दाता ।

भानुः भास्करः ।

२९ री-वृवोः नित् ।

रेणुः धूलिः ।

वर्णुः नदः ।

३० सू-विषिभ्यां कित् ।

सूनुः पुत्रः ।

विष्णुः नारायणः ।

३१ धेनुआदयः ।

धेनुः नवप्रसूता गौः ।

जह्नुः ऋषिः ।

स्थाणुः महादेवः ।

वेणुः वंशः ।

वग्नुः वावदूकः ।

३२ क्षिपि-नदिभ्यां चनुङ् ।

क्षिपणुः वायुः ।

नदनुः मेघः ।

३३ सर्तेः अयुः ।

सरयुः नदी ।

३४ जनि-मनि-दसि-भुजेः क्युस् ।

जन्युः प्राणी ।

मन्युः क्रोधः ।

दस्युः चौरः ।

भुज्युः ओदनः ।

३५ ही-इषि-कृशिभ्यः कुक् सुग् आनुक् ।

हीकुः अधृष्टः ।

ह्लीकुः स एव ।

इक्षुः खाद्यविशेषः ।

कृशानुः वह्निः ।

३६ मृङः त्यक् ।

मृत्युः प्राणवियोगः ।

३७ शीङः घुक् ।

शीघुः सुराविशेषः ।

३८ शुन्-अशुचौ पुरः ।

पर्शुः पार्श्वस्थिः ।

परशुः कुठारः ।

- ३९ पी-म्योः रुः ।
 पेरुः भास्करः ।
 मेरुः पर्वतराजः ।
 सुमेरुः स एव ।
- ४० जत्रुआदयः ।
 जत्रु ग्रीवाप्रदेशः ।
 शत्रुः अमित्रः ।
 रुरुः मृगः ।
 श्मश्रु मुखरोम ।
 खरुः दर्पः ।
 शिश्रुः शोभाञ्जनकः ।
- ४१ योः आगूच् ।
 यवागूः पेया ।
- ४२ भ्रमेः डूः ।
 भ्रूः नेत्रोपरिस्थानम् ।
- ४३ चमि-तनि-बधिभ्यः ऊः ।
 चमूः सेना ।
 तनूः शरीरम् ।
 बधूः पुत्रभार्या ।
- ४४ कषेः छश्च ।
 कच्छूः पामा ।
- ४५ तिरः दुट् च ।
 तर्दुः परिवेषणभाण्डम् ।
- ४६ यालोपः दरिद्रः ।
 दद्रूः कुष्ठविकारः ।
- ४७ जम्बूआदयः ।
 जम्बूः वृक्षजातिः ।
 दृन्भूः सर्पजातिः ।
 दिधिषुः रण्डिका ।
 पुनर्भूः पुनरूढिका ।
 कर्कन्धूः बदरीफलम् ।
 आडूः जलतरणी ।
- अलाबूः तुम्बीफलम् ।
 कषेरूः भक्षणद्रव्यम् ।
 कासूः विकलवाक् ।
 पादूः पादधारणी ।
 सजूः विद्युत् ।
 खजूः वृक्षजातिः ।
 मजूः मलविशुद्धभाण्डम् ।
 नृतूः दीर्घकृमिः ।
 शृधूः यज्ञः ।
 कर्षूः शुष्कगोमयाग्निः ।
 कम्बूः परद्रव्यापहारी ।
 रतूः नदी ।
 अन्दूः भूषणजातिः ।
 कफेलूः श्लेष्मातकः ।
- ४८ दिवेः ऋन् ।
 देवा पतिभ्राता ।
- ४९ नियो डित् ।
 ना पुरुषः ।
- ५० पितृआदयः ।
 पिता जनकः ।
 माता जननी ।
 दुहिता आत्मजा ।
 ननान्दा पतिभगिनी ।
 भ्राता सोदर्यः ।
 जामाता दुहितृपतिः ।
 स्वसा भगिनी ।
 नप्ता पौत्रः ।
 नेष्टा ऋत्विक् ।
 त्वष्टा आदित्यः ।
 क्षत्ता प्रतीहारः ।
 होता विष्णुः ।
 पोता बालः ।

- प्रशास्ता उपाध्यायः ।
 ५१ रवि-कवि-दरि-शरि-वलि-वल्लि-
 ध्वनि-अवि-हरि-ग्रन्थिभ्यः इः ।
 रविः सूर्यः ।
 कविः काव्यकर्ता ।
 दरिः प्रपातः ।
 शरिः शारः ।
 बलिः असुरेन्द्रः ।
 वल्लिः शाखा ।
 ध्वनिः शब्दः ।
 अविः मेषः ।
 हरिः विष्णुः ।
 ग्रन्थिः पर्वसन्धिः ।
 ५२ इगुपान्तात् किः ।
 क्षिपिः योद्धा ।
 शुचिः विविक्तः ।
 रुचिः अभिलाषः ।
 कृषिः कर्षणम् ।
 ५३ क्रमः अतः इत् च ।
 क्रिमिः क्षुद्रजन्तुः ।
 ५४ मनेः उत् च ।
 मुनिः ऋषिः ।
 ५५ अंहि-कम्पोः नलोपश्च ।
 अहिः सर्पः ।
 कपिः वानरः ।
 ५६ शृ-वसि-वपि-राजि-वृ-हनि-नभेः इञ् ।
 शारिः शारिका ।
 वासिः तक्षकभाण्डम् ।
 वापिः पुष्करिणी ।
 राजिः पङ्क्तिः ।
 वारिः सलिलम् ।
 घातिः प्रहरणम् ।
 नाभिः शरीरावयवः ।
 ५७ अजि-जनि-अति-घसि-रशि-पणेः इण् ।
 आजिः युद्धम् ।
 जनिः माता ।
 आतिः गमनम् ।
 घासिः अग्निः ।
 राशिः समूहः ।
 पाणिः करः ।
 ५८ वेचः डिः ।
 विः पक्षी ।
 ५९ नेः ईत् च ।
 नीविः मेखला ।
 ६० सखीआदयः ।
 सखा मित्रम् ।
 अश्रिः कोटिः ।
 प्रहिः कूपः ।
 भ्रमिः वायुः ।
 कारिः शिल्पी ।
 ६१ सञ्ज्-असिभ्यां विथन् ।
 सक्थि ऊरुप्रदेशः ।
 अस्थि शरीरावयवः ।
 ६२ सारेः अथिन् ।
 सारथिः रथवाहः ।
 ६३ अङ्गि-अतिभ्याम् उरि-इथिनौ ।
 अङ्गुरिः करावयवः ।
 अङ्गुलिः स एव ।
 अतिथिः अभ्यागतः ।

- ६४ नी-दलिभ्यां मिः । सरणिः पन्थाः ।
 नेमिः शकटम् । धरणिः पृथ्वी ।
 दलिमः शक्रः । धमनिः गलसिरा ।
 ६५ ऊमि-रश्मि-भूमयः । अशनिः वज्रः ।
 ऊमिः तरङ्गः । अवनिः पृथ्वी ।
 रश्मिः प्रभा । वर्तनिः कर्तनद्रव्यम् ।
 भूमिः पृथ्वी । ग्रहणिः वह्निस्थानम् ।
 ६६ कुषेः सिक् । ७५ क्षिपः कित् ।
 कुक्षिः उदरम् । क्षिपणिः वायुः ।
 ६७ अशेः नित् । ७६ शकेः उनिः ।
 अक्षि नेत्रम् । शकुनिः पक्षी ।
 ६८ मृ-कणिभ्याम् ईचिः । ७७ अगेः निः ।
 मरीचिः मयूखः । अग्निः पावकः ।
 कणीचिः लता । ७८ वेणिः ।
 ६९ रा-शदिभ्यां त्रिप् । वेणिः केशबन्धः ।
 रात्रिः क्षपा । ७९ श्रु-श्रि-यु-वहः नित् ।
 शक्तिः कुञ्जरः । श्रोणिः कटिप्रदेशः ।
 ७० भू-सूङ्-अदिभ्यः क्रिन् । श्रेणिः पङ्क्तिः ।
 भूरि प्रभूतम् । योनिः मार्गः ।
 सूरिः आदित्यः । वह्निः अग्निः ।
 अद्रिः पर्वतः । ८० पार्णिआदयः ।
 ७१ शकि-भूम्याम् उन्ति-अन्तिचौ । पार्णिः पादप्रहारः ।
 शकुन्तिः पक्षी । वृष्णिः शक्रः ।
 भवन्तिः कालः । घृणिः रश्मिः ।
 ७२ अर्तेः अत्तिच् । शृणिः अङ्कुशः ।
 अरत्तिः करः । भूमिः पृथिवी ।
 ७३ अञ्जेः अलिच् । भूर्णिः वारणः ।
 अञ्जलिः करसम्पुटः । चूर्णिः ग्रन्थविशेषः ।
 ७४ ऋ-तृ-सू-धृ-धमि-अशि-अवि-वृति-ग्रहेः । तूर्णिः त्वरितः ।
 अनिः । जूर्णिः मुसलः ।
 अरणिः अग्निकाष्ठम् । ८१ वृ-दृभ्यां विन् ।
 तरणिः समुद्रः । वविः शकटम् ।

- दर्विः तर्दूः ।
 ८२ जागुः क्विन् ।
 जागृवी राजा ।
 ८३ छविआदयः ।
 छविः त्वक् ।
 स्थविः तन्नुवायः ।
 किकिः पक्षी ।
 दिविः आदित्यः ।
 दीदिविः स्वर्गः ।
 कृविः धूपः ।
 पृष्विः रजः ।
 जीविः औषधिः ।
 ८४ दृ-वसिभ्यां कित् ।
 दृतिः चर्म ।
 वस्तिः मुद्राश्रयः ।
 ८५ पातेः डतिः ।
 पतिः स्वामी ।
 पशुपतिः महादेवः ।
 ८६ अमेः अतिः ।
 अमतिः कालः ।
 ८७ वहि-वसिभ्याम् चतिः ।
 वहतिः गौः ।
 वसतिः ग्रामसन्निवेशः ।
 ८८ तन्द्रेः ईः ।
 तन्द्रीः मूर्छा ।
 ८९ लक्षेः मुट् च ।
 लक्ष्मीः श्रीः ।
 ९० अवीआदयः ।
 अवीः प्रकाशः ।
 तरीः वैश्वानरः ।
 स्तरीः धूमः ।
 ययीः अश्वः ।
 पपीः आदित्यः ।

- वातप्रमीः वातमृगः ।
 ९१ रातेः डैः ।
 राः सुवर्णम् ।
 ९२ गमेः डोः ।
 गौः पृथिवी ।
 ९३ ग्ला-नुदिभ्यां डौः ।
 ग्लौः चन्द्रमाः ।
 नौः जलतरणी ।
 ९४ तारेः अन् ।
 तारा भगवती ।
 ९५ जेः नुक् च ।
 जिनः भगवान् बुद्धः ।
 ॥ उणादौ प्रथमः पादः समाप्तः ॥
 १ इण्-भी-का-पा-शलि-मचिभ्यः कन् ।
 एकः एकाकी ।
 भेकः मण्डूकः ।
 काकः वायसः ।
 पाकः बालः ।
 शल्कः बल्कलः ।
 मर्कः वायुः ।
 २ यूकाआदयः ।
 यूका ओकणी ।
 अर्भकः शिशुः ।
 पृथुकः बालः ।
 भीकः भीरुः ।
 उदकम् जलम् ।
 घूकः कालः ।
 स्यमीकः बल्मीकः ।
 वीका अन्तर्गलवर्तिका ।
 ह्लीकः अधृष्टः ।
 ह्लीकः स एव ।
 एवम् अन्येऽपि द्रष्टव्याः ।

३ कृ-दा-धा-रा-अचिभ्यः कः ।

कर्कः वर्णविशेषः ।

कल्कम् पिष्टद्रव्यम् ।

दाकः यज्ञः ।

धाकः ओदनः ।

राका पौर्णमासी ।

अर्कः आदित्यः ।

४ उल्कादयः ।

उल्का ज्वाला ।

उल्मुकम् अर्धदग्धकाष्ठम् ।

सृकः उत्पलम् ।

वृकः पशुजातिः ।

भूकम् छिद्रम् ।

मुष्कः वृषणम् ।

वल्कम् वल्कलम् ।

शुकः पक्षी ।

५ क्षिपि-लङ्घि-लिखि-धमिभ्यः क्वन् ।

क्षिपकः योद्धा ।

लङ्घकः मालाकारः ।

लिखकः चित्रकरः ।

धमकः कर्मकरः ।

६ हो द्वे च ।

जहकः कालः ।

७ कृषेः अचश्चाद् वा ।

कार्षकः कुटुम्बी ।

कृष्को वा ।

८ वृश्चि-मूषेश्च किकन् ।

वृश्चिकः कीटः ।

मूषिकः आखुः ।

कृषिकः कुटुम्बी ।

९ पणि-पतेः आङः ।

आपणिकः वणिक् ।

आपतिकः बालः ।

१० स्यमः यः ईत् च ।

सीमिकः वृक्षः ।

११ भी-शीभ्याम् आनकः ।

भयानकम् गहनम् ।

शयानकः अजगरः ।

१२ शिङ्घोः आणकः ।

शिङ्घाणकः नासास्रवः ।

१३ कृति-भिदि-लतेः क्तिकन् ।

कृत्तिका नक्षत्रम् ।

भित्तिका कुड्यम् ।

लत्तिका गोधा ।

१४ इषेः क्तिकन् ।

इष्टका पक्वमृत्तिका ।

१५ वलि-पतेः आकः ।

बलाका पक्षिजातिः ।

पताका ध्वजः ।

१६ पिनाकआदयः ।

पिनाकः त्रिशूलः ।

खजाकः पक्षी ।

मनाकः स्तोकः ।

गुवाकः पूगफलम् ।

तडाकः सरः ।

शलाका विद्योपकरणद्रव्यम् ।

नशाकः ताडयिता ।

श्यामाकः तृणजातिः ।

विदाकः ज्ञानम् ।

नमाकः पिच्छिलः ।

भण्डाकम् शुभम् ।

खुराकः मर्मच्छेदनद्रव्यम् ।

१७ क्रियः इकन् ।

क्रयिकः क्रेता ।

१८ अलि-इषः कीकन् ।

अलीकम् मृषा ।

इषीका तूलाश्रयः ।

१९ किङ्किणीकाआदय ।

किङ्किणीका क्षुद्रघण्टिका ।

तिन्तिडीका वृक्षजातिः ।

मृद्वीका द्राक्षा ।

मृडीकः उरगः ।

पतत्रीका पक्षी ।

वर्वरीका तरुणी ।

जर्जरीका छिद्रम् ।

वलीका उदरवर्तिः ।

ऋजीकः ऋजुकः ।

वाल्लीकः जनपदः ।

शर्शरीकः इन्द्रः ।

पर्परीका अश्वशाला ।

दर्दरीकः मर्दलकः ।

शृणीका लाला ।

मणीका मेखला ।

कणीका सूक्ष्मजातिः ।

२० कृवादिभ्यः वुन् ।

करका सुराभाण्डम्

सरकः सुरापानम् ।

नरकः दुःखस्थानम्

भरकः स्वामी ।

वरकः चरणम् ।

कनकम् सुवर्णम् ।

जनकः पिता ।

२१ शलि-मण्डेः ऊकच् ।

शालूकम् उत्पलादिमूलम् ।

मण्डूकः भेकः ।

२२ उलूक आदयः ।

उलूकः पेचकः ।

मधूकः वृक्षजातिः ।

वलूकः हिंस्रः ।

जलूका प्राणकविशेषः ।

मरूकः मयूरः ।

काणूकः काकः ।

मलूकः कृमिजातिः ।

भालूकः अच्छभल्लः ।

पिचूकः कर्पासः ।

कचूकः शाकजातिः ।

२३ शमेः खः ।

शङ्खः उदकसंभवः ।

२४ मुहेः मूर्च ।

मूर्खः बालः ।

२५ शिखा ।

शिखा दीप्तिः ।

२६ मुदि-ग्रोः गक्-गौ ।

मुद्गः व्रीहिजातिः ।

गर्गः शास्त्रविशेषः ।

२७ पतेः अङ्गच् ।

पतङ्गः शलभः ।

२८ गमेः गन् ।

गङ्गा जाह्नवी ।

२९ शृङ्ग-अङ्ग-भृङ्गाः ।

शृङ्गम् विषाणम् ।

अङ्गम् शरीरम् ।

भृङ्गः भ्रमरः ।

३० जनेः घः ।

जङ्घा प्राण्यङ्गम् ।

३१ कचेः छः ।

कच्छः पार्श्वः ।

३२ शकादिभ्यः अटन् ।

शकटम् वाहनम् ।

अकटम् हिरणम् ।

कुलटा बन्धकी ।

देवटः ऋषिः ।

मर्कटः वानरः ।

कमटः रुद्रः ।

३३ जटा-लोष्टम् ।

जटा केशबन्धः ।

लोष्टम् मृद्वलिः ।

३४ कृ-तृ-कृपेः कीटन् ।

किरीटम् मुकुटम् ।

तिरीटम् वेष्टनम् ।

कृपीटम् जलम् ।

३५ शमेः ण्ठः ।

शण्ठः महिषचौरः ।

३६ कमः अठत् च ।

कमठः वामनः ।

कण्ठः ग्रीवा ।

३७ कृ-वृचः अण्डन् ।

करण्डः गुह्यस्थानम् ।

वरण्डः मुखरोगः ।

३८ ऊर्णोः डः ।

ऊर्णा मेषरोम ।

३९ वमन्तात् डः ।

चण्डः दुर्जनः ।

दण्डः लगुडः ।

अण्डः पक्षिप्रसवः ।

रण्डा अप्रसवा ।

वण्डः दुश्चर्मा ।

गण्डः कपोलः ।

खण्डः गुडविकारः ।

४० कुण्ड आदयः ।

कुण्डम् भाजनम् ।

मुण्डम् शिरः ।

जुण्डम् वनम् ।

तुण्डम् मुखम् ।

एवम् अन्येऽपि द्रष्टव्याः ।

४१ शमेः ढः ।

शण्डः अप्रसवः ।

४२ शकेः उन्तः ।

शकुन्तः पक्षी ।

४३ जृ-विशः अन्तच् ।

जरन्तः महिषः ।

वेशन्तः वल्लभः ।

४४ रहि-नन्दि-जीवेः षित् ।

रोहन्तः वृक्षः ।

रोहन्ती ओषधी ।

नन्दन्ती सखी ।

, जीवन्ती ओषधी ।

४५ भू-जि-वसि-वहि-साधि-भासि-गडि-

मण्डि-हेमिभ्यः ।

भवन्तः कालः ।

जयन्तः वृक्षविशेषः ।

वसन्तः ऋतुविशेषः ।

वहन्तः रथः ।

साधन्तः भिक्षुः ।

भासन्तः सूर्यः ।

गडयन्तः मेघः ।

मण्डयन्तः ओदनः ।

हेमन्तः ऋतुः ।

४६ अतः भुवः डुतच् ।

अद्भुतम् आश्चर्यम् ।

- ४७ रुहि-हृ-श्याभ्यः इतच् ।
 रोहितः मत्स्यः ।
 लोहितम् रक्तम् ।
 हरितः वर्णविशेषः ।
 श्येतः स एव ।
- ४८ भृवादिभ्यः अतच् ।
 भरतः नटः ।
 जयतः वह्निः ।
 पर्वतः गिरिः ।
 पञ्चतः सूपकारः ।
 यमतः व्याधिः ।
 दर्शतः सोमः ।
 नमतः नम्रः ।
 हर्यतः यज्ञः ।
 खलतः दुर्जनः ।
- ४९ पृषि-रञ्जेः कित् ।
 पृषतः मृगः ।
 रजतम् रूप्यम् ।
- ५० मृ-गृ-वा-हृ-सि-इण्-अमि-दमि-लू-पू-
 धूर्विभ्यः तन् ।
 मर्तः लोकः ।
 गर्तः श्वभ्रम् ।
 वातः वायुः ।
 हस्तः करः ।
 एतः वर्णः ।
 अन्तः अवसानम् ।
 दन्तः दशनम् ।
 लोटः अश्रुपातः ।
 पोतः बालः ।
 धूर्तः शठः ।
- ५१ घृ-सि-दूभ्यः क्तः ।
 घृतम् आज्यम् ।

- सितम् शुक्लम् ।
 दूतः प्रेप्यः ।
- ५२ तात-पलित-जर्त-सूरताः ।
 तातः पिता ।
 पलितः केशविकारः ।
 जर्तः दीर्घरोमा ।
 सूरतः सुखसंवासः ।
- ५३ शमादिभ्यः अथः ।
 शमथः समाधिः ।
 शपथः प्रत्ययकारः ।
 आवसथः गृहम् ।
 वदथः कोकिलः ।
 रवथः स एव ।
 गमथः कालः ।
 जीवथः धर्मः ।
 प्राणथः प्रजापतिः ।
 भरथः अग्निः ।
 वेदथः मार्गः ।
- ५४ रमि-कुषि-काशिभ्यः कथन् ।
 रथः स्यन्दनम् ।
 कुष्ठः व्याधिः ।
 काष्ठम् इन्धनम् ।
- ५५ अवात् भृञः ।
 अवभृथः यज्ञावसानम् ।
- ५६ उषि-कुषि-गा-अर्तिभ्यः थन् ।
 ओष्ठः अधरः ।
 कोष्ठः उदरः ।
 गाथा ग्रन्थविशेषः । (छन्दोविशेषः)
 अर्थः धनम् ।
- ५७ जृ-वृञः ऊथन् ।
 जरूथम् अग्रमांसम् ।
 वरूथः बलसमूहः ।

५८ पा-तृ-तुदि-वचि-रिचि-सिचि-विशेः
थक् ।

पीथम् जलम् ।
तीर्थम् पुण्यस्थानम् ।
तुथः अग्निः ।
उक्थः सामवेदः ।
रिक्थम् द्रव्यम् ।
सिक्थम् मधूच्छिष्टम् ।
विष्ठा पुरीषम् ।

५९ यूथ-आदयः ।

यूथः प्राणिसमूहः ।
गूथः विष्ठा ।
पृष्ठम् प्राण्यङ्गम् ।
समिथः ऋत्विग्विशेषः ।
निशीथः प्रदोषान्तः ।
निर्ऋथः यज्ञावसानम् ।
निभृथः भर्ता ।
गोपीथः प्रत्यूषः ।
उद्गीथः साम ।
प्रोथम् घ्राणाश्रयः ।
तिथः अग्निः ।

६० शवि-कमिभ्यां दन् ।

शब्दः ध्वनिः ।
कन्दः मूलम् ।

६१ अब्द-आदयः ।

अब्दः संवत्सरः ।
वृन्दम् समूहः ।
कुन्दः पुष्पविशेषः ।
मन्दः जडः ।
तुन्दः उदरवृद्धिः ।
श्यान्दः सुवर्णम् ।

६२ श्या-स्त्या-हृच्-अविभ्यः इनच् ।

श्येनः पक्षी ।
स्त्येनः चौरः ।
हरिणः मृगः ।
अविनः दृश्यः ।

६३ वृजिन-अजिनम् ।

वृजिनः कुटिलः ।
अजिनम् चर्म ।

६४ वी-पतिभ्यां तनन् ।

वेतना भृतिः ।
पत्तनं नगरम् ।

६५ द्रु-दक्षिभ्यां इनन् ।

द्रविणम् द्रव्यम् ।
दक्षिणा लोकयात्रा ।

६६ विपिन-इरिण-तुहिन-महिनानि ।

विपिनम् गहनम् ।
इरिणम् ऊषरम् ।
तुहिनम् तुषारः ।
महिनम् महत्त्वम् ।

६७ रसि-रुचि-रु-वृज्जः युच् ।

रसना मेखला ।
रोचना गोपित्तम् ।
रवणः आदित्यः ।
वरणा नदी ।

६८ उन्देः नलोपश्च ।

ओदनः अन्नम् ।

६९ रज्जेः क्युन् ।

रजनम् रङ्गः ।
रजनी रात्रिः ।

७० कृ-पृ-वृजि-मण्डि-निधाञ्जः क्युः ।

किरणः प्रभा ।
पूरणः समुद्रः ।

- वृजनम् अन्तरीक्षम् ।
 मण्डनम् भूषणम् ।
 निधानम् निधिः ।
 ७१ धृषेः धिष च ।
 धिषणा बुद्धिः ।
 ७२ हनः जघ च ।
 जघनम् कटिप्रदेशः ।
 ७३ ब्रधि-वसि-धा-पृभ्यः नः ।
 ब्रध्नः आदित्यः ।
 वस्नः मूल्यम् ।
 धाना यवविकारः ।
 पर्णम् पत्रम् ।
 ७४ कृ-वृ-तृ-स्वपि-सि-द्रुभ्यः नन् ।
 कर्णः श्रोत्रम् ।
 वर्णः नीलादिः ।
 तर्णः समुद्रः ।
 स्वप्नः निद्रा ।
 सेना बलसमूहः ।
 द्रोणः परिमाणम् ।
 ७५ उषि-इण्-अवि-कृषि-तृषि-बुधि-रति-
 धा-पृभ्यः नक् ।
 उष्णः अग्निः ।
 इनः स्वामी ।
 ऊनः विकलः ।
 कृष्णः वर्णः ।
 तृष्णः अभिलाषः ।
 बुध्नः पृष्ठान्तः ।
 रत्नम् जातौ जातौ यद् उत्कृष्टम् ।
 धीनः समुद्रः ।
 पूर्णः स एव ।
 ७६ कृतेः सुक् च ।
 कृत्स्नम् निरवशेषम् ।
 ७७ श्लिषेः इतः अत् च ।
 श्लक्ष्णः मृदुः ।
 ७८ तिजेः ईत् च ।
 तीक्ष्णम् निशितम् ।
 ७९ रास्ना-आदयः ।
 रास्ना ओषधिः ।
 सास्ना गोम्रीवा ।
 स्थूणा गृहधरणी ।
 वीणा वाद्यविशेषः ।
 तृणम् वीरणादि ।
 अर्णः विटपः ।
 जीर्णः वृद्धः ।
 ८० कृ-वृ-तृ-यमि-दारि-अर्जेः उनन् ।
 करुणा कृपा ।
 वरुणः जलराजः ।
 तरुणः युवा ।
 तलुनः स एव ।
 यमुना नदी ।
 दारुणः रौद्रः ।
 अर्जुनः वृक्षविशेषः ।
 ८१ शकेः उनः ।
 शकुनः पक्षी ।
 ८२ पृ-पा-तलेः पः ।
 पर्पः गृहम् ।
 पापम् जिह्मम् ।
 तल्पम् शयनम् ।
 ८३ स्तोः ऊ च ।
 स्तूपम् चैत्यम् ।
 ८४ यु-कु-सूनां कित् च ।
 यूपः यज्ञयष्टिः ।
 कूपः प्रहिः ।
 सूपः व्यञ्जनम् ।

८५ बाष्प-आदयः ।

बाष्पः ऊष्मागमः ।

शष्पम् बालतृणम् ।

शिल्पम् विज्ञानम् ।

रूपम् नीलादि ।

शूर्पम् कुलवः ।

खष्पः बलात्कारः ।

८६ सर्तः अपः सुक् च ।

सर्षपः ब्रीहिजातिः ।

८७ विटप-आदयः ।

विटपम् गहनम् ।

विशपः गृहम् ।

उलपः संतापः ।

कुणपः मृतकः ।

उषपः अग्निः ।

कुतपः प्रस्थचतुर्थभागः ।

दलपः प्रहरणम् ।

कचपः शाकविशेषः ।

विष्टपः स्वर्गः ।

मण्डपः देवगृहम् ।

विशिपः प्रवेशः ।

८८ रातेः इफः ।

रेफः अक्षरम् ।

८९ गुरेः फक् ।

गुल्फः प्रपदम् ।

९० गृ-शृभ्यां वः ।

गर्वः मानः ।

शर्वः महादेवः ।

९१ अशि-लटि-कणि-खटि-विशेः क्वन् ।

अश्वः तुरङ्गः ।

लट्वा पक्षी ।

कण्वम् पापम् ।

खट्वा शयनीयम् ।

विश्वम् निरवशेषम् ।

९२ शिव-आदयः ।

शिवम् शान्तम् ।

सर्वम् अशेषम् ।

उल्बम् जरायुः ।

शुल्बम् ताम्रम् ।

निम्बम् अरिष्टम् ।

विम्बम् शरीरम् ।

शम्बः लोहविकारः ।

स्तम्बः विटपम् ।

जिह्वा रसना ।

ग्रीवा गलप्रदेशः ।

९३ कृ-शृ-गर्देः अभच् ।

करभः उष्ट्रः ।

कलभः हस्तिपोतः ।

शरभः पशुजातिः ।

शलभः पतङ्गः ।

गर्दभः खरः ।

९४ ऋषि-वृषि-रासि-बल्लेः कित् ।

ऋषभः बलीवर्दः ।

वृषभः स एव ।

रासभः गर्दभः ।

बल्लभः प्रियः ।

९५ दुङ्गः भः ।

दर्भः कुशः ।

९६ गिरः भन् ।

गर्भः अन्तःप्रदेशः ।

९७ इणः कित् ।

इभः कुक्षरः ।

९८ गुधेः ऊमः ।

गोधूमः ब्रीहिजातिः ।

६६ प्रथि-चरेः अमच् ।
 प्रथमम् प्रमुखम् ।
 चरमम् पश्चात् ।

१०० ऋ-स्तु-सु-हु-धृ-क्षि-क्षु-भा-या-पदि-
 यक्षि-णीभ्यः मन् ।
 अर्मः अक्षिरोगः ।
 स्तोमः संघातः ।
 सोमः शशाङ्कः ।
 होमः होतव्यम् ।
 धर्मः पुण्यम् ।
 क्षेमम् कुशलम् ।
 क्षोमम् अतसी ।
 भामः कान्तिः ।
 यामः प्रहरः ।
 पद्मम् कमलम् ।
 यक्ष्मः व्याधिः ।
 नेमः अधस्तात् ।

१०१ ग्रसेः आत् च ।
 ग्रामः जनपदसन्निवेशः ।

१०२ सूचेः स्मन् ।
 सूक्ष्मम् निरञ्जनम् ।

१०३ युधि-हि-इन्धि-जनि-श्या-धूभ्यः मक् ।
 युध्मः शरः ।
 हिमम् तुहिनम् ।
 इध्मः काष्ठम् ।
 जन्मः प्रसवः ।
 श्यामः वर्णविशेषः ।
 धूमः अग्निसंभवः ।

१०४ भियः षुक् वा ।
 भीष्मः कुरुपिता ।
 भीमः भयानकः ।

१०५ युजि-रजि-तिजेः कुश्च ।

युग्मम् युगलम् ।
 रुग्मम् रजतम् ।
 तिग्मम् तीक्ष्णम् ।

१०६ धर्म-ग्रीष्म-अधमाः ।
 धर्मः प्रस्वेदः ।
 ग्रीष्मः ऋतुविशेषः ।
 अधमः प्रत्यपरः ।

१०७ तनेः कयन् ।
 तनयः पुत्रः ।

१०८ हृवः दुक् च ।
 हृदयम् मनः ।

१०९ मा-छा-ससि-सूभ्यः यः ।
 माया परवञ्चना ।
 छाया प्रतिबिम्बम् ।
 सस्यम् सारः ।
 सव्यम् वामम् ।

११० जाया-आदयः ।
 जाया भार्या ।
 कन्या कुमारी ।
 सन्ध्या दिनावसानम् ।
 बन्ध्या कुलटा ।

१११ रुचि-भुजेः किष्यन् ।
 रुचिष्यः ओदनम् ।
 भुजिष्यः श्रेष्ठः ।

११२ मदेः स्यन् ।
 मत्स्यः जलचरः ।

११३ स्पृहेः आय्यः ।
 स्पृहयाय्यम् धृतम् ।

११४ वृडः एन्यः ।
 वरेण्यः श्रेष्ठा ।

११५ अर्तेः अण्यच् ।
 अरण्यम् वनम् ।

११६ हः हिर् च ।

हिरण्यम् सुवर्णम् ।

११७ पर्जन्यः ।

पर्जन्यः शक्रः ।

११८ पुणेः क्यन् ।

पुण्यम् कुशलस्थानम् ।

११९ शिक्वम् धिष्ण्यम् ।

शिक्वम् उद्ग्राह्यम् ।

धिष्ण्यम् गृहम् ।

॥ उणादौ द्वितीयः पादः समाप्तः ॥

१ मदि-अङ्गि-वाशि-मथि-चतिभ्यः उरच् ।

मन्दुरा वाजिशाला ।

अङ्गुरः बीजप्रसवः ।

वाशुरा रात्रिः ।

मथुरा नगरी ।

चतुरः दक्षः ।

२ मकुर-दर्दुर-विधुराः ।

मकुरः दर्पणः ।

दर्दुरः भेकः ।

विधुरः विगुणः ।

३ असेः उरन् ।

असुरः आदित्यः ।

४ श्वशुरः ।

श्वशुरः भार्यापिता ।

५ तिमि-रुधि-मदि-मन्दि-चन्दि-बन्धिभ्यः

किरच् ।

तिमिरम् अन्धकारः ।

रुधिरम् क्षतजम् ।

मदिरा सुरा ।

मन्दिरम् गृहम् ।

चन्दिरः हस्ती ।

बधिरः श्रोत्रविकलः ।

६ स्थिर-आदयः ।

स्थिरम् अचलम् ।

अजिरम् गृहम् ।

शिशिरम् ऋतुविशेषः ।

खदिरः वृक्षजातिः ।

स्थविरः वृद्धः ।

इषिरः शरः ।

छिदिरः छिद्रम् ।

भिदिरः वज्रः ।

मुहिरः मूर्खः ।

मुचिरः दाता ।

रुचिरः शोभनः ।

श्रुथिरम् शिथिलम् ।

रिफरम् स्फीतम् ।

७ तञ्च-वञ्च-शकि-क्षिपि-क्षुदि-रुदि-

मदि-मन्दि-चन्दिभ्यः रक् ।

तक्रम् मथितम् ।

वक्रम् कुटिलम् ।

शक्रः देवराजः ।

क्षिप्रम् त्वरितम् ।

क्षुद्रः अदानी ।

रुद्रः महादेवः ।

मद्रः देशः ।

मन्द्रः धीरः ।

चन्द्रः चन्द्रमाः ।

८ श्विति-वृति-नो-वी-छिदि-मुदि-बहि-

तृपि-शुभिभ्यश्च ।

श्वित्रम् कुष्ठम् ।

वृत्रः दैत्यः ।

नीरम् जलम् ।

वीरः विक्रान्तः ।

छिद्रम् विवरः ।

- मुद्रा प्रत्ययकरणी ।
 दह्रम् तरुणम् ।
 तृप्रः पुरोडाशः ।
 शुभ्रम् शुक्लम् ।
 ६ तमि-अमि-जीनां दीर्घश्च ।
 ताम्रम् शुल्बम् ।
 आम्रः वृक्षजातिः ।
 जीरः वह्निः ।
 १० दूर-आदयः
 दूरम् विप्रकृष्टम्
 उद्रः जलचरः ।
 कृच्छ्रम् कष्टम् ।
 चुक्रम् आम्लम् ।
 दभ्रः कुशः ।
 उन्नः केदारः ।
 उन्ना गोप्रीवा ।
 वाश्रम् पुरीषम् ।
 शीरः अजगरः ।
 हस्रः हासः ।
 सिध्रः साधुजनः ।
 रन्ध्रम् विवरः ।
 विकुस्रः चन्द्रमाः ।
 वन्द्रः पूजकः ।
 खिद्रः दैन्यः ।
 ११ सु-सू-धाव्-गृधेः कृन् ।
 सुरा मद्यम् ।
 सूरः रविः ।
 धीरः मत्स्यघाती ।
 गृध्रः पक्षिजातिः ।
 १२ सि-मि-चीनाम् ईत् च ।
 सीरः लाङ्गलम् ।
 मीरः जलम् ।

- चीरम् वल्कलम् ।
 १३ वपि-वजि-वृधि-इन्दिभ्यः रन् ।
 वप्रः केदारः ।
 वज्रः कुलिशः ।
 वर्ध्रः चन्द्रः ।
 इन्द्रः शक्रः ।
 १४ भद्र-आदयः ।
 भद्रम् कल्याणम् ।
 उग्रः उत्कृष्टः ।
 भेरः दुन्दुभिः ।
 भेरी स एव ।
 अग्रम् श्रेष्ठम् ।
 गौरः अवदातः ।
 गौरी शिवा ।
 शुक्रम् रेतः ।
 वृध्रः वयोधिकः ।
 ऋज्रः नायकः ।
 विप्रः ब्राह्मणः ।
 कुप्रः शङ्करः ।
 चुप्रः प्रीतिकरः ।
 क्षुरः रोमायुधम् ।
 खुरः मर्मच्छेदनः ।
 इरा मही ।
 १५ चति-कटि-शृ-वृन्ः ट्वरच् ।
 चत्वरम् अङ्गनम् ।
 कट्वरम् दधिविकारः ।
 शर्वरः महादेवः ।
 शर्वरी निशा ।
 वर्वरी कुटिलकेशा ।
 वर्वरम् केशविकारः ।
 १६ पीवर-आदयः ।
 पीवरः स्थूलः

- चीवरम् भिक्षुप्रावरणम् ।
 तीवरः म्लेच्छः ।
 नीवरम् गृहम् ।
 गह्वरम् गहनम् ।
 चित्तरः धूर्तः ।
 चत्वरः उपस्थः ।
 धीवरः मत्स्यघाती ।
 मीवरः पूज्यः ।
 संयद्वरः बाष्पः ।
 १७ कुवः ऋवन् ।
 कुरवः पक्षी ।
 १८ मदि-अशि-वसेः सरन् ।
 मत्सरः कृपणः ।
 अक्षरम् वर्णः ।
 वत्सरः वर्षः ।
 संवत्सरः स एव ।
 १९ कृ-धू-तनेः कित् ।
 कृसरा तिलयवागूः ।
 धूसरः रूक्षः ।
 तसरः कुन्दद्रव्यम् ।
 २० भ्रमि-वठि-देवि-वासेः अरन् ।
 भ्रमरः षट्पदः ।
 वठरः मूर्खः ।
 देवरः पतिभ्राता ।
 वासरः दिवसः ।
 २१ अङ्गि-मदि-मन्दि-कडेः आरन् ।
 अङ्गारः दग्धकाष्ठम् ।
 मदारः मणिविशेषः ।
 मन्दारः वृक्षजातिः ।
 कडारः पिङ्गलः ।
 २२ शृङ्गि-भृङ्गि-मृजि-कञ्जेः चित् ।
 शृङ्गारम् दर्शनीयम् ।

- भृङ्गारः सुवर्णभाजनम् ।
 मार्जारः विडालः ।
 कञ्जारः मयूरः ।
 २३ कमः अतः उत् च ।
 कुमारः बालजनः ।
 २४ शिरः करन् ।
 शर्करा गुडविकारः ।
 २५ पुषः कित् ।
 पुष्करम् पद्मम् ।
 २६ क्षणः डोरच् ।
 क्षीरम् पयः ।
 २७ कृ-शृ-शौटिभ्यः ईरच् ।
 करीरः वंशाङ्कुरः ।
 शरीरम् देहः ।
 शौटीरः दाता ।
 २८ वशेः कित् ।
 उशीरम् वीरणमूलम् ।
 २९ गम्भीर-आदयः ।
 गम्भीरम् भयानकम् ।
 गभीरः दुरवगाहः ।
 कुम्भीरः जलचरः ।
 कुटीरः जनवासः ।
 परीरः समुद्रः ।
 पटीरः कन्दर्पः ।
 कुरीरम् मैथुनम् ।
 ३० मसेः ऊरन् ।
 मसूरः व्रीहिजातिः ।
 ३१ जनेः अरः ठश्च ।
 जठरः मूर्खः ।
 ३२ वदेर्वा ।
 वठरः जडः ।
 वदरम् कर्कन्धूफलम् ।

- बदरी तद् एव ।
 ३३ पचेः अतः इत् च ।
 पिठरः स्थालीपाकः ।
 ३४ कठि-चकिभ्याम् ओरः ।
 कठोरः निबिडः ।
 चकोरः पक्षी ।
 ३५ घुणेः डोरः ।
 घोरम् अन्तकरम् ।
 ३६ धा-दा-नी-पति-पा-शसिभ्यः ष्टन् ।
 धात्री धरणी ।
 दात्रम् लवनद्रव्यम् ।
 नेत्रम् चक्षुः ।
 पत्रम् पर्णम् ।
 पात्रम् भाजनम् ।
 शस्त्रम् प्रहरणम् ।
 ३७ उषि-सू-मूभ्यः कित् ।
 उष्ट्रः करभः ।
 सूत्रम् कल्याणम् (?) ।
 मूत्रम् प्रस्रावः ।
 ३८ अमि-नक्षि-कडिभ्यः अत्रच् ।
 अमत्रम् भाजनम् ।
 नक्षत्रम् तारकादि ।
 कडित्रम् भार्या ।
 कलत्रम् सा एव ।
 ३९ वृषश्च ।
 वरत्रा चर्ममयी ।
 ४० अमि-चि-मिदेः त्रक् ।
 अन्त्रम् कुक्षनाडी ।
 चित्रम् अद्भुतम् ।
 मित्रम् सुहृत् ।
 ४१ पूढः ह्रस्वश्च ।
 पुत्रः तनयः ।
 ४२ वह-लादिभ्यः इत्र-उत्रौ ।
 वहित्रम् वहनम् ।
 पवित्रम् यज्ञसूत्रम् ।
 कडित्रम् चर्ममयम् ।
 लोत्रम् अपहृतद्रव्यम् ।
 पोत्रम् सूकरनासाग्रम् ।
 श्रोत्रम् श्रुतिः ।
 ४३ खर्जि-पिङ्गादिभ्यः ऊर-ऊलचौ ।
 खर्जूरः वृक्षजातिः ।
 कर्पूरः मुखसुगन्धिद्रव्यम् ।
 वल्लूरम् शुष्कमांसमयम् ।
 पिङ्गूलः पक्षिजातिः ।
 लाङ्गूलम् पुच्छम् ।
 ४४ तमेः बुक् च ।
 ताम्बूलम् मुखभूषणम् ।
 ४५ शवि-कमः कलन् ।
 शबलम् व्यामिश्रम् ।
 कमलम् पद्मम् ।
 ४६ वृषादिभ्यः चित् ।
 वृषलः शूद्रः ।
 उत्पलम् इन्दीवरम् ।
 वटलः अक्षिरोगः ।
 कला कालविशेषः ।
 गलः कण्ठप्रदेशः ।
 चपलः दुर्विनीतः ।
 केवलम् असहायम् ।
 ४७ शकि-शमेः नित् ।
 शकलम् अस्थि ।
 शमलम् अशुचि ।
 ४८ कुटेः कमलच् ।
 कुट्मलम् अविकसितम् ।

४९ पति-चण्डिभ्याम् आलच् ।

पातालम् रसातलम् ।

चण्डालः मातङ्गः ।

५० कुणि-पीभ्याम् कालन् ।

कुणालः पक्षी ।

पियालः वृक्षजातिः ।

५१ पालन्-वलञ्चौ शीडः ।

शेपालम् जलतृणम् ।

शैवलः स एव ।

५२ मङ्गेः अलच् ।

मङ्गलः प्रशस्तः ।

५३ माला-इल्वल-पल्वल-चषाल-शिथिल-

शुक्ल-तण्डुलाः ।

माला स्रग्दाम ।

इल्वलाः तारकाः ।

पल्वलम् शाखापत्रम् ।

चषालः यज्ञोपकरणद्रव्यम् ।

शिथिलम् अदृढम्

शुक्लम् श्वेतम् ।

तण्डुलः धान्यसंभवः ।

५४ अर्तेः पिशन् ।

अर्पिशः अग्रमांसम् ।

५५ षृ-भृ-वमि-कुभ्यः शक् ।

वृशः गौः

भृशः गत्यर्थः ।

वंशः वेणुः ।

कुशः दर्भः ।

५६ कीनाश-दाश-अङ्कुशाः ।

कीनाशः कृपणः ।

दाशः कैवर्तः ।

अङ्कुशः गजप्रबोधकः ।

५७ ऋ-माञ्जि-पीयि-हनि-अगिभ्यः ऊषन् ।

अरूषः चन्द्रमाः ।

मञ्जूषा काष्ठमयम् ।

पीयूषः अमृतकम् ।

हनूषः व्याघ्रः ।

अङ्गूषः देवगमः (?) ।

५८ पुरः कुषन् ।

पुरुषः नरः ।

५९ कृ-तृभ्याम् ईषन् ।

करीषः गोमयम् ।

तरीषः समुद्रः ।

६० शिरीष-आदयः ।

शिरीषः वृक्षजातिः ।

पुरीषम् विष्ठा ।

अम्बरीषः भ्राष्ट्रम् ।

ऋजीषः नायकः ।

६१ अवेः टिषच् ।

अविषः समुद्रः ।

अविषी नदी ।

६२ किल्बिष-आदयः ।

किल्बिषम् पापम् ।

रोहिषः मृगः ।

लोहिषः स एव ।

ताविषः सूर्यः ।

ताविषी नदी ।

व्यथिषः व्याधिः ।

अव्यथिषः स्वर्गः ।

६३ वृ-त-वदि-हनि-मानि-कमि-अशि-कशेः

सः ।

वर्षः संवत्सरः ।

तर्षः समुद्रः ।

वत्सः बालः ।

- हंसः पक्षी ।
मांसम् पिशितम् ।
कंसः असुरराजः ।
अक्षम् इन्द्रियम् ।
कक्षः वनप्रदेशः ।
६४ ऋषि-वृषि-स्तुभ्यः सक् ।
ऋक्षम् नक्षत्रम् ।
वृक्षः तरुः ।
स्तुषा पुत्रवधूः ।
६५ पनि-मनि-रभि-चमि-अति-वेति-युवः
असच् ।
पनसः कण्टकफलम्^१ ।
मनसम् हृदयम् ।
रभसः उत्साहः ।
चमसः पिष्टकः ।
अतसः पुष्पजातिः ।
वेतसः वृक्षः ।
यवसः घासः ।
६६ कृन्वः पासप् ।
कर्पासः कर्तनद्रव्यम् ।
६७ सिच्रेः कन् उम्-हौ च ।
सिंहः केसरी ।
६८ श्रि-स्रु-द्रु-प्रु-ज्वां क्विप् दीर्घश्च ।
श्रीः लक्ष्मीः ।
स्रूः स्रुक् ।
द्रूः सुवर्णम् ।
प्रूः कामचारः ।
जूः पिशाचः ।
६९ प्रछि-वचोः तौ च ।
प्राट् शिष्यः ।
वाग् वाणी ।
७० गमः द्वे च ।
जगत् त्रैलोक्यम् ।
७१ परिव्रजेः षश्च पदान्ते ।
परिव्राट् परिव्राजौ परिव्राजः ।
७२ लुवः चिक् ।
लुग् यज्ञभाण्डम् ।
७३ वशि-वणिभ्याम् इजिक् ।
उषिक् तन्त्रवायः ।
वणिग् वाणिजः ।
७४ मूडः उतिः ।
मरुत् वायुः ।
७५ ग्री वा मुट् च ।
गरुत् पक्षः ।
गर्मुत् सुवर्णम् ।
७६ ह-सृ-तडि-रहि-युषिभ्यः इतिः ।
हरित् शाद्वलः ।
सरित् नदी ।
तडित् विद्युत् ।
रोहित् मत्स्यः ।
लोहित् रक्तः ।
योषित् अङ्गना ।
७७ पृषि-वृषि-महेः शतुः ।
पृषत् मृगः ।
वृषत् विपुलः ।
महत् महायानम् ।
महान् उत्तमः ।
७८ शरद्-दरद् दृषदः ।
शरत् ऋतुः ।
दरत् द्रव्यम् ।
दृषत् शिला ।

१ कण्टकयुक्तं फलं कण्टकरुलम् (फणस) ।

- ७६ वृषि-तक्षि-राजि-धन्वि-प्रतिदिव-युवः
कनिन् ।
वृषा गौः ।
तक्षा वर्धकिः ।
राजा नृपः ।
धन्वा धनुः ।
प्रतिदिवा दिवसः ।
युवा तरुणः ।
- ८० श्वन् आदयः ।
श्वा कुक्कुरः ।
उक्षा बलीवर्दः ।
पूषा रविः ।
प्लीहा व्याधिः ।
मूर्धा शिरः ।
मज्जा अस्थिसारः ।
मातरिश्वा वातः ।
मघवा इन्द्रः ।
- ८१ भसि-जनि-वृतेः मनिन् ।
भस्म छारः ।
जन्म उत्पत्तिः ।
वर्त्म पन्थाः ।
- ८२ व्योमन् आदयः
व्योम आकाशः ।
वेम कौलिकानां भाण्डम् ।
साम वेदः ।
रोम अङ्गजः ।
लोम स एव ।
नाम संज्ञा ।
- ८३ इमनिच् ।
हरिमा विष्णुः ।
धरिमा पृथ्वी माता वा ।
भरिमा स्वामी भाजनं वा ।
- ८४ पथि-मथिभ्याम् इतिः ।
पन्था मार्गः ।
मन्था बृहस्पतिः मन्थनदण्डो वा ।
- ८५ गमः ।
गमी गमिष्यति ।
- ८६ आङः णित् च ।
आगामी आगमिष्यति ।
- ८७ भुवः ।
भविष्यति इति भावी ।
- ८८ परमेष्ठी ।
परमेष्ठी ब्रह्मा ।
- ८९ अर्चि-हु-सृपि-च्छदि-च्छदिभ्यः इसिः ।
अर्चिः ज्वाला ।
हविः यज्ञः ।
सर्पिः घृतम् ।
छदिः आतपत्रम् ।
छदिः उद्धारः ।
- ९० ज्योतिर् आदयः ।
ज्योतिः दीप्तिः नक्षत्रं वा ।
शोचिः पिङ्गलम् ।
भुविः पृथिवी ।
निपथिः विमार्गः ।
- ९१ जनेः उसिः ।
जनुः जन्म ।
- ९२ ऋ-पृ-वपि-यजि-धनि-त्रपेः नित् ।
अरुः व्रणः ।
परुः चिरकालः ।
वपुः शरीरम् ।
यजुः वेदः ।
धनुः शस्त्रम् ।
त्रपुः सीसम् ।

- ६३ इणः कित् ।
आयुः जीवनपरिमाणम् ।
- ६४ चक्षेः उसिन् ।
चक्षुः नेत्रम् ।
- ६५ वशेः कनसिः ।
उशना शुक्रः ।
- ६६ विधि-इणः कसिः ।
वेधाः प्रजापतिः ।
अयः लोहम् ।
- ६७ पयः-पुरसः धावः ।
पयोधाः पर्जन्यः ।
पुरोधाः पुरोहितः ।
- ६८ चन्द्रात् माडः डित् ।
चन्द्रमाः चन्द्रः ।
- ६९ अनेहस्-अङ्गिरस्-अप्सरसः ।
अनेहाः कालः ।
अङ्गिराः नाम ऋषिः ।
अप्सराः देवयोषित् ।
- १०० असुन् ।
वयः शरीरम् ।
पयः क्षीरम् ।
तेजः दीप्तिः ।
अंहः पापम् ।
तपः पुण्यम् ।
- १०१ उषि-रञ्जि-शृभ्यः कित् ।
उषाः रविः ।
रजः रेणुः ।
शिरः मूर्धा ।
- १०२ वसि-अग्निभ्यां णित् ।
वासः वस्त्रम् ।
आगः पापम् ।
- १०३ यजेः शश्च ।
यशः कीर्तिः ।
- १०४ उषेः जश्च ।
ओजः दीप्तिः ।
- १०५ वशेः सुट् च ।
वक्षः क्रोडः ।
- १०६ लु-रीडभ्याम् तुट् च ।
स्रोतः नदी ।
रेतः शुक्रम् ।
- १०७ इणः नुट् च ।
एनः पापम् ।
- १०८ शीडः फुट् च ।
शेफः लिङ्गम् ।
- १०९ छदेः नुम् च ।
छन्दः वेदः ।
- ११० अमेः भुक् च ।
अम्भः सलिलम् ।
- १११ अर्तेः उत् च ।
उरः क्रोडः ।
- ११२ शुट् च ।
अर्शः व्याधिः ।
- ११३ नुट् च ।
अर्णः जलम् ।
- ११४ युट् च ।
अर्यः वैश्यः ।

॥ उणादी तृतीयः पादः समाप्तः ॥

॥ आचार्यचन्द्रगोमिकृतम् उणादिसूत्रम् समाप्तम् ॥

॥ शुभमस्तु सर्वजगताम् ॥

[आचार्यचन्द्रगोमिरचितः धातुपाठः]

- १ भू सत्तायाम् । (१)^१
 २ चिती संज्ञाने । (३६)
 ३ अत सातत्यगमने । (३८)
 ४ च्युतिर् आसेचने । (४०)
 ५ श्र्युतिर् क्षरणे । (४१)
 ६ कुथि पुथि लुथि हिंसायाम् ।
 (४४-४६)
 ७ मन्थ विलोडने । (४३)
 ८ पिधु गत्याम् । (४८)
 ९ पिधू शिष्टौ । (४९)
 १० खादृ भक्षणे । (५०)
 ११ खद स्थितौ । (५१)
 १२ वद स्थैर्ये । (५२)
 १३ गद वचने । (५३)
 १४ रद विलेखने । (५४)
 १५ णद नर्द गर्द शब्दे । ५५, ५७, ५८
 १६ कर्द कुत्सिते शब्दे । (६०)
 १७ तर्द हिंसायाम् । (५९)
 १८ अर्द गतौ । (५६)
 १९ खर्द दशने । (६१)
 २० अति अदि बन्धने (६२, ६३)
 २१ इदि परमैश्वर्ये । (६४)
 २२ बिदि अवयवे । (६५)
 २३ णिदि कुत्सायाम् । (६६)
 २४ टुनदि समृद्धौ (६७)
 २५ चदि आह्लादने (६८)
 २६ त्रदि चेष्टायाम् । (६९)
 २७ कदि क्रदि क्लदि आह्वाने ।
 (७०-७२)
 २८ क्लिदि परिदेवने । (७३)
 २९ शुन्ध शुद्धौ । (७४)
 ३० फक्क नीचैर्गता । (११९)
 ३१ तक हसने । (१२०)
 ३२ तकि कृच्छ्रजीवने । (१२१)
 ३३ शुक गतौ । (१२३)
 ३४ बुक्क भषणे । (१२२)
 ३५ कक्क हसने । (१२४)
 ३६ ओखू राखू लाखू द्राखू घ्राखू
 शोषणे । (१२५-१२६)
 ३७ शाखू श्लाखू व्याप्तौ ।
 (१३०, १३१)
 ३८ उख णख वख मख रख लख
 रखि लखि इसि ईखि वल्ग
 व्लगि रगि लगि अगि वगि मगि
 तगि त्वगि त्रगि श्रगि श्लगि इगि
 रिगि लिगि गत्यर्थः ।
 (१३२, १३८, १३४, १३६,
 १४०, १४२, १४१, १४३, १४५,
 १४६, १५२, १५३-१६०, १६२-
 १६५)

१ पाणिनीयधातुपाठस्थितधातुभिः सह अस्य धातुपाठस्थितस्य धातोः सादृश्यप्रदर्शनाय एते अङ्का निर्दिष्टाः । यथा चिती धातुः अत्र धातुपाठे द्वितीयः स एव च पाणिनीये धातुपाठे एकोनचत्वारिंशत्तमः ।

३६ युगि जुगि वुगि वर्जने ।
(१६७-१६९)

४० दधि पालने । (१७१)
४१ लघि शोषणे । (१७२)
४२ घग्घ हसने । (१७०)
४३ शिघि आघ्राणे । (१७४)

४४ शुच शोके । (१६८)
४५ कुच शब्दे । (१६९)
४६ कृन्च गतौ । (२०१)
४७ कुन्चु कौटिल्ये । (२००)
४८ लुन्चु अपनयने । (२०२)
४९ अन्चु वन्चु मन्चु चन्चु तन्चु त्वन्चु
म्रुन्चु म्लुन्चु म्रुवु म्लुचु गत्यर्थाः ।
(२०३, २०४, २०५-२११)

५० ग्रुचु ग्लुचु कुजु खुजु स्तेये ।
(२१२-२१५)

५१ ग्लुन्चु षस्ज गतौ । (२१६-२१७)
५२ अर्च पूजायाम् । (२१९)
५३ म्लेच्छ अव्यक्ते वचने (२२०)
५४ लछ लाछि लक्षणे । (२२१, २२२)
५५ वाछि इच्छायाम् । (२२३)
५६ आछि आयामे । (२२४)
५७ ह्रीछ लज्जायाम् । (२२५)
५८ हुर्छा कौटिल्ये । (२२६)
५९ मुर्छा मोहे । (२२७)
६० स्फुर्छा विस्मृतौ । (२२८)
६१ युछ प्रमादे । (२२९)
६२ उछि उञ्छे । (२३०)
६३ उछी विवासे । (२३१)
६४ धृजि ध्रजि ध्वजि गतौ । (२३७,
२३३, २३६)
६५ अर्ज सर्ज अर्जने । (२४२, २४३)

६६ गर्ज शब्दे । (२४४)
६७ तर्ज भर्त्सने । (२४५)
६८ खर्ज मार्जने । (२४७)
६९ तेज पालने । (२४९)
७० गज मदे । (२६५)
७१ खज मन्थे । (२५०)
७२ खजि गतिवैकल्ये । (२५२)
७३ एजृ कम्पने । (२५३)
७४ टुओस्फूर्जा वज्रनिष्पेपे । (२५४)
७५ क्षि क्षये । (२५५)
७६ क्षीज कूज गुजि अव्यक्ते शब्दे ।
(२५६)

७७ लज लाजि लाज लजि भर्त्सने ।
(२५७, २६०, २५९, २५८)
७८ जज जजि युद्धे । (२६१, २६२)
७९ तुज तुजि हिसायाम् ।
(२६३, २६४)

८० गज गजि गृज गृजि मुज मुजि
शब्दार्थाः । (२६५-२७०)
८१ अज वज ब्रज गतौ । (२४८,
२७१, २७२)
८२ शौटृ गर्वे । (३१०)
८३ यौटृ सम्बन्धे । (३११)
८४ मेटृ म्लेटृ उन्मादने ।
(३१४, ३१२)

८५ कटे वरणे । (३१५)
८६ रट परिभाषणे । (३१६)
८७ लट बाल्ये । (३२०)
८८ शट विशरणे । (३२१)
८९ वट वेष्टने । (३२२)
९० खिट उत्त्रासने (३२४)
९१ शिट पिट अनादरे । (३२५, ३२६)

- ६२ जट झट पिट संघाते ।
(३२७, ३२८, ३३३)
- ६३ भट भृतौ । (३२६)
- ६४ तट उच्छ्राये । (३३०)
- ६५ खट काङ्क्षये । (३३१)
- ६६ नट नृतौ । (३३२)
- ६७ हट दीप्ती । (३३४)
- ६८ षट अवयवे । (३३५)
- ६९ लुट विलोढने । (३३६)
- १०० चिट प्रैष्ये । (३३७)
- १०१ विट वन्दे । (३३८)
- १०२ विट आक्रोशे । (३३९)
- १०३ एठ हेठ विवाधाग्राम् ।
(३४३, २८६)
- १०४ अट इट पट किट कटी इ गतौ ।
(३१७, ३४०, ३१८, ३४१, ३४२)
- १०५ मडि भूषायाम् । (३४४)
- १०६ कुटि वैकल्ये । (३४५)
- १०७ मुटि प्रमर्दने । (३४६)
- १०८ चुटि अलीभावे । (३४७)
- १०९ मुडि खण्डने । (३४८)
- ११० वटि विभाजने । (३५१)
- १११ रुटि लुटि स्तेये । (३४९, ३५०)
- ११२ स्फुट स्फुटिर् विशरणे । (३५२)
- ११३ पठ उच्चारणे । (३५३)
- ११४ वठ स्थौल्ये । (३५४)
- ११५ मठ निवासे । (३५५)
- ११६ कठ कृच्छ्रजीवने । (३५६)
- ११७ हठ बलात्कारे । (३५८)
- ११८ रुठ लुठ उपघाते । (३५९, ३६०)
- ११९ पिठ हिंसाग्राम् । (३६२)
- १२० शठ कैतवे च । (३६३)
- १२१ शुठि कुठि गुठि शोषणे ।
(३६७, ३६५)
- १२२ लुठि आलस्ये । (३६६)
- १२३ रुठि लुठि गतौ । (३६८, ३६९)
- १२४ चुड्ड हावकरणे । (३७०)
- १२५ अड्ड अभियोगे । (३७१)
- १२६ क्रीड विहारे । (३७३)
- १२७ तुड तोडने । (३७४)
- १२८ हूड होड गतौ । (३७५, ३७६)
- १२९ रौड अनादरे । (३७७)
- १३० लौड उन्मादे । (३७९)
- १३१ अड उद्यमे । (३८०)
- १३२ लड विलासे । (३८१)
- १३३ कड मदे । (३८३)
- १३४ कड्ड कार्कश्ये । (३७२)
- १३५ गडि वदनैकदेशे । (३८४)
- १३६ गुप् रक्षणे । (४२२)
- १३७ धूप संतापे । (४२३)
- १३८ रप लप जप जल्प वचने ।
(४२८, ४२९, ४२४, ४२५)
- १३९ चप सान्त्वने । (४२६)
- १४० षच समवाये । (१०४६)
- १४१ चुप मन्दायां गतौ । (४३०)
- १४२ तुप तुन्प त्रुप त्रुन्प तुफ तुन्फ
त्रुफ त्रुन्फ सृभु सृन्भु हिंसार्थाः ।
(४३१-४३८, ४५७, ४५८)
- १४३ रफ रफि अर्धं पर्वं खर्वं गर्भं
शर्वं पर्वं चर्वं गतौ । (४४०
-४४३, ४४८-४५२)
- १४४ कुवि छादने । (४५३)
- १४५ चुवि वक्त्रसंयोगे । (४५६)
- १४६ शुन्भ भाषणे । (४६०)

१४७ अण रण वण भण मण कण वण
व्रण भ्रण घ्रण ध्वन शब्दार्थाः ।
(४७१-४७६, ४८७, ८८१)

१४८ ओणृ अपनयने । (४८२)

१४९ शोणृ वर्णे । (४८३)

१५० श्रोणृ संघाते । (४८४)

१५१ पेणृ गतौ ।

१५२ कनी दीप्तौ । (४८८)

१५३ ष्टन वन कल शब्दे ।

(४८९, ४९०, ५२६)

१५४ षण संभक्तौ । (४९२)

१५५ अम द्रम ह्रम्य मीमृ गतौ ।

(४९३, ४९४, ४९६)

१५६ चमु छमु जमु झमु अदने ।

(४९७-४९९, ५०१)

१५७ क्रमु पादविहरणे । (५०२)

१५८ मव्य बन्धने । (५४१)

१५९ षूक्ष्म ईर्क्ष्य ईर्ष्य ईर्ष्यार्थाः ।

(५४३, ५४४)

१६० ह्य ह्यं गतौ । (५४५, ५४७)

१६१ शुच्यी अभिषवे । (५४६)

१६२ फला विशरणे । (५४९)

१६३ मील स्मील क्षमील निमेषणे ।

(५५०, ५५२, ५५३)

१६४ पील प्रतिष्ठायाम् । (५५४)

१६५ नील वर्णे । (५५५)

१६६ शील समाधौ । (५५६)

१६७ कील बन्धे । (५५७)

१६८ कूल वरणे । (५५८)

१६९ शूल रुजायाम् । (५५९)

१७० तूल निष्कर्षे । (५६०)

१७१ पूल संघाते । (५६१)

१७२ मूल प्रतिष्ठायाम् । (५६२)

१७३ फल निष्पत्तौ । (५६३)

१७४ चुल्ल हावकरणे । (५६४)

१७५ फुल्ल विकसने । (५६५)

१७६ चिल्ल शैथिल्ये । (५६६)

१७७ शिल्ल गतौ ।

१७८ वेलृ चेलृ केलृ खेलृ शेलृ पेलृ

चलने । (५६८-५७१, ५७६)

१७९ पेलृ फेलृ गतौ । (५७४, ५७५)

१८० खल चलने । (५७७)

१८१ खल संचये च । (५७८)

१८२ गल अदने । (५७९)

१८३ पल गतौ । (८९२)

१८४ दल विशरणे । (५८१)

१८५ शल श्वल आशुगमने ।

(५८२, ५८३)

१८६ खोरृ गतिप्रतिघाते । (५८४)

१८७ धोरृ गतिचातुर्ये । (५८५)

१८८ त्सर छद्मगतौ । (५८६)

१८९ कमर हूर्छने । (५८७)

१९० अभ्र वभ्र मभ्र चर गत्यर्थाः ।

(५८८-५९१)

१९१ ष्ठिवु क्षिवु निरसने ।

(५९२, ५९९)

१९२ जि जये । (५९३)

१९३ जीव प्राणधारणे । (५९४)

१९४ पीव मीव नीव तीव स्थौल्ये ।

(५९५, ५९६, ५९८, ५९७)

१९५ उर्वी तुर्वी थुर्वी दुर्वी धुर्वी

हिंसार्थाः । (६००, ६०४)

१९६ मुर्वी बन्धने । (६०६)

१९७ गुर्वी उद्यमे । (६०५)

- १९८ पूर्व पर्व मर्व पूरणे । (६०७, ६०९) २२२ चूष पाने । (७०४)
 १९९ चर्व अदने । (६१०) २२३ तूष तुष्टौ । (७०५)
 २०० कर्व खर्व गर्व दर्पे । (६१२-६१४) २२४ पूष वृद्धौ । (७०६)
 २०१ अर्व शर्व भर्व हिंसायाम् । २२५ मूष स्तेये । (७०७)
 (६१५, ६१६, ६११) २२६ षूष प्रसवे । (७१०)
 २०२ इवि व्याप्तौ । (६१८) २२७ भूष अलंकारे (७१२)
 २०३ पिवि मिवि निवि सेचने । २२८ ऊष रुजायाम् (७१४)
 (६१६-६२१) २२९ ईष उञ्छे । (७१५)
 २०४ हिवि दिवि धिवि प्रीणनार्थाः । २३० कष शिष जष झष वष मष रुष
 (६२२-६२४) रिष यूष जूष हिंसायाम् । (७१६,
 २०५ रिवि रवि धवि गत्यर्थाः । ७१८-७२०, ७२२-७२५, ७११)
 (६२६-६२८) २३१ भष भर्त्सने । (७२६)
 २०६ कृवि हिंसायाम् । (६२९) २३२ उष दाहे । (७२७)
 २०७ मव बन्धने । (६३०) २३३ जिषु विषु मिषु सेचने ।
 २०८ अव रक्षणे । (६३१) (७२८-७३०)
 २०९ घुषिर् शब्दे । (६८३) २३४ पुष पुष्टौ । (७३२)
 २१० अक्षू व्याप्तौ (६८४) २३५ श्रिषु श्लिषु प्रुषु प्लुषु दाहे ।
 २११ तक्षू त्वक्षू तनूकरणे । (७३३-७३६)
 (६८५, ६८६) २३६ पृषु वृषु सेचने (७३७, ७३८)
 २१२ उक्ष सेचने । (६८७) २३७ मृषु सहने । (७३९)
 २१३ रक्ष पालने । (६८८) २३८ घृषु संहर्षे । (७४०)
 २१४ णिक्ष चुम्बने । (६८९) २३९ हृषु अलीके । (७४१)
 २१५ तृक्ष स्तृक्ष णक्ष गतौ । २४० तुष हृष लृष रस शब्दे । (७४५)
 (६९०-६९२) २४१ जर्त्स चर्च झर्झ परिभाषणे ।
 (७४८-७५०)
 २१६ वक्ष रोषे । (६९३) २४२ लस क्रीडायाम् । (७४६)
 २१७ अक्ष संघाते (६९४) २४३ पिसृ पेसृ गतौ । (७५१, ७५२)
 २१८ त्वक्ष त्वचने । २४४ घसलृ अदने । (७४७)
 २१९ मूर्क्ष अनादरे । (६९७) २४५ हसे हसने (७५७)
 २२० काक्षि वाक्षि माक्षि काङ्क्षायाम् । २४६ णिश समाधौ । (७५८)
 (६९८-७००) २४७ मश मिश शब्दे । (७६०, ७५९)
 २२१ द्राक्षि ध्राक्षि ध्वाक्षि घोरवाशिते २४८ वश गतौ ।
 च । (७०१-७०३)

२४६ शश प्लुतगतौ । (७६२)
 २५० शसु हिंसायाम् । (७६३)
 २५१ शन्सु स्तुतौ । (७६४)
 २५२ चह परिकल्कने । (७६५)
 २५३ रह परित्यागे । (७६७)
 २५४ रहि गतौ । (७६८)
 २५५ दृह दृहि बृह बृहि बृद्धौ ।
 (७६६-७७२)

२५६ बृहिर् शब्दे । (७७२)
 २५७ तुहिर् दुहिर् अर्दने । (७७३, ७७४)
 २५८ अर्ह मह पूजायाम् । (७७६, ७६६)
 २५९ धेद् पाने । (६५१)
 २६० ग्लै हर्षक्षये (६५२)
 २६१ म्लै गात्रविनामे । (६५३)
 २६२ द्यै न्यक्करणे । (६५४)
 २६३ द्रै स्वप्ने । (६५५)
 २६४ ध्रै दीप्तौ । (६५६)
 २६५ ध्यै स्मृचिन्तायाम् । (६५७, ६८०)
 २६६ कै गै रै शब्दे ।

(६६४, ६६५, ६५८)

२६७ ष्ट्यै स्त्रै संघाते च । (६५९)
 २६८ खे खदने । (६६०)
 २६९ क्षै जै षे क्षये । (६६१-६६३)
 २७० श्रै स्रै पाके । (६६६, ६६७)
 २७१ पै ओवै शोषणे । (६६८, ६६९)
 २७२ ष्टै वेष्टने । (६७०)
 २७३ दैप् शोधने । (६७१)
 २७४ पा पाने । (६७२)
 २७५ घ्रा गन्धोपादाने । (६७३)
 २७६ घ्मा शब्दे । (६७४)
 २७७ ष्ठा गतिनिवृत्तौ । (६७५)
 २७८ म्ना अभ्यासे । (६७६)

२७९ दाण् दाने । (६७७)
 २८० ह्व कौटिल्ये । (६७८)
 २८१ स्वृ शब्दे । (६७९)
 २८२ दृ वरणे । (६८१)
 २८३ सृ गतौ । (६८२)
 २८४ ऋ प्रापणे । (६८३)
 २८५ गृ घृ सेचने । (६८४, ६८५)
 २८६ ध्वृ हर्छने । (६८६)
 २८७ शु सु दु द्रु गतौ ।
 (६८७, ६८१, ६८२)
 २८८ षु प्रसवे । (६८८)
 २८९ जि जि अभिभवे । (६८३, ६८४)
 २९० तृ प्लवने । (१०१८)
 २९१ क्ष्विदा अव्यक्ते शब्दे । (१०२७)
 २९२ स्कन्दिर् गतौ । (१०२८)
 २९३ यम सैथुने । (१०२९)
 २९४ णम प्रह्वत्वे शब्दे च । (१०३०)
 २९५ गम्लृ सृप्लृ गतौ ।
 (१०३१, १०३२)

२९६ यमु उपरमे । (१०३३)
 २९७ तप संतापे । (१०३४)
 २९८ त्यज हानौ । (१०३५)
 २९९ णज गतौ । (१०३६)
 ३०० वृशिर् प्रेक्षणे । (१०३७)
 ३०१ दन्श दशने । (१०३८)
 ३०२ कृष विलेखने । (१०३९)
 ३०३ दह भस्मीकरणे । (१०४०)
 ३०४ मिह सेचने (१०४१)
 ३०५ कित निवासे (१०४२)

। अतडानाः ।

३०६ एघ वृद्धौ । (२)
 ३०७ स्पर्ध संहर्षे । (३)

३०८ गाधृ प्रतिष्ठायाम् । (४)

३०९ बाधृ विलोडने । (५)

३१० दध धारणे । (८)

३११ स्कुदि आप्रवणे । (९)

३१२ श्विदि श्वेत्ये । (१०)

३१३ वदि अभिवादाने । (११)

३१४ भदि कल्याणे । (१२)

३१५ मदि जाड्ये । (१३)

३१६ स्पदि किञ्चिच्चलने । (१४)

३१७ क्लिदि परिदेवने । (१५)

३१८ मुद हर्षे । (१६)

३१९ दद दाने । (१७)

३२० ष्वद स्वाद स्वर्द आस्वादाने ।

(१८, २८, १९)

३२१ उर्द माने । (२०)

३२२ कुर्द खुर्द गुर्द क्रीडायाम् ।

(२१, २३)

३२३ पूद क्षरणे । (२५)

३२४ ह्लाद शब्दे । (२६)

३२५ ल्हादी सुखे च । (२७)

३२६ पर्द कुत्सिते शब्दे । (२९)

३२७ यती प्रयत्ने । (३०)

३२८ युतृ जुतृ भाषणे । (३१, ३२)

३२९ नाधृ नाथृ विथृ वेथृ याचने ।

(६, ७, ३३, ३४)

३३० श्रथि शैथिल्ये । (३५)

३३१ ग्रथ कौटिल्ये । (३६)

३३२ कत्य श्लाघायाम् । (३७)

३३३ शीकृ सेचने । (७५)

३३४ लोकृ दर्शने । (७६)

३३५ श्लोकृ संघाते । (७७)

३३६ द्रेकृ ध्रेकृ वृद्धौ । (७८, ७९)

३३७ रेकृ शङ्कायाम् । (८०)

३३८ सेकृ सेकृ श्रकृ श्लकृ गत्यर्थाः

(८१, ८२)

३३९ शकि शङ्कायाम् । (८६)

३४० अकि लक्षणे । (८७)

३४१ वकि कौटिल्ये । (८८)

३४२ मकि मण्डने । (८९)

३४३ कक लौल्ये । (९०)

३४४ कुक वृक आदाने । (९१, ९२)

३४५ चक तृप्तौ । (९३)

३४६ ककि श्रकि त्रकि ढौकृ त्रौकृ ष्वस्क

वस्क मस्क टिकृ टीकृ रघि लघि

गत्यर्थाः । (९४, ९६-१०४,

१०७, १०८)

३४७ अधि वधि गत्याक्षेपे ।

(१०९, ११०)

३४८ मधि कैतवे च । (११२)

३४९ राधृ लाधृ सामर्थ्ये । (११३, ११४)

३५० द्राधृ आयासे च । (११७)

३५१ श्लाधृ कथ्यने । (११८)

३५२ वर्च दीप्तौ । (१७५)

३५३ लोचृ दर्शने । (१७७)

३५४ पच सेचने । (१७६)

३५५ शच श्रचि गतौ । (१८०)

३५६ कच बन्धने । (१८१)

३५७ कचि दीप्तौ । (१८२)

३५८ मचि धारणे । (१८६)

३५९ मच मुचि कल्कने । (१८४, १८५)

३६० पचि व्यवतीकरणे । (१८७)

३६१ ण्टुच प्रसादे । (१८८)

३६२ ईज ऋज गतौ । (१९६, १९९)

३६३ ऋजि भृजी भर्जने । (१९०, १९१)

३६४ एजू रेजू भ्रेजू भ्राजू दीप्तौ ।
(१६२, १६५, १६३, १६४)

३६५ अट्ट अतिक्रमे । (२७३)
३६६ वेष्ट वेष्टने । (२७४)
३६७ चेष्ट चेष्टायाम् । (२७५)
३६८ गोष्ट लोष्ट संघाते । (२७६, २७७)
३६९ घट्ट चलने । (२७८)
३७० स्फुट विकसने । (२७९)
३७१ अठि गतौ । (२८०)
३७२ बठि एकचर्यायाम् । (२८१)
३७३ मठि कठि शोके । (२८२, २८३)
३७४ मुठि पलायने । (२८४)
३७५ एठ हेठ विवाधायाम् ।
(२८६, २८५)

३७६ हिडि गतौ । (२८७)
३७७ हुडि पिडि संघाते ।
(२८८, २८३)

३७८ कुडि दाहे । (२८९)
३७९ वडि मडि वेष्टने ।
(२९०, २९१)

३८० भडि परिभाषणे । (२९२)
३८१ मुडि मार्जने । (२९४)
३८२ तुडि तोडने । (२९५)
३८३ भुडि भरणे । (२९६)
३८४ स्फुडि विकसने । (२९७)
३८५ चडि कोपे । (२९८)
३८६ शडि रुजायाम् । (२९९)
३८७ तडि ताडने । (३००)
३८८ पडि गतौ । (३०१)
३८९ कडि मदे । (३०२)
३९० खडि मन्थे । (३०३)

३९१ होड अनादरे । (३०५)
३९२ बाड आप्लाव्ये । (३०६)
३९३ द्राड ध्राड विशरणे ।
(३०७, ३०८)

३९४ श्लाड श्लाघायाम् । (३०९)
३९५ तितृ तेपृ ष्टेपृ क्षरणार्थाः ।
(३८५, ३८६, ३८८)
३९६ ग्लेपृ दैन्ये । (३९०)
३९७ टुवेपृ कम्पने । (३९१)
३९८ केपृ गेपृ ग्लेपृ च ।
(३९२-३९४)

३९९ केवृ पेवृ मेवृ रेवृ गतौ ।
४०० त्रपृष् लज्जायाम् । (३९९)
४०१ कपि चलने । (४००)
४०२ अत्रि शब्दे । (४०३)
४०३ रबि लबि अवसंसने ।
(४०१, ४०४)

४०४ कवृ वर्णे । (४०५)
४०५ क्लीवृ आघाष्टर्ये । (४०६)
४०६ क्षीवृ मदे । (४०७)
४०७ शीभृ कथने । (४०८)
४०८ चीभृ च । (४०९)
४०९ रेभृ शब्दे । (४१०)
४१० ष्टभि स्तभि स्क्रभि प्रतिबन्धे ।
(४१३, ४१४)

४११ जभि जृभि गात्रविनामे । (४१६)
४१२ शल्भ कथने । (४१७)
४१३ वल्भ भोजने । (४१८)
४१४ गल्भ घाष्टर्ये । (४१९)
४१५ श्रन्भु प्रमादे । (४२०)
४१६ ष्टुभु स्तम्भे । (४२१)
४१७ घिणि घुणि घृणि ग्रहणे ।
(४६१, ४६३)

- ४१८ घुण घूर्ण भ्रमणे । (४६४, ४६५)
 ४१९ पन स्तुतौ । (४६७)
 ४२० पण व्यवहारे । (४६६)
 ४२१ भाम क्रोधे । (४६८)
 ४२२ क्षमूष् सहने । (४६९)
 ४२३ कमु कान्तौ । (४७०)
 ४२४ अय वय मय चय तय णय रय
 गतौ । (५०३, ५०४, ५०६-
 ५०९, ५११)
 ४२५ दय रक्षणे । (५१०)
 ४२६ ऊयी तन्तुसंताने । (५१२)
 ४२७ पूयी विशरणे । (५१३)
 ४२८ क्यूयी शब्दे । (५१४)
 ४२९ क्षमायी विधूनने । (५१५)
 ४३० स्फायी ओप्यायी वृद्धौ ।
 (५१६, ५१७)
 ४३१ तायु संताने । (५१८)
 ४३२ शल चलने । (५१९)
 ४३३ वल संवरणे । (५२०)
 ४३४ मल मल्ल धारणे । (५२२, ५२३)
 ४३५ भल भल्ल परिभाषणे ।
 (५२४, ५२५)
 ४३६ कल संख्याने । (५२६)
 ४३७ कल्ल अव्यक्ते शब्दे । (५२७)
 ४३८ तेवृ देवृ देवने । (५२८, ५२९)
 ४३९ षेवृ शेवृ केवृ गेवृ ग्लेवृ पेवृ मेवृ
 म्लेवृ सेवने । (५३०, ५३६, ५३९,
 ५३१-५३५)
 ४४० रेवृ प्लवगतौ । (५४०)
 ४४१ घुक्ष धिक्ष संदीपने । (६३३, ६३४)
 ४४२ वृक्ष वरणे । (६३५)
 ४४३ शिक्ष विद्योपादाने । (६३६)
 ४४४ भिक्ष याञ्चायाम् । (६३७)
 ४४५ क्लेश बाधने । (६३८)
 ४४६ दक्ष वृद्धौ । (६३९)
 ४४७ दीक्ष मौण्डये । (६४०)
 ४४८ ईक्ष दर्शने । (६४१)
 ४४९ ईष गतौ । (६४२)
 ४५० भाष वचने । (६४३)
 ४५१ स्पर्श स्नेहने ।
 ४५२ ग्लेष अन्विच्छायाम् । (६४५)
 ४५३ येषु प्रयत्ने ।
 ४५४ जेषु णेषु एषु ह्लेषु गतौ । (६४७-
 ६५०)
 ४५५ रेपु अव्यक्ते शब्दे । (६५१)
 ४५६ काशु भासु दीप्तौ । (६७८, ६५५)
 ४५७ कासु णासु रासु हेसु शब्दे ।
 (६५४, ६५६, ६५७, ६५२)
 ४५८ णस कौटिल्ये । (६५८)
 ४५९ भ्यस भये । (६५९)
 ४६० आडः शन्सु इच्छायाम् (६६०)
 ४६१ ग्रसु ग्लसु अदने । (६६१, ६६२)
 ४६२ ईह चेष्टायाम् । (६६३)
 ४६३ बहि महि वृद्धौ । (६६४, ६६५)
 ४६४ अहि गतौ । (६६६)
 ४६५ गर्ह गल्ह कुत्सने । (६६७, ६६८)
 ४६६ बर्ह वल्ह प्राधान्ये । (६६९, ६७०)
 ४६७ प्लीह गतौ ।
 ४६८ वेह जेह बाह प्रयत्ने । (६७४-६७६)
 ४६९ द्राह निद्राक्षये । (६७७)
 ४७० ऊह वितर्के । (६७९)
 ४७१ गाह विलोडने । (६८०)
 ४७२ गूह ग्रहणे (६८१)
 ४७३ घुषिर् करणे ।

४७४ स्मिङ् विहसने । (६६६)
 ४७५ गुङ् अव्यक्ते शब्दे । (६६७)
 ४७६ गाङ् गतौ । (६६८)
 ४७७ घुङ् कुङ् डुङ् उङ् शब्दे ।
 (१०००, ६६६, १००२, १००१)
 ४७८ च्युङ् क्युङ् ज्युङ् झ्युङ् प्रुङ्
 प्लुङ् रुङ् गतौ । (१००४-१००८)
 ४७९ धृङ् अवध्वंसने । (१००९)
 ४८० मेङ् प्रतिदाने । (१०१०)
 ४८१ देङ् रक्षणे । (१०११)
 ४८२ श्येङ् गतौ । (१०१२)
 ४८३ प्येङ् वृद्धौ । (१०१३)
 ४८४ त्रैङ् पालने । (१०१४)
 ४८५ पूङ् पवने । (१०१५)
 ४८६ मूङ् बन्धने । (१०१६)
 ४८७ डीङ् आकाशगमने । (१०१७)
 ४८८ गुप् गोपने । (१०१८)
 ४८९ तिज निशाने । (१०२०)
 ४९० मान पूजायाम् । (१०२१)
 ४९१ वध बन्धने । (१०२२)
 ४९२ रभ आरम्भे । (१०२३)
 ४९३ डुलभप् प्राप्ता । (१०२४)
 ४९४ ष्वन्ज परिष्वज्जे । (१०२५)
 ४९५ हृद् पुरीषोत्सर्गे । (१०२६)
 ४९६ द्युता दीप्तौ । (७७७)
 ४९७ श्रिता वर्णे । (७७८)
 ४९८ मिदा प्विदा क्षिवा स्नेहने
 (७७९, ७८०)
 ४९९ रुच दीप्तौ । (७८१)
 ५०० घुट परिवर्तने । (७८२)
 ५०१ रुट लुट प्रतीघाते । (७८३, ७८४)
 ५०२ शुभ दीप्तौ । (७८६)

५०३ क्षुभ संचलने । (७८७)
 ५०४ णभ तुभ हिंसायाम् । (७८८,
 ७८९)
 ५०५ सन्सु भ्रन्सु अवसंसने । (७९०, ७९२)
 ५०६ ध्वन्सु गतौ । (७९३)
 ५०७ सन्भु विश्वासे । (७९४)
 ५०८ वृतु वर्तने । (७९५)
 ५०९ वृधु वृद्धौ । (७९६)
 ५१० शृधु शब्दकुत्सायाम् । (७९७)
 ५११ स्यन्दु स्रवणे । (७९८)
 ५१२ कृपू सामर्थ्ये । वृत् । (७९९)
 ५१३ घट चेष्टायाम् । (८००)
 ५१४ व्यथ दुःखे । (८०१)
 ५१५ प्रथ पृथु विस्तारे । (८०२)
 ५१६ म्रद मृदु मर्दने । (८०४)
 ५१७ स्खद स्खदने । (८०५)
 ५१८ क्षजि दक्ष गतौ । (८०६, ८०७)
 ५१९ क्रप कृपायाम् । (८०८)
 ५२० कदि क्रदि क्लदि वैक्लव्ये ।
 (८०९-८११)
 ५२१ त्वरा संभ्रमे । (८१२)
 ५२२ घटादयः पितः तडानिनः ।
 ५२३ ज्वर रोगे । (८१३)
 ५२४ गड सेचने । (८१४)
 ५२५ हेड वेष्टने । (८१५)
 ५२६ वट भट परिभाषणे । (८१६, ८१७)
 ५२७ नट नृतौ । (८१८)
 ५२८ चक तृप्तौ । (८२०)
 ५२९ ष्टक प्रतीघाते । (८१९)
 ५३० कखे हसने । (८२१)
 ५३१ रगे शङ्कायाम् । (८२२)
 ५३२ लगे सङ्गे । (८२३)

५३३ लगे लगे षगे षगे संवरणे ।

(८२४-८२७)

५३४ अक अग कुटिलायां गतौ ।

(८२६, ८३०)

५३५ कण रण गतौ (८३१, ८३२)

५३६ इन्थ कथ क्लथ हिंसायाम् ।

(८३६, ८३८, ८३९)

५३७ ज्वल दीप्तौ । (८४२)

५३८ ज्वल ह्वल ह्यल चलने । (८४३
८४४)

५३९ स्मृ अध्ययने । (८४५)

५४० दृ भये । (८४६)

५४१ नृ नये । (८४७)

५४२ श्रा पाके । (८४८)

५४३ मारण-तोषण-निशानेषु ज्ञा । (८४९)

५४४ कम्पने चलिः । (८५०)

५४५ ऊर्जने छदिः । (८५१)

५४६ जिह्वोन्मथने लडिः । (८५२)

५४७ हर्ष-ग्लेपनयोः मदिः । (८५३)

५४८ घटादयो मितः ।

५४९ जनी-जृ-वनसु-रञ्जः अमन्ताश्च ।

(८६२-८६६)

५५० ज्वल-ह्वल-ह्यल-नमाम् अप्रादीनां च ।

(८६७)

५५१ ग्ला-स्ना-वनु-वमां च । (८६८)

५५२ न कमि-अमि-चमाम् (८६९)

५५३ शमो दर्शने । (८७०)

५५४ यमोऽपरिवेषणे । (८७१)

५५५ स्वदेः अप-परिभ्यां च । (८७२)

५५६ फण गतौ । वृत् (८७३)

अतङानाः ।

५५७ राज् दीप्तौ । (८७४)

विभाषितः ।

५५८ भ्राज् टुभ्राश् टुभ्लाश् दीप्तौ ।

(८७५-८७७)

तङानिनः ।

५५९ स्यमु स्वन ध्वन शब्दे (८७८
८७९, ८८१)

५६० षम ष्टम वैकल्ये । (८८२, ८८३)

५६१ ज्वल दीप्तौ । (८८४)

५६२ चल कम्पने । (८८५)

५६३ जल धान्ये । (८८६)

५६४ टल ट्वल वैकल्ये (८८७, ८८८)

५६५ ष्टल स्थाने । (८८९)

५६६ हल विलेखने । (८९०)

५६७ णल गन्धे । (८९१)

५६८ पल गतौ । (८९२)

५६९ बल प्राणने । (८९३)

५७० पुल महत्त्वे । (८९४)

५७१ कुल संस्त्याने । (८९५)

५७२ शल हुल पल्ल पथे गतौ ।

(८९६-८९८, ९००)

५७३ क्वथे निष्पाके । (८९९)

५७४ मथे विलोडने । (९०१)

५७५ टुवम उद्गिरणे । (९०२)

५७६ भ्रमु चलने । (९०३)

५७७ क्षर संचलने । (९०४)

अतङानाः ।

५७८ षह मर्षणे । (९०५)

५७९ रमु क्रीडायाम् । (९०६)

तङानिनौ ।

५८० षद्लृ विशरणे । (९०७)

५८१ शद्लृ शातने । (९०८)

५८२ क्रुश आह्वाने (९०९)

५८३ कुच कौटिल्ये । (९१०)

५८४ बुध बोधने । (९११)

५८५ युध संप्रहारे ।
 ५८६ रुह प्रादुर्भावे । (६१२)
 ५८७ कस गतौ । वृत् (६१३)
 अतङानाः ।
 ५८८ हिक्क शब्दे । (६१४)
 ५८९ धावु गति-शुद्धयोः । (६३२)
 ५९० अन्चु गतौ । (६१५)
 ५९१ दुयाचृ याञ्चायाम् । (६१६)
 ५९२ रेट् परिभाषणे । (६१७)
 ५९३ चते चदे च याचने । (६१८)
 ५९४ प्रोथृ पर्याप्तौ । (६१९)
 ५९५ मेधृ संगमे । (६२०)
 ५९६ णिदृ णेदृ संनिकर्षे । (६२१)
 ५९७ मिदृ मेदृ मेधा-हिंसयोः । (६२०)
 ५९८ शृधु मृधु उन्दे । (६२२, ६२३)
 ५९९ बुध बोधने । (६२४)
 ६०० उचुन्दिर् निशाने (६२५)
 ६०१ त्वेणृ गतौ । (६२६)
 ६०२ खनु अवदारणे (६२७)
 ६०३ चीवृ आदाने (६२८)
 ६०४ चायृ पूजायाम् । (६२९)
 ६०५ व्यय गतौ । (६३०)
 ६०६ दाशृ दाने । (६३१)
 ६०७ भेवृ भये । (६३२)
 ६०८ अस गतौ । (६३४)
 ६०९ स्पश वाधने । (६३६)
 ६१० लष कान्ती । (६३७)
 ६११ चष भक्षणे । (६३८)
 ६१२ कष हिंसायाम् । (६३९)

६१३ झष आदाने । (६४०)
 ६१४ भक्ष भक्षणे । (६४१)
 ६१५ दासृ दाने । (६४२)
 ६१६ माहृ माने । (६४३)
 ६१७ गुहृ संवरणे । (६४४)
 ६१८ श्रि सेवायाम् (६४५)
 ६१९ हृञ् हरणे । (६४७)
 ६२० भृञ् भरणे । (६४६)
 ६२१ धृ धारणे । (६४८)
 ६२२ णी प्रापणे । (६५०)
 ६२३ दान अवखण्डने । (१०४३)
 ६२४ शान तेजने । (१०४४)
 ६२५ डुपचष् पाके । (१०४५)
 ६२६ भज सेवायाम् (१०४७)
 ६२७ रन्ज रागे । (१०४८)
 ६२८ शप आक्रोशे । (१०४९)
 ६२९ त्विष दीप्तौ (१०५०)
 ६३० यज देवपूजायाम् । (१०५१)
 ६३१ डुवप वीजनिक्षेपे । (१०५२)
 ६३२ वह प्रापणे । (१०५३)
 ६३३ वेञ् तन्तुसंताने (१०५५)
 ६३४ व्येञ् संवरणे । (१०५६)
 ६३५ ह्वेञ् स्पर्धायाम् । (१०५७)
 विभाषिताः ।
 ६३६ वस निवासे । (१०५४)
 ६३७ वद वचने । (१०५८)
 ६३८ टुओश्चि गतिवृद्धौ । वृत् ।
 (१०५९)
 अतङानाः ।

भूवादयः समाप्ताः ॥१॥

१. हेमचन्द्रसंगृहीते धातुपाठे माधवीयधातुवृत्ती च अनुक्रमेण “ओमुन्दृग् निशामने”
 “उचुन्दिर् निशामने” इति धातुः ।

२. एवं तयोरेव ग्रन्थयोः “त्वेणृ गति-ज्ञान-चिन्ता-निशामन-वादित्रग्रहणेणु” इति ।

- १ अद प्सा भक्षणे । (१, ४६)
 २ षस स्वप्ने । (६६)
 ३ वश कान्ती (७०)
 ४ हन हिंसायाम् । (२)
 ५ द्यु अभिगमने । (३१)
 ६ यु मिश्रणे । (२३)
 ७ णु स्तुतौ । (२६)
 ८ क्षणु तेजने (२८)
 ९ ण्णु प्रस्रवणे । (२६)
 १० दुक्षु रु कु शब्दे । (२७, २४, ३३)
 ११ इक् स्मरणे । (३८)
 १२ इण् वी वा गतौ । (३६, ३६, ४१)
 १३ या प्रापणे (४०)
 १४ भा दीप्तौ । (४२)
 १५ ण्णा शौचे । (४३)
 १६ श्रा पाके । (४४)
 १७ द्रा पलायने । (४५)
 १८ पा रक्षणे (४७)
 १९ रा ला आदाने । (४८, ४९)
 २० दाप् लवने (५०)
 २१ ख्या प्रकथने (५१)
 २२ प्रा पूरणे (५२)
 २३ मा माने । (५३)
 २४ विद ज्ञाने । (५५)
 २५ अस भुवि । (५६)
 २६ मृजू शुद्धौ (५७)
 २७ वच भाषणे । (५४)
 २८ रुदिर् अश्रुविमोक्षणे । (५८)
 २९ ष्वप शये । (५९)
 ३० अन श्वस प्राणने । (६१, ६०)
 ३१ जक्ष भक्षणे । (६२)
 ३२ जागृ निद्राक्षये । (६३)
 ३३ दरिद्रा दुर्गती (६४)
 ३४ चकासृ दीप्तौ । (६५)
 ३५ शासृ अनुशिष्टौ । (६६)
 ३६ यङ्लुक् च । (७१)
 अतङानाः ।
 ३७ चक्ष वचने । (७)
 ३८ ईर गतौ । (८)
 ३९ ईड स्तुतौ । (९)
 ४० ईश ऐश्वर्ये । (१०)
 ४१ आस उपवेशने । (११)
 ४२ आङः शासु इच्छायाम् । (१२)
 ४३ वस आच्छादने । (१३)
 ४४ कसि गतौ । (१४)
 ४५ णिसि चुम्बने । (१५)
 ४६ णिजि शुद्धौ । (१६)
 ४७ शिजि शब्दे । (१७)
 ४८ वृजी वर्जने । (१८)
 ४९ पृची संपर्के । (२०)
 ५० षूङ प्रसवे । (२१)
 ५१ शीङ स्वप्ने । (२२)
 ५२ इङ् अध्ययने । (३७)
 ५३ दीधीङ दीप्तौ । (६७)
 ५४ वेवीङ् गतौ । (६८)
 ५५ ह्रुङ् अपनयने । (७२)
 तङानिनः ।
 ५६ द्विष अप्रीतौ । (३)
 ५७ दुह प्रपूरणे । (४)
 ५८ दिह उपचये । (५)
 ५९ लिह आस्वादाने । (६)
 ६० ऊर्णुङ् आच्छादने । (३०)
 ६१ ष्टु स्तुतौ । (३४)
 ६२ ब्रू वचने । (३५)
 विभाषिताः ।

- १ हु हवने । (१)
 २ भी भये । (२)
 ३ ह्री लज्जायाम् । (३)
 ४ पू पालने । (४)
 ५ ओहाक् त्यागे । (८)
 ६ घृ क्षरणे । (१४)
 ७ ऋ सृ गतौ । (१६, १७)
 ८ भस भर्त्सने । (१८)
 ९ कि कित ज्ञाने । (१९, २०)
 १० तुर त्वरणे । (२१)
 ११ धिष शब्दे । (२२)
 १२ धन धान्ये । (२३)

- १३ जन जनने । (२४)
 १४ गा स्तुतौ । (२५)
 अतडानाः ।
 १५ णिजिर् शुद्धौ । (११)
 १६ विजिर् पृथग्भावे । (१२)
 १७ विष्लृ व्याप्तौ । वृत् । (१३)
 १८ डुदा दाने । (९)
 १९ डुधान् डुभृज् धारणे । (१०, ५)
 विभाषिताः ।
 २० माङ् माने । (६)
 २१ ओहाङ् गतौ । (७)
 तडानिनी ।

जुहोत्यादयः समाप्ताः ॥ ३ ॥

- १ दिवु क्रीडायाम् । (१)
 २ षिवु तन्तुसंताने । (२)
 ३ श्रिवु सिवु गतौ ।
 ४ ष्ठिवु क्षिवु निरसने । (४)
 ५ क्नुसु त्वरणे । (६)
 ६ नृती नाट्ये । (९)
 ७ त्रसी भये । (१०)
 ८ कुथ प्रतिभावे । (११)
 ९ पुथ हिंसायाम् । (१२)
 १० गुध वेष्टने । (१३)
 ११ क्षिप प्रेरणे । (१४)
 १२ पुष्प विकसने । (१५)
 १३ तिम ष्टिम ष्टीम आर्द्रभावे
 (१६, १७)
 १४ ब्रीड चोदने । (१८)
 १५ इष गतौ । (१९)
 १६ पुह शक्तौ । (२१)
 १७ जृप् जृप् जरायाम् (२२, २३)

- १८ शो तनूकरणे । (३७)
 १९ छो छेदने । (३८)
 २० षो अवसाने । (३९)
 २१ दो अवखण्डने । (४०)
 २२ राध साध संसिद्धौ । (७१)
 २३ व्यध ताडने । (७२)
 २४ पुष पुष्टौ । (७३)
 २५ शुष शोषणे । (७४)
 २६ तुष प्रीतौ । (७५)
 २७ दुष वैकृत्ये । (७६)
 २८ श्लिष आलिङ्गने । (७७)
 २९ ष्विदा पाके । (७८)
 ३० क्रुध कोपे । (८०)
 ३१ क्षुध बुभुक्षायाम् । (८१)
 ३२ शुध शौचे । (८२)
 ३३ षिधु संराद्धौ । (८३)
 ३४ रघ हिंसायाम् । (८४)
 ३५ णश अदर्शने । (८५)

- ३६ तृप तृप्ती । (८६)
 ३७ दृप हर्षे । (८७)
 ३८ द्रुह द्रोहे । (८८)
 ३९ मुह वैचित्त्ये । (८९)
 ४० ण्णुह उद्गरणे । (९०)
 ४१ णिह प्रीतौ । वृत् । (९१)
 ४२ शमु दमु उपशमे । (९२, ९४)
 ४३ तमु काङ्क्षायाम् । (९३)
 ४४ श्रमु खेदे । (९५)
 ४५ भ्रमु अनवस्थाने । (९६)
 ४६ क्षमूष् सहने । (९७)
 ४७ कलमु ग्लानौ । (९८)
 ४८ मदी हर्षे । (९९)
 ४९ असु क्षेपणे । (१००)
 ५० यसु प्रयत्ने । (१०१)
 ५१ जसु मोक्षणे । (१०२)
 ५२ तसु दसु उपक्षेपे । (१०३, १०४)
 ५३ वसु स्तम्भे । (१०५)
 ५४ प्युष विभागे । (१०६)
 ५५ प्लुष दाहे । (१०७)
 ५६ विस प्रेरणे । (१०८)
 ५७ कुस श्लेषणे । (१०९)
 ५८ वुस उत्सर्गे । (११०)
 ५९ मुष खण्डने । (१११)
 ६० पसी मसी परिमाणे । (११२)
 ६१ लुट विलोटने । (११३)
 ६२ उच समवाये । (११४)
 ६३ भृशु भ्रन्शु अधःपतने । (११५)
 ६४ वृश वरणे । (११६)
 ६५ कृश तनूकरणे । (११७)
 ६६ तृष पिपासायाम् । (११८)
 ६७ हृष तुष्टौ । (११९)

- ६८ रुष रोषे । (१२०)
 ६९ डिप क्षेपे । (१२१)
 ७० स्तूप समुच्छ्राये । (१२७)
 ७१ कुप क्रोधे । (१२२)
 ७२ गुप व्याकुलत्वे । (१२३)
 ७३ युप रुप लुप विमोहने । (१२४-१२६)
 ७४ लुभ गार्ध्वे । (१२८)
 ७५ क्षुम संचलने । (१२९)
 ७६ णभ तुभ हिंसायाम् । (१३०, १३१)
 ७७ क्लिद् आर्द्रभावे । (१३२)
 ७८ मिदा स्नेहने । (१३३)
 ७९ क्ष्विदा मोचने । (१३४)
 ८० ऋधु वृद्धौ । (१३५)
 ८१ गृधु अभिकाङ्क्षायाम् । (१३६)

अतडानाः ।

- ८२ षूङ प्राणिप्रसवे । (२४)
 ८३ दूङ परिस्तापे । (२५)
 ८४ दीङ क्षये । (२६)
 ८५ डीङ गतौ । (२७)
 ८६ धीङ अनादरे । (२८)
 ८७ मीङ हिंसायाम् । (२९)
 ८८ रीङ स्रवणे । (३०)
 ८९ लीङ श्लेषणे । (३१)
 ९० व्रीङ वरणे । (३२)
 ९१ स्वादय ओदितः ।
 ९२ पीङ पाने । (३३)
 ९३ ईङ गतौ । (३५)
 ९४ प्रीङ प्रीतौ । (३६)
 ९५ जनी प्रादुर्भावे । (४१)
 ९६ दीपी दीप्तौ । (४२)
 ९७ पूरी आप्यायने । (४३)
 ९८ तूरी त्वरायाम् । (४४)

६६ जूरी जरायाम् (४८)	११२ अनोः रुध कामे । (६५)
१०० गूरी घूरी धूरी शूरी हिंसायाम् ।	११३ मन ज्ञाने । (६७)
(४६, ४७, ४५, ४६)	११४ युज समाधौ । (६८)
१०१ चूरी दाहे । (५०)	११५ सृज विसर्गे । (६९)
१०२ तप अश्वर्ये । (५१)	११६ लुजो विनाशे ।
१०३ १वावृतु वर्तने । (५२)	११७ लिश अल्पीभावे । (७०)
१०४ २क्लिश उपतापे । (५२ अ)	तडानिनः ।
१०५ काशृ दीप्तौ । (५३)	११८ शक मृष क्षान्तौ । (७८, ५५)
१०६ वाशृ शब्दे । (५४)	११९ ईशुचिर् पूतिभावे (५६)
१०७ पद गतौ । (६०)	१२० णह बन्धने । (५७)
१०८ खिद असहने । (६१)	१२१ रन्ज रागे । (५८)
१०९ विद सत्तायाम् । (६२)	१२२ शप आक्रोशे । (५९)
११० बुध अवगमने । (६३)	विभाषिताः ।
१११ युध संप्रहारे । (६४)	

दिवादयः समाप्ताः ॥४॥

१ षुञ् अभिषवे । (१)	१२ क्षि क्षये । (३०)
२ षि बन्धने । (२)	१३ पृ स्पृ प्रीतौ । (१२, १३)
३ शि निशाने । (३)	१४ आप्लृ व्याप्तौ । (१४)
४ डुमिञ् प्रक्षेपणे । (४)	१५ शकलृ शक्तौ । (१५)
५ चि चये । (५)	१६ श्रु श्रवणे ।
६ स्तृ आच्छादने । (६)	१७ राध साध संसिद्धौ । (१६, १७)
७ कृ हिंसायाम् (७)	१८ षघ तिक ष्टिक हिंसायाम् ।
८ वृञ् वरणे । (८)	(२१, २०)
९ धूञ् कम्पने । (९)	१९ धृषा प्रागल्भ्ये । (२२)
विभाषिताः ।	२० दन्भु दम्भे । (२३)
१० टुदु उपतापे । (१०)	२१ ऋधु वृद्धौ । (२४)
११ हि गतौ । (११)	

१. हेमै धातुपाठे माधवीये च “वृतुचि वरणे” “वृतु वरणे” इति धातुः । “तप अश्वर्ये वा” इत्यस्य धातोः माधवीयवृत्तौ एवं निदिष्टम्—“केचिदिह वाग्रहणं वक्ष्यमाणस्य “वृतु वरणे” इत्यस्य आद्यांशमिच्छन्ति ‘वावृतु वरणे’ इति । तथा च भट्टिः “ततो दावृत्यमाना सा रामशालां न्यविक्षत” इति । (माध० वृ० पृ० २९३)

२. माधवीयायां धातुवृत्तौ अयं धातुः ५३—त्रिपञ्चाशत्तमः ।

- २२ ऋक्ष चिरि जिरि हिंसायाम् । २४ अशू व्याप्तौ । । (१८)
 (२६-३२) २५ ष्टिघ स्कन्दने । (१९)
 २३ तृप प्रीणने । (२५) तडानिनौ ।
 अतडानाः ।

स्वादयः समाप्ताः ॥ ५ ॥

- | | |
|-------------------------------------|-------------------------------|
| १ तुद व्यथने । (१) | २६ उवज आर्जवे । (२०) |
| २ गुद प्रेरणे । (२) | २७ उदज्ञ उत्सर्गे । (२१) |
| ३ दिश अतिसर्जने । (३) | २८ लुभ विमोहने । (२२) |
| ४ भ्रस्ज पाके । (४) | २९ ऋफ कथने । |
| ५ क्षिप प्रेरणे । (५) | ३० ऋफ ऋफ हिंसायाम् । (३०) |
| ६ कृप विलेखने । (६) | ३१ तृप तृन्प तृप्तौ । (२४) |
| ७ मिल संगमे । (१३५) | ३२ दृप दृन्प उत्क्लेशे । (२८) |
| ८ मुच्लृ मोक्षणे । (१३६) | ३३ गुफ गुन्फ ग्रन्थे । (३१) |
| ९ लुप्लृ छेदने । (१३७) | ३४ उभ उन्भ पूरणे । (३२) |
| १० विद्लृ लाभे । (१३८) | ३५ शुभ शुन्भ शोभार्थे । (३३) |
| ११ लिप उपदेहे । (१३९) | ३६ दृभी ग्रन्थे । (३४) |
| १२ पिच क्षरणे । (१४०) | ३७ चृती हिंसायाम् । (३५) |
| विभाषिताः । | ३८ विध विधाने । (३६) |
| १३ कृती छेदने । (१४१) | ३९ जुन शुन गतौ । (३७, ४६) |
| १४ खिद परिघाते । (१४२) | ४० पृड मृड सुखने । (३९, ३८) |
| १५ पिश अवयवे । वृत् । (१४३) | ४१ पृण प्रीणने । (४०) |
| १६ ऋषी गतौ । (७) | ४२ मृण हिंसायाम् । (४१) |
| १७ ओन्नश्चु छेदने । (११) | ४३ तुण कौटिल्ये । (४२) |
| १८ व्यच व्याजीकरणे । (१२) | ४४ पुण शुभे । (४३) |
| १९ उछि उच्छे । (१३) | ४५ मुण प्रतिज्ञाने । (४४) |
| २० उछी विवासे । (१४) | ४६ कुण शब्दे । (४५) |
| २१ ऋछ गतौ । (१५) | ४७ द्रुण हिंसायात् । (४७) |
| २२ मिछ उत्क्लेशे । (१६) | ४८ घुण घृण भ्रमणे । (४८, ४९) |
| २३ जर्त्स चर्च झर्झ परिभाषणे । (१७) | ४९ घुर ऐश्वर्ये । (५०) |
| २४ त्वच संवरणे । (१८) | ५० कुर शब्दे । (५१) |
| २५ ऋच स्तुतौ । (१९) | ५१ खुर छुर छेदने । (५२, ७९) |

५२ मुर संवेष्टने (५३)
 ५३ क्षुर विलेखने । (५४)
 ५४ घुर भीमे । (५५)
 ५५ पुर अग्रगमने । (५६)
 ५६ वृह उद्यमे । (५७)
 ५७ तृह स्तृह तृह हिंसायाम् (५८)
 ५८ इषु इच्छायाम् । (५९)
 ५९ मिष स्पर्धायाम् । (६०)
 ६० किल क्रीडायाम् (६१)
 ६१ तिल स्नेहने (६२)
 ६२ चिल वसने । (६३)
 ६३ चल विलसने (६४)
 ६४ इल गतौ । (६५)
 ६५ विल भेदे । (६७)
 ६६ णिल गहने । (६८)
 ६७ हिल हावे । (६९)
 ६८ शिल पिल उच्छे । (७०)
 ६९ लिख लेखने । (७२)
 ७० कुट कौटिल्ये । (७३)
 ७१ पुट संश्लेषणे । (७४)
 ७२ कुच संकोचने (७५)
 ७३ गुज शब्दे । (७६)
 ७४ गुड रक्षायाम् । (७७)
 ७५ डिप क्षेपे । (७८)
 ७६ हुड संघाते । (१०२)
 ७७ स्फुट भेदे । (८०)
 ७८ मुट प्रमर्दने (८१)
 ७९ त्रुट चुट छेदने । (८२, ८४)
 ८० तुट कलहे । (८३)
 ८१ जुड बन्धे । (८५)
 ८२ लुट संश्लेषणे ।
 ८३ कृड घसने (८८)

८४ कुड बाहुल्ये । (८९)
 ८५ लुड विलसने ।
 ८६ घुट प्रतीघाते । (९१)
 ८७ तुंड थुड स्फुड वृड भ्रुड संवरणे ।
 (९२, ९३, ९७, ९९)

८८ स्फुर चलने । (९५)
 ८९ स्फुल संचये च । (९६)
 ९० णू स्तुतौ । (१०४)
 ९१ धू विधूनने । (१०५)
 ९२ गुध पुरीषोत्सर्गे ।
 ९३ ध्रुव स्थैर्ये । (१०७)

अतडानाः ।

९४ गुरी उद्यमे । (१०३)
 ९५ कुङ्ग शब्दे । वृत् । (१०८)
 ९६ पृङ्ग व्यायामे । (१०९)
 ९७ मृङ्ग प्राणत्यागे । (११०)
 ९८ जुषी सेवायाम् । (८)
 ९९ ओविजी उद्वेगे । (९)
 १०० ओलजी ओलस्जी व्रीडे । (१०)

तडानिनः ।

१०१ रि पि गतौ । (१११, ११२)
 १०२ धि घारणे । (११३)
 १०३ क्षि निवासे । (११४)
 १०४ षू प्रेरणे (११५)
 १०५ कृ विक्षेपे । (११६)
 १०६ ग निगरणे । (११७)

अतडानाः ।

१०७ दृङ्ग आदरे । (११८)
 १०८ धृङ्ग अवस्थाने । (११९)
 तडानिनौ ।

१०९ प्रछ प्रश्ने । (१२०)
 ११० सृज विसर्गे । (१२१)

१११ टुमस्जो शुद्धौ । (१२२)	११७ स्पृश संस्पर्शौ । (१२८)
११२ रुजो भङ्गे । (१२३)	११८ विश प्रवेशने । (१३०)
११३ भुजो कौटिल्ये । (१२४)	११९ मृश आमर्शौ । (१३१)
११४ छुप स्पर्शौ । (१२५)	१२० षद्लृ अवसादे । (१३३)
११५ रुश रिश हिंसायाम् । (१२६)	१२१ शद्लृ शातने । (१३४)
११६ लिश विछ गतौ । (१२७, १२८)	अतङानाः ।

तुदादयः समाप्ताः ॥ ६ ॥

१ रुधिर् आवरणे । (१)	१३ भन्जो आमर्दने । (१६)
२ भिदिर् विदारणे । (२)	१४ भुज पालने । (१७)
३ छिदिर् द्वैधीकरणे । (३)	१५ तृह हिंसि हिंसायाम् (१८, १९)
४ रिचिर् विरेचने । (४)	१६ उन्दी क्लेदने । (२०)
५ विचिर् पृथग्भावे । (५)	१७ अन्ज व्यक्तौ । (२१)
६ क्षुदिर् संपेषणे (६)	१८ तन्चू संकोचने । (२२)
७ युजिर् योगे । (७)	१९ वृजी वर्जने । (२४)
८ उच्छृदिर् दीप्तौ । (८)	२० पृची संपर्के । (२५)
९ उत्तृदिर् हिंसायाम् । (९)	अतङानाः ।
विभाषिताः ।	२१ इन्धी दीप्तौ । (११)
१० कृती वेष्टने । (१०)	२२ खिद दैन्ये । (१२)
११ शिष्टृ विशेषणे । (१४)	२३ विद विचारे । (१३)
१२ पिष्टृ संचूर्णने । (१५)	तङानिनः ।

रुधादयः समाप्ताः ॥ ७ ॥

१ तनु विस्तारे । (१)	७ डुकृञ् करणे । (१०)
२ षणु दाने । (२)	विभाषिताः ।
३ क्षणु हिंसायाम् । (३)	८ वनु याचने । (८)
४ ऋणु गतौ । (५)	९ मनु बोधने । (९)
५ तृणु अदने । (६)	तङानिनी ।
६ घृणु दीप्तौ । (७)	

तनादयः समाप्ताः ॥ ८ ॥

१ डुक्रीञ् द्रव्यविनिमये । (१)	४ मी हिंसायाम् । (४)
२ प्रीञ् तर्पणे । (२)	५ पि यु बन्धने । (५, ६)
३ श्री पाके । (३)	६ स्कु आप्रवणे । (६)

- ७ वक्तृ शब्दे ।
 ८ पूञ् पवने । (१२)
 ९ लू छेदने । (१३)
 १० स्मृ छादने । (१४)
 ११ कृ हिंसायाम् । (१५)
 १२ वृ वरणे । (१६)
 १३ धूञ् कम्पने । (१७)
 १४ ग्रह उपादाने । (१८)
 विभाषिताः ।
 १५ शृ मृ हिंसायाम् । (१८, २२)
 १६ पृ पूरणे । (१९)
 १७ भृ भर्त्सने । (२१)
 १८ दृ विदारणे । (२३)
 १९ जृ जरायाम् । (२४)
 २० नृ नये । (२५)
 २१ गृ शब्दे । (२८)
 २२ ज्या हानौ । (२९)
 २३ व्ली री ऋ गतौ । (३२, ३०, २७)
 २४ ली द्रवीकरणे । वृत् । (३१)
 २५ व्री वरणे । (३३)
 २६ भी भये ।
 २७ क्षिप् हिंसायाम् । (३५)
 २८ ज्ञा अवबोधने । (३६)
 २९ बन्ध बन्धने । (३७)
 ३० ग्रन्थ ग्रन्थ संदर्भे । (३९, ४१)
 ३१ मन्थ विलोडने । (४०)
 ३२ कुन्थ संश्लेषणे । (४२)
 ३३ मृद क्षोदे । (४३)
 ३४ पृड मृड सुखने । (४४)
 ३५ गुध रोषे । (४५)
 ३६ कुप निष्कर्षे । (४६)
 ३७ क्षुभ संचलने । (४७)
 ३८ णभ तुभ हिंसायाम् । (४८, ४९)
 ३९ क्लिश बाधने । (५०)
 ४० अश भोजने । (५१)
 ४१ उध्रस् उच्छे । (५२)
 ४२ इष आभीक्ष्ण्ये । (५३)
 ४३ विष विप्रयोगे । (५४)
 ४४ पुष पुष्टौ । (५७)
 ४५ प्रुष प्लुष स्नेहने । (५५, ५६)
 ४६ मुष स्तेये । (५८)
 ४७ खव प्रादुर्भावे । (५९)
 अतडानाः ।
 ४८ वृद्ध संभक्तौ । (३८)
 तडानी ।

कृयादयः समाप्ताः ॥ ६ ॥

- १ चुर स्तेये । (१)
 २ चिति स्मृत्याम् । (२)
 ३ यत्रि संकोचने । (३)
 ४ स्फुडि परिहासे । (४)
 ५ लक्ष लोक दर्शने । (५, २३६)
 ६ कुद्रि अनृतभाषणे । (६)
 ७ लड उपसेवायाम् । (७)
 ८ मिद स्नेहने । (८)
 ९ ओलडि उत्क्षेपे । (९)
 १० पीड बाधायाम् । (११)

१. हैमे तथा माघवीये धातुपाठे 'ध्रुप् उच्छे' 'ध्रत् उच्छे' इति धातुः । एतद्विषये माघवः एवं निर्दिशति—“अत्र क्षीरस्वामी उकारं धात्ववयवमाह । तन्मते उध्रस्ताति, उध्र-सांवकार” इत्यादि । (माघ० वृ० पृ० ३७४)

- ११ ऊर्ज वले । (१६)
 १२ कुट्ट छेदने । (२३)
 १३ पुट्ट अल्पीभावे । (२४)
 १४ अट्ट अनादरे । (२५)
 १५ घट्ट चलने । (८७)
 १६ खट्ट संवरणे । (८६)
 १७ षट्ट हिंसायाम् । (६०)
 १८ लुण्ट स्तेये । (२७)
 १९ श्वठ गतौ । (२६)
 २० तुजि पिजि हिंसायाम् । (३०, ३१)
 २१ तिज निशाने । (११०)
 २२ व्यप कूट दाहे । (६६, ३४४)
 २३ नट नाटये । (१२)
 २४ श्वल्क वल्क भाषणे । (३४, ३५)
 २५ स्फिट अनादरे ।
 २६ पथि गतौ । (३६)
 २७ पिच्च कुट्टने । (४०)
 २८ छदि संवरणे । (४१)
 २९ श्रणु दाने । (४२)
 ३० तड आघाते । (४३)
 ३१ खड खडि भेदे । (४४)
 ३२ कडि खण्डने । (४४)
 ३३ वडि विभाजने । (४८)
 ३४ भडि कल्याणे । (५०)
 ३५ वुस्त वञ्चने । (५२)
 ३६ चुद संचोदने । (५३)
 ३७ वदि अभिवादने ।
 ३८ विद वेदनायाम् । (१६८)
 ३९ श्रा पाके ।
 ४० ज्ञा तोषणे ।
 ४१ नक्क धक्क नाशने । (५४, ५५)
 ४२ चक्क चुक्क व्यथने । (५६)
 ४३ क्षल शौचे । (५७)
 ४४ तल प्रतिष्ठायाम् । (५८)
 ४५ तुल उन्माने । (५९)
 ४६ दुल उत्क्षेपे । (६०)
 ४७ वृजी वर्जने । (२७०)
 ४८ पुल महत्त्वे । (६१)
 ४९ चुल निमज्जने । (६२)
 ५० पाल रक्षणे । (६६)
 ५१ लूष हिंसायाम् । (७०)
 ५२ चुट छेदने । (७२)
 ५३ मुट संचूर्णने । (७३)
 ५४ पसि नाशने । (७४)
 ५५ छवि गतौ ।
 ५६ क्षपि क्षान्तौ । (७८)
 ५७ क्षजि कृच्छ्रजीवने । (७९)
 ५८ पूज पूजायाम् । (१०१)
 ५९ जुड प्रेरणे । (१०५)
 ६० पचि विस्तारे । (१०६)
 ६१ सूच पैशुन्ये । (३२७)
 ६२ कृत संशब्दने । (१११)
 ६३ लप वचने ।
 ६४ मत्रि गुप्तिभाषणे । (१४०)
 ६५ तत्रि कुटुम्बधारणे । (१३६)
 ६६ लल ईप्सायाम् । (१४८)
 ६७ चर्च अध्ययने । (१७२)
 ६८ मान पूजायाम् । (२६६)
 ६९ घुषिर् विशब्दने । (१८७)
 ७० ऊन परिहाणी । (३४२)
 ७१ संग्राम युद्धे । (३७६)
 ७२ छद अपवारणे । (२६०)
 ७३ मार्ग अन्वेषणे । (३०२)
 ७४ कठि शोके । (३०३)

७५ मृजू शौचे । (३०४)	६२ निवास आच्छादने । (३३६)
७६ मृष क्षान्ती । (३०५)	६३ भाज पृथक्क्रियायाम् । (३४०)
७७ धृष प्रसहने । (३०६)	६४ ध्वन शब्दे । (३४३)
७८ कथ वाक्यप्रबन्धे । (३०७)	६५ स्तेन चौर्ये । (३४६)
७९ वर ईप्सायाम् । (३०८)	६६ गृह प्रग्रहणे । (३५१)
८० गण संख्याने । (३०९)	६७ मृग अन्वेषणे । (३५२)
८१ शठ श्वठ सम्यगाभाषणे । (३१०)	६८ कुह विस्मापने । (३५३)
८२ रह त्यागे । (३१२)	६९ स्थूल परिवृंहणे । (३५६)
८३ ष्टन गद देवशब्दे । (३१३, ३१४)	१०० अर्थ याञ्चायाम् । (३५७)
८४ रच प्रतियत्ने । (३१८)	१०१ गर्व माने । (३५९)
८५ कल संख्याने । (३१९)	१०२ मिश्र संपर्के । (३७५)
८६ मह पूजायाम् । (३२१)	१०३ सुपो धात्वर्थे बहुलम् इष्टवच्च । (३८६)
८७ स्पृह ईप्सायाम् । (३२५)	१०४ णिङ्ग अङ्गनिरसने । (३९३)
८८ शील उपधारणे । (३३२)	१०५ श्वेताश्व-अश्वतर-गालोडित-आह्वर- काणाम् अश्व-तर-इत-कलोपश्च (३९४)
८९ साम सान्त्वने । (३३३)	
९० गवेष मार्गणे । (३३७)	
९१ वास उपसेवायाम् । (३३८)	

नित्यण्यन्ताश्चुरादयः समाप्ताः ॥ १० ॥

क्रियावाचित्वमाख्यातुमेकैकोऽर्थः प्रदर्शितः ।

प्रयोगतोऽनुगन्तव्या अनेकार्था हि धातवः ॥

॥ धातुपाठः समाप्तः ॥

चान्द्रसूत्राणाम् अकारादिक्रमेण संकलनम् ।

अइउण् प्रत्याहारसूत्र (शिवसूत्र १)

अंशं हारी ४।२।७४।

अंशात् ऋतोः ६।१।२२।

अंशे संख्यायाः तयट् ४।२।४६।

अंहि-कम्पोः नलोपश्च (उणादि)* १।५।५।

अः सनाद्यन्तात् च १।३।८४।

अः स्त्री २।२।७७।

अः स्थाम्नः २।४।४।

अक-खादौ अपान्ते पाठे वा ६।४।११७।

अकाले स्वार्थे ५।२।१००।

अकृच्छ्रे प्रिय-सुखयोर्वा ६।३।८।

अके राजन्य-मनुष्य-यूनाम् ५।३।१६६।

अकः अकि दीर्घः ५।१।१०६।

अक्षात् ऊहिन्याम् ५।१।८७।

अक्ष-इन्द्रे ५।१।१२२।

अक्षो वा १।१।६७।

अक्ष्णः अचक्षुषः ४।४।६१।

अगस्तयः २।४।११२।

अगारान्तात् ठन् ३।४।७१।

अगिलस्य गिले ५।२।८१।

अगुरौ आङः १।१।१११।

अगेः निः (उणादि) १।७।७।

अगोत्रात् आदैजाद्यचः २।४।१०।

अग्नेः स्तुत् ६।४।६८।

अग्नौ चित्या-उपचाय्य-परिचाय्याः

१।१।१३८।

अग्रहे अन्तः २।२।२८।

अग्र-अन्त-पश्चात् इमच् ३।२।८३।

अग्र-अन्त-शुद्ध-शुभ्र-वृष-वराह-अहि-मूषिक-

स्याव-शिखर-अरोकाद् वा ।

४।४।१३३।

अङ्गयुक्तं तिङ् आकाङ्क्षम् ६।३।१२२।

अङ्गि-मदि-मन्दि-कडेः आरन् (उणादि)

३।२१।

अङ्गुलेः दारुणि ४।४।६७।

अङ्गुल्यादिभ्यः ठक् ४।३।८५।

अङ्गि-अतिभ्याम् उरि-इथिनौ (उणादि)

१।६३।

अच आदैज्जेतुः अरक्तविकारे ५।२।३६।

अचः ५।३।१३४।

अचः ६।१।१०।

अचित्ताद् अदेश-कालात् । ३।३।६४।

अचि वा ६।३।४४।

अचि इनु-धातु-भ्रुवाम् य्-वोः इय्-उवौ

५।३।८३।

अचः र-हात् द्वे ६।४।१४१।

अचो वा ५।४।१६१।

अच्छ गत्यर्थ-वदिभिः २।२।३१।

अचि अयुवौ ५।३।११३।

अचि अवङ् ५।१।१२१।

अच् अनाङ् ५।१।१२७।

अजर्यम् संगतम् १।१।११६।

अज-शङ्कु-उत्तर-वारि-जङ्गल-कान्तारादिना

आहृते च ४।१।८६।

अजागृ-णि-श्चीनां सिचि अतङ् आदैच्

६।१।३।

* उणादिप्रकरणे केवलं पादः न अध्यायः, अतस्तत्र प्रथमः अङ्कः पादसूचकः द्वितीयः

सूत्रसूचकः ।

अजाते: शील-आभीक्ष्ण्ययोः १।२।५६। अतः उत् तत्रापिति ५।३।१०३।

अजाद्यतः २।३।१५। अतः कृ-कमि-कंस-कुम्भ-पात्र-कुशा-

अज-अविभ्यां थ्यन् ४।१।८। कर्णीषु ससंख्यस्य ६।४।१०।

अजि-जनि-अति-घसि-रशि-पणे: इण्
(उणादि) १।५७। अतडां णल्-अनुस्-उस्-थल्-अथुस्-अण्-

अल्-व-मा: १।४।११।

अजि-व्रजो: ६।१।६१। अति १।४।४५।

अजे: वी अयु-घञ्-अप्-क्येषु ५।४।८४। अतिङि आच्च तल्लोपे ६।२।१२।

अच्-हनो: सनि झलि ५।३।१३। अतिथे: ण्य: ४।४।३४।

अज्ञात-कुत्सयो: ४।३।६२। अते: शुन: ४।४।८१।

अञ् २।४।६५। अतोऽदेङि ५।१।१०१।

अञ्च: २।३।४। अतोऽप्राच्य-भर्गादिभ्य: २।४।१०६।

अञ्च: ५।४।२५। अतो भिस ऐस् २।१।२।

अञ्चु-युज: १।२।५०। अतो भुवो डुतच् (उणा०) २।४६।

अञ्च: अनवधौ ६।३।८४। अतः अम् २।१।२४।

अञ्चो ने ५।४।११३। अतः लुक् ५।३।६६।

अञ्चो लुक् ४।३।२६। अत्यन्तसहचरिते लोकविज्ञाते ६।३।१३।

अञ्जे: सिच: ५।४।१६८। अत्रानुनासिक: पूर्वस्य ६।४।६।

अञ्जे: अलिच् (उणा०)* १।७३। अत्रि-भृगु-कुत्स-वसिष्ठ-अङ्गिरस्-गोतमात्

अण् ३।२।६३। २।४।१११।

अण् ३।३।४४। अतु-असो: ५।३।११।

अण: (उणा०) १।६। अथर्वण: अण् वेदे ३।३।८१।

अणि ५।३।१६६। अद: ६।२।३८।

अणोऽनुनासिक: ६।४।१५०। अदस: फण्-वुञो: । ५।२।१५।

अणौ चित्तवत्कर्तृकाद् णे: १।४।१३८। अदस: अत्वे दाद् उ द: म: ६।३।११२।

अण् कुटिलिकाया: ३।४।१७। अदादिभ्यो लुक् १।१।८३।

अतः आतः इत् १।४।२। अदिशि अञ्चो वा ४।२।२३।

अतः आदे: ६।२।१२३। अदूरभवे ३।१।६५।

अतः आद् यनि ६।२।३६। अदेश-कालात् अधीते ३।४।७२।

अतः इन् २।४।१६। अद: अनुपदेशे २।२।३२।

अतः (अत्)* इय् १।४।३५। अद्यूते दिव: ६।३।८५।

* 'उणा०' इत्यनेन 'उणादि' सूच्यते ।

+ मूलसूत्रपुस्तकपाठः ।

अद्वौ वा ६।३।११३।	अनपत्ये च ५।३।१७७।
अधः-शिरसोः पदे ६।४।४१।	अनरे वा ३।२।५६।
अधरात् चात् ४।३।४०।	अनाम्नि इवुन् ४।१।३७।
अधातोः कित् अतोऽमुपः आपि ६।१।७०।	अनिङ्गमेः इट् ५।४।१२१।
अधिकम् ४।२।७६।	अनियोगे एवे ५।१।६६।
अधीष्टी १।३।१२६।	अनुः सामीप्य-आयामयोः २।२।६।
अधृष्ट-अकार्ययोः शालीन-कौपीने ४।१।८२।	अनुकरणम् २।२।२६।
अधेः शक्तौ १।४।७६।	अनुक-अभिक-अभीकम् कमिता ४।२।८०।
अध्यात्मादिभ्यः ३।३।२६।	अनुक्तपुंस्कात् आत् च ६।१।७३।
अध्याय-अनुवाकयोर्लुक् वा ४।२।१५४।	अनुगवम् आयामे ४।४।६६।
अध्यायेष्वेव ऋषेः ३।३।४१।	अनुगु अलम् ४।२।१८।
अधि-उपरि-अधसां सामीप्ये ६।३।३।	अनुना २।१।५६।
अध्रुवे स्वाङ्गे १।३।१४६।	अनुपदं वद्धा ४।२।१३।
अध्वर्युक्रतूनाम् अनपुंसकानाम् २।२।५१।	अनुपदी अन्वेष्टा ४।२।६५।
अध्वानं यच्च ४।२।१६।	अनुपाख्ये ५।२।६६।
अनः २।३।८।	अनुवादे चरणानां स्था-इणोः लुङि २।२।५०।
अनः ४।४।६१।	अनुशतिकादीनाम् ६।१।३०।
अनंशचिह्नम् इत् १।१।५।	अनुस्वारः ६।४।७।
अनचि ६।४।१४२।	अनुस्वारस्य ययि यम् ६।४।१५१।
अनञ्समासे क्त्वः ल्यप् ५।४।६।	अनृषेः गुरुपोत्तमाद् गोत्रे अणिञोः २।३।८२।
अनत्याधाने उरसि-मनसि-मध्ये — पदे-निवचने २।२।३७।	अनेकम् अन्यार्थे २।२।४६।
अनद्यतने लङ् १।२।७७।	अनेकाचः लिटः आम् कृ-भू-अस्तिलिट् चानु १।१।५१।
अनद्यतने लुट् १।३।३।	अनेहस्-अङ्गिरस्-अप्सरसः (उणादि) ३।६६।
अनतोः ज्ञः १।४।११३।	अनः अन्ते च ६।४।११८।
अनन्त-आवसथ-इतिह-भेषजात् ज्यः ४।४।१०।	अनोः अव्याप्यात् १।४।६४।
अनन्त्यस्यापि प्रश्न-आख्यानयोः ६।३।१३०।	अनो लोपः २।२।७६।
अनन्त्येऽपि हे-है ६।३।११७।	अनस्-अश्म-अयः-सरसां जाति-नाम्नोः ४।४।७६।

अन्तःपूर्वात् तदथात् ठञ् ३।३।२४।
 अन्तरः अयनस्य च अदेशे ६।४।१२१।
 अन्तर्-ब्रहिभ्याम् लोमनः ४।४।१०१।
 अन्तर्वन्ती गर्भिण्याम् २।३।२८।
 अन्तिकस्य तमे तादेः ५।३।१४५।
 अन्ते ६।४।१३१।
 अन्त्याऽजादेः ५।३।१३८।
 अन्नात् णः ३।४।८४।
 अन्यार्थे २।३।३२।
 अन्यार्थे नाम्नि २।२।१४।
 अन्यार्थे वा २।३।६।
 अन्येषाम् अपि ५।२।१४५।
 अन्वग् आनुकूल्ये २।२।४५।
 अन्वादेशे ६।३।२०।
 अपगुरः णमुलि ५।१।५५।
 अपचितिः ५।४।१५७।
 अपमित्य कक् ३।४।२१।
 अपरस्पराः सातत्ये ५।१।१४१।
 अपवदः १।४।१२७।
 अपस्किरः १।४।६०।
 अपात् चतुष्पात्-शकुनिषु हृष्ट-अन्न-
 कुलायार्थिषु ५।१।१४०।
 अपादादौ पदात् एकवाक्ये ६।३।१५।
 अपोनपात्-अपांनपातोः तृ चातः
 ३।१।२६।
 अपः भि ६।२।६८।
 अप्-तृ-स्वसृ-नप्तृ-नेष्टृ-त्वष्टृ-क्षत्-होतृ-
 पोतृ-प्रशास्तृणाम् ५।३।६।
 अप् पूरण्याः तासु ४।४।६६।
 अप्राणिजातीनाम् २।२।५३।
 अप्राणिनाम् अरज्ज्वादिभ्यः २।३।७६।
 अप्रादेः ज्ञः १।४।१२६।

अप्रादेर्वा १।४।८६।
 अव्दादयः (उणादि) २।६१।
 अब्राह्मणात् २।४।१२०।
 अभाव-कर्मणोः अनो ये ५।३।१६८।
 अभिजित्-विदभृत्-शालावत्-शिखावत्-
 शमीवत्-ऊर्णावत्-श्रुमद्भ्यः अपत्याणः
 यञ् ४।३।६५।
 अभिनिष्ठानो वर्णे ६।४।७३।
 अभिविधौ इनुण् १।३।७३।
 अभिविधौ संपदा च सातिर्वा
 ४।४।३७।
 अभूततद्भावे कृ-भू-अस्तियोगे विकारात्
 च्विः ४।४।३५।
 अभेः अविदूरे ५।४।१५३।
 अभ्यमित्रं छश्च ४।२।२०।
 अमद्राणां दिशः ६।१।२४।
 अमनुष्यात् २।२।७०।
 अमावसो वा १।१।१३४।
 अमावस्यार्थात् अश्च ३।३।५।
 अमि-चि-मिदेः त्रक् (उणादि) ३।४०।
 अमि-नक्षि-कडिभ्यः अत्रच् (उणादि)
 ३।३८।
 अमि पूर्वः ५।१।११३।
 अमू अमी ५।१।१२६।
 अमेः अतिः (उणादि) १।८६।
 अमेः भुक् च (उणादि) ३।१।१०।
 अम्बा-अम्ब-गो-भूमि-द्वि-त्रि-कु-शेकु-शङ्कु-
 अङ्गु-मञ्जि-पुञ्ज-वर्हिस्-दिवि-अग्निभ्यः
 स्थः ६।४।८४।
 अम्बार्थानाम् अडलेकानां ह्रस्वः ६।२।४५।
 अम् सौ संबुद्धौ ५।४।५१।
 अयःशूल-दण्डाजिनाभ्यां ठक् ४।२।८२।

अयानयं नेयः ४।२।१४।	अल्पे ४।३।६६।
अय् आम्-अन्त-आलु-आय्य-इत्तुषु	अल्पे ४।४।१२५।
५।३।६६।	अल्लोपः अनः ५।३।१३०।
अयि रः ५।१।५।	अवक्रयः ३।४।५२।
अरण्यात् पथि-न्याय-अध्याय-हस्ति-नर-	अवद्य-पण्य-वर्याः गर्ह्य-विक्रय-अनि-
विहारेषु ३।२।४३।	रोधेषु १।१।११२।
अरुप्-मनस्-चक्षुप्-चेतस्-रहस्-रजसां	अवधौ अहाक्-रुहोः ४।३।६।
लोपश्च ४।४।३६।	अवधेः पञ्चमी २।१।८१।
अरुषः ५।२।७६।	अवरस्य अव् ४।३।३३।
अर्धात् ४।४।३२।	अवाते निर्वाणः ६।३।८६।
अर्चि-हु-सृपि-च्छदि-च्छदिभ्यः इसिः	अवात् कुटारच्च ४।२।३१।
(उणादि) ३।८६।	अवात् त्रश्च १।३।२७।
अर्तेः पिशन् (उणादि) ३।५४।	अवात् औजित्य-आलम्बन-अविदूर्गेषु
अर्तेः अण्यच् (उणादि) २।११५।	६।४।५३।
अर्तेः अत्तिच् (उणादि) १।७२।	अवात् गिरः १।४।६८।
अर्तेः उच् च (उणादि) ३।१११।	अवात् वृंहः (उणादि) २।५५।
अर्तेः ऊच् च (उणादि) १।१६।	अवात् वर्षविवन्धे १।३।४१।
अर्थमात्रे प्रथमा २।१।६३।	अवेः टिषच् (उणादि) ३।६१।
अर्थे वा ५।२।११८।	अव-उदः १।३।१६।
अर्धात् परिमाणस्य पूर्वस्य तु वा ।	अवोद-एथ-ओद्य-प्रथय-हिमश्रथाः
६।१।३६।	५।३।३३।
अर्धात् यत् ३।२।६६।	अव्यक्तानुकरणस्य अनेकाचः अतः इती
अर्यः स्वामि-वैश्ययोः १।१।११४।	५।१।१०२।
अर्श आदिभ्यः अच् ४।२।१४७।	अव्यक्तानुकरणाद् अनेकाचः अनितौ डाच्
अर्हति ४।१।७४।	४।४।४१।
अर्ह-शक्त्योः १।३।१२८।	अव्यादयः (उणादि) १।६०।
अलम्-खल्वोः प्रतिषेधे क्त्वा वा	अव्याप्यस्य मुच्चेः ओद् वा ६।२।११०।
१।३।१२६।	अव्याप्यात् १।४।७०।
अलिटि व्यः ५।१।५०।	अव्याप्यात् १।४।८१।
अलि-इषः कीकन् (उणादि) २।१८।	अव्याप्यात् १।४।६१।
अलुकि ५।३।३।	अव्याप्याद् वा १।४।१३७।
अलुकि वा ६।४।७२।	अशब्दे यत्-त्रौ च ३।३।३२।
अलुक् उत्तरपदे ५।२।१।	अशाला २।२।७१।

अशि-लटि-कणि-खटि-विशेः क्वन् (उणादि)

२।६१।

अशेः नित् (उणादि) १।६७।

अश्नोतेः ६।२।१२५।

अश्ववड्वौ २।२।६४।

अश्वात् छः ३।१।५२।

अश्वादिभ्यः फञ् २।४।३१।

अश्वात् एकाहगमे खञ् ४।२।५।

अपडक्ष-आशितंगु-अलंकर्म-अलंपुरुष-अध्य-
न्तात् ४।२।२२।

अषष्ठी-तृतीयस्य आशीर्-आशा-आस्था-

आस्थित-उत्सुक-ऊति-रागेषु ५।२।११७।

अष्टका पितृणाम् ६।१।८२।

अष्टनो वा सुपि आत् ५।४।५२।

अष्टाचत्वारिंशतो ड्वुश्च ४।१।११०।

अष्टाभ्यः औश् २।१।२०।

अष्ठिवु-प्वक्कादेः षः सः ५।१।६१।

अष्ठिवत्-चक्रीवत्-कक्षीवत्-उदन्वत्-रुम-
ण्वत्-चर्मण्वती ६।३।३६।

अस् ४।३।३२।

असंख्यं वा अनभिप्रेताख्याने क्त्वा

२।२।४१।

असंख्यं विभक्ति-समीप-अभाव-ख्याति-

पश्चात्-यथा-युगपत्-संपत्-साकल्यार्थे

२।२।२।

असंख्याच्च अङ्गुलेः अनन्यासंख्यार्थे

४।४।७४।

असर्व-असंख्य-एकदेशात् टे ५।३।१४२।

असौ असुकः असकौ ५।४।७१।

असुक् च अत्तुम् ६।२।६१।

असु-तृपः कालेषु विच्छेदे १।३।१४६।

असुन् (उणादि) ३।१००।

असु-पत-वचाम् थुक्-पुम्-उमः ६।२।६६।

असूया-सम्मत्योः पूर्वम् ६।३।१२४।

असेः उरन् (उणादि) ३।३।

अस्ति नास्ति दिष्टम् इति मतिः

३।४।६१।

अस्ति-सिचः अलः ६।२।३६।

अस्तेः भूः ५।४।७६।

अस्त्री-शूद्रप्रत्यभिवादे ६।३।११६।

अस्थि-दधि-सक्थि-अदणाम् अनङ्

५।४।३१।

अस्-दा-धां हौ एत् अद्विश्च ५।३।११५।

अस्मदि उत्तमम् १।४।१४७।

अस्-माया-मेधा-स्रजो विनिः ४।२।१३७।

अस्य च्वौ ६।२।८५।

अहः-सर्व-एकदेश-संख्यात-पुण्य-वर्षा-

दीर्घाच्च रात्रेः ४।४।७५।

अहशो वनो र च २।३।५।

अहः असुदिन-पुण्यात् २।२।८२।

अहनः ६।३।६६।

अहनः खे ५।३।१४१।

अहनः अतः ६।४।१०६।

आः सर्वादीनाम् ५।२।१०८।

आकर्षादिषु कुशलः ४।२।६८।

आकस्मिके ४।३।८३।

आकालात् ठंश्च ४।१।१२६।

आक्रोशे नञः अनिः १।३।६४।

आक्रोशे नि-अवात् ग्रहः १।३।३५।

आखनि-वंहेः नलोपश्च (उणादि)

१।२०।

आगन्तोर्वा ४।४।१२४।

आग्नीध्रं शरणे ३।३।१०१।

आग्रहायणी-अश्वत्थात् ठक् ३।१।१६।

आडो ज्योतिरुद्रतौ १।४।८६।
 आडो णिच्च (उणादि) ३।८६।
 आडः दः १।४।५४।
 आडः अन्धु-ऊघसोः ५।१।३५।
 आडः यम-हनः स्वाङ्गाप्याच्च
 १।४।७३।

आडो यि ५।४।१६।
 आडो रु-प्लोः १।३।४२।
 आङ्-माङः ५।१।७१।
 आचार्यानी २।३।४६।
 आत् शी-ङ्योः ५।४।३४।
 आज्ञायिनि ५।२।७।
 आत् ६।४।२५।
 आतः १।४।४२।
 आतः ५।३।१३६।
 आतः प्रादिभ्यः १।१।१४२।
 आतो णल औः १।४।१४।
 आतः अन्तः-प्रादिभ्यः १।३।८७।
 आतः अप्रादेः कः १।२।२।
 आतः युक् अणलि ६।१।४१।
 आतः युच् १।३।१०५।
 आत्मनः पूरणे ५।२।६।
 आत्मनि खश्च १।२।६१।
 आत्म-अध्वनोः खे ५।३।१६७।
 आथर्वणः ३।३।६३।
 आत् अदेङ् ५।१।८२।
 आत् आमः साम् २।१।६।
 आदितः ५।४।१४१।
 आदिरिता समध्यः १।१।१।
 आदेः १।१।६।
 आ-अदेङ् यङि ६।२।१३२।
 आदेशछन्दसः प्रगाथे ३।१।३३।

आदैजाद्यचः छः ३।२।२४।
 आदैजाद्यचो ज्यङ् २।४।६८।
 आदैजेवाद्यटः ५।१।८३।
 आद्यात् २।४।१७।
 आद्यात् अचः ५।१।३।
 आद्यादिभ्यः ४।३।६।
 आधारान् १।१।२६।
 आने मुक् अतः ५।४।१७५।
 आत् महतः जातीय-एकार्थयोः
 अच्यर्थे ५।२।४६।
 आपः औतः शीः २।१।१७।
 आपत्यस्य अनाति अणादौ
 ५।३।१५५।
 आपो वा ५।३।७१।
 आपो वा ६।२।७२।
 आप्यं वा ३।३।१२३।
 आप्रपदं प्राप्नोति ४।२।१२।
 आवाधे पुंवच्च ६।३।६।
 आभीक्ष्ण्ये णमुल् च १।३।१३२।
 आमः आकम् २।१।३१।
 आमः १।४।१६।
 आमः कृञः प्राग्वत् १।४।११०।
 आमन्त्रितं पूर्वम् असद्वत् ६।३।२४।
 आमयावी ४।२।१३८।
 आम् एतः १।४।२४।
 आयन्-एय्-ईन्-ईय्-इयः फ-ढ-ख-छ-वां
 ण्फाद्यादीनाम् ५।४।२।
 आयस्थानात् आगते ३।३।४७।
 आत्विजीनः ४।१।८१।
 आर्य-क्षत्रियाच्च २।३।५१।
 आहृत् ४।१।२५।
 आलच्-आटच् कृत्सायाम् ४।२।१४६।

इद् दरिद्रः ५।३।१०७।
 इनः स्त्रियाम् ४।४।१४०।
 इनः अचि लोपः ५।४।४१।
 इन्द्र-वरुण-भव-शर्व-रुद्र-मृडानाम्
 आनुक् च २।३।४८।
 इन्द्रियम् ४।२।६७।
 इन्-हन्-पूष-अर्यम्णाम् सौ च
 ५।३।१२।
 इमनिच् (उणादि) ३।८३।
 इयत् कियत् ४।२।४४।
 इरितो वा १।१।७४।
 इलज् देशे ४।२।१०६।
 इवे वतिः ४।१।१३५।
 इवे संज्ञा-प्रतिकृत्योः ४।३।७८।
 इषि-भिदि-व्यधि-गृधि-धृषि-पृ-पृथि-
 मृदेः कुः (उणादि) १।१३।
 इषु-गमि-यमां छः ६।१।१०५।
 इषेः क्तकन् (उणादि) २।१४।
 इषः अनिच्छायाम् १।३।६०।
 इष्टका-इषीका-मालानाम् चित्त-
 तूल-भारिषु ५।२।७४।
 इष्टादिभ्यः ४।२।६४।
 इष्ठ-इम-ईयःसु अन्त्याजादेः
 ५।३।१५८।
 इष्ठे यिक् च ५।३।१६१।
 इसुसुगदोर्भ्यः कः ५।४।४।
 इसुसोः संबन्धे ६।४।३७।
 इस्-मन्-त्रन्-क्विषु ६।१।६०।
 ई घ्रा-ध्मोः ६।२।८४।
 ईच् च गणः ६।२।१४४।
 ईतः सोमः ६।४।६६।
 ईदूदेत् द्विवचनम् ५।१।१२५।

ईत् यति ५।३।७६।
 ईयसः ४।४।१४४।
 ईयिवान् अनाश्चान् अनूचानः
 १।२।७५।
 ईर्ष्यः यिः सन् वा ५।१।७।
 ईश्वरार्थात् अराज्ञः सभा २।२।६६।
 ईश्वरे ४।१।५६।
 ईषदर्थे ५।२।१२३।
 ईषद् गुणेन २।२।२१।
 ईषत्-दुः-सुभ्यः खल् १।३।१०३।
 ई हलि तिङि अदा-धः ५।३।१०६।
 उः ६।२।२६।
 उक्तपुंस्कस्य टादौ वा ५।४।३०।
 उक्षणः ५।३।१७४।
 उ-गवादिभ्यः यत् ४।१।२।
 उगितः २।३।३।
 उगितः ५।२।४४।
 उग्र-असूर्याद् दृशः १।२।२१।
 उञ् ५।१।१३०।
 उञ्छति ३।४।२६।
 उणादयः १।३।१।
 उत-अप्योः वाढार्थे लिङ्
 १।३।११७।
 उता सवर्गः १।१।२।
 उतः असंयोगात् अधातोः
 ५।३।१००।
 उत्कः उन्मनाः ४।२।८५।
 उत्तरस्य ५।२।६६।
 उत्तरस्य ६।१।२१।
 उत्थापनादिभ्यः छः ४।१।१३२।
 उत्सादिभ्यः अञ् २।४।७।
 उदः ईत् ५।३।१३५।

उदः पच-पत-मदः १।२।६१।
 उदः श्वि-यु-पू-द्रुवः १।३।३४।
 उदः स्था-स्तम्भोः तः ६।४।१५४।
 उदन्तात् ४।३।६८।
 उदन्यः ६।२।८६।
 उदरे ये ५।२।१०५।
 उदः चरः साप्यात् १।४।१०६।
 उदितो वा ५।४।११७।
 उदुपान्तस्य शब्दतः भाव-आरम्भयोः वा
 ६।२।१८।
 उदः अनुध्वेहायाम् १।४।६६।
 उदः ओष्ठ्यात् ५।४।६।
 उन्देः नलोपश्च (उणादि) २।६८।
 उपकादिभ्यो वा २।४।११४।
 उपज्ञा-उपक्रमं तदादित्वे २।२।६८।
 उपत्यका-अधित्यके ४।२।३५।
 उपदंशः तृतीयायाम् १।३।१३६।
 उपदेशो अच्-हन-ग्रह-दृग्भ्यः स्य-सिच्-सी
 युट्-तासां भाव-आप्ययोः चिण्वद्
 इट् वा ५।३।७३।
 उपधेः ४।१।२०।
 उपमानात् ४।४।१२६।
 उपमानात् कर्तुश्च १।३।१३८।
 उपमानाद् अप्राणिनि ४।४।८२।
 उपमानाद् आचारे १।१।२५।
 उपमानादेः २।३।६५।
 उपयमः उद्वाहे १।४।१०६।
 उपरि उपरिष्ठात् ४।३।३०।
 उपाजे अन्वाजे २।२।३५।
 उपात् १।४।१३६।
 उपात् स्तुतो ५।४।२०।
 उपादेः ठक् ३।३।३६।
 उपाद् भूषण-समवाय-यत्न-वेकृत्य-अध्या-
 हारेषु ५।१।१३७।

उपान्तस्य ५।४।८।
 उपान्तस्य ६।२।२४।
 उपात् मन्त्रेण १।४।६७।
 उपालम्भे ६।३।१२१।
 उपेन २।१।५६।
 उभयाद् द्युश्च ४।३।१८।
 उभात् ४।२।४८।
 उमा-ऊर्णात् वा ३।३।११८।
 उरगः १।२।३६।
 उः अत् ६।२।११८।
 उरसा अण् च ३।४।६६।
 उरसः अग्रे ४।४।७८।
 उः ऋत् ६।१।६५।
 उरोभ्यः कप् ४।४।१३६।
 उलूकादयः (उणादि) २।२२।
 उल्कादयः (उणादि) २।४।
 उ-श्नोः ६।२।२।
 उवासा उवसः ५।२।२८।
 उषि-कुषि-गा-अतिभ्यः थन्
 (उणादि) २।५६।
 उषि-रञ्जि-शृभ्यः कित् (उणादि)
 ३।१०१।
 उषि-सू-मूभ्यः कित् (उणादि) ३।३७।
 उषि-इण्-अवि-कृषि-तृषि-बुधि-रति-धा-
 पृभ्यः नक् (उणादि) २।७५।
 उषेः जश्च (उणादि) ३।१०४।
 उष्ट्रात् वुञ् ३।३।११७।
 उष्णात् ४।२।७७।
 उसि अनादौ ५।१।१००।
 ऊँ ५।१।१३१।
 ऊङ् ५।२।४५।
 ऊङ् उतः २।३।७५।

ऊठि ५।१।८६।

ऊति-यूति-जूति-साति-हेति-कीर्तयः

१।३।७५।

ऊद् गोहः अचः ५।३।६३।

ऊधसः नश्च २।३।६।

ऊरोः उपमा-संहित-सहित-सह-शफ-

वाम-लक्ष्मणादेः २।३।७६।

ऊर्णा-अहम्-शुभंभ्यः ४।२।१५२।

ऊर्णोः डः (उणादि) २।३।८।

ऊर्ध्वं दधन्ट्-द्वयसट् च ४।२।३६।

ऊर्ध्वाद् वा ४।४।१२०।

ऊर्मि-रश्मि-भूमयः (उणादि) १।६।५।

ऊर्यादिकारिकाच्चि-डाचः

क्रियार्थैः २।२।२५।

ऊषादिभ्यः रः ४।२।१११।

ऋलृक् प्रत्याहारसूत्र (शिवसूत्र २)

ऋकोऽणो रलौ १।१।१५।

ऋगयनादिभ्यः ३।३।४५।

ऋचः ४।४।५८।

ऋचः शि ५।२।६०।

ऋच-रुच-याच-त्यजाम् ६।१।६४।

ऋणे पञ्चमी २।१।६६।

ऋतः ईयङ् १।१।४८।

ऋतः उत् ५।१।११७।

ऋतः कञ् ३।३।५०।

ऋतः संयोगादेः ५।४।१०६।

ऋत-तृष-मृष-कृशां वा ६।२।२०।

ऋतः तत्र-आनङ् ५।२।२१।

ऋतः तासि नित्यानिटः थलः

५।४।१६०।

ऋतुमती उपसर्गा १।१।११५।

ऋ-त-सृ-धृ-धमि-अशि-अवि-वृति-ग्रहेः

अनिः (उणादि) १।७।४।

ऋते तृतीयासमासे ५।१।६०।

ऋते द्वितीया च २।१।८४।

ऋतः डि-सुटि अत् ६।२।६४।

ऋतः अचि वा ६।१।२।

ऋतः रः अचि ५।४।६६।

ऋतः ल-यौ ४।३।६७।

ऋतः विद्या-योनिसम्बन्धात् तत्र

५।२।१८।

ऋति ऋतः ऋर्वा ५।१।१०७।

ऋतुआदयः (उणादि) १।२।५।

ऋत्वादिभ्यः अण् ४।१।१२४।

ऋत्विग्भ्यः छः ४।१।१५१।

ऋदुपान्ताद् अक्लृपि-चृतः १।१।१२१।

ऋत्-उशनस्-पुरुदंशस्-अनेहसाम् चानङ्

सौ ५।४।४५।

ऋद्-लृति अकः ५।१।१३३।

ऋ-नः डीप् २।३।२

ऋ-पृ-भृ-मा-हाङाम् इत् ६।२।१२८।

ऋ-पृ-वपि-यजि-धनि-त्रपेः

नित् (उणादि) ३।६२।

ऋ-मञ्जि-पीयि-हृनि-अग्निभ्यः

ऊषन् (उणादि) ३।५७।

ऋ-महिष्यादिभ्य अण् ३।४।५०।

ऋ-री-व्ली-ह्ली-क्तूयी-क्षमायि-

आतां पुग् णौ ६।१।४५।

ऋ-वृ-व्येञ्-अदः ५।४।१६४।

ऋ-श्चि-दृशः अङि ६।२।६८।

ऋषभ-उपानहो ज्यः ४।१।१७।

ऋषि-कुरु-वृष्णि-अन्धकात् २।४।४४।

ऋषि-वृषि-रासि-वल्लेः कित्

(उणादि) २।६४।

ऋषि-वृषि-स्तुभ्यः सक्

(उणादि) ३।६४।

ऋषेः पौत्रादौ २।४।२३।
 ऋषौ मित्रे ५।२।१३१।
 ऋ-संयोगाद्योः अत् ६।२।८१।
 ऋ-सूत्रि-मूत्रि-सूचि-अट्-अश्-
 ऊर्णुभ्यः १।१।४१।
 ऋ-सृ-शास्-असु-ख्या-वचः अङ्
 १।१।७०।
 ऋ-स्तु-सु-हु-धृ-क्षि-क्षु-भा-या-पदि-यक्षि-
 णीभ्यो मन् (उणादि) २।१००।
 ऋ-स्मि-पूङ्-अङ्ग-अशः सनः
 ५।४।१७१।
 ऋ-हनः स्ये ५।४।१६७।
 ऋ-हलो ण्यत् १।१।१३०।
 ऋत इद् धातोः ५।४।७।
 ऋत्-ऋल्-ऋणाम् ६।२।६७।
 ऋत्-ओः अप् १।३।४७।
 ऋ-ल्वादिभ्यः क्तिनश्च ६।३।७६।
 लृति लृः ५।१।१०८।
 लृदिद्-द्युतादि-पुष्यत्यादिभ्यः अतङि
 १।१।७३।
 एओङ् प्रत्याहारसूत्र (शिवसूत्र ३)
 एककर्तृकयोः पूर्वात् १।३।१३१।
 एक-गोपूर्वात् ठञ् ४।२।१२२।
 एक-द्वि-बहुषु १।४।१४८।
 एकवचनस्य ते-मे ६।३।१८।
 एकशालायाः ठच् च ४।३।८६।
 एकस्य सुप्लुक् ६।३।५।
 एकहलादौ भाण्डे वा ५।२।६६।
 एकागारात् चौरे ४।१।१२८।
 एकाचः ३।३।११०।
 एकाचः अश्चि-श्चि-डी-शीङ्-ऊ-
 ष्वादिषट्कात् ५।४।१३०।

एकाचः हलादेः क्रियार्थाद् भृश-
 आभीक्ष्ण्ये यङ् १।१।४०।
 एकात् ५।३।१४४।
 एकाद् अन्न-अदनौ संख्यायाम्
 ५।२।६४।
 एकाद् आकिनिच् चासहाये
 ४।२।६७।
 एकादेर्लुक् च ३।४।८०।
 एङाद्यचः प्राग् देशात् ३।२।२५।
 एङि पररूपम् ५।१।६५।
 एङः अच् च ६।२।६२।
 एङोऽति पदादौ ५।१।११५।
 एङ्-ह्रस्वात् संबुद्धौ अतः ५।१।६८।
 एचः प्रशान्त-पूजा-विचार-प्रत्यभिवादेषु
 आत् इत्-उत्परः ६।३।१३१।
 एचि ५।१।८४।
 एचः अय्-अव्-आय्-आवः ५।१।७५।
 एचः अशिति आत् ५।१।४६।
 एजेः खश् १।२।११।
 एणी-कोशात् ढञ् ३।३।११६।
 एतः ईत् ६।३।११४।
 एतत्-तदोः सुलोपः अकोः अनञ्स-
 मासे हलि ५।१।१३४।
 एतस्य चान्वादेशो द्वितीयायां
 चैनः ५।४।७६।
 एति संज्ञायाम् अकोः ६।४।८५।
 एतेः गाः ५।४।६२।
 एधा ४।३।२४।
 एनपा २।१।५३।
 एनप् अद्वरे वा ४।३।४१।
 एरक् २।४।६२।
 एः अक्तिनः २।३।४२।

ए: अच् १।३।४५।
 ए: असंयोगात् अनेकाचः ५।३।८८।
 ऐ रौच् प्रत्याहारसूत्र (शिवसूत्र ४)
 ऐक्यम् ४।३।२२।
 ऐकार्थ्ये २।१।३६।
 ऐजभाविनो यत्र: पदान्तात् प्राग् ऐच्
 ६।१।१४।
 ऐषमस्-ह्यस्-श्चसो वा ३।२।१५।
 ओ: पु-यण्-जि अपरे ६।२।१३०।
 ओजस्-सहस्-अम्भस्-तपस्-अञ्जसः
 तृतीयायाः ५।२।५।
 ओजस्-सहस्-अम्भसा वर्तते ३।४।२६।
 ओजस्-अप्सरसोः ६।२।१०३।
 ओत् ५।१।१२८।
 ओतः अम्-शसोः आत् ५।१।६२।
 ओदनात् ठट् ३।४।६८।
 ओदितः ६।३।८०।
 ओम्-आङोः ६।१।६६।
 ओ: आवश्यके १।१।१३२।
 ओ: ओत् ५।३।१४७।
 ओर्गुणाद् अखरु-संयोगोपान्तात् २।३।४३।
 ओर्देशात् ३।२।३१।
 ओलोपः श्ये ६।१।६६।
 ओषधेः अजाती ४।४।२०।
 ओष्ठ-ओत्वोः समासे वा ५।१।६७।
 ओसि ६।२।४२।
 औदरिकः अलसे ४।२।७२।
 औ-शस्-अम्सु ५।४।५५।
 कम्-शम्भ्याम् ४।२।१४६।

कंस-अर्धात् ठट् ४।१।२६।
 ककुत् ककुदस्य अवस्थायाम् ४।४।१३४।
 क-खोपान्त-कन्था-पलद-नगर-ग्राम-
 ह्रदान्तात् छे ३।२।५४।
 कचे छः (उणादि) २।३१।
 कच्छ-अग्नि-वक्त्र-^१वर्तन्तात् ३।२।४०।
 कच्छादिभ्यः ३।२।४८।
 कटादेः प्राच्यात् ३।२।५३।
 कठ-चरकात् लुक् ३।३।७४।
 कठि-चकिभ्यां ओरः (उणादि) ३।३४।
 कठिनान्त-प्रस्तार-संस्थानात् व्यवहरति
 ३।४।७३।
 कणादीनाम् ६।१।६४।
 कणे-मनसी तृप्तौ २।२।२६।
 कण्ड्वादिभ्यो यक् १।१।३६।
 कतिः संख्यायाम् ४।२।४५।
 कति-गणौ तद्वत् ४।१।३३।
 कतेः २।१।२२।
 कट्यादिभ्यश्च ढकञ् ३।२।५।
 कथादिभ्यः ठक् ३।४।१०४।
 कन्थायाः ठक् ३।२।११।
 कन्थायाः कनीन च २।४।४६।
 कपय् प्रत्याहारसूत्र (शिवसूत्र ११)
 कपाले हविषि ५।२।५०।
 कपि-ज्ञात्योः ढक् ४।१।१४४।
 कपिरिकादीनाम् ६।३।४६।
 कपेः स्थलस्य ६।४।८२।
 कपेः अङ्गिरसे २।४।२७।
 कमि-मनि-जनि-हिभ्यः तुः (उणादि)
 १।२४।

१ रोमनाक्षरैर्मुद्रिते अकाराद्यनुक्रमे 'गर्तन्तात्' इति पाठः ।

कमः अठच् च (उणादि) २।३६।

कमः णिङ् १।१।४६।

कमः अतः उच्च (उणादि) ३।२३।

कम्बोजादिभ्यो लुक् २।४।१०४।

करणे २।१।६३।

कर्क-लोहितात् ईकक् ४।३।८७।

कर्णात् ३।३।३५।

कर्णादीनां मूले जाहच् ४।२।२५।

कर्णे चिह्नस्य अविष्ट-अष्ट-पञ्च-भिन्न
-छिन्न-च्छिद्र-सुव-स्वस्तिकस्य

५।२।१३६।

कर्तरि चारम्भे १।२।६८।

कर्तरि ण्वुल्-तृच्-अचः १।१।१३६।

कर्तरि तृतीया २।१।६२।

कर्तरि शप् १।१।८२।

कर्तुः उपमानात् १।२।५८।

कर्तुः विप् १।१।२७।

कर्तृस्थामूर्ताऽऽप्यात् १।४।८३।

कर्तृ-आप्याभ्यां च भू-कृञः १।३।१०४।

कर्मणः उक्ञ् ४।१।१२२।

कर्मणि घटते अठच् ४।२।३६।

कर्मणः अशीले ५।३।१७०।

कर्मन्द-कृशाश्वाभ्यां भिक्षु-नटसूत्रम्

इनिः ३।३।७७।

कर्म-वेशात् यत् ४।१।११६।

कर्माध्ययने वृत्तम् ३।४।६४।

कलापिनः अण् ३।३।७५।

कलापि-वैशम्पायनशिष्येभ्यः ३।३।७३।

कलापि-अश्वत्थ-यववुसात् वुन् ३।३।१४।

कलाप्यादीनाम् ५।३।१४०।

कल्पे ३।३।८०।

कल्याण्यादीनाम् इनङ् २।४।५६।

कवङ् च उष्णे ५।२।१२५।

कवचिनश्च ठक् ३।१।४७।

कवर-मणि-विष-शरात् २।३।६४।

कश्च दः ४।३।५७।

कषेः छश्च (उणादि) १।४४।

कष्ट-कक्ष-सत्र-गहनाय पापे क्रमणे

१।१।३२।

कस्कादयः ६।४।४५।

कस्य इत् ३।१।२२।

कांस्य-पारशवौ ३।३।१२६।

काक्ष-पथोः ५।२।१२२।

काण्ड-अण्डात् ईरच् ४।२।११५।

काण्डात् अक्षेत्रे २।३।२५।

कादेः बहुलम् ५।३।१४६।

कान् कानि ६।४।४।

कारकं बहुलम् २।२।१६।

कारक-असंख्यात् ओश्च सुपि असुधियः

५।३।८६।

कारूणाम् २।२।५६।

कारे अस्तु-सत्य-अगदस्य ५।२।७७।

कार्षापिण-सहस्र-सुवर्ण-शतमानात् वा

४।१।३६।

कार्षापिणात् ४।१।२७।

काल-समय-वेलासु लिङ् यदि १।३।१२७।

काल-हेतु-फलात् नाम्नि ४।२।८६।

कालात् ४।१।६२।

कालाक् ४।४।१५।

कालात् कार्यं च भववत् ४।१।११४।

कालाद् देयम् ऋणम् ३।३।१३।

कालात् यत् ४।१।१२५।

कालेभ्यः ३।२।७१।

कालेभ्यो भववत् ३।१।३१।

काश्यप-कौशिकाभ्याम् ऋषिभ्यां कल्पं
च णिनिः ३।३।७१।

कुणि-पीभ्यां कालन् (उणादि) ३।५०।

काश्यादिभ्यः जिकश्च ३।२।३३।

कुण्डादयः (उणादि) २।४०।

कास्-अय-दय्-आसः १।१।५३।

कुण्डिनाः २।४।१०८।

कासू-गोणीभ्यां ष्टरच् ४।३।७३।

कुतुपः ४।३।७२।

किंकिल-अस्त्यर्थयोः लृट् १।३।११२।

कुतः अतः इतः ४।३।८।

किञ्चिदूने कल्पप्-देश्य-देशीयरः

कुप्य-आज्य-भिद्य-उद्धय-सिध्य-

४।३।५४।

युग्यानि नास्ति १।१।१२७।

किम्-जराभ्यां शृ-इणः (उणादि) १।३।

कु-प्रादयः असुप्-विधौ नित्यम्

किम्-यद्-अन्याद् अनद्यतने हिल् वा

२।२।२४।

४।३।१५।

किङ्किणीकादयः (उणादि) २।१६।

कु-प्वोः)(क ०० पौ ६।४।३१।

कितः संशय-चिकित्सयोः १।१।१८।

कुमदेकाचः ६।४।११३।

किति च हनः ५।३।६७।

कु-महद्भ्यां ब्राह्मणः ४।४।८७।

किति चापत्यादौ अचामादेः

कुम्बि-चर्चिभ्याम् १।३।८८।

६।१।११।

कुम्भपद्यादयः ४।४।१२८।

किति तेषाम् ५।१।२०।

कुरु-च्छुरोः ६।३।१११।

किमः कः ५।४।६६।

कुरु-नादिभ्यो ण्यः २।४।१०१।

किमि लृट् च १।३।११०।

कुरु-युगन्धरात् ३।२।४५।

किम्-ए-तिङ्-असंख्यात् आमन्तौ

कुर्वादिभ्यो ण्यः २।४।८४।

अद्रव्ये ४।३।४६।

कुलटाया वा २।४।५७।

किरादि-श्रन्थ-ग्रन्थ-सनाम् आप्ये

कुलत्थ-कोपान्तात् अण् ३।४।४।

१।४।१००।

कुलनाम्नः २।३।८३।

किरो लवने ५।१।१३८।

कुलात् ढकञ् च २।४।७२।

किल्बिषादयः (उणादि) ३।६२।

कुलालादिभ्यो वुञ् ३।३।८४।

किशरादिभ्यः षण् ३।४।५५।

कुलिजाद् वा ४।१।७१।

कीनाश-दाश-अङ्कुशाः (उणादि)

कुल्माषाद् अण् ४।२।८८।

३।५६।

कुवः कवन् (उणादि) ३।१७।

कुञ्जादिभ्यः पञ्च २।४।३३।

कुश-अग्रात् छः ४।३।८२।

कुटादीनाम् अङ्गिति ६।२।१३।

कुषि-रजः आप्ये १।१।६१।

कुटी-शमी-शुण्डाभ्यो रः ४।३।७१।

कुषेः सिक् (उणादि) १।६६।

कुटेः कमलच् (उणादि) ३।४८।

कु-होः चुः ६।२।११६।

कूलाद् उदो रुजि-वहः १।२।१५।

कूल-अभ्र-करीषाच्च कषः १।२।२६।
 कृकण-पर्णात् भारद्वाजात् ३।२।५७।
 कृकाद् वचः कश्च (उणादि) १।४।
 कृच्छ्र-गहनयोः कषः ५।४।१५०।
 कृजः करणे ख्युन् १।२।४७।
 कृजः कर्तरि १।३।६६।
 कृजः पासप् (उणादि) ३।६६।
 कृजादिभ्यः वुन् (उणादि) २।२०।
 कृजा द्वितीय-तृतीय-शम्ब-बीजात्
 कृषौ ४।४।४२।
 कृजा वा २।२।३४।
 कृजि वा ६।४।४३।
 कृजो ये च ५।३।१०२।
 कृजः असुटः ५।४।१५६।
 कृजी हेतु-शील-अनुलोमेषु १।२।७।
 कृति-भिदि-लतेः क्तिकन्
 (उणादि) २।१३।
 कृतेः सुक् च (उणादि) २।७६।
 कृ-दा-धा-रा-अचिभ्यः कः
 (उणादि) २।३।
 कृपो रो लः अकृपणादीनाम् ६।३।४१।
 कृ-भू-तनेः कित् (उणादि) २।१६।
 कृ-वा-पा-जि-मि-स्वदि-साधि-अशूभ्यः
 उण् (उणादि) १।१।
 कृ-वृ-तृ-यमि-दारि-अर्जेः उनन् (उणादि)
 २।८०।
 कृ-वृ-तृ-स्वपि-सि-द्रुभ्यः नन् (उणादि)
 २।७४।
 कृ-वृ-षि-मृजि-शंसि-दुहि-गुहः १।१।१२५।
 कृ-व्रज-यजः १।३।८०।
 कृषः अचश्चाद् वा (उणादि) २।७।
 कृष्यादिभ्यो वल्च् ४।२।११६।

कृ-ग्रोः उच् च (उणादि) १।१५।
 कृ-तृ-कृपेः कीटन् (उणादि) २।३४।
 कृ-तृ-भ्याम् ईषन् (उणादि) ३।५६।
 कृ धान्ये १।३।२१।
 कृ-पृ-व्रजि-मण्डि-निधाजः क्युः (उणादि)
 २।७०।
 कृभ्यः पञ्चभ्यः ५।४।१७२।
 कृ-वृजो अण्डन् (उणादि) २।३७।
 कृ-शृ-गर्देः अभच् (उणादि) २।६३।
 कृ-शृ-शौटिभ्यः ईरच् (उणादि) ३।२७।
 केकय-मित्रयु-प्रलयानां यादेः ईयः
 ६।१।१३।
 के अणो ह्रस्वः ६।२।७०।
 केदारात् यव च ३।१।४६।
 केवल-मामक-भागधेय-पाप-अवर-समान-
 आर्य-कृत-सुमङ्गल-भेषजात् नाम्नि
 २।३।२७।
 केशादिभ्यो वः ४।२।११३।
 केशाद् वा ३।१।५१।
 कोः कद् अचि उत्तरार्थे ५।२।११६।
 कोपस्थाने अनाप्ये २।१।७६।
 कोपान्ताद् अण् ३।२।४७।
 कोश्च आदेश-सनादि-शासि-वसि-घसां सः
 ६।४।४६।
 कौपिञ्जल-हास्तिपदाद् अण् ३।३।६७।
 कौमारी प्राथम्ये ३।१।११।
 कौरव्य-आसुरि-माण्डुकात् २।३।२१।
 किङ्कति ५।३।३८।
 किङ्कति ६।२।११।
 क्तवतुः १।२।६६।
 क्तात् अनात्यन्तिके ४।४।१६।
 क्तात् अल्पोक्ती २।३।५६।

कित्तिचि दीर्घश्च ५।३।५१।

कित्तिनि ६।३।६३।

कित्त्व स्कन्द-स्यन्दोः ५।३।५२।

क्नः असित-पलितात् २।३।३५।

क्यङ् १।१।२६।

क्यङि वा ६।२।१०२।

क्यचि ६।२।८६।

क्य-च्छयोः ५।३।१५६।

क्यस्य वा ५।३।६६।

क्रतु-उक्थादिभ्यः ठक् ३।१।३८।

क्रतौ कुण्डपाय-संचायौ १।१।१३७।

क्रमः ५।४।१२६।

क्रमः कित्त्व ५।३।१६।

क्रमादिभ्यः वुन् ३।१।४०।

क्रमः अतः इत् च (उणादि) १।५३।

क्रमः अतङाने ६।१।१०४।

क्रियः इक्न् (उणादि) २।१७।

क्रियः क्रयार्थे ५।१।८०।

क्रियाऽऽप्ते द्वितीया २।१।४३।

क्री-इङ्-जीनाम् ५।१।६०।

क्रीडः अनु-परिभ्यां च १।४।५८।

क्रीतवत् परिमाणात् ३।३।११५।

क्रीतात् करणादेः २।३।५५।

क्रुञ्चा-कोकिलाभ्याम् २।४।४३।

क्रुध-भूषार्थात् १।२।१००।

क्रुशः तुनः तृच् ५।४।४८।

क्रोध-अश्रद्धयोः १।३।१११।

क्रोश-योजनादेः शतात् अभिगमार्थे च
४।१।८६।

क्रौड्यादीनाम् २।३।८४।

क्र्यादिभ्यः १।१।१०१।

क्लिन्नचक्षुषि चिल्ल-पिल्ल-चुल्लाः

४।२।३४।

क्व-कुत्र-इह-अत्र ४।३।११।

क्वचिद् वा ५।१।१२४।

क्वणः वीणायाश्च १।३।५६।

क्वसोः एकाच्-आत्-घसः ५।४।१६५।

क्व-अमा-इह-अत्र-तसः त्यप् ३।२।१३।

क्विनः ६।३।६०।

क्विप्-क्विच्-मनिन्-क्वनिप्-वनिप्:

१।२।५३।

क्षः ६।३।८६।

क्षणः डीरच् (उणादि) ३।२६।

क्षत्रात् जातौ घः २।४।६६।

क्षत्रियात् ३।३।६७।

क्षिपः कित् (उणादि) १।७५।

क्षिपकादीनाम् ६।१।७६।

क्षिपि-नदिभ्यां चनुङ् (उणादि) १।३२।

क्षिपि-लङ्घि-लिखि-धमिभ्यः, ववुन् ।

(उणादि) २।५।

क्षीरात् ढब् ३।१।१७।

क्षुद्रजन्तूनाम् २।२।६०।

क्षुद्राभ्यो वा २।४।६३।

क्षुब्ध-स्वान्त-ध्वान्तम् मन्थ-मनस्-तमः

५।४।१४५।

क्षुब्नादीनाम् ६।४।१३५।

क्षेः क्षीः ५।३।७२।

क्षेः क्षी च ६।३।८१।

क्षेत्रियच् परक्षेत्रे चिकित्स्यः ४।२।६६।

क्षेप-अतिग्रह-अव्यथनेषु अकर्तरि

तृतीयायाः ४।३।३।

क्षेम-प्रिय-मद्रात् अण् च १।२।२८।

वसस्य अचि ६।१।१००।

खः ४।२।१६।

खः पदान्ताच्च २।४।७३।

खङ् १।२।३४।

खनः डर-इकौ च १।३।१०२।

ख-फ-छ-ठ-थ-च-ट-तव् प्रत्याहारसूत्र
(शिवसूत्र १०)

खयि खरः ६।२।११३।

खरि ६।४।२१।

खरि चर् झलः ६।४।१४८।

खरि लोपः ६।४।३०।

खर्जि-पिप्प्लादिभ्यः ऊर-ऊलचौ (उणादि)
३।४३।

खल-यव-माण-तिल-वृष-ब्रह्म-रथात्
४।१।७।

खलादिभ्यः इतिः ३।१।५७।

खारी-क्राकणीभ्य ईकन् ४।१।४२।

खार्या वा ४।४।८५।

खिति ससंख्यस्य मुम् च ५।२।७५।

खिति इच एकाचः अमः ५।२।४।

खुर-खरात् णस् वा ४।४।११२।

खेयम् १।१।११२।

गः १।२।४४।

गणिका-ब्राह्मण-माणव-ब्राह्मवाद् यञ्
३।१।५०।

गति-बोध-आहार-शब्दार्थ-अनाप्यानां
प्रयोज्ये २।१।४४।

गत्यर्थात् कौटिल्ये एव १।१।४२।

गत्यर्थ-अनाप्यात् आधारे च १।२।७०।

गत्वरः १।२।११०।

गद-नद-पठ-स्वनः १।३।५५।

गद-मद-यमः अप्रादेः १।१।१०६।

गमः १।२।३२।

गमः (उणादि) ३।८५।

गम-जन-खन-घसां ले लोपः अपिति।

५।३।६६।

गमादीनां क्वौ ५।३।४६।

गमेः क्षान्तौ १।४।५६।

गमेः गन् (उणादि) २।२८।

गमेः डोः (उणादि) १।६२।

गमो द्वे च (उणादि) ३।७०।

गम्भीर-पञ्चजनात् ज्यः ३।३।२१।

गम्भीरादयः (उणादि) ३।२६।

गर्गादिभ्यः यञ् २।४।२४।

गर्तान्तात् छः ३।२।५२।

गर्हायां कथमि लिङ् १।३।१०६।

गर्ह्ये ३।४।३६।

गल्भ-क्लीब-होडेभ्यः ङित् १।१।२८।

गवाश्वादीनाम् २।२।५७।

गवि युक्ते ५।२।५१।

गवि-युधेः स्थिरः ६।४।८१।

गव्यूतिः अध्वमाने ५।१।७८।

गः थकन् १।१।१५८।

गहादिभ्यः ३।२।५८।

गाङः ईत् स्ये च ६।२।२८।

गाङ् लटि ५।४।६६।

गाथि-विदथि-केशि-गणि-पणिनाम्

५।३।१७६।

गान्धारि-शाल्वेयात् २।४।६७।

गिरि-नदी-पौर्णमासी-आग्रहायणी-झयः

४।४।६३।

गिरिनद्यादीनाम् ६।४।१११।

गिरो भन् (उणादि) २।६६।

गुणवचन-ब्राह्मणादिभ्यः कर्मणि च
 ४१११४१।
 गुणान् ईयसुन्-इष्ठनी च ४१३१४७।
 गुणे वा २११७०।
 गुधेः ऊमः (उणादि) २१६८।
 गुपू-धूप-विच्छ-पण-पनः आयो वा १११४७।
 गुपो निन्दायाम् ११११६।
 गुरेः फक् (उणादि) २१६९।
 गुरोर्हलः ११३८५।
 गुर्वेकैकमनृत् वा ६३१११८।
 गृधि-वञ्चेः प्रलम्भने ११४१२२१।
 गृष्ट्यादिभ्यः २१४१७७।
 गृहांशे प्रघाणः ११३१६६।
 गृ-अभ्यां वः (उणादि) २१६०।
 गेहे कः ११११५३।
 गोत्रचरणात् श्लाघा-अधिक्षेप-अव-
 गतेषु ४१११५०।
 गोत्रा ३११५८।
 गोत्रात् अङ्कवत् ३११८।
 गोत्रात् अङ्कवत् ३११५४।
 गोत्रात् अदण्ड-माणव-अन्तेवासिषु
 ३३३६५।
 गोत्रात् बहुलं वुञ् ३३३६६।
 गोत्रान्तात् तद्वत् अजिह्वाकात्य-
 हरितकात्यात् ३१२२७।
 गोत्रात् लुक् २१४११८।
 गोत्र-उक्ष-उष्ट्र-उरभ्र-राज-राजपुत्र-वत्स-
 अज-वृद्धात् वुञ् ३११४५।
 गोघायाः २१४१६१।
 गोमिन् पूज्ये ४१२१४४।
 गोः अचि यत् २१४१५।
 गोः अप्रधानस्यान्त्यस्य २१२८५।

गोः अलुकि अचार्थे ४१४१७७।
 गोः ओ वा ५१११२०।
 गोः औः स्वार्थे ५१४१४३।
 गोष्ठात् भूते ४१२१६।
 गोसदादिभ्यः वुन् ४१२१५६।
 गौरादिभ्यः २१३३७।
 ग्रन्थान्ताधिक्ये ५१२१०१।
 ग्रसेः आच् च (उणादि) २१०१।
 ग्रहः ११११५२।
 ग्रहणे वा ४१२१६६।
 ग्रह-वृ-दृ-निश्चि-गम-वश-रणः ११३१४८।
 ग्रहि-प्रछोः सनि ५११२२।
 ग्रहि-व्यधोः ५१११५।
 ग्रहोऽस्यालिटीत् ५१४१००।
 ग्राम-कौटात् तक्षणः ४१४१८०।
 ग्राम-जन-गज-बन्धु-सहायात् तल् ३११५६।
 ग्राम-जनपदांशात् अण् च ३१२१६६।
 ग्रामात् य-खञौ ३१२१४।
 ग्रीवातः अण् च ३३३२०।
 ग्रीष्म-वसन्तात् वा ३३३१२।
 ग्रीष्म-अवर-समात् वुञ् ३३३१५।
 ग्री यङि ६३३४३।
 ग्री वा मुट् च (उणादि) ३१७५।
 ग्ला-नुदिभ्यां डौः (उणादि) ११६३।
 ग्ला-हा-ज्यः ११३१६५।
 घः १३३१००।
 घञि भाव-करणयोः ५१३३३१।
 घञ् कारके च ११३१७।
 घ-ढ-घश् प्रत्याहारसूत्र (शिवसूत्र ८)
 घर्म-ग्रीष्म-अधमाः (उणादि) २१०६।
 घास-कर-विशिष्टे पुंवच्च ५१२१४७।

घा हः ६।४।१३४।
 घुणेः डोरः (उणादि) ३।३५।
 घुषेः अविशब्दने ५।४।१५१।
 घृ-सि-दूभ्यः क्तः (उणादि) २।५१।
 घ्न इत् ६।१।६६।
 घ्रा-त्रा-अति-ह्री-नुद-उन्द-विदो वा
 ६।३।८७।
 घ्रा-घे-शा-च्छा-सो वा १।१।६३।

चक्षेः उसिन् (उणादि) ३।६४।
 चङि ५।१।२४।
 चङि उपान्तस्य ६।१।६१।
 चङ-लिटोः ५।१।२।
 च-जोः कुः घित्-ण्यतोः ६।१।८३।
 चटकात् ऐरक् २।४।५८।
 चति-कटि-शृ-वृञः ट्वरच् (उणादि)
 ३।१५।

ङमो ह्रस्वात् द्वे ६।४।१७।
 ङसि-ङसोः ५।१।११६।
 ङसेश्वात् २।१।३०।
 ङित् १।१।११।
 ङित् १।४।४८।
 ङिति असख्युः ६।२।५०।
 ङित् अनाशिषि १।४।३४।
 ङि-स्योर्वा ५।३।१३२।
 ङेः स्मिन् २।१।७।
 ङे-ङस्योः य-आतो २।१।५।
 ङेः आम् तत्र ६।२।५६।
 ङे-सुटः अम् २।१।२७।
 ङणोः कुक्-टुकौ शरि ६।४।१२।
 ङ्यः ईत् ४।४।१४५।
 ङ्यादीनाम् २।२।८६।
 ङ्यापो दीघत् ५।१।६७।
 ङ्यापोः त्वनाम्नोः बहुलम् ५।२।७३।
 ङी-आप्-ति-ऊङः २।४।५०।
 ङ्याम् ५।३।१५०।
 ङी-ऊङः ६।२।४६।
 ङी-ऊङ-ऋतः अभ्रुवः ४।४।१४१।
 चक्रि-सस्त्रि-जज्ञयः १।२।११५।
 चक्षः ख्यान् ५।४।८१।

चतुरः ४।२।५७।
 चतुर्-अनङुहोः आम् ५।४।५०।
 चतुर-संगत-लवण-वङ-बुध-कतर-सलसात्
 वा ४।१।१३८।
 चतुर्थी प्रकृत्या २।२।१७।
 चतुष्पाद्भ्यः ढञ् २।४।७६।
 चत्वारिंशदादौ वा ५।२।५४।
 चन्द्रात् माङो ङित् (उणादि) ३।६८।
 चमि-तनि-बधिभ्यः ऊः (उणादि)
 १।४३।

चयः शरि द्वितीयः ६।४।१५८।
 चर् ६।२।११४।
 चरः १।१।११०।
 चरणात् वुञ् ३।३।६४।
 चरति ३।४।७।
 चर-फलोः ६।२।१३६।
 चराचर-चलाचल-पतापत-वदावद-घनाघन-
 पाटूपा वा ५।१।१०।
 चरेः टः १।२।४।
 चर्मणि अञ् ४।१।१८।
 चलन-आहारार्थात् १।४।१३६।
 चातुर्मास्यं यज्ञे ३।३।२२।
 चातुर्मास्यात् यलोपश्च ४।१।१११।
 चायः कीः ५।१।२७।

चार्थ-रोग-गहितात् प्राणिस्थात् अस्वाङ्गात्
इति: ४।२।१२५।

चार्थसमास-मनोज्ञादिभ्यः ४।१।१४६

चार्थसमासे २।१।१२।

चार्थात् छः ३।१।६।

चार्थात् वैरे वुन् अदेवासुरादिभ्यः
३।३।८६।

चार्थान् अदेवासुरादीन् ३।३।५७।

चार्थे २।२।४८।

चार्थे चु-द-ष-हः समाहारे ४।४।८६।

चाल-शब्दार्थात् अनाप्यात् युच्
१।२।६७।

चिणः १।१।८५।

चिण्-णमोः अप्रादेः वा ५।४।२३।

चिण्-णमोः दीर्घश्च ६।१।५७।

चिणलङ्ङित्सु ६।२।१०।

चिण् ते पदः १।१।७६।

चिति-राशि-वास-देहेषु चः कः १।३।३२।

चितेः कपि ५।२।१३६।

चिति उपमार्थे ६।३।१२८।

चित्रङः आश्चर्ये १।१।३८।

चि-स्फुरोः णौ ५।१।५६।

चु-टु-तु-ल-शर्व्यवाये ६।४।१३२।

चुरादिभ्यः णिच् १।१।४५।

चूडादिभ्यः अण् ४।१।१३०।

चूर्णात् इति: ३।४।२३।

चेर्वा ६।१।८६।

चोः कुः ६।३।५६।

चौ ५।२।१४६।

च्वि-यङ्-यक्-क्येषु ६।२।७८।

च्यर्थे भृशादिभ्यः स्-तलोपश्च १।१।३०।

छः २।४।६५।

छ-कारके अन्यस्य दुक् ५।२।११६।

छगलिनो ढिनुक् ३।३।७६।

छश्च आयुधात् ३।४।१२।

छत्रादिभ्यः णः ३।४।६३।

छदिर्-बलिभ्यां ढञ् ४।१।१६।

छदेः नुम् च (उणादि) ३।१०६।

छन्दसा निर्मिते ३।४।६५।

छन्दसो यत् ३।३।४३।

छन्दोग-औक्थिक-याज्ञिक-बह्वृचात् धर्म-
आम्नाय-संघेषु ३।३।६२।

छन्दोनाम्नि १।३।२६।

छवि रः सः ६।४।२८।

छविआदयः (उणादि) १।८३।

छादेर्वे ६।१।५८।

छाया २।२।७३।

छे ३।३।१११।

छे ५।१।७०।

छेदादिभ्यो नित्यम् ४।१।७५।

छो वा ६।२।६३।

जक्षादिभ्यः पञ्चभ्यः १।४।५।

जङ्गल-धेनु-बलजस्य वा ६।१।३५।

जटा-लोष्टम् (उणादि) २।३३।

जत्रादयः (उणादि) १।४०।

जनपदनाम्नः क्षत्रियात् राज्ञि च

२।४।६६।

जनपदवत् सर्वं तत्सरूपात् बहुत्वे

३।३।६८।

जनपदात् ४।४।८८।

जनपदेभ्यः ३।२।३८।

ज-नशः ५।३।५५।

जन-सन-खनाम् आत् ५।३।३६।

जनि-मनि-दसि-भुजेः क्युस् (उणादि)

१।३४।

जायादयः (उणादि) २।११०।

जायायाः निङ् ४।४।१२२।

जनि-वधोः ६।१।४३।

जि-ग्लश्च क्स्तुः १।२।६४।

जनि-ईशि-ईडः स्-ध्वे ५।४।१७४।

जित्या-विपूय-विनीया हलि-मुञ्ज-कल्केषु

१।१।१२८।

जनेः अरः ठश्च (उणादि) ३।३१।

जिह्वामूल-अङ्गुलेः छः ३।३।३०।

जनः उसिः (उणादि) ३।६१।

जीवात् ग्रहः णमुल् स चानु १।३।१३६।

जनेः घः (उणादि) २।३०।

जीविका-उपनिषदौ औपम्ये २।२।४०।

जप-जभ-दह-दश-भञ्ज-पशाम् ६।२।१३५।

जु-चङ्क्रम्य-दन्द्रम्य-सृ-गृधि-ज्वल-शुच-

लप-पत-पदः १।२।६६।

जपि-वमः ५।४।१४३।

जुस्-पुकोः ६।२।३।

ज-व-ग-ड-दश् प्रत्याहारसूत्र (शिवसूत्र ६)

ज-विशः अन्तच् (उणादि) २।४३।

जभः अचि ५।४।१४।

जू-वृजः ऊथन् (उणादि) २।५७।

जम्बवादयः (उणादि) १।४७।

जू-श्चि-स्तम्भु-म्रुचु-म्लुचु-ग्लुचः १।१।७५।

जराया जरस् वा ५।४।६७।

जूषः त्वः ५।४।११५।

जल्प-भिक्ष-कुट्ट-लुण्ट-वृडः शाकन्

१।२।१०३।

जूषः अतृन् १।२।७२।

जसः शीः २।१।८।

जेः नुक् च (उणादि) १।६५।

जसि ६।२।४६।

ज्ञपि-आप्-ऋधाम् ईत् ६।२।१०८।

जस्-शसोः शिः २।१।१६।

ज्ञा-कृ-प्री-इगुपान्तात् कः १।१।१४१।

जागुः १।३।८३।

ज्ञा-जनोः जाः ६।१।१०७।

जागुः क्विन् (उणादि) १।८२।

ज्ञान-यत्न-उपच्छन्दनेषु वदः १।४।६३।

जागुः अलिटि ६।२।६।

ज्यः ५।१।४६।

जागुः ऊकः १।२।१११।

ज्यायान् ५।३।१६२।

जागृ-उषो वा १।१।५४।

ज्या-व्रश्च-प्रछ-भ्रस्जाम् ५।१।१७।

जाण्ड-पाण्डाद् आरक् २।४।६०।

ज्योतिस्-आयुषश्च स्तोमः ६।४।७०।

जातिः अष्फादौ च ५।२।३८।

ज्योतिरादयः (उणादि) ३।६०।

जातीयर् ४।३।२६।

ज्योत्स्ना-तमिस्र-ऊर्जस्विन्-ऊर्जस्वल-

जाते प्रोष्ठ-भद्रात् पदस्य ६।१।२८।

मलीमसाः ४।२।११७।

जातेः अनाच्छादात् वा २।३।५६।

ज्योत्स्नादिभ्यः ४।२।१०७।

जातेः अस्त्रीविषयात् अयोपान्तात्

२।३।७१।

ज्वर-त्वर-अव-श्रिवु-मवां सोपान्तस्य

जातौ डतमच् बहुभ्यः ४।३।७६।

५।३।१६।

जानु-नीवीभ्याम् ३।३।३७।

ज्वलादिभ्यो णो वा १।१।१४६।

श-भञ् प्रत्याहारसूत्र (शिवसूत्र ७)

झयः ६।३।३६।

झयः हो झय् ६।१।१५६।

झलि तिङि अपिति ५।३।३७।

झलः जश् ६।३।६७।

झलः झलि ६।३।५५।

झषः एकाचः स्-ध्वोः वशो भष्
६।३।६६।

झषः जश् ६।२।११५।

झसि अरन् १।४।३७।

झेः जुस् १।४।४०।

झः अन्तः १।४।३।

जमः किति वो च ५।३।१७।

ज-म-ङ-ण-न-म् प्रत्याहारसूत्र (शिवसूत्र ६)

जमन्तात् डः (उणादि) २।३६।

जमि च च्छ-वोः शूठ् ५।३।१८।

जमोस्तः नुक् ६।२।१३४।

जितः १।४।१२६।

जित्-आर्षण्यात् अणिजोः २।४।१२३।

जिणिति ६।१।६।

जिणन्ति हनो हः ६।१।८५।

ज्यादीनां बहुषु लुक् ४।३।६४।

ज्यादीनां २।४।१०६।

टक् १।२।३६।

टकितौ आद्यन्तौ १।१।१३।

टा-डसोः इन-स्यौ २।१।४।

टि चापः ६।२।४३।

टित्-ठ-अण्-अञ्-ठक्-ठञ्-नञ्-स्तञ्-कञ्-
क्वरप्-ख्युनः २।३।१७।

टित्तङाम् एत् १।४।१५।

टः अस्त्रियां ना ६।२।६३।

टा-ओसि अकः अनः ५।४।७४।

टिवतः अयुच् १।३।६६।

ठञ्चान्यत्र ४।१।६६।

ठञ् ३।२।३०।

ठस्य इकः ५।४।३।

डः १।२।३५।

डः १।२।६५।

डः ६।३।४७।

डः सः धुट् ६।४।१३।

डतरादिभ्यः पञ्चभ्यः अनेकतरात् तः
२।१।२५।

डश्चोपात् ४।३।६५।

डाचि पूर्वस्य ५।१।१०५।

डाच्-लोहितादिभ्यः क्यप् १।१।३१।

डित् अण् ३।३।८।

ड्वितः क्विः १।३।६८।

ढक् २।४।४६।

ढकि लोपः २।४।६८।

ढे ५।३।१४८।

ढे अगनायी ५।२।३३।

ढे अनादौ ढलोपः ६।४।१८।

ढलोपे अणः ५।२।१३७।

णः पन्थश्च नित्यम् ४।१।८८।

णच्-इनुणः ४।४।२१।

णि-श्रन्थ-ग्रन्थ-विद-आस-घट्ट-वन्दः युच्
१।३।८६।

णि-श्रि-द्रु-सु-कमः कर्तरि चङ् १।१।६८।

णेः अनिति ५।३।६७।

णेः अस्विदि-स्वदि-सहः ६।४।४६।

णेर्वा ६।४।१२४।

णेः वृत्तं ग्रन्थे ५।४।१५४।

णः नः ५।१।६२।

णः अरण्यात् ३।२।१७।

णौ गम-बोधे ५।४।६३।

णौ मृगरमणे ५।३।३०।

णौ संश्रब्धोः ५।१।३८।

णौ संश्रब्धोः ५।४।६८।

ण्यः आवश्यके ६।१।६३।

ण्युट् १।१।१५५।

ण्वुच् १।३।६१।

तं प्रति-अनोः ईप-लोम-कूलात् ३।४।२७।

तं भूतो भावी ४।१।६५।

तः सः सौ ५।४।७०।

तडाना यथापाठम् १।४।४६।

तडाम् १।४।१६।

तडि वा १।१।७२।

तडि वा ५।४।६१।

तडि अनतः १।४।६।

तड्वतः हलादेः अणः १।२।६८।

तड्विषयात् कर्तरि अतिङः ५।४।१२७।

तत् चरति ४।१।१०८।

तच्च-वच्च-शकि-क्षिपि-क्षुदि-रुदि-मदि-

मन्दि-चन्दिभ्यः रक् (उणादि) ३।७।

ततः प्राक् कारकात् २।१।४०।

ततः शसो नः पुंसि ५।१।११०।

त-तवति इटि ५।३।६८।

त-तवतोः ५।४।११०।

त-तवतोः अपू-शी-स्विदि-मिदि-क्ष्विदि-

धृषः ६।२।१६।

ततः अचि नुट् ५।२।६३।

तत् पचति द्रोणात् अण् च ४।१।६७।

तत्र गृहीत्वा तेन प्रहृत्य युद्धे सरूपम्

२।२।४७।

तत्र जाते प्रावृषः ठप् ३।३।१।

तत्र दीयते ४।१।११३।

तत्र नियुक्तम् ३।४।७०।

तत्र भक्तिः महाराजात् ठक् ३।३।६३।

तत्र विदिते ४।१।५७।

तत्र साधुः ३।४।१००।

तत्रोद्धृतं पात्रेभ्यः ३।१।१२।

तथा कर्मणः अण् ४।४।१६।

त-थोः धः अधः ६।३।७१।

तद् अत्र अस्मै वृद्धि-आय-लाभ-शुल्क-

उपदं दीयते ४।१।५६।

तद् अधीते तद् वेद ३।१।३७।

तदधीने ४।४।३८।

तद् अस्य पण्यम् ३।४।५३।

तद् अस्य परिमाणम् ४।१।६२।

तद् अस्य ब्रह्मचर्ये ४।१।१०६।

तद् अस्य संजातं तारकादिभ्यः इतच्

४।२।३७।

तद् अस्यात्र स्याद् इति ४।१।२१।

तद् अस्य अस्ति अत्रेति मतुप्

४।२।६८।

तदादेः ३।३।२७।

तद् इहास्ति च ३।१।६७।

तद्वति धण् ४।३।२५।

तद् वहति युग-प्रासङ्गात् ३।४।७७।

तनादिभ्यः उः १।१।६४।

तनादिभ्यः त-थासोः १।१।६४।

तनादिअनिट्-वनां ल्यपि ञमः ५।३।३५।

तनूकृती तक्षः १।१।६८।

तने कयन् (उणादि) २।१०७।

तनो यकि ५।३।४२।

तनो वा ५।३।१५।

तन्त्रात् नवोद्धृते ४।२।७५।

तन्द्रेः ईः (उणादि) १।८८।

तद् नपुंसकम् २।२।१५।
 तपआप्यात् १।४।७५।
 तपः-सहस्राभ्याम् अण् ४।२।१०६।
 तपसः तपआप्यात् १।१।८१।
 तप्त-अनु-अवात् रहसः ४।४।६७।
 तमेः वुक् च (उणादि) ३।४४।
 तमि-अमि-जीनाम् दीर्घश्च (उणादि) ३।६।
 तयोः य्-त्रौ अचि ६।३।१३३।
 तयोः वा १।४।६७।
 तर-तम-रूप-कल्प-चेलट्-ब्रुव-गोत्र-मत-हते
 डयः ह्रस्वः ५।२।४२।
 तरति ३।४।५।
 तर्हि एतर्हि सद्यः परेद्यवि ४।३।१६।
 तवक-ममकौ एकत्वे ३।२।६४।
 तव-ममौ डसि । ५।४।६२।
 तव्यादिषट्के अवश्यमः ५।२।६०।
 तव्य-अनीयर्-केलिमरः १।१।१०५।
 तसोः तसौ मत्वर्थे ६।३।६८।
 त-स्थ-स्थानां तां-तं-ताः डितश्च १।४।२८।
 तस्मै प्रभवति संतापादिभ्यः ४।१।१२०।
 तस्मै भूतः अधीष्टः ४।१।६४।
 तस्मै हितम् ४।१।४।
 तस्य दक्षिणा यज्ञेभ्यः ४।१।११२।
 तस्य धर्म्यम् ३।४।४६।
 तस्य पूरणे डट् ४।२।५१।
 तस्य भावः त्व-तलौ ४।१।१३६।
 तस्य वापः ४।१।४८।
 तस्य व्याख्याने च व्याख्येय-नाम्नः
 ३।३।३८।
 तस्य समूहः ३।१।४३।
 तस्य स्वं रथात् यत् ३।३।८५।
 तस्यापत्यम् २।४।१६।

तस्य एश् १।४।१०।
 ता तत्कालः १।१।३।
 तात-पलित-जर्त-सूरताः (उणादि) २।५२।
 तादर्थ्ये २।१।७६।
 ताभ्यां डाप् २।३।१४।
 तारका ज्योतिषि ६।१।८०।
 तारेः अन् (उणादि) १।६४।
 तालादिभ्यः अण् ३।३।१०६।
 ताससः रि च लोपः ६।२।१००।
 तासश्च क्लृपः ५।४।१२४।
 तिक-कितवादिभ्यः चार्थेकार्थ्ये २।४।११५।
 तिकादिभ्यः फिञ् २।४।८६।
 ति किति अदो जग्घः ५।४।८५।
 तिङश्च रूपप् ४।३।५३।
 तिङ्-असंख्यानाम् अचोऽन्त्यात् पूर्वोऽकच्
 ४।३।५६।
 तिङि हलि अपिति ५।३।५८।
 तिङि अवक्षेपे ५।२।६२।
 तिङ्शिति यक् अलिट्-आशीर्-लिङि
 १।१।८०।
 तिङ्शिति अपित्-आशीर्लिङि ६।२।८।
 ति चोद् अतः ६।२।१३७।
 तिजः क्षान्तौ सन् १।१।१७।
 तिजेः ईच् च (उणादि) २।७८।
 ति-तु-व-यस्-ताः ४।२।१५०।
 तित्तिरि-वरतन्तु-खण्डिक-उखात् छण्
 ३।३।७०।
 तिपि ६।३।१०५।
 तिमि-रुधि-मदि-मन्दि-चन्दि-वन्धिभ्यः
 किरच् (उणादि) ३।५।
 तिरसः ६।४।४४।
 तिरसः तिरि अति । ५।२।११२।

तिरो डट् च (उणादि) १।४५।
 तिरः अन्तर्धौ २।२।३३।
 तिर्यक् समाप्तौ २।२।४२।
 तिल-यव-पिष्टात् असंज्ञायाम् ३।३।११३।
 ति-इषु-सह-लुभ-रुष-रिषः ५।४।११८।
 तिष्ठद्गवादीनि २।२।१०।
 तिष्य-पुष्ययोः नक्षत्रे अणि ५।३।१५८।
 तिसृका ५।४।६५।
 तीयात् ईकक् न विद्या चेत् ४।४।११।
 तुण्ड-वलि-वटेः भः ४।२।१४८।
 तुदादिभ्यः शः १।१।६२।
 तुदी-वर्मतीभ्यां ढञ् ३।३।६२।
 तुभ्य-मह्यौ डयि ५।४।६१।
 तुमश्च काम-मनसोः ५।२।८६।
 तुमुन् भावे क्रियायां तदर्थायाम्
 १।३।६।

तुमो लुक् चेच्छायाम् १।१।२२।
 तुल्यार्थैः तृतीया वा २।१।६६।
 तूष्णीकाम् ४।३।५८।
 तूष्णीम् २।२।४४।
 तृणहः इम् ६।२।३३।
 तृणे जातौ ५।२।१२१।
 तृतीयार्थयोगे २।१।११।
 तृतीया-सप्तम्योः वा २।१।४२।
 तृ-फल-भज-त्रपः ५।३।११८।
 तेन क्रीतं मूल्यात् ४।१।४७।
 तेन गृह्णातीति लुक् च ४।२।६५।
 तेन जितं जयति दीव्यति
 खनति ३।४।२।

तेन निर्वृत्तः ४।१।६३।
 तेन निर्वृत्ते ३।१।६६।
 तेन प्रोक्तं वेदं वेत्ति अधीते ३।३।६६।

तेन रक्तं रागात् ३।१।१।
 तेन वित्तः चञ्चुप्-चणपौ ४।२।२७।
 तेन सुकर-कार्य-लभ्य-परिजय्यम्
 ४।१।१०५।
 तेन हस्तात् यत् ४।१।११७।
 तेः अग्रहादिभ्यः ५।४।१२६।
 तोः षि ६।४।१३८।
 तोः लि ६।४।१५३।
 तः वा ५।१।१०४।
 तः अशश्वतः ५।४।५।
 तौ किमः ४।३।७७।
 तौ लृटः १।२।८८।
 तनप्-तन-खा नू च ४।४।२६।
 त्यदां तसादिषु चाऽऽद्वेः अः ५।४।६८।
 त्यदादिभ्यः ३।२।२८।
 त्यदादिभ्यो वा २।४।८६।
 त्र-तस्-तर-तम-चरट्-कल्पप्-देश्य-रूपप्-
 पाशप्-शस्-ध्यन्-क्यङ्-मानिषु
 ५।२।३१।
 त्रपु-जतुनोः षुक् ३।३।१०८।
 त्रयाणाम् २।१।३४।
 त्रसि-गृधि-धृषि-क्षिपेः क्नुः १।२।६६।
 त्रिशत्-चत्वारिंशतो ब्राह्मणाख्यायाम् ङण्
 ४।१।६५।
 त्रिककुत् पर्वते ४।४।१३५।
 त्रि-चतुरोः स्त्रियां तिसृ-चतसृ ५।४।६४।
 त्रि-चतुर्भ्यां हायनो वयसि ६।४।१०७।
 त्रि-रथ-वदेषु ५।२।१२०।
 त्रेः ३।४।२०।
 त्रेः त्रयः ५।२।५३।
 त्व-तलोः गुणः ५।२।४०।
 त्व-मौ एकस्मिन् ५।४।६३।
 त्वा-मौ द्वितीयायाः ६।३।१६।

त्व-अहौ सौ ५।४।६०।

थलीटि ५।३।११७।

थासः से १।४।१७।

थो न्यः ५।४।४०।

दः ६।३।१०७।

दक्षिणा-कडङ्गर-स्थालीविलात् छश्च ४।१।८०।

दक्षिणा-पश्चात्-पुरसः त्यक् ३।२।७।

दक्षिणेर्मा लुब्धयोगे ४।४।११५।

दक्षिण-उत्तरात् आच्च ४।३।३८।

दगु-कोशल-कर्मारि-छाग-वृषात् युट् च २।४।८७।

दण्ड-दानयोः ४।४।४।

दण्डादिभ्यः ४।१।७६।

दधृग्-उष्णिक्-क्रुञ्चः १।२।४६।

दध्नः ठक् ३।१।१६।

दन्तुरः ४।२।११०।

दम्भः इच्च ६।२।१०६।

दम्भः स्सनि च ५।३।२६।

दम्भ-श्रन्थ-ग्रन्थाम् ५।३।१२२।

दयायाम् ४।३।६३।

दरिद्रः किति ५।३।११२।

दशैकादश-कुसीदात् षठ् ३।४।३८।

दः ति ५।२।१४३।

दाणः सा चेत् चतुर्थ्यर्थे १।४।१०८।

दाण्डिनायन-हास्तिनायन-जैह्याशिनेय-
वासिनायनि-भ्रौणहत्य-धैवत्य-सारव-
ऐक्ष्वाक-हिरण्मयानि ५।३।१७८।

दादेर्धातोः घः ६।३।६३।

दा-घा-गाति-स्था-भू-पः अतङ्गि लुक् १।१।६२।

दा-भाभ्याम् नुः (उणादि) १।२८।

दामन्यादिभ्यः छः ४।३।६२।

दाम्नः संख्यादेः २।३।१०।

दास्वान् साह्वान् मीढ्वान् चिकिल्वदम्
चक्नसम् ५।१।६।

दिक्शब्दात् तीरस्य तारः ५।२।१२६।

दिक्शब्दात् दिग्देशकालार्थात् सप्तमी-

पञ्चमी-प्रथमाभ्यः अस्तातिः ४।३।२८।

दिगादिभ्यः भवे यत् ३।३।१७।

दिगादेः अनाम्नि अमद्रात् ३।२।१६।

दिगादेः ठञ् च ३।२।६८।

दिति-अदिति-आदित्य-यमात् ण्यः २।४।२।

दिवः औत् ५।४।३७।

दिवस्-पृथिव्यां वा ५।२।२७।

दिवादिभ्यः श्यन् १।१।८७।

दिवेर् ऋन् (उणादि) १।४८।

दिवो दासे ५।२।१७।

दिवो द्यावा ५।२।२६।

दिवः अन्ते च उत् ५।१।१३५।

दीङ् अकिङ्त्सनि ल्यपि ५।१।५२।

दीङ् लिति युक् ५।३।७४।

दीप-जन-बुध-पूरि-तायि-प्यायो वा

१।१।७७।

दीयते नियुक्तम् ३।४।६७।

दीर्घस्य ५।१।७२।

दीर्घात् जसि च ५।१।११२।

दीर्घात् ६।४।१४७।

दीर्घात् वरुणस्य ६।१।३३।

दीर्घः अपिति इणः ६।२।१२२।

दीर्घः लघोः ६।२।१४१।

दुःखात् प्रातिकूल्ये ४।४।४८।

दुःग्वोः ऊ च ६।३।७८।

दुःन्यः अप्रादेः १।१।१५०।

दुरो ढक् वा २।४।७४।

दुषो णौ ५।३।६४।
 दुहो दुघः १।२।५४।
 दूरादयः (उणादि) ३।१०।
 दूराह्वाने ६।३।११६।
 दूरेत्य-औत्तराहौ ३।२।१६।
 दृग्-दृश-दृक्षे ५।२।१०६।
 दृढो भः (उणादि) २।६५।
 दृढः स्थूल-बलिनोः ५।४।१४८।
 दृति-क्रुक्षि-कलशि-वस्ति-अस्ति-अहेः ढञ्
 ३।३।१६।
 दृ-वसिभ्यां वितन् (उणादि) १।८४।
 दृश्-अभिवाद्योः तडाने २।१।४६।
 दृश्यर्थे अनालोचने ६।३।२३।
 दृष्टं साम डित् वा ३।१।७।
 दृ-सनि-जनि-चरि-चटि-तलिभ्यः ञ्
 (उणादि) १।२।
 देङः दिगि लिटि ६।१।६६।
 देये वा च ४।४।३६।
 देवता ३।१।२१।
 देवतानां चार्थे सूक्त-हविषोः ६।१।३१।
 देवतानाम् अवायूनां वेदे सह श्रुतानाम्
 ५।२।२३।
 देवतान्तात् तदर्थे यत् ४।४।३१।
 देवव्रतादिभ्यः डिनिः ४।१।१०६।
 देवात् २।४।८।
 देवादिभ्यः द्वितीया-सप्तम्योः बहुलम्
 ४।४।४०।
 देविका-शिशपा-दीर्घसत्त्र-श्रेयसाम् आत्
 ६।१।१२।
 देशे अनूपः ५।२।११४।
 देहांशात् ३।३।१८।
 देहांशात् यत् ४।१।६।

दैवयज्ञि-शौचिवृक्षि-सात्यमुग्नि-काण्ठे-
 विद्धीनाम् वा २।३।८५।
 दः दत् ६।२।६६।
 दः अनडुहः ६।३।१०३।
 दः अपः १।१।४।
 दः मः ५।४।७३।
 दो-सो-मा-स्थाम् इत् ति किति ६।२।६२।
 द्यावापृथ्वी-शुनासीर-मरुत्वत्-अग्नीषोम-
 वास्तोष्पति-गृहमेधात् छश्च ३।१।३०।
 द्युति-स्वाप्योः यणः इक् ६।२।१२०।
 द्युद्भ्यो लुङि १।४।१४३।
 द्यु-द्रुभ्यां मः ४।२।११२।
 द्यु-प्राग्-अपाग्-उदक्-प्रतीचो यत्
 ३।२।१०।
 द्रव्य-वस्नात् कन्-ठनौ ४।१।७३।
 द्रु-दक्षिभ्याम् इनन् (उणादि) २।६५।
 द्रोः ३।३।१२४।
 द्रोणात् २।४।४०।
 द्रुद्धं रहस्य-मर्यादा-व्युत्क्रान्ति-यज्ञपात्र-
 प्रयोगेषु ६।३।१२।
 द्वयोः एकः ५।१।८१।
 द्वारादीनाम् ६।१।१५।
 द्वितीय-तृतीयौ ४।२।५६।
 द्वितीयातृतीयात् वा ६।२।५८।
 द्वितीयायाम् १।३।१४५।
 द्वि-त्रि-चतुरः सुच् ४।४।७।
 द्वि-त्रि-बह्लादेः निष्क-विस्तात् ४।१।४०।
 द्वि-त्रिभ्यां मूर्धनः ४।४।६८।
 द्वि-त्रिभ्याम् अञ्जलेः ४।४।८६।
 द्वि-त्रिभ्याम् अयट् वा ४।२।४७।
 द्वि-त्रेः धमुञ् ४।३।२३।
 द्वि-त्र्यादेः अण् च ४।१।४६।

द्वित्वहेतोः ६।१।८६।

द्वित्वे ५।१।४०।

द्वित्वे ६।३।११०।

द्वित्वे अध्यादिभिः २।१।५१।

द्वित्वे परसवर्णः ६।३।३४।

द्वित्वे पूर्वस्य अत्र लोपः ६।२।१११।

द्वित्वे पूर्वस्य असमे ५।३।८४।

द्विदण्ड्यादीनि ४।४।११७।

द्वि-बहुषु प्रकर्षे तरप्-तमपौ ४।३।४५।

द्विरुक्तस्य नाचि अलिटि ६।२।७।

द्विरुक्तात् अत् १।४।४।

द्विस्तावा त्रिस्तावा वेदिः ४।४।७०।

द्वीपात् अनुसमुद्रात् व्यः ३।२।६५।

द्वेश्च संख्यायां प्राक् शतात् अनन्यार्थ-
अशीत्योः ५।२।५२।

द्व्यचः २।४।५१।

द्व्यचः अणः २।४।८८।

द्व्यचः असंख्यापरिमाण-अश्वादेः यत्
४।१।५२।

द्व्यच्-ऋत्-ऋग्-ब्राह्मण-प्रथम-अध्वर-
पुरश्चरण-नाम-आख्यातात् ठक्
३।३।४६।

द्व्यच्-नौभ्यां ठन् ३।४।६।

द्व्यच्-मगध-कलिङ्ग-शूरमसात् अण्
२।४।१००।

द्वि-अन्तः-प्रादेः अनात् अप ईत्
५।२।११३।

घन-गणं लब्धा ३।४।८३।

घनस्य तृष्णायाम् ६।२।८८।

घन-हिरण्ये कामः ४।२।७०।

घनुरास्मि ४।४।१२१।

घर्म-शील-वर्षान्तात् ४।२।१२६।

घर्मात् अनिच् केवलात् ४।४।११३।

घर्म-अघर्म चरति ३।४।३६।

घर्मेण प्राप्ये ३।४।६३।

घस् त-थोश्च ६।३।७०।

घाञो हिः ६।२।६४।

घातूक्तौ अयदि वा १।३।११६।

घातोः सी-लुङोश्च घः ढः ६।४।६६।

घातोः वोः अनचि इकः दीर्घः
६।३।१०८।

घातोः तत्रैव ५।१।७७।

घा-दा-नी-पति-पा-शसिभ्यः ष्टृन् (उणादि)
३।३६।

घान्ये नित् (उणादि) १।७।

घान्येभ्यः क्षेत्रे खञ् ४।२।१।

घाय्या-पाय्य-आनाय्य-सांनाय्य-निकाय्या
नास्मि १।१।१३६।

घारि-पारि-वेदि-उदेजि-चेति-साति-साहि-
विन्दः अप्रादेः १।१।१४४।

घारेः उत्तमर्णे २।१।७४।

घारेः घर् च १।२।३१।

घा संख्यायाः ४।३।२०।

धि सङि ६।३।५४।

धुटि इचुः ६।३।३३।

धुरो ढक् च ३।४।७८।

धूञ्-प्रीञोः नुक् ६।१।४८।

धूमादिभ्यः ३।२।४१।

धृष-शसः प्रागल्भ्ये ५।४।१४७।

धृषेः धिष् च (उणादि) २।७१।

धेनुष्या-गार्हपत्यौ नास्मि ३।४।८८।

धेनोः अनञः ३।१।४६।

धेनोः भव्यायाम् ५।२।८६।

धेन्वनडुह-ऋग्यजुष-अक्षिभ्रुव-दारगव-
ऊर्वष्ठीव-पदष्ठीव-नक्तदिव-रात्रिदिव-
अहर्दिव-सरजस-पुरुषायुष-द्वचायुष-त्र्या-
युष-जातोक्ष-महोक्ष-वृद्धोक्ष-उपशुन-
गोष्ठश्चाः ४।४।६२।

धेन्वादयः (उणादि) १।३।१।

धे-श्वेः वा १।१।६१।

धे-सि-शद-सदो रुः १।२।१०५।

ध्मः पाण्यादिभ्यश्च १।२।१४।

नः ५।३।६।

नः ६।४।१४।

न कपि ६।२।७१।

न किमः क्षेपे ४।४।५३।

न कुङ्ठः यङि ६।२।११७।

न क्रोडादिभ्यः २।३।६७।

न क्वादेः ३।१।६०।

नक्षत्रात् इतो वा ६।४।८६।

नक्षत्रात् नेतुः ४।४।१०२।

नक्षत्रैः इन्दुयुक्तैः कालः ३।१।५।

न क्षुधि अशनस्य ६।२।८७।

नख-मुखात् नाम्नि २।३।६६।

नखादयः ५।२।६५।

न गति-हिंसा-शब्दार्थ-हसः १।४।५०।

नगरात् कुत्सा-प्रावीण्ययोः ३।२।४२।

नगरात् अहस्तिनि १।२।४१।

न गोपवनादिभ्यः अष्टभ्यः २।४।११६।

नगः अप्राणिनि वा ५।२।६६।

नक् वा ६।३।६१।

न च-वा-हा-हैवयोगे ६।३।२२।

न च्विङ्गीयण्-इयुवाम् अभ्रूकुंसादीनाम्

५।२।७२।

नञ् २।२।२०।

नञः शुचि-ईश्वर-क्षेत्रज्ञ-कुशल-निपुणानाम्
६।१।३६।

नञः नः ५।२।६१।

नञः अनन्यार्थे ४।१।१३७।

नञः अनन्यार्थे ४।४।५५।

नञ्-बहोः माणव-चरणयोः ४।४।५६।

नञ्-सु-दुर्भ्यः सक्थो वा ४।४।१०६।

नञ्-सु-वि-उप-त्रेः चतुरः अच् ४।४।१०३।

नटात् ज्यः नृत्ये ३।३।६१।

न टोः अनवति-नगर्योः आदेः ६।४।१३७।

नडादिभ्यः २।४।३५।

न तङ्गनैः ५।४।१२२।

न तस्मिन् ५।१।४१।

न त्यादि-बुकोपान्तम् ५।२।३४।

न दधिपयआदीनाम् २।२।६६

नदी-देश-नगराणां भिन्नलिङ्गानाम्

२।२।५४।

नदीभिः २।२।१३।

नदी-मानुषीनाम्नः अनादैजाद्यचः २।४।४२।

नदीष्णः कुशले ६।४।७६।

नद्यादिभ्यः ढक् ३।२।६।

न द्विः ३।३।१२७।

न द्वित्वे ५।१।१०३।

न द्व्यचः प्राच्यात् ३।२।२३।

न ध्या-ख्या-पृ-मूर्च्छि-मदाम् ६।३।६५।

न नाम्नि ४।४।१४३।

न नि मुः ६।३।२६।

न नी-खादि-अदि-ह्ला-शब्दाय-ऋन्दः

२।१।४७।

नन्दि-ग्रहादिभ्यः ल्यु-णिनी १।१।१४०।

न न्दो हलि ५।१।४।

न पदाती ३।२।५१।

न पात्रादयः २।२।८०।
 न पा-दम-आयम-आयस-परिमुह-अत्ति-
 रुचि-नृति-धेद्व-वद-वसः १।४।१४१।

नपुंसकात् २।१।१८।
 नपुंसकात् वा ४।४।६२।
 नपुंसके च अर्धर्च-आदयः २।२।८३।
 नपुंसके वा ६।३।५०।
 न प्लुतः अनितौ ५।१।१२३।
 न भा-भू-पूज्-कमि-गमि-प्यायी-वेपाम्

६।४।१२८।

नमः-स्वस्ति-स्वाहा-स्वधा-वषट्-शक्तार्थैः
 २।१।७८।

नमसः ६।४।४२।
 नमस्-तपस्-वरिवसः क्यच् १।१।३७।
 नमि-मनि-जनाम् नाकि-ध-तश्च (उणादि)
 १।१०।

न यत्-तदोः ६।१।७७।
 न यदि १।२।७६।
 न य-दीक्षः १।२।१०१।
 न यवादिभ्यः ६।३।३८।
 न राज-आचार्य-वृषन्-ब्राह्मणात्
 ४।१।५।

नरिका ६।१।७६।
 नरे नाम्नि ५।२।१३०।
 न ल-निर्धार्य-पूरण-भाव-तृप्तार्थैः २।२।२३।
 न लिङि ५।४।१०२।
 न ल्यपि ५।३।८०।
 नवयज्ञादिभ्यः ४।२।१२४।
 नवात् ४।४।२८।
 न व्यतिहारे ६।१।१७।
 न शस-दद-वादि-अदेङाम् ५।३।१२५।
 न शुभ-रुचः १।१।४४।

नशेः क्षः ६।४।१३०।
 नशः अङि ५।३।१२४।
 नशः झलि ५।४।१२।
 नश् च अनन्त्यस्य झलि ६।४।६।
 नश् छवि अप्रशान् ६।४।३।
 न संबुद्धौ ५।४।४६।
 न संबुद्धौ ६।३।४६।
 न संयोगात् व-मः ५।३।१३३।
 न सामान्यवचनम् एकार्थं
 ६।३।२५।

न सु-दुरः केवलात् ५।४।२२।
 न सुपि यचि ६।३।१०६।
 नस् नासिकायाः तस्-क्षुद्रे ५।२।६१।
 न स्नोः ५।४।१२५।
 न स्वप्नसारणे १।४।५५।
 नह-आहः धः ६।३।६५।
 नहि-वृत्ति-वृषि-व्यधि-रुचि-सहि-तनिषु
 क्वौ ५।२।१४०।
 नाक्रोशे पुत्रस्य आदिनि तत्परे च
 ६।४।१४५।

नाग्लोपिशास्वृदिताम् ६।१।६२।
 नाज्झेः शतुः ५।४।३२।
 नाञ्चः पूजायाम् ५।३।५०।
 नाडी-तन्त्रयोः स्वाङ्गे ४।४।१४७।
 नातः ६।१।३७।
 नातः अम् अपञ्चम्याः २।१।४१।
 नात् इचि ५।१।१११।
 नात् ऐचि अग्नेः अविष्णौ ५।२।२४।
 नाद्यन्तयोः ६।४।६०।
 नानु-पराभ्याम् कृञः १।४।१३१।
 नानोः तपः १।१।७६।
 नान्यश्च नामाप्रधानात् २।१।१०।

नामैः ४।४।१०४।
नाम-गोत्र-रूप-स्थान-वर्ण-वयस्-वचन-धर्म-

जातीये वा ५।२।१०४।

नाम-रूपात् धेयः ४।४।२५।

नाम्नि ५।२।६८।

नाम्नि ६।३।३७।

नाम्नि क्तिच् १।३।७७।

नाम्नि ग्रह-आदिशः १।३।१५०।

नाम्नि जन्याः ३।४।८१।

नाम्नि नासाया नसः अस्थूलात्

४।४।१०६।

नाम्नि परात् च चतुर्थ्याः ५।२।१०।

नाम्नि षष्ठ्याः कन्या-उशीनरेषु २।२।६७।

नाम्नि अष्टनः ५।२।४६।

नाम्नि उदकस्य उदः ५।२।६५।

नामि अतिसृ-चतस्रोः ५।३।४।

नालि ६।२।३२।

नावादिभ्यः ठन् ४।२।११८।

नाशिषि अगो-वत्स-हले ५।२।१०२।

नासंन-वर्जनेषु ५।४।८३।

नासानतौ टीटञ्-नाटच्-भ्रटच् ४।२।३२।

नासिका-नाडी-मुष्टि-घटी-खरीभ्यः

१।२।१३।

नासिका-उदर-ओष्ठ-जङ्घा-दन्त-कर्ण-शृङ्ग-

अङ्ग-गात्र-कण्ठात् २।३।६२।

निकटादिषु वसति ३।४।७४।

निजाम् लुकि एत् ६।२।१२७।

नित्यवैरिणाम् २।२।५५।

नित्यं हस्ते-पाणौ उद्वाहे २।२।३८।

निद्रा-तन्द्रा-श्रद्धा-दया-हृदयात् वालुच्

४।२।१५७।

निन्दा-आशीः-प्रेष्येषु तिङाकाङ्क्षम्

६।३।१२६।

निन्द्ये पाशप् ४।३।४२।

नि-परेः च सेव-सिवु-सह-सुटाम्

६।४।५५।

निपानम् आहावः १।३।६३।

नि-प्रतेः स्तब्धः ६।४।६४।

निबिड-निबिरीष-चिक्क-चिकिन-चिपिटाः

४।२।३३।

निमान-निमेययोः मयट् ४।२।४६।

निमित्ताद् व्याप्येन २।१।८६।

निमित्ते संयोगोत्पाते ४।१।५१।

नियः १।३।१५।

नियः ६।२।६०।

नियः डित् (उणादि) १।४६।

निर्-अभेः पू-ल्वः १।३।१६।

निर्-अभि-अनोः च स्यन्दः अप्राणिनि

वा ६।४।६१।

निरा-अलंभ्याम् कुं इष्णुच् १।२।६०।

निर्-दुर्-बहिर्-आविर्-चतुर-प्रादुष्-पुर-

साम् ६।४।३५।

निर्विण्णः ६।४।१२३।

निर्वृत्ते अक्षयूतादिभ्यः ३।४।१८।

निवासस्य चरणे अण् च ३।२।६०।

निवासे तन्नाम्नि ३।१।६४।

निशा-प्रदोषात् ३।२।७४।

निष्कादेः शत-सहस्रात् ४।२।१२३।

निष्कुलात् निष्कोषणे ४।४।४६।

निष्कुषः ५।४।१०६।

निष्प्रवाणिः ४।४।१४८।

नि-सम्-वि-उपेभ्यः ह्रः १।४।७६।

निसः शतो डच् ४।४।६४।

निसः च श्रेयसः ४।४।६६।
 निसः तपि सकृत् ६।४।८८।
 निसः गते ३।२।१४।
 निह्नवे ज्ञः १।४।६०।
 नीक् वञ्च-संसु-ध्वंसु-भ्रंशु-कस-पत-पद-
 स्कन्दाम् ६।२।१३३।
 नी-दलिभ्याम् मिः (उणादि) १।६४।
 नील-पीतात् अन्-कनौ ३।१।४।
 नीलात् प्राणि-ओषध्योः २।३।३६।
 नीवाराः १।३।२२।
 नुक् च अनेकहलः ६।२।१२४।
 नुट् च (उणादि) ३।१।१३।
 नु-प्रच्छः १।४।५७।
 नुमि इच्-आदेर्हलः ६।४।१२६।
 नुम्-विसर्जनीय-शरव्यवाये ६।४।४७।
 नुर्वा ५।३।५।
 नृ-तत्स्थयोर्वृञ् ३।२।४६।
 नृति-खनि-रजः शिल्पिनि श्रुन् १।१।१५७।
 नृनाम्नि ठच्-घन्-इलचो वा ४।३।६४।
 नृनाम्नो वा ३।२।२६।
 नृहेतुभ्यो रूप्यः ३।३।५२।
 नन् पे रो वा ६।४।५।
 नेः १।३।५४।
 नेः सत्-पतः १।३।७६।
 नेः सय-सितयोः ३।४।५६।
 नेः स्नातः ६।४।७७।
 नेटि ६।१।५।
 नेन्द्रस्य परस्य ६।१।३२।
 नेः अञ्चेः (उणादि) १।१२।
 नेः ईच् च (उणादि) १।५६।
 नेः गद-नद-पत-पद-दा-धा-मा-वा-दिह-वह-
 शम-हन-या-सा-द्रा-प्सा-चि-वपिषु
 ६।४।११६।

नेर्ण च १।३।५०।
 नेर्विशः १।४।५१।
 नैकाचः ४।२।१२०।
 नैकाचः ५।३।१६५।
 नैतो द्वित्वे ६।३।१३२।
 नोऽणादौ ५।३।१३६।
 नोपान्तवतः २।३।१२।
 नो मट् ४।२।५५।
 नौ-तुला-विषैः तार्य-सम्मि-त-वध्येषु
 ३।४।६१।
 न्यग्रोधस्य केवलस्य ६।१।१६।
 न्यङ्क्वादयः ६।१।८४।
 न्यायो नये १।३।२८।
 नि-उदो ग्रहः १।३।२०।
 पक्षस्य तिः ४।२।२६।
 पक्षात् २।३।६६।
 पः-मत्स्य-मृगान् हन्ति ३।४।३२।
 पः श्वश्रूः २।३।७८।
 पचेः अतः इत् च (उणादि) ३।३३।
 पचः वः ६।३।६१।
 पञ्चत्-दशत् वर्गे वा ४।१।६३।
 पञ्चम्यां त्वरायाम् १।३।१४४।
 पञ्चम्यां परस्य १।१।८।
 पञ्चम्याः स्तोकादिभ्यः ५।२।२।
 पञ्च-विश्वात् जनान्तात् तदथात् ४।१।१०।
 पटि-असि-वसि-त्रपि-हनि-मनि-इन्दि-कन्दि-
 बन्धिभ्यः (उणादि) १।८।
 पणः परिमाणे १।३।५७।
 पण-पाद-मासात् यत् ४।१।४३।
 पणि-पतेः आङ् (उणादि) २।६।
 पति-चन्दिभ्याम् आलञ् (उणादि)
 ३।४।६।

पतिवत्नी भार्यायाम् २।३।२६।
 पतेः अङ्गच् (उणादि) २।२७।
 पत्यादिषु अहर्आदीनाम् ६।३।१०२।
 पत्युः समासे ६।२।५१।
 पत्युः अनश्वाद्यादेः २।४।३।
 पत्युर्न ऊढायाम् २।३।३०।
 पथः ष्ठन् ४।१।८७।
 पथकः ४।२।६६।
 पथि-मथिभ्याम् इनिः (उणादि) ३।८।४।
 पथि-मथि-ऋभुक्षाम् आत् ५।४।३८।
 पथो वा ४।४।५६।
 पथः असंख्यात् २।२।७५।
 पथि-अतिथि-वसति-स्वपतेः ढञ्
 ३।४।१०५।
 पथि-अर्थ-न्यायात् च अनेपते ३।४।६४।
 पथि-आराधनयोः १।४।६८।
 पदम् अस्मिन् दृश्यम् ३।४।८६।
 पदस्य वा ६।१।२०।
 पदादौ वा ६।४।१५२।
 पदान्त-प्रतिकण्ठ-अर्थ-ललामम् गृह्णाति
 ३।४।३५।
 पदान्तस्य वा ५।१।७३।
 पद-अस्वैरि-पक्ष्य-बाह्यासुग्रहः १।१।१२६।
 पनि-मनि-रभि-चमि-अति-वेति-युवः असच्
 (उणादि) ३।६५।
 पन्थकः ३।३।३।
 पद्-निश्-मास्-हृद्-यूषन्-दोषन् शसादौ
 वा ५।४।७७।
 पयः-पुरसो धानः (उणादि) ३।६७।
 पयसो यत् ३।३।१२२।
 परदारदीन् गच्छति ३।४।४५।
 परमेष्ठी (उणादि) ३।८।८।
 परस्य अपुंसि आम् ६।३।१०।

पर-अवरात् तस् वा ४।३।३७।
 पर-अवर-अधम-उत्तमादेः ३।२।६७।
 परिक्रियश्चतुर्थी च २।१।६४।
 परिखायाः ढञ् ४।१।२२।
 परिघ-उद्घ-निघाः १।३।६७।
 परिपन्थं तिष्ठति च ३।४।३३।
 परिमाणात् पचः १।२।१७।
 परिमाणात् लुकि असंख्याकाल-विस्ता-
 आचित-कम्बल्यात् २।३।२४।
 परिमुखादिभ्यः ३।३।२३।
 परिवृतो रथः ३।१।१०।
 परि-वि-अवात् क्रियः १।४।५२।
 परिव्रजेः षश्च पदान्ते (उणादि) ३।७।१।
 परिषदो ण्यः ३।४।४२।
 परिषदो ण्यश्च ३।४।१०३।
 परस्-परारि-चिरात् लः ३।२।७८।
 परेः ६।४।६३।
 परेः सृ-चरो यः १।३।८२।
 परेर्ध-अङ्क-योगेषु ६।३।४५।
 परेर्द्युते १।३।१७।
 परेर्भुवः अवज्ञाने १।३।४४।
 परेर्मुख-पार्श्वात् ३।४।२८।
 परेर्मृशश्च १।४।१३४।
 परेर्यज्ञे १।३।३७।
 परेर्वर्जने वाक्ये वा ६।३।२।
 परेर्वा ५।१।४८।
 परोक्षे लिट् १।२।८१।
 परा-उपात् १।४।८५।
 परोवर-परंपर-पुत्रपौत्रम् अनुभवति
 ४।२।१६।
 पर्जन्यः (उणादि) २।१।१७।
 पर्पादिभ्यः ष्ठन् ३।४।८।

परि-अनुभ्यां ग्रामात् ३।३।२५।

पात्रात् ष्ठन् ४।१।४६।

परि-अप-आङ्-बहिरञ्चः पञ्चम्या वा

पात्रात् यश्च ४।१।७८।

२।२।७।

पादः २।३।७।

परि-अपाभ्यां वर्जने २।१।८२।

पादः पत् ५।३।१२७।

पर्यायः क्रमे १।३।२६।

पादस्य पाद् अहस्त्यादिभ्यः

पर्वत-जीवन्तात् वा २।४।३६।

४।४।१२७।

पर्वतात् ३।२।५५।

पादस्य आजि-आति-ग-उप-हते पदः

पर्व-मरुद्भ्यां तप् ४।२।१४२।

५।२।५८।

पश्वादिभ्यः अण् अङ्गिर्याम्

पाद्यम् ४।४।३३।

४।३।६३।

पानं देशे ६।४।१०६।

पश्चात् ४।३।३५।

पापतिः १।२।११४।

पश्चार्धम् ४।३।३६।

पारस्करादीनि नाम्नि ५।१।१४२।

पाक-कर्ण-पर्ण-पुष्प-फल-मूल-वालान्तात्

पारायण-तुरायण-चान्द्रायणं वर्तयति

२।३।७२।

४।१।८३।

पा-घ्रा-ध्मा-धेट्-दृशः शः १।१।१४३।

पारावार-अवारपारात् खः ३।२।६।

पा-घ्रा-ध्मा-स्था-म्ना-दाण्-दृश-शद-सदाम्

पारावार-अवारपार-अत्यन्त-अनुकामम्

पिव-जिघ्र-धम-तिष्ठ-मन-यच्छ-

गामी ४।२।१७।

पश्य-शीय-सीदाः ६।१।१०६।

पाराशर्य-शिलालिभ्यां णिनिः

पाठे अत्वतः ५।४।१६२।

३।३।७८।

पाठे विभाषितात् १।४।१२५।

पारे मध्ये षष्ठ्या वा २।२।११।

पाणिगृहीती ऊढा २।३।५८।

पार्श्व-पौरुषेये ३।१।५३।

पाणिघ-ताडघौ शिल्पिनि १।२।४२।

पार्श्वेन अन्विच्छति ४।२।८१।

पाणि-समवाभ्यां सृजः १।१।१३१।

पाण्ड्यादयः (उणादि) १।८०।

पाण्डु-उदक-कृष्णात् भूमेः ४।४।७२।

पालन्-वलन् शीङः (उणादि)

पाण्डोड्यर्चण् २।४।१०२।

३।५१।

पा-तृ-तुदि-वचि-रिचि-सिचि-विशेः ठक्

पाशादिभ्यः यः ३।१।५६।

(उणादि) २।५८।

पिच्छादिभ्यः च इल्च् ४।२।१०३।

पातेः ६।१।५१।

पितृ-मात्रादेः छण् २।४।६७।

पातेः डतिः (उणादि) १।८५।

पितृव्य-मातामह-पितामहाः ३।१।६०।

पात्र-आचित-आढकात् खो वा

पित्रादयः (उणादि) १।५०।

४।१।६६।

पित्र्यं वा ३।३।५१।

पिनाकादयः (उणादि) २।१६।

पिबः पीप्यः ६।१।६८।

पीडायाम् १।३।१४७।

पी-म्योः रुः (उणादि) १।३६।

पीला-मण्डूकात् वा २।४।४८।

पीत्वादीनां पाके कुणप् ४।२।२४।

पीवरादयः (उणादि) ३।१६।

पुम्-जनुभ्याम् अनुज-अन्धयोः ५।२।८।

पुन्नाम्नः योगात् अपालकान्तात्
२।३।४४।

पुंवत् स्वपदार्थ-जातीय-देशीयेषु

५।२।३६।

पुंसि उटि उगितः ५।४।२४।

पुंसः असुङ् ५।४।४२।

पुच्छात् २।३।६३।

पुणेः क्यन् (उणादि) २।११८।

पुण्याहवाचनादिभ्यः लुक् ४।१।१३४।

पुत्रात् छश्च ४।१।५४।

पुत्रान्तात् वा २।४।६२।

पुत्रे ५।२।२२।

पुत्रे वा ५।२।१३।

पुनः ५।१।६।

पुमः खयि अमि ६।४।२।

पुरः कुषन् (उणादि) ३।५८।

पुर्-अप्-धुरश्च अनक्षस्य अच् ४।४।५७।

पुराणर्षेः ब्राह्मणम् ३।३।७६।

पुरुषात् ढञ् ४।१।१४।

पुरुषात् कृते ढञ् ३।३।८२।

पुरुषात् वधे च ३।३।१२०।

पुरुषात् वा २।३।२६।

पुरुषे वा ५।२।१२४।

पुरस्-अग्रतस्-अग्रेभ्यः सत्तेः १।२।५।

पुरस्-अस्तम् असंख्यम् २।२।३०।

पु-शकि-तकि-चति-यति-शसि-सहि-यजः

१।१।१०८।

पुषः कित् (उणादि) ३।२।५।

पुष्करादिभ्यः देशे ४।२।१३२।

पू-क्लिशः त्वश्च ५।४।१११।

पूगात् ज्यः ४।३।८८।

पूढो ह्रस्वश्च (उणादि) ३।४।१।

पूजायां सु-अतेः प्राग् अन्यार्थात्

४।४।५४।

पूजिते ६।३।१२७।

पूजा-उत्सङ्ग-उपनयन-ज्ञान-भृति-व्यय-

विगणनेषु नियः १।४।८२।

पूजो नाशे ६।३।७७।

पूतक्रतु-वृषाकपि-अग्नि-कुसित-कुसीदानाम्

ऐ च २।३।४५।

पूरण-अर्धात् ठन् ४।१।६०।

पूर्णात् वा ४।४।१३७।

पूर्वत्र असिद्धम् ६।३।२७।

पूर्वपदात् नाम्नि ६।४।१०२।

पूर्व-अग्रे-प्रथमेषु १।३।१३३।

पूर्वात् ४।२।६२।

पूर्वात् कर्तुः १।२।६।

पूर्वादिभ्यो नवभ्यः स्मात्-स्मिन् च

२।१।१५।

पूर्व-अधरयोः पुर्-अधौ च ४।३।३१।

पूर्व-अन्य-अन्यतर-इतर-अपर-अधर-

उत्तरात् एद्युः ४।३।१७।

पूर्वाह्ण-अपराह्णात् वा ३।२।७७।

पूर्वाह्ण-अपराह्ण-आर्द्रमूल-प्रदोष-अव-

स्करात् कन् नाम्नि ३।३।२।

पृथग्-नानाभ्याम् २।१।८६।
 पृथिवीमध्यस्य मध्यमश्च ३।२।५६।
 पृथिवी-सर्वभूमेः अञ्-अणौ ४।१।५५।
 पृथिव्या ज्ञः २।४।६।
 पृथ्वादिभ्यः इमनिच् ४।१।१३६।
 पृषि-रञ्जेः कित् (उणादि) २।४६।
 पृषि-वृषि-महेः शतृः (उणादि) ३।७७।
 पृषोदरादीनि ५।२।१२७।
 पृष्ठ्य-अहीनौ क्तौ ३।१।५४।
 पृ-पा-तलेः पः (उणादि) २।८२।
 पेवे पिषौ ५।२।६८।
 पैङ्गाक्षिपुत्रादिभ्यः छः ३।१।२४।
 पैलादिभ्यः २।४।१२१।
 पौत्रादेः स्त्रियाः कुत्सिते ण च
 २।४।७६
 पौत्रादेः अस्त्रियां गुर्वयित्ते २।४।१८।
 पौरोडाश-पुरोडाशात् ष्ठन् ३।३।४२।
 प्यायः पीः ५।१।३४।
 प्रकारे गुणस्य ६।३।७।
 प्रकारे थाल् ४।३।१६।
 प्रकृतेः ५।३।१।
 प्रकृते मयट् ४।४।६।
 प्रकृष्टः ४।१।१२६।
 प्रचेतसो राजनि वा ६।३।१०१।
 प्रच्छि-वचोः तौ च (उणादि) ३।६६।
 प्रजन-रुचि-अपत्रप-वृतु-वृधु-सह-चर-भ्राजः
 १।२।६२।
 प्रजने वियः ५।१।५७।
 प्रजने सतैः १।३।६१।
 प्रजाया असिच् ४।४।१०७।
 प्रज्ञादिभ्यो वा ४।४।२२।

प्रज्ञा-श्रद्धा-अर्चा-वृत्तिभ्यो णः ४।२।१०५।
 प्रणाय्यः असम्मते १।१।१३५।
 प्रतिजनादिभ्यः खञ् ३।४।१०१।
 प्रतिना पञ्चम्याः ४।३।५।
 प्रतिना प्रतिनिधि-प्रतिदानयोः २।१।८३।
 प्रतिना मात्रार्थे २।२।५।
 प्रतिपथम् एति ठश्च ३।४।४०।
 प्रति-परिभ्यां भागे च २।१।५५।
 प्रतिर्वास्य ४।१।२८।
 प्रतिश्रुतौ ६।३।१२६।
 प्रतेः ५।१।३०।
 प्रतेः सूत्रे ६।४।७८।
 प्रतेः उरसः आधारात् ४।४।६८।
 प्रति-अति-अभीनां क्षिपः १।४।१३२।
 प्रति-अनुभ्यां गृणो व्याप्ये २।१।७७।
 प्रति-अनु-अवात् साम-लोमनः ४।४।६०।
 प्रत्युक्तौ हिः ६।३।१२०।
 प्रथने वेः अशब्दे १।३।२५।
 प्रथम-चरम-तय-अय-अल्प-अर्घ-नेम-कति-
 पयात् २।१।१४।
 प्रथमयोः अचि ५।१।१०६।
 प्रथि-चरेः अमच् (उणादि) २।६६।
 प्र-दश-ऋण-वसन-कम्बल-वत्सरात् ऋणे
 ५।१।६१।
 प्र-निर्-अन्तर्-शर-इक्षु-प्लक्ष-आम्र-कार्ष्य-
 पीयूक्षा-खदिरात् ६।४।१०४।
 प्रभूतादीन् आह ३।४।४७।
 प्रभौ परिवृढः ५।४।१४६।
 प्रमाणे १।३।१४३।
 प्रमाण्याः ४।४।१००।
 प्रयोक्तुः भियः पुक् ६।१।५२।

प्रयोजकव्यापारे १।१।४६।
 प्रयोजकात् भी-स्मेः णेः १।४।१२०।
 प्रयोजनम् ४।१।१२७।
 प्रयोज्य-नियोज्यौ शक्ये ६।१।१६६।
 प्रशस्यस्य श्रः ४।३।४६।
 प्रश्न-आख्यानयोः इञ् च १।३।६२।
 प्रष्ठः अग्रगामी ६।४।७६।
 प्र-संभ्याम् हर्षे १।३।५६।
 प्रसूता-प्रजाता-गर्भिण्यः ५।२।३०।
 प्रस्त्यः मः ६।३।८८।
 प्रस्त्रः अन्यत्र १।३।२४।
 प्रस्थ-वह-पुरान्त-योपान्त-धन्वाथत् वुञ्
 ३।२।३६।
 प्रहरणम् ३।४।५६।
 प्रहरणात् अस्यां क्रीडायां णः ३।१।३५।
 प्राक् क्रीतात् छः ४।१।१।
 प्राक् हितात् यत् ३।४।७६।
 प्राक् जितात् अण् २।४।१।
 प्राग्जित्ये अचि २।४।११७।
 प्राक् ढञः कः ४।३।५५।
 प्राक् यतः ठक् ३।४।१।
 प्राग् युवोः अवुग्युग् असिद्धं समानाश्रये
 ५।३।२१।
 प्राग् वतेः अग्नि-कलिभ्यां ढक् २।४।१२।
 प्राग् वतेः ठञ् ४।१।२३।
 प्राचां ग्रामाणाम् ६।१।२५।
 प्राचां नगरस्य ६।१।३४।
 प्राच्यात् छे ३।२।३२।
 प्राच्यात् इञः अतौल्वलिभ्यः
 २।४।१२२।
 प्राणिजाति-वयोऽर्थ-उद्गात्रादिभ्यः अञ्
 ४।१।१४५।

प्राणि-तूर्याङ्गानाम् २।२।५८।
 प्राणिनि ४।१।१०४।
 प्राणिभ्यः अञ् ३।३।१०५।
 प्राण्यङ्गात् आतः लच् वा
 ४।२।६६।
 प्रात् पुराणे नश्च ४।४।३०।
 प्रात् सु-द्रु-स्तुवः १।३।१८।
 प्रादौ एकस्मिन् ६।१।५६।
 प्रादिभ्यः ऊहः ह्रस्वः ६।२।७५।
 प्रादिभ्यः ४।४।११०।
 प्रादिभ्यः खल्-घञोः ५।४।२१।
 प्रादिभ्यः स्तम्भु-सिवु-सहाम् चङि
 ६।४।६६।
 प्रादिभ्यः अदः १।३।४६।
 प्रादिभ्यः दा-धः किः १।३।७१।
 प्रादिभ्यः अध्वनः ४।४।७१।
 प्रादिभ्यः रुवः १।३।११।
 प्रादिभ्यः असु-ऊहो वा १।४।७२।
 प्रादीनां घञि बहुलम् ५।२।१४१।
 प्रादीनां सु-सू-सो-स्तुभ-स्था-सेनि-सेध-
 सिच्-सञ्ज-स्वञ्जाम्
 ६।४।५०।
 प्रादीनाम् अयतौ ६।३।४२।
 प्रादीनाम् ऋति घातौ ५।१।६३।
 प्रादुः-प्रादिभ्यः यचि अस्तेः ६।४।७४।
 प्राद् ऊढ-ऊढि-एष-एष्येषु ५।१।८६।
 प्रादेः अचः तः ६।२।६७।
 प्रादेः अजाद्यन्तात् युजेः अयज्ञपात्रेषु
 १।४।११७।
 प्रादि-अन्तरः अदुरः णः ६।४।११४।
 प्राद् वहः १।४।१३३।

प्राद् वाहनस्य ढे ६।१।३८।
प्राध्वं बन्धे २।२।३६।
प्राप्त-आपन्तौ द्वितीया अत्वं च
२।२।१६।

प्रायः अन्नम् अस्मिन् ४।२।८७।
प्राल्लिप्सायाम् १।३।३८।
प्राह्णे-प्रगे-सायम्-चिरम्-असंख्यात् ट्युः
३।२।७६।

प्रिय-वशात् वदः १।२।२३।
प्रिय-मुखात् आनुकूल्ये ४।४।४७।
प्रिय-स्थिर-स्फिर-उरु-गुरु-बहुल-तृप्र-दीर्घ-
ह्रस्व-वृद्ध-वृन्दारकाणां प्र-स्थ-स्फ-
वर-गर-वंह-त्रप-द्राघ-ह्रस्-वर्ष-
वृन्दाः ५।३।१६३।

प्रु-द्रु-सु-बुध-युध-इङ्ग-नश-जनः
१।४।१४०।

प्रु-सृ-ल्वो वुन् १।१।१५८।
प्रे स्त्यः त-तवतोः ५।१।२८।
प्रेष-अनुज्ञा-प्राप्तकालेषु १।३।१२३।
प्रोक्तात् लुक् ३।१।४१।
प्र-उपात् आरम्भे १।४।८८।
प्लुतः तुकि ६।३।३२।
प्लुतात् ति च ६।४।३८।
प्वादीनां ह्रस्वः ६।१।१०८।

फक्-फिजोः वा २।४।११६।
फणादीनां सप्तानाम् ५।३।१२१।
फल-बर्ह-मालात् च इनच् ४।२।१४१।
फलवति १।४।१२४।
फलानाम् २।२।६१।
फलेग्रहिः आत्मभरिः कुक्षिभरिः
१।२।१०।

फल्गुन्याः टः ३।३।१०।
फाण्टाहतेः ण-फिजौ २।४।८२।
फाल्गुनी-श्रवणा-कार्तिकी-चैत्रीभ्यः वा
३।१।२०।

फिन् बहुलम् २।४।६३।
फुल्ल-क्षीव-कृश-उल्लाघाः ६।३।६४।
फेनात् ४।२।१०२।
फेः छ च २।४।८१।

वध एः ई च १।१।२०।
बन्धौ अन्यार्थे ५।१।१२।
वभ्रोः कौशिके २।४।२६।
बल-वातं चूलः ४।२।१६०।
बहिषः टीकक् च २।४।१०।
बहुत्वविषयेभ्यः ३।२।३६।
बहुत्वे वा ६।३।२६।
बहु-पूग-गण-संघात् तिथट् ४।२।६०।
बहुलम् १।१।१०३।
बहुवचनस्य वस्-नसौ ६।३।१७।
बहुषु झलि एत् ६।२।४१।
बहूर्जि बहूर्जिज् ५।४।२८।
बहोः एः भू च ५।३।१६०।
बहोः धा च अविप्रकर्षे ४।४।६।
बल्लि-उर्दि-पदि-कापिशीभ्यः षक्
३।२।८।

बह्वचः प्राच्यात् इजः २।४।११३।
बह्वचः अन्तोदात्तात् ठञ् ३।३।३६।
बह्वचपूर्वपदात् ठच् ३।४।६५।
बहु-अल्पायात् कारकात् मङ्गले शस्
वा ४।४।१।
बाढ-अन्तिकयोः साध-नेदौ ४।३।५१।
बाष्पादयः (उणादि) २।८५।

बाहीकग्रामात् ३।२।३४।

बाहीकादिभ्यः अण् ३।२।२०।

बाहीकेषु अब्राह्मण-राजन्यात् शस्त्रजी-
विसंघात् ज्यट् ४।३।६०।

बाहुल्ये २।२।७४।

बाह्वन्त-कद्रु-कमण्डलुभ्यः नाम्नि

२।३।७७।

बाह्वादिभ्यः गोत्रादिभ्यः २।४।२०।

विदादिभ्यः अञ् २।४।२२।

बिभराम् १।१।५६।

विल्वकीयादीनाम् ईयः ५।३।१५७।

बोधात् २।४।२८।

ब्रघि-वसि-धा-पृभ्यो नः (उणादि)

२।७३।

ब्रह्मणः त्वः ४।१।१५२।

ब्रह्मणो जातौ ५।३।१७३।

ब्रह्म-वर्चसात् ४।१।५३।

ब्रह्म-हस्ति-राज-पल्यात् वर्चसः ४।४।६३।

ब्राह्मणात् शंसी ५।२।३।

ब्राह्मणात् नाम्नि ४।२।७६।

ब्रुवः ईट् ६।२।३४।

ब्रुवः पञ्चानाम् आदितः आह च

१।४।१३।

ब्रुवः वच् ५।४।८०।

भक्तात् णः ३।४।१०२।

भक्तात् अण् वा ३।४।६६।

भक्षेः अहिंसायाम् २।१।४६।

भुजः णिवः १।२।५२।

भञ्जि-भास-मिदः घुरच् १।२।१०७।

भञ्जेः चिणि ५।३।५६।

भद्रादयः (उणादि) ३।१४।

भद्र-उष्णयोः करणे ५।२।८२।

भर्गात् त्रिगते २।४।३२।

भर्त्सने द्विरुक्तं पर्यायेण ६।३।१२३।

भवतो दश्च ३।२।२६।

भवत्-दीर्घायुर्-आयुष्मत्-देवानांप्रियैस्ते

अन्याभ्यश्च ४।३।१२।

भविष्यति लृट् १।३।२।

भसि-जनि-वृतेः मनिन् (उणादि)

३।८१।

भस्त्रादिभ्यः ष्ठन् ३।४।१५।

भस्त्रा-एषा-अजा-ज्ञा-द्वा-स्वानाम्

६।१।७२।

भागात् यत् च ४।१।६१।

भागात् यत् च ४।४।२६।

भागे अष्टमात् ज्ञः वा ४।२।६२।

भाज-गोण-नाग-स्थल-कुण्ड-काल-कुश-

कामुक-कवरात् पक्व-आवपन-स्थूल-

कृत्रिम-अमत्र-कृष्ण-आयसी-रिरंसु-

केशवेशेषु २।३।३८।

भावघञः ज्ञः ३।१।३६।

भावात् इमप् ३।४।१६।

भाव-आप्ययोः १।१।७८

भाव-आप्ययोः १।१।१०४।

भाव-आप्ययोः १।४।४७।

भाव-आप्ययोः क्तः १।२।६७।

भाव-आरम्भयोः वा ५।४।१४२।

भावे वा २।४।१४।

भावे हनः त च १।१।११६।

भिक्षादिभ्यः अण् ३।१।४४।

भित्तं शकले ६।३।६७।

भिदादि-षितः अङ् १।३।८६।

भियः कृः १।२।१२१।
 भियः प्रयोजकात् ५।१।५८।
 भियः पुग् वा (उणादि) २।१०४।
 भियः वा ५।३।१०८।
 भिरोः स्थानम् ६।४।६७।
 भी-शीभ्याम् आनकः (उणादि)
 २।११।

भी-ही-हूनां द्वे च १।१।५५।
 भुजः अपालने १।४।११६।
 भुवः १।१।११८।
 भुवः १।२।६३।
 भुवः (उणादि) ३।८७।
 भुवः अत् ६।२।१२६।
 भुवः वा १।१।१५१।
 भुवः वुग् लुङ्-लिटोः ५।३।६२।
 भू-जि-वसि-वहि-साधि-भासि-गडि-मण्डि-
 हेमिभ्यः (उणादि) २।४५।

भूतपूर्वे चरट् ४।३।४३।
 भूते १।२।६२।
 भूषण-आदर-अनादरेषु अलम्-सत्-असतः
 २।२।२७।

भू-सुवः अद्वेः तिङि ६।२।२६।
 भू-सुङ्-अदिभ्यः क्रिन् (उणादि)
 १।७०।

भृञादिभ्यः अतच् (उणादि)
 २।४८।

भृञः असंज्ञायाम् १।१।१२३।
 भृति-माषात् ठच् ४।४।११८।
 भृति-वस्न-अंशाः ४।१।६६।
 भृ-मृ-तृ-चरि-तति-मस्जि-शीभ्यः उः
 (उणादि) १।५।

भृ-वृ-तृ-जि-सहि-तपि-दमः नास्मि
 १।२।३०।
 भोग-अन्त-आत्मनः खः ४।१।६।
 भोज्यम् अन्ते ६।१।६७।
 भो-भगो-अघोभ्यः अशि लोपः ६।४।२४।
 भौरिकि-ऐषुकार्यादिभ्यः विधल्-
 भक्तलौ ३।१।६३।

भ्यसः अभ्यम् २।१।२६।
 भ्रमि-वठि-देवि-वासेः अरन् (उणादि)
 ३।२०।
 भ्रमेः डूः (उणादि) १।४२।
 भ्रस्जि-स्पशेः सलोपः च (उणादि)
 १।१८।

भ्रस्जः भर्ज् वा ५।३।६२।
 भ्राज-भास-भाष-दीप-जीव-माल-पीडां वा
 ६।१।६३।

भ्रातुः व्यत् २।४।६४।
 भ्राश-भ्लाश-भ्रमु-क्रमु-क्लमु-वसि-व्रुटि-
 लषः वा १।१।८८।

भ्राष्ट्र-अग्न्योः इन्धे ५।२।८०।
 भ्रौवेयः २।४।५५।

मः सेटः न अवमि-अमि-कम-आचम-
 विश्रमः ६।१।४२।

मकुर-दर्दुर-विधुराः (उणादि) ३।२।
 मङ्गेः अलच् (उणादि) ३।५२।
 मङ्ङुक-झर्झरात् अण् वा ३।४।५८।
 मत-जनयोः करण-जल्पयोः ३।४।६८।
 मतो बह्वचः अनजिरादीनाम् ५।२।१३३।
 मत्स्यस्य यः ५।३।१५१।
 मदेः स्यन् (उणादि) २।११२।
 मदः अप्रादेः १।३।५८।

मदि-अङ्गि-वाशि-मथि-चतिभ्यः उरच्
(उणादि) ३।१।

मदि-अशि-वसेः सरन् (उणादि)
३।१८।

मद्र-भद्रात् वपने ४।४।५१।

मधुक-मरीचयोः अण् ४।१।६१।

मघोः ब्राह्मणे २।४।२५।

मध्यस्य दिने ५।२।८३।

मध्य-आदिभ्यां मः ३।२।८२।

मध्यात् मण्-मीयौ च ३।३।३३।

मनः १।२।६०।

मनः २।३।१३।

मनसः नाम्नि ५।२।६।

मनि-पचि-मचां नाम्नि ५।३।१२३।

मनेः उत् च (उणादि) १।५४।

मनोः औ वा २।३।४३।

मनोः जातौ यत् सुक् च २।४।६४।

मन्थ-ओदन-सक्तु-बिन्दु-वज्र-भार-हार-
वीवध-गाहेषु ५।२।७०।

मन्द-अल्पाच्च मेधायाः ४।४।१०८।

मन्-मात् नाम्नि ४।२।१३३।

मन्याप्ये कुत्सायाम् अनावदौ वा
२।१।८०।

मयः उञोऽचि वः ६।४।१६।

मयट् ३।३।५३।

मयट् अभक्ष-आच्छादने ३।३।१०६।

मसेर् ऊरन् (उणादि) ३।३०।

मस्जः अन्त्यात् पूर्वः ५।४।१३।

महतश्च ठञ् ४।१।१२।

महाकुलाद् अञ्-खञौ २।४।७५।

महानाम्यादीनाम् ४।१।१०७।

महाराज-प्रोष्ठपदात् ठञ् ३।१।३२।

महेन्द्राद् वा ३।१।२७।

मांसस्य पचि घञ्-त्युटोर्लोपः ५।२।८७।

माङि लुङ् १।३।४।

मा-छा-ससि-सूभ्यः यः (उणादि)

२।१०६।

माणव-चरकात् खञ् ४।१।१५।

मात-मातृक-मातृषु वा ५।१।१३।

मातर-पितरौ चार्थे ५।२।२०।

मातुः उत् संख्या-सं-भद्रादेः २।४।४५।

मातुः मातच् पुत्रे श्लाघ्ये ६।२।४७।

मातुल-उपाध्यायात् वा २।३।५०।

मातृ-पितृभ्यां स्वसा ६।४।७१।

माथान्त-पदवी-अनुपद-आक्रन्दं धावति
३।४।३४।

मात् उपान्तात् च मतोर्वः ६।३।३५।

मात् वर्मणः अपत्ये ५।३।१७१।

माने कंश्च ४।२।६४।

माने मात्रट् ४।२।३८।

माने वयः ३।३।१२५।

मान्तस्य युव-आवौ द्विवचने ५।४।५८।

माला-इल्वल-पल्वल-चपाल-शिथिल-

शुकल-तण्डुलाः (उणादि) ३।५३।

माशब्दात् इत्यादिभ्यः ३।४।४८।

मासात् वयसि यत्-खञौ ४।१।६६।

मा-स्था-सा-गा-पिब-हाग्-दा-धां हलि
५।३।७७।

मित-नखात् १।२।१८।

मितां ह्रस्वः ६।१।५६।

मिथ्यायोगे कृञः अभ्यासे १।४।१२३।

मित् अचः अन्त्यात् परः १।१।१४।

मिदेः एत् ६।१।१०६।

मिपः अम् १।४।३१।

मिमतात् २।४।८३।

मि-मी-मा-रभ-लभ-शक-पत-पद-दा-धाम्

अचः सि सनि इस् ६।२।१०६।

मि-म्योः अखल्-अचि ५।१।५३।

मुदि-ग्रः गक्-गौ (उणादि) २।२६।

मुद्रात् अण् ३।४।२५।

मुहेर् मूर् च- (उणादि) २।२४।

मूर्तो घनः १।३।६५।

मूलम् अस्य अट्टम् ३।४।८७।

मूलेन आनाम्ये ३।४।८६।

मृ-कणिभ्याम् ईचिः (उणादि) १।६८।

मृगपूर्वोत्तरात् च सक्थनः ४।४।८३।

मृगव्या-अटाटचे १।३।८१।

मृ-गृ-वा-हसि-इण्-अमि-दमि-लू-पू-धूविभ्यः

तन् (उणादि) २।५०।

मृडः उतिः (उणादि) ३।७४।

मृडः त्युक् (उणादि) १।३६।

मृडः लुङ्-लिङ्गेश्च १।४।११६।

मृजेः आत् ६।१।१।

मृड-मृद-गुध-कुष-क्लिश-वद-वस-लुच-ग्रहां

क्त्वि ६।२।१६।

मृदः तिकन् ४।४।२३।

मृषः अक्षान्तौ ६।२।१७।

मेघ-ऋति-भयात् कृन्ः खः १।२।२७।

मेडः इद् वा ५।३।८१।

मेडः १।३।१३०।

मेघा-रथात् इरः ४।२।११४।

मेः आनिः १।४।२३।

मेः णलि वा ६।१।४४।

मः नः म्-चोश्च ६।३।७३।

मो वा ५।३।३६।

य-काभ्याम् आपः अत्यक्-त्यपो वा

६।१।७१।

यकि ५।३।६४।

यङश्चाप् २।३।८०।

यङि ५।१।२५।

यङि ६।२।८२।

यङः बहुलम् १।१।८६।

यङः वा ६।२।३५।

यच्च-यत्रयोः गर्हायाम् च १।३।११४।

यत्-छौ चलोपश्च ४।२।५८।

यचि अणादौ ५।२।३२।

यचि अशि-सुटि ५।३।१२६।

यजः १।२।६३।

यज-जप-दह-दशः यङः १।२।११२।

यजेः शश्च (उणादि) ३।१०३।

यजः बहुलम् ६।१।६८।

यज्ञात् घः ४।१।७७।

यज्ञेभ्यः ३।३।४०।

यज्ञे संस्तावः १।३।२३।

यन् २।४।६।

यन्-अञोः बहुषु अस्त्रियाम् २।४।१०७।

यन्-इञः २।४।३७।

यन्ः अषावटात् २।३।१८।

यणः इकः ५।२।१४७।

यण् अचि ६।२।१०५।

यण् इकः ५।१।११४।

यणो मयः ६।४।१४३।

यङ्संयोगात् आतः ६।३।७५।

यत् १।१।१०७।

यतो निर्धारणम् २।१।६२।

यतः अपतेर्वा ५।४।१४०।

यत्क्रिया क्रियाचिह्नम् २।१।१६०।

यत्-तद्-एकात् द्वाभ्यां निर्धारणे डतरच्
४।३।७५।

यत्-तद्-एतदः वतुप् ४।२।४३।

यति अवर्णे ५।२।६२।

यथा-कथाचात् णः ४।१।११६।

यथा न तुल्ये २।२।३।

यथामुख-सम्मुखं दृश्यते अस्मिन्
४।२।१०।

यथास्वे यथायथम् ६।३।११।

यद्-यदि-यदा-जातुषु लिङ् १।३।११३।

यमः सं-वि-उपाच्च १।३।५३।

यमः सूचने ५।३।४७।

यम-रम-नम-आतां सक् च ५।४।१७०।

य-र-ण-गात् मः ५।४।१३४।

य-र-लात् भः ५।४।१३३।

यरः अमि अम् वा ६।४।१४०।

यवनात् लिप्याम् २।३।५४।

यव-यवक-षष्टिकात् यत् ४।२।३।

यवात् दोषे २।३।५३।

यसः १।१।८६।

यस्कादिभ्यः २।४।११०।

यस्य ५।३।१४६।

यस्य हलः ५।३।६५।

याङ् आपः ६।२।५६।

यानात् ३।३।८७।

यानादेः अब् ३।३।८६।

यालोपो दरिद्रः (उणादि) १।४६।

यावद् इयत्त्वे २।२।४।

यावादिभ्यः कन् ४।४।१२।

यासुट् अतङ् कित् १।४।३३।

यि किङ्कति अयङ् ६।२।७४।

यि परे अव्-आवौ ५।१।७६।

यि लोपः ५।३।१११।

य्-इवर्णयोः दीधी-वेव्योः ६।२।१०४।

यु-कु-सूनां किञ्च (उणादि) २।८४।

युजि-रुजि-तिजेः कुश्च (उणादि)

२।१०५।

युजेः असमासे ५।४।२६।

युट् च (उणादि) ३।११४।

युधि-हि-इन्धि-जनि-श्या-धूम्यः मक्
(उणादि) २।१०३।

युव-अल्पयोः कन् वा ४।३।५२।

युवोः अन-अकौ असः ५।४।१।

युष्मद्-अस्मदोः कञ् युष्माक-

अस्माकौ च ३।२।६२।

युष्मद्-अस्मदोः षष्ठी-चतुर्थी-द्वितीयान्त-

योः वाम्-नौ वा ६।३।१६।

युष्मद्-अस्मदोः अनादेशे ५।४।५४।

युष्मद्-अस्मद्व्यां ङ्सः अश् २।१।२६।

युष्मदि मध्यमत्रयम् १।४।१४६।

युस् ४।२।१५१।

यूकाआदयः (उणादि) २।२।

यूथआदयः (उणादि) २।५६।

यूनः तित् २।३।८१।

ई-ऊभ्याम् चाट् ६।२।५३।

यूय-वयी जसि ५।४।५६।

ये वा ५।३।४१।

योगात् यच्च ४।१।१२१।

योऽचि ५।४।५६।

योऽचि वा अनुञि ६।४।२६।

योजनं गच्छति ४।१।८५।
योद्धृप्रयोजनात् संग्रामे ३।१।३४।
योपान्तात् गुरुपोत्तमात् असुप्रख्याद्
वुञ् ४।१।१४८।

यो यङः १।२।१२३।
योः आगूच् (उणादि) १।४।१।
यो वलि लोपः ५।१।६३।
रः ऋतः पृथु-मृदु-कृश-भृश-दृढ-परिवृ-
ढानाम् ५।३।१६४।

रक्त-अनित्ययोः ४।४।१४।
रक्षति ३।४।३०।
रङ्कोः प्राणिनि वा ३।२।६।
रङ्गः ५।३।२६।
रञ्जेः क्युन् (उणादि) २।६६।
र-दात् त-तवतोः दश्च ६।३।७४।
रधः ५।४।१५।
रघादिभ्यः ५।४।१०८।
रभः अशप्-लिटोः ५।४।१७।
रमि-कुषि-काशिभ्यः क्यन् (उणादि)
२।५४।

रमः वि-आङोश्च १।४।१३५।
रलः हलादेः इदुतोः सनि च
६।२।२१।

रवि-कवि-दरि-शरि-वलि-वल्लि-ध्वनि-
अवि-हरि-ग्रन्थिभ्यः इः (उणादि)
१।५१।

रश्मौ १।३।४०।
र-षात् नः णः एकपदे ६।४।१०१।
रसि-रुचि-रु-वृजः युच् (उणादि) २।६७।
राजघः १।२।४३।
राजन्यादिभ्यः वुञ् ३।१।६२।

राजन्वान् सौराज्ये ६।३।४०।
राजसूय-रुच्य-कृष्टपच्य-अव्यध्याः
१।१।१२६।
राज्ञो यत् २।४।७०।
रातेः इफः (उणादि) २।८८।
रातेः डैः (उणादि) १।६१।
रात्र-अह्न-वाकाः पुंसि २।२।८१।
रात्रेर्धातौ वा ५।२।८५।
रात्रि-अहः-संवत्सरात् ४।१।१०२।
रात् सः ६।३।५३।
राधः हिंसायाम् ५।३।११६।
राधः हिंसायाम् ६।२।१०७।
रायः हलि ५।४।५३।
रात् लोपः ५।३।२०।
रा-शदिभ्याम् त्रिप् (उणादि) १।६६।
राष्ट्रात् घः ३।२।२।
रास्नादयः (उणादि) २।७६।
रिङ् श-यग्-आशीलिङि ६।२।८०।
रीग् ऋत्वतः ६।२।१३८।
रिङ् ऋतः ये च ६।२।७६।
री-वृ णोः नित् (उणादि) १।२६।
रुग्-रिकौ च लुकि ६।२।१३६।
रुचि-भुजेः किष्यन् (उणादि) २।१।११।
रुचिमति २।१।७४।
रुद-विद-मुष-ग्रहाम् ६।२।२२।
रुद्भ्यः पञ्चभ्यः अट् च ६।२।३७।
रुद्भ्यः तिङ् ५।४।१७३।
रुधादीनाम् इनम् १।१।६३।
रुष-हृष-अम-त्वर-संधुष-आस्वनः
५।४।१५६।
रुहि-नन्दि-जीवेः षित् (उणादि) २।४४।

रहि-हृ-श्याभ्यः इतच् (उणादि)

२।४७।

लस् तिप्-तस्-झि-सिप्-थस्-थ-मिप्-वस्-

मस्-ता-ताम्-झ-थस्-आथाम्-ध्वम्-इट्-

रूपात् आहत-प्रशस्ययोः यप्

४।२।१३५।

वहि-महिङ् १।४।१।

रूप्यान्तात् अः ३।२।१८।

रेवत्यादिभ्यः ठक् २।४।७८।

रैवतिकादिभ्यः छः ३।३।६६।

रोः काम्ये ६।४।३३।

रोः सुपि ६।४।२३।

रोग-आतपयोः वा ३।२।७३।

रोगात् प्रतीकारे ४।३।२।

रोपान्त-इतः प्राच्यात् ३।२।३७।

रोमन्थं वर्तयति हनुचाले १।१।३३।

रो रि ६।४।१६।

लक्षण-वीप्सा-इत्थंभूतेषु अभिना

२।१।५४।

लक्षणे २।१।६६।

लक्षणेन अभि-प्रती २।२।८।

लक्षेः मुट् च (उणादि) १।८।६।

लघोः इकः अकवेः ४।१।१४७।

लघोः उपान्तस्य ६।२।४।

लङ् द्विषश्च वा १।४।४३।

लङ्गि-कम्प्योः उपताप-शरीरविकारयोः

५।३।३४।

लभः ५।४।१८।

ललाटात् तपः १।२।२२।

ललाटात् भूषणे कन् ३।३।३४।

लवणात् ठञ् ३।४।५४।

लवणात् लुक् ३।४।२४।

लष-पत-पद-स्था-भू-शृ-वृष-हन-कम-गमः

उकञ् १।२।१०२।

लाक्षा-रोचनात् ठक् ३।१।२।

लालाटिक-कौक्कुटिकौ ३।४।४४।

लास-यतोः ५।२।५७।

लिङ् सीयुट् १।४।३२।

लिङि तङि गमः ५।३।४४।

लिङि इणः ६।२।७६।

लिङि च ऊर्ध्वमौहूर्तिके १।३।१२४।

लिङि अतिपत्तौ लृङ् १।३।१०७।

लिङि एत् ५।३।७८।

लिङ्-सिचोः तङि ५।४।१०५।

लिङ्-सिचोः तङि ६।२।२५।

लिट् इरच् १।४।६।

लिट् क्वसुः १।२।७४।

लिटि ५।१।४२।

लिटि इन्धि-श्रन्थ-ग्रन्थाम् ५।३।२५।

लिटि अनादेशादेः एकहल्मध्ये अतः

५।३।११६।

लिटि अश्वेः द्विरुक्ते ५।१।२१।

लिट्-आशीर्लिङ्-अतिङ्गिति ५।३।६१।

लिट्-आशीर्लिङ्-अतिङ्गिति ५।४।७८।

लिट्-यङोः ५।१।३६।

लिपः नेश्च १।१।१४५।

लियः पूजा-अभिभवयोश्च १।४।१२२।

लियः स्नेहविलापने वा ६।१।४६।

लियः वा ५।१।५४।

लुकि अरि रः ६।३।१००।

लुक् स्त्रियाम् २।४।५६।

लुग् अणादिलुकि अगोण्यादीनाम्

२।२।८७।

लुग् वा दुह-दिह-लिह-गुहाम् तडि
दन्त्ये ६।१।१०१।

लुङ् १।२।७६।

लुङि ५।४।६०।

लुङि ते चिण् १।४।१०५।

लुङि वा ५।३।११४।

लुङि सिच् १।१।६०।

लुङि अचः १।४।१०१।

लुङ्-लङ्-लृङ्क्षु अङ् अमाङ्योगे

५।३।८२।

लुङ्-सन्-अच्-घञ्-अप्सु घस्लृः ५।४।८७।

लुटः आद्यानां डा-रौ-रसः १।४।१८।

लुटि क्लृपः १।४।१४५।

लुप-सद-चर-गृ-जप-जभ-दह-दशः गह्यात्
१।१।४३।

लुभः आकुले ५।४।११४।

लेखे ५।२।५६।

लोक-सर्वलोकात् ४।१।५८।

लोकस्य पृणे ५।२।७८।

लोकान्तात् ३।३।२८।

लोट् १।३।१२२।

लोटः एः उः १।४।२०।

लोटः कृलोट् १।१।५८।

लोपः अचि किङ्ति चातः ५।३।७५।

लोपः अतः ५।३।६३।

लोमादि-पामादिभ्यः श-नौ ४।२।१०४।

लोमनः अपत्येषु २।४।५।

लो लुक् ६।१।५०।

लोहितादिभ्यः शकलान्तेभ्यः २।३।२०।

लोहितात् मणौ ४।४।१३।

ल्यपि ५।४।८६।

ल्यपि च ५।१।४५।

ल्यपि लघोः ५।३।७०।

ल्युट् १।३।६७।

वंशादिभ्यः हरति वहति आवहति

भारात् ४।१।७२।

वचि-स्वपि-यजादीनां लिटि अपिति

५।१।१४।

वचः अशब्दाख्यायाम् ६।१।६५।

वञ्चि-लुञ्चि-थ-फो वा ५।३।५४।

वञ्चेर्गतौ ६।१।६२।

वटकात् इनिः ४।२।८६।

वतण्डात् २।४।२६।

वतोः ४।१।३४।

वतोः इथट् ४।२।६१।

वतौ च इदम्-किमोः ईश्-की

५।२।१०७।

वत्स-शाल-नक्षत्रेभ्यः बहुलम् ३।३।७।

वत्स-अंशात् स्नेह-बलिनोः ४।२।१०१।

वत्स-उक्ष-अश्व-ऋषभाणां तनुत्वे

४।३।७४।

वदः सुपः क्यप् च १।१।११७।

वद-व्रज-ल्-रः ६।१।८।

वदेर्वा (उणादि) ३।३२।

वधः घातः १।३।६४।

वनं पुरगा-मिश्रका-सिध्रका-शारिका-

अग्ने-कोटरात् ६।४।१०३।

वन-गिर्योः कोटर-अञ्जनादीनाम्

५।२।१३२।

वपि-वजि-वृधि-इन्दिभ्यः रन् (उणादि)

३।१३।

वयसा च तुल्ये ३।४।६०।

वयसि दन्तस्य दत् ४।४।१३०।
 वयसि पूरणात् ४।२।१२७।
 वयसि अचरमे २।३।२२।
 वयो यः ५।१।४३।
 वर्गान्तात् ३।३।३१।
 वर्णका तान्तवे ६।१।८१।
 वर्ण-दृढादिभ्यः ष्यञ् च ४।१।१४०।
 वर्णात् ब्रह्मचारिणि ४।२।१३१।
 वर्णो वुक् ३।२।१२।
 वर्तका शकुनौ ६।१।७४।
 वर्तमाने लट् १।२।८२।
 वर्षस्याभाविनि ६।१।२७।
 वर्षा-दृन्-पुनर्-कारात् भुवः ५।३।६०।
 वर्षा-प्रावृद्ध्यां ठक्-एण्यौ ३।२।८१।
 वर्षात् लुक् च ४।१।१०३।
 वलादेः इट् ५।४।६६।
 वलि-पटेः आकः (उणादि) २।१५।
 वलि-फलेः गुक् च (उणादि) १।११।
 वले ५।२।१३५।
 वशं गतः ३।४।८५।
 वशः तिङ्शिति अपिति ५।१।१८।
 वशि ५।४।१२८।
 वशि-वणिभ्याम् इजिक् (उणादि) ३।७३।
 वशेः कनसिः (उणादि) ३।६५।
 वशेः कित् (उणादि) ३।२८।
 वशेः सुट् च (उणादि) ३।१०५।
 वस-क्षुधः इट् ५।४।११२।
 वसु-संसु-ध्वंसां सः ६।३।१०४।
 वसेर्णित् वा (उणादि) १।२३।
 वसोर्व उत् ५।३।१२८।
 वस्तेढ्व ४।३।७६।

वस्न-क्रय-विक्रयात् ठन् ३।४।११।
 वस्-मसोर्लोपः १।४।२६।
 वसि-अगिभ्यां णित् (उणादि) ३।१०२।
 वह-लादिभ्यः इत्र-उत्रौ (उणादि) ३।४२।
 वह-अभ्रात् लिहः १।२।१६।
 वहि-पंसेर्दीर्घश्च (उणादि) १।६।
 वहि-वसिभ्यां चतिः (उणादि) १।८७।
 वहे ५।२।१४४।
 वहेः अनियन्तृके २।१।४८।
 वहेः तुः इट् च ३।३।१००।
 वह्यं करणम् १।१।११३।
 वा आकाङ्क्षायाम् १।२।८०।
 वाकिनादीनां कुक् च २।४।६१।
 वा क्यषः १।४।१४२।
 वाक्याऽचां प्लुतः अन्त्यः ६।३।११५।
 वाक्यादेः आमन्त्रितस्य असूया-संमत्योः
 ६।३।४।
 वा गोमये ३।२।४४।
 वाग्-दिक्-पश्यद्वयः युक्ति-दण्ड-हरेषु
 ५।२।१४।
 वाच्यमो व्रते १।२।२४।
 वाचः संदेशे ४।४।१८।
 वा चित्ते ५।३।६५।
 वाचः गिमनिः ४।२।१४५।
 वा जृ-भ्रम-त्रसाम् ५।३।१२०।
 वात-पित्त-श्लेष्म-संनिपातात् शमन-कोपने
 ४।१।५०।
 वातमज-शर्धजह-इरंमद-परंतप-द्विषंतप-
 भगंदर-पुरंदराः १।२।२०।
 वात-अतीसार-पिशाचानां कुक् च
 ४।२।१२६।

वातात् ऊलः ३।१।५५।
 वा तिल-माष-उमा-भङ्ग-अणुभ्यः
 ४।२।४।
 वा दान्त-शान्त-पूर्ण-दस्त-स्पष्ट-छन्न-
 जप्ताः ५।४।१५५।
 वा द्रुह-मुह-स्तुह-स्निहाम् ६।३।६४।
 वा नाम्नि २।३।४०।
 वा निक्ष-निस-निन्दाम् ६।४।१२७।
 वा आप् २।२।७८।
 वा भाव-करणयोः ६।४।११०।
 वा भाव-आक्रोश-दैव्येषु ६।३।८२।
 वा अभि-अवात् ५।१।३१।
 वामदेव्यम् ३।१।१।
 वा अम्-शसोः ५।३।८६।
 वायु-ऋतु-पितृ-उपसो यत् ३।१।२६।
 वारसंख्यायाः कृत्वसुच् ४।४।५।
 वा लिटि ५।४।८२।
 वा लिप्सायाम् १।४।६६।
 वा लुङ्-लिङोः ५।४।६७।
 वा वणिजाम् १।३।३६।
 वा विरामे ६।४।१४६।
 वा वृक्ष-तृण-धान्य-मृग-शकुनिविशे-
 षाणाम् २।२।६२।
 वा वेष्टि-चेष्टयोः ६।२।१४३।
 वा शरि ६।४।२६।
 वा श्वेः ५।१।३७।
 वाष्प-ऊष्म-फेनम् उद्वमति १।१।३४।
 वा संयोगादेः अस्थः ५।३।७६।
 वास-वाहने ५।२।६७।
 वासुदेव-अर्जुनात् कन् ३।३।६५।
 वा सुपि लृटि च ५।१।६४।

वास्तव्यः १।१।१०६।
 वा अस्ताति ४।३।३४।
 वाऽस्य व्-मोः ५।३।१०१।
 वाहनं वाह्यात् ६।४।१०८।
 वा हन-गम-विद-विश-दृशः ५।४।१६६।
 वा हविर-यूपादिभ्यः ४।१।३।
 विशतिकात् खः ४।१।४१।
 विशति-त्रिशद्भ्याम् ४।१।३६।
 विशतेर्ङिति टेः ५।३।१३७।
 विशत्यादिभ्यः तमट् वा ४।२।५२।
 विकर्ण-कुषीतकात् काश्यपे २।४।५४।
 विकारे ३।३।१०३।
 वि-कु-शमि-परिभ्यः ६।४।८३।
 विवृतेः प्रकृतौ ४।१।१६।
 विचारे ६।३।१२५।
 विच्छ-रक्षो नङ् १।३।७०।
 विजः इटि ६।२।१४।
 विटपादयः (उणादि) २।८७।
 वित्तः प्रतीत-भोगयोः ६।३।६६।
 विदः १।४।४४।
 विदाम् १।१।५७।
 विदि-भिदि-च्छिदेः कुरच् १।२।१०८।
 विदेः श्वसुः १।२।८३।
 विदेः अलुकः ५।४।१३२।
 विदो लटो वा १।४।१२।
 विद्या-योनि-संबन्धात् वुञ् ३।३।४६।
 विधि-विशेषणान्तस्य १।१।६।
 विधि-संप्रश्न-प्रार्थनेषु १।३।१२१।
 विधि-इणः असिः (उणादि) ३।६६।
 विध्यति अकरणेन ३।४।८२।
 विधु-अरुस्-तिलात् तुदः १।२।१६।

विनयादिभ्यः ठक् ४।४।१७।

विना तृतीया च २।१।८५।

विना नाना ४।२।२८।

विनिमये १।४।४६।

विन्दुः इच्छुः १।२।११८।

विन्-मतोः लुक् ४।३।४८।

वि-पराभ्यां जेः १।४।५३।

वि-परेः ६।४।६०।

विपिन-इरिण-तुहिन-महिनानि

(उणादि) २।६६।

विप्रतिषेधे १।१।१६।

विमतौ १।४।६५।

विमुक्तादिभ्यः अण् ४।२।१५५।

विरामे विसर्जनीयः ६।४।२०।

विरिब्ध-फाण्ट-वाढ-म्लिष्टानि स्वर-

अनायास-भृश-अस्पष्टेषु ५।४।१४६।

विरोधिनाम् अद्रव्याणाम् २।२।६५।

विवध-वीवधात् वा ३।४।१६।

विवाहे ३।३।६०।

विशाखा-आषाढात् मन्थ-दण्डयोः

४।१।१३१।

विशि-पति-पदि-स्कन्दां वीप्सा-

आभीक्ष्ण्ययोः १।३।१४८।

विशेषणम् एकार्थेन २।२।१८।

विश्वस्य वसु-राटोः दीर्घः ५।२।१२६।

विषये देशे ३।१।६१।

विष्वग्-देवयोश्च डद्विग् अञ्चि वौ

५।२।१०६।

विहायसो विहश्च १।२।३३।

वी-पतिभ्यां तनन् (उणादि) २।६४।

वीप्सा-आभीक्ष्ण्ययोः द्वे ६।३।१।

वृज्-छण्-क-ठच्-इल-स-इनि-र-ढञ्-ण्य-य-

फक्-फिञ्-इञ्-ज्य-कक्-ठक्-छ-

कीय-इमतुप्-ड्वल्चः ३।१।६८।

वृकात् णेण्यट् ४।३।६१।

वृक्ष-औषधीभ्यः अंशे च ३।३।१०४।

वृङः एन्यः (उणादि) २।११४।

वृजिन-अजिनम् (उणादि) २।६३।

वृजि-मद्रात् कन् ३।२।४६।

वृजः आच्छादे १।३।४३।

वृजश्च (उणादि) ३।३६।

वृ-तृ-वदि-हनि-मानि-कमि-अशि-कशेः सः

(उणादि) ३।६३।

वृत्ति-उत्साह-तायनेषु क्रमः १।४।८४।

वृ-दृभ्यां विन् (उणादि) १।८१।

वृद्धस्य च ज्यः ४।३।५०।

वृद्धेः वृधुषः ३।४।३७।

वृद्धयः इट् ५।४।१२३।

वृद्धयः स्य-सनोः १।४।१४४।

वृन्दात् आरकन् ४।२।१३६।

वृ-भृ-वमि-कुभ्यः शक् (उणादि) ३।५५।

वृषादिभ्यः चित् (उणादि) ३।४६।

वृष-अश्वयोर्मैथुने सुक् ६।२।६०।

वृषि-तक्षि-राजि-धन्वि-प्रतिदिव-युवः

कनिन् (उणादि) ३।७६।

वृ-ऋतो वा ५।४।१०१।

वेः क्षु-श्रुवः १।३।१३।

वेः खः ४।४।१११।

वेः पादाभ्याम् १।४।८७।

वेः शब्दाप्यात् १।४।८०।

वेः शालच्-शङ्कटचौ ४।२।२६।

वेः स्कन्दः अत-तवतोः ६।४।६२।

वे: स्कभ्नः षः ६।४।६५।
 वे: स्त्रः नास्मि ६।४।८०।
 वेजः डिः (उणादि) १।५।८।
 वेजः लिटि वय् वा ५।४।८८।
 वेटः ६।४।१००।
 वेणिः (उणादि) १।७।८।
 वेणुकादिभ्यः छण् ३।२।६१।
 वेतनादिभ्यो जीवति ३।४।१०।
 वेत्तेर्वा १।४।८।
 वे: अनचः ५।१।६४।
 वे: अपिति वा ५।१।४४।
 वेश्च स्वनो भोजने ६।४।५४।
 वैकाचः ५।२।४३।
 वैडूर्यम् ३।३।५५।
 वैशस्त्र-वैभाजित्रे ३।४।५१।
 *वोद्वाहे ५।३।४८।
 वोर्णोः ६।१।६।
 वोर्णोः ६।२।१५।
 वोर्णोः ६।२।३१।
 वो विधूनने जुक् ६।१।४७।
 वोशनसः ५।४।४७।
 वोशीनरेषु ३।२।३५।
 वौषधि-वृक्षात् द्वि-व्यचः अनिरिकादेः
 ६।४।१०५।
 व्-मोर्वा ६।४।१२०।
 व्-मोः टाप् १।४।२७।
 व्यः ५।१।४७।
 व्यक्तं सहोक्तौ १।४।६६।
 व्यचः अञ्जिति अनसि ५।१।१६।
 व्यञ्जनानाम् २।२।६३।

व्यतिहारे णच् १।३।७६।
 व्यतिहारे सर्वादीनां सुः बहुलम् ६।३।६।
 व्यथः लिटि ६।२।१२१।
 व्यध-जपोऽप्रादेः १।३।५१।
 वि-आङः श्वसः ५।४।१४४।
 व्याप्यात् काम्यच् १।१।२३।
 व्याप्याद् अण् १।२।१।
 व्याप्याद् आक्रोशे कृञः खमुञ्
 १।३।१३४।
 व्याप्याद् आधारे १।३।७२।
 व्यासादीनाम् अकङ् च २।४।२१।
 वि-उदः काकुत् काकुदस्य ४।४।१३६।
 वि-उदः तपः १।४।७४।
 वि-उपात् शीङः १।३।३०।
 व्युष्टादिभ्यः अण् ४।१।११५।
 व्ये-स्यमोः ५।१।२६।
 व्योमादयः (उणादि) ३।८।२।
 व्-योः ईषत्स्पृष्टौ च ६।४।२७।
 व्रज-व्यजौ १।३।१०१।
 व्रते १।२।५६।
 व्रश्च-भ्रस्ज-सृज-मृज-यज-राज-भ्राज-शां
 षः ६।३।६६।
 व्रश्चित्वा ५।४।११६।
 व्रश्चि-मूषेः च किकन् (उणादि) २।८।
 व्रातात् खञ् ३।४।१३।
 व्रातात् अस्त्रियाम् ४।३।८६।
 व्रीहि-शालेः ढक् ४।२।२।
 व्रीहेः पुरोडाशे ३।३।११२।
 व्रीह्यादि-अतः इनिश्च ४।२।११६।
 शकन्धवादयः ५।१।६८।

* सूत्रपाठे तत्र तत्र एतादृशानि सूत्राणि सन्धिं खण्डयित्वा निर्दिष्टानि, यथा -- 'वा उद्वाहे' ।

शकल-कर्ममाद् वा ३।१।३।
 शकलादिभ्यः गोत्रात् ३।२।२१।
 शकादिभ्यः ५।४।१३५।
 शकादिभ्यः अटन् (उणादि) २।३२।
 शकि-भूभ्यां उन्ति-अन्तिचौ (उणादि)
 १।७१।

शकि-शमेः नित् (उणादि) ३।४७।
 शकेः उनः (उणादि) २।८१।
 शकेः उनिः (उणादि) १।७६।
 शकेः उन्तः (उणादि) २।४२।
 शक्ति-यष्ट्योः टीकक् ३।४।६०।
 शक्ति-वयः-शीलेषु १।२।८७।
 शक्तौ हस्ति-कपाटात् १।२।४०।
 शक्ये क्षि-ज्योः अय् ५।१।७६।
 शङ्कु-आदयः (उणादि) १।२१।
 शन्-शत्-शतेः डितिः वा ४।२।४२।
 शण्डिकादिभ्यः ज्यः ३।३।६०।
 शत-रुद्रात् घः च ३।१।२५।
 शत-षष्टेः पथः ष्ठन् ३।१।३६।
 शतात् केवलात् ठन्-यतौ अतस्मिन्
 ४।१।३१।
 शतादिमास-अर्धमास-संवत्सरात्
 ४।२।५३।

शताद् वा ४।१।४४।
 शति-शद्-दशान्तात् अधिका अस्मिन्
 शतसहस्रे डः ४।२।५०।
 शतृ १।२।८४।
 शदेः शिति १।४।११५।
 शदेः अगती तः ६।१।५४।
 शपः शपथे १।४।६३।
 शपि दंश-सञ्जेः च ५।३।२८।

शप्-श्यनः ५।४।३५।
 शब्द-दर्दरं करोति ३।४।३१।
 शब्दादीन् करोति १।१।३६।
 शब्दान्तर्गतौ वा १।४।१३०।
 शमादिभ्यः अथः (उणादि) २।५३।
 शमाम् अष्टानां श्ये दीर्घः ६।१।१०२।
 शमेः खः (उणादि) २।२३।
 शमेः ढः (उणादि) २।४१।
 शमेः ठः (उणादि) २।३५।
 शम्याः ष्लञ् ३।३।११६।
 शरः खयः ६।४।१४४।
 शरदः श्राद्धे ३।२।७२।
 शरदादिभ्यः असंख्यार्थे ४।४।६०।
 शरद्-दरद्-दृषदः (उणादि) ३।७८।
 शरद्वत्-शुनक-दर्भात् भार्गव-वात्स्य-
 आश्रायणेषु २।४।३८।
 शरादिभ्यः ३।३।११४।
 शरादीनाम् ५।२।१३४।
 शरः अचि रात् ६।४।१४६।
 शर्करादिभ्यः अण् ४।३।८४।
 शर्परे ६।४।२२।
 शलः इगुपान्तात् अदृशः अनिटः क्सः
 १।१।६५।
 शलालुनः वा ३।४।५६।
 शलि-मण्डेः ऊकञ् (उणादि) २।२१।
 शवि-कमः कलन् (उणादि) ३।४५।
 शवि-कमिभ्यां दन् (उणादि) २।६०।
 शशि-रपयोः अतः इत् च (उणादि)
 १।१४।
 शः छः अमि ६।४।१५७।
 श-ष-सर् प्रत्याहारसूत्र (शिवसूत्र १२)

शसः नः २।१।२८।
 शाकलात् वा ३।३।६६।
 शाखादिभ्यः यः ४।३।८१।
 शा-छा-सा-ह्ला-व्या-वे-पां युक् ६।१।४६।
 शाणात् ४।१।४५।
 शात् ६।४।१३६।
 शानच् १।२।८६।
 शान्-दान्-मानः १।१।२१।
 शालातुरीयः ३।३।५६।
 शाल्वाङ्ग-प्रत्यग्रथ-कलकूट-अश्मकात् इन्
 २।४।१०३।
 शाल्वात् गो-यवाग्वोः ३।२।५०।
 शासः क्ङिति शिस् ५।३।५७।
 शासि-युधि-दृशि-धृषि-मृषः १।३।१०६।
 शा हौ ५।३।५६।
 शिक्त्वं घिष्ण्यम् (उणादि) २।१।१६।
 शिखा (उणादि) २।२।५।
 शिखादिभ्यः वा ४।२।१३४।
 शिङ्हेः आणकः (उणादि) २।१।२।
 शि तुक् ६।४।१५।
 शिति अपिति ५।३।२४।
 शिति आयादयः १।१।५०।
 शिदनेकाल् सर्वस्य १।१।१२।
 शिन्डितोः ५।१।१६।
 शिरः करन् (उणादि) ३।२।४।
 शिरसः शीर्षन् वा ५।२।६३।
 शिरीषादयः (उणादि) ३।६०।
 शिलाया ढः च ४।३।८०।
 शिल्पम् ३।४।५७।
 शिवादयः (उणादि) २।६२।
 शिवादिभ्यः अण् २।४।४१।

शिशुकन्दादीन् अधिकृत्य कृते ग्रन्थे छः
 ३।३।५६।
 शि-सुटि ५।३।७।
 शि-सुटि एः ५।४।३६।
 शीङः एत् अलिटि ६।२।७३।
 शीङः फुट् च् (उणादि) ३।१०८।
 शीङः धुक् (उणादि) १।३७।
 शीङः रत् १।४।७।
 शीतात् च कारिणि ४।२।७८।
 शीत-उष्ण-तृप्त्रं न सहते ४।२।१५८।
 शीर्ष-कुमारात् णिनिः १।२।३८।
 शीर्षच्छेदात् यत् च ४।१।७६।
 शीर्षः अचि ५।२।६४।
 शीलम् ३।४।६२।
 शील-साधु-धर्मेषु तून् १।२।८६।
 शीले तूष्णीकः ४।३।५६।
 शी वा २।१।१३।
 शुक्रात् घन् ३।१।२३।
 शुङ्ग-च्छगल-विकर्णात् भारद्वाज-वात्स्य-
 आत्रेयेषु २।४।४७।
 शुट् च (उणादि) ३।१।१२।
 शुण्डिकादिभ्यः अण् ३।३।४८।
 शुनः शेफ-पुच्छ-लाङ्गूलेषु नास्मि
 ५।२।१६।
 शुन्-अशुचौ पुरः (उणादि) १।३८।
 शुनी-स्तनात् घेटः १।२।१२।
 शुभ्रादिभ्यः २।४।५३।
 शुषः कः ६।३।६०।
 शूर्पात् अञ् ४।१।२६।
 शूलात् पाके ४।४।४६।
 शूल-उखात् यत् ३।१।१५।

शृतं क्षीर-हविषोः ५।१।३३।

शृङ्खलं बन्धनं करभे ४।२।८४।

शृङ्ग-अङ्ग-भृङ्गाः (उणादि) २।२६।

शृङ्गात् ४।२।१४०।

शृङ्गि-भृङ्गि-मृजि-कञ्जेः चित् (उणादि)
३।२२।

शृ-वन्देः आरुः १।२।१२०।

शृ-वसि-वपि-राजि-वृ-हनि-नभेः इञ्
(उणादि) १।५६।

शृ वायु-वर्ण-निवृतेषु १।३।१०।

शो मुचादीनाम् ५।४।११।

शो स्यन् १।४।१०४।

शेषात् वा ४।४।१४२।

शेषे ३।२।१।

शेषे लृट् १।३।११६।

शेषे लोपः अदः ५।४।५७।

शोणादिभ्यः २।३।४१।

शोभते ४।१।११८।

शौ अयमः ५।४।२७।

शौनकादिभ्यः ३।३।७२।

शौ वा ५।४।३३।

श्न-सोः लोपः ५।३।१०४।

श्नाः १।१।१००।

श्ना-द्विरुक्तयोः आतः ५।३।१०५।

श्नात् नः ५।३।२२।

श्या-आद्-इण-व्यध-श्वस-तनः १।१।१४७।

श्या-स्त्या-हृञ्-अविभ्यः इन्च्
(उणादि) २।६२।श्येत-एत-हस्ति-रोहितात् तो नः
२।३।३४।

श्येन-तिलयोः पाते ने ५।२।८४।

श्यः अस्पर्शे ६।३।८३।

श्रविष्ठा-आषाढात् छण् ३।३।६।

श्राद्धम् अनेन अद्य भुक्तं ठन् च
४।२।६१।

श्रि-भुवः अप्रादेः १।३।१४।

श्रि-स्रु-द्रु-प्रु-ज्वाम् क्षिप् दीर्घश्च (उणादि)
३।६८।

श्रु-कृ-ध्रि-वां शृ-कृ-धि च १।१।६६।

श्रुवः अनाङ्-प्रतेः १।४।११४।

श्रु-श्रि-यु-वहो नित् (उणादि) १।७६।

श्रु-सद्-वसः लिट् वा १।२।७३।

श्रि-उग्-ऊर्णोः कितः ५।४।१३६।

श्लिषः १।१।६६।

श्लिष-शीङ्-स्था-आस-वस-जन-रुह-जूभ्यः
१।२।६६।

श्लिषेः इतः अत् च (उणादि) २।७७।

श्वगणात् वा ३।४।६।

श्व-युवन्-मघोनाम् अनणादौ ५।३।१२६।

श्वसुरः (उणादि) ३।४।

श्वसुरात् २।४।७१।

श्वसः तुट् च ३।२।७५।

श्वसः वसीयसः ४।४।६५।

श्वादयः (उणादि) ३।८०।

श्वादेरिति ६।१।१६।

श्विति-वृति-नीवी-छिदि-मुदि-दहि-तृपि-
शुभिभ्यः च (उणादि) ३।८।

श्वि-ईदितः त-तवतोः ५।४।१३६।

षः पदे ६।४।१२६।

षट्-कति-कतिपयात् थट् ४।२।५६।

ष-ठनि क्तादेशः ६।३।३१।

षपूर्वं-हन्-धृतराज्ञाम् अणि ५।३।१३१।

षषः ४।३।६६।
 षषः ण्यः च वा ४।१।६८।
 षष्ठ्यादेः असंख्यादेः ४।२।५४।
 षष्ठात् ४।२।६३।
 षष्ठी २।२।२२।
 षष्ठी च अनादरे २।१।६१।
 षष्ठी संबन्धे २।१।६५।
 षष्ठी हेतुना २।१।७१।
 षष्ठ्या आक्रोशे ५।२।१२।
 षष्ठ्या अन्त्यस्य १।१।१०।
 षष्ठ्या रूप्ये च ४।३।४४।
 षष्ठ्या व्याश्रये तस् ४।३।१।
 षितः ङीष् २।३।३६।
 षोडन् ४।४।१३१।
 षोढा वा ४।३।२१।
 षिवु-क्लम-आचमां शिति ६।१।१०३।
 षिवु-सिवो दीर्घश्च १।३।६८।
 षणः संख्यायाः लुक् २।१।२१।
 षो वा २।३।१६।
 ष्यङः प्रधानस्य पुत्र-पत्योः स्वयोः इग्
 यणः ५।१।११।
 संख्या-अक्ष-शलाकाः परिणा द्यूते
 अन्यथावृत्तौ २।२।६।
 संख्यातात् १।३।८।
 संख्यादिः समाहारे २।२।७६।
 संख्यादेः २।३।२३।
 संख्यादेः षष्ठश्च ४।१।७०।
 संख्यादेः संख्येयात् अनपत्ये अजादेः
 लुग् अद्विः २।४।११।
 संख्यादेः संख्येयाल्लुक् ४।२।४१।
 संख्यादेर्गुणात् ४।४।४३।

संख्यादेर्यप् ४।१।६७।
 संख्यादेर्वा ४।१।१०१।
 संख्यादेर्वुन् ४।४।३।
 संख्यादेश्चालुकः ४।१।२४।
 संख्या-अध्यर्धादेः संख्येयाल्लुग् अद्विः
 ४।१।३८।
 संख्यायाः अतिशतः कन् ४।१।३२।
 संख्यायाः अनतः २।१।३३।
 संख्यायाः अवहोः अन्यार्थे ४।४।६५।
 संख्यायाः संवत्सर-परिमाणस्य असंज्ञा-
 शाण-कुलिजस्य ६।१।२६।
 संख्यायाः नदी-गोदावर्योश्च ४।४।७३।
 संख्या-अर्धात् नावः एकार्थात् ४।४।८४।
 संख्या वंश्येन २।२।१२।
 संख्या-वि-सायादेः अहस्य अहन् ङौ वा
 ५।२।१२८।
 संख्या-एकार्थात् वीप्सायाम् ४।४।२।
 संघ-अङ्क-घोष-लक्षणेपु अर्ज्याज्जः
 ३।३।६८।
 संघे अनुत्तराधरे १।३।३३।
 संज्ञा-पूरणयोः ५।२।३५।
 संज्ञायां वातपात् अञ् ३।३।८३।
 संज्ञायाम् २।३।६०।
 संज्ञः व्याप्ये वा २।१।६७।
 संख्यादि-ऋतु-नक्षत्रात् अण् ३।२।७६।
 संनिष्कृष्टपाठानाम् २।२।५२।
 सम्-नि-वेः अर्दः ५।४।१५२।
 संपदादिभ्यः क्विप् १।३।६३।
 सम्-परेः कृञः सुट् ५।१।१३६।
 सम्-प्रतेः अस्मृतौ १।४।६२।
 संप्रदाने चतुर्थी २।१।७३।

सम्-प्रात् जानुनः ज्ञः ४।४।११६।
 सम्-प्र-उत्-नेः च कटच् ४।२।३०।
 संबोधने २।१।६४।
 संबोधने सौ ६।२।४४।
 संभवति अवहरति च ४।१।६८।
 संभावने अलमर्थे तदर्थप्रयोगे
 १।३।११८।
 संभ्रमे यावद्बोधम् ६।३।१४।
 संयोगस्य पदस्य ६।३।५२।
 संयोगात् इनः असमूहे ५।३।१७५।
 संयोगादेः लिटि ६।२।६५।
 संवत्सर-आग्रहायण्याः ठञ् च ३।३।१६।
 सम्-वि-प्र-अवात् १।४।६५।
 संशयम् आपन्नः ४।१।८४।
 संसृष्टे ३।४।२२।
 संस्कृतं भक्ष्यम् ३।१।१४।
 संस्कृते ३।४।३।
 सकृत् ४।४।८।
 सक्थि-अक्षणः स्वाङ्गात् षच् ४।४।६६।
 सखि-दूत-वणिग्भ्यः यः ४।१।१४२।
 सखी अशिखी २।३।७०।
 सखी-अहर्-राजां टच् ४।४।७६।
 सखीआदयः (उणादि) १।६०।
 सख्युः पत्युः ५।१।११८।
 सख्युः अशौ ऐत् ५।४।४४।
 सञ्ज्-असिभ्यां क्थिन् (उणादि)
 १।६१।
 सतीर्थः ३।४।७५।
 सत्त्वाश्लेषे १।१।६७।
 सत्याद् अशपथे ४।४।५०।
 सत्य-अर्थ-वेदानाम् आपुक् ६।१।५५।

सदा-अधुना-इदानीम् तदानीम्
 ४।३।१४।
 सदि-स्वञ्जर्जेलिटि ६।४।६८।
 सदः अप्रतेः ६।४।५१।
 सनः १।४।१११।
 सनः क्तिचि लोपश्च ५।३।४३।
 सन्-आशंसः उः १।२।११७।
 सनि ५।३।४०।
 सनि ५।४।६४।
 सनि इवन्त-ऋध-भ्रस्ज-दम्भु-श्चि-स्व-यु-
 ऊर्णु-भर-ज्ञपि-सनि-तनि-पति-दरिद्रः
 ५।४।११६।
 सनो ग्रह-गुहश्च ५।४।१३७।
 सन्-यङोः आद्यम् एकाच् द्विः ५।१।१।
 सनि अतः ६।२।१२६।
 सन्-लिटोः जेः ६।१।८८।
 सन्वत् लघुनि णौ चङि अनग्-लोपे
 ६।२।१४०।
 सप्तन-निष्पत्नात् अतिव्यथने ४।४।४५।
 सपूर्वस्य वा २।३।३१।
 सपूर्वात् ३।२।७०।
 सपूर्वात् ४।२।६३।
 सपूर्वात् प्रथमान्तात् वा ६।३।२१।
 सप्तम्यां च उपात् पीड-रुध-कर्षः
 १।३।१४१।
 सप्तम्यां पूर्वस्य १।१।७।
 सप्तमी आधारे २।१।८८।
 सप्तमी आधिक्ये २।१।६०।
 सप्तम्या बहुलम् ५।२।११।
 सप्तम्याम् ४।२।१२१।
 सप्तम्याः त्रल् ४।३।१०।
 समः १।१।६०।
 समः क्षणुवः १।४।११८।

समः प्रतिज्ञायाम् १।४।६६।
 समः समिः ५।२।११०।
 समः सुटि सः ६।४।१।
 समज-मन-विद-सु-शी-भृञ्-इणः भावे
 क्यप् १।३।७८।
 समयात् यापनायाम् ४।४।४४।
 समया-निकषा-हा-धिक-अन्तरा-
 अन्तरेणयुक्तात् २।१।५०।
 सम्-अव-अन्धात् तमसः ४।४।६४।
 समः तते ५।२।८८।
 समस्तान्त-समीपयोः अयुवादीनाम्
 ६।४।११२।
 समः तृतीयायुक्तात् १।४।१०७।
 समांसमीन-अद्यश्चीन-आगवीनाः ४।२।२१।
 समाजार्थान् समवैति ३।४।४१।
 समानस्य पक्षादिषु ५।२।१०३।
 समानात् ३।३।२६।
 समानादिभ्यः २।३।३३।
 समान-अन्य-त्यदादेः उपमानात् व्याप्ये
 दृशः क्स-कञौ च १।२।५१।
 समानोदरे शयितः ३।४।१०६।
 समापो नास्मि ५।२।११५।
 समायाः खः ४।१।१००।
 समासान्तः ४।४।५२।
 समासे अङ्गलेः सङ्गः ६।४।६६।
 समासे अनुत्तरस्य ६।४।३६।
 समाहारे ५।३।१४३।
 समाहारे नपुंसकम् २।२।४६।
 समिधः आधाने षेण्यण् ३।३।१०२।
 सम्-उत्-आङ्भ्यः यमेः अग्रन्थे
 १।४।१२८।

सम्-उद्ग्याम् अजः पशुषु १।३।६०।
 समः अकूजने १।४।५६।
 समः गम्-ऋच्छि-पृच्छि-स्वृ-श्रु-वेत्ति-
 अर्ति-दृशः १।४।७१।
 समो मुष्टौ १।३।३६।
 समो यु-द्-दुवः १।३।१२।
 समो वा १।१।१२४।
 सम्राट् ६।४।१०।
 सत्तेः अपः सुक् च (उणादि) २।८६।
 सत्तेः अयुः (उणादि) १।३३।
 सर्वचर्मणा कृतः ४।२।८।
 सर्वाः सर्वादिभ्यो हेत्वर्थैः २।१।७२।
 सर्वात् णो वा ४।१।१३।
 सर्वात् ४।१।११।
 सर्वात् सहः १।२।२५।
 सर्वादयो वृत्तिमात्रे ५।२।४१।
 सर्वादिपथि-अङ्ग-कर्म-पत्र-पात्रं व्याप्नोति
 ४।२।११।
 सर्वादि-बहुभ्यः अद्वयादिभ्यः ४।३।७।
 सर्वादिभ्यः स्मै-स्मातो २।१।६।
 सर्वादीनाम् ४।३।६०।
 सर्वान्निम् अत्ति ४।२।१५।
 सर्व-अभि-परि-उभयात् तसा २।१।५२।
 सर्व-एक-अन्य-किम्-यत्-तदः काले दा
 ४।३।१३।
 सर्व-उत्तर-दक्षिणादेः खः ३।४।७६।
 ससंख्यस्य अनादौ सः ६।४।३२।
 ससंख्यात् अमः क्यच् वा १।१।२४।
 स-सजुषो रुः ६।३।६८।
 स-स्नौ स्तुतौ ४।४।२४।
 सस्येन परिजातः ४।२।७३।

सह-नञ्-विद्यमानादेः २।३।६८।

सहस्य सध्निः ५।२।१११।

सहस्य सः अन्यार्थे ५।२।१६७।

सहस्र-वसन-विंशतिक-शतमानात् अण्
४।१।३०।

सहार्थे २।१।५७।

सहार्थेन २।१।६५।

सहि-चलि-वहः कि-किनौ १।२।११३।

सहि-वहोः ओत् ५।२।१३८।

साक्षात् आदीनि २।२।३६।

साक्षात् द्रष्टा ४।२।१६०।

सात् ६।४।१६१।

साधोः १।२।५७।

साप्तपदीनं सख्ये ४।२।७।

सारेर् अथिन् (उणादि) १।६२।

साज्ज्य पौर्णमासी ३।१।१८।

सिकता-शर्कराभ्याम् ४।२।१०८।

सिचः १।४।४१।

सिचि ५।३।४५।

सिचि दा-धा-स्थाम् इत् च ६।२।२७।

सिचेः कन् नुम्-हौ च (उणादि)
३।६७।

सिचो यङि ६।४।१६२।

सिचि अतङि ५।४।१०३।

सिच्लोपः एकादेशे ६।३।३०।

सि-तनि-गमि-मसि-सचि-अवि-धान्-

क्रुशिभ्यः तुन् (उणादि) १।२२।

सिधि-बुधि-स्विदि-मनि-पुष-श्लिषः श्यना

५।४।१३१।

सिधो गतौ ६।४।१६३।

सिध्मादिभ्यः ४।२।१००।

सिन्धु-अपकरात् वा ३।३।४।

सिन्ध्वादिभ्यः अण् ३।३।६१।

सिपि र्वा ६।३।१०६।

सि-मि-चीनां ईत् च (उणादि) ३।१२।

सि ष-ढोः कः ६।३।७२।

सि सः लिङ्गतिङि ६।२।१६१।

सितया समिते ३।४।१६२।

सीधु-सुरात् पिबः १।२।४५।

सु-अमोः नपुंसकात् २।१।२३।

सुखादिभ्यः ४।२।१२८।

सुखादीनि वेदयते १।१।३५।

सुचो वा ६।४।३६।

सुट् त-थोः १।४।३६।

सुपः १।२।३।

सुपः ४।३।६१।

सुपः प्रकृतेर्नो लोपः ६।३।४८।

सुपा अनाङ्ग-मयेन ६।४।१३३।

सुपि ६।२।४०।

सुपि नलोपः ६।३।२८।

सुपि वलि तद्वत् ६।३।५१।

सुपि ह्रस्वः २।२।८४।

सुपो यथेष्टम् ५।१।८।

सुपः असंख्यात् लुक् २।१।३८।

सुपि अचः ६।४।१२२।

सुप्रात-सुश्र-सुदिव-शारिकुक्ष-चतुरश्राः

४।४।१०५।

सुप् सुपा एकार्थम् २।२।१।

सुभग-आढ्य-स्थूल-पलित-नग्न-अन्ध-

प्रियात् अच्चेः भुवः खिष्णुच्-खुकर्जौ

१।२।४६।

सु-वि-निर्-दुर्भ्यः सम-सूति-सुपाम्

६।४।७५।

सुषामादयः ६।४।८६।
 सु-संख्यादेः ४।४।१२६।
 सु-सर्व-अर्धात् जनपदस्य ६।१।२३।
 सु-सू-धाञ्-गृधेः कृन् (उणादि) ३।११।
 सु-स्नातादीन् पृच्छति ३।४।४६।
 सु-हरित-तृण-सोमात् जम्भात् ४।४।११४।
 सुहृद्-दुहृद्दौ मित्र-अमित्रयोः ४।४।१३८।
 सूक्त-साम्नोः छः ४।२।१५३।
 सूचन-अवक्षेपण-सेवा-साहस-यत्न-कथा-
 उपयोगेषु कृञः १।४।७८।

सूचेः स्मन् (उणादि) २।१०२।
 सूतका-पुत्रका-वृन्दारकाः ६।१।७५।
 सु-उत्-पूति-सुरभेः गन्धस्य इत् ४।४।१२३।
 सूत्रात् संख्याकात् ३।१।४२।
 सूर-मर्त-क्षेम-यविष्ठात् ४।४।२७।
 सूर्य-अगस्त्ययोः छे च ५।३।१५३।
 सूर्या देवी २।३।४७।
 सू-विषिभ्यां कित् (उणादि) १।३०।
 सृ-घस्-अदः क्मरच् १।२।१०६।
 सृजः श्राद्धे १।४।१०३।
 सृजि-दृशः ५।४।१६३।
 सृजि-दृशोः झलि अम् ६।२।५।
 सृजेः असुम् च (उणादि) १।१६।
 सृ-भृ-वृ-स्तु-द्रु-सु-श्रुवो लिटः ५।४।१५८।
 सेटि ५।३।५३।
 सेनाङ्गानां बहुत्वे २।२।५६।
 सेनान्त-कारु-लक्षणात् इञ् च २।४।८५।
 सेनाया वा ३।४।४३।
 सेना-सुरा-शाला-निशा वा २।२।७२।
 सेयुवो वा २।१।३६।
 सेयुवो वा ६।२।५४।
 सेर्गसि ६।३।७६।

सेहिङ् १।४।२१।
 सोः ५।१।६६।
 सोः स्य-सनोः ६।४।६७।
 सोढः ६।४।६५।
 सोम-वरुणयोः ईत् ५।२।२५।
 सोमात् टचण् ३।१।२८।
 सो लोपः अनन्त्यस्य १।४।३६।
 सोऽस्य ग्रामणीः ४।२।८३।
 सोऽस्य प्राप्तः समयात् ४।१।१२३।
 सोऽस्य अभिजनः गिरिभ्यः शस्त्र-
 जीविषु ३।३।५८।
 सौ अनडुहः ५।४।३६।
 सौ असंबुद्धौ ५।३।१०।
 सौ वा इतौ ५।१।१२६।
 सौवीरेषु वा २।४।८०।
 स्कृञः ६।२।६६।
 स्कोः संयोगाद्योः अन्ते च ६।३।५८।
 स्तनि-हृषि-पुषि-गडि-मडिभ्यो णे इत्नुच्
 (उणादि) १।२६।
 स्तम्ब-शक्र-द्वां व्रीहि-वत्सयोः इन् १।२।८।
 स्तम्भु-स्तुम्भु-स्कम्भु-स्कुम्भु-स्कुभ्यः
 १।१।६६।
 स्तम्भेः ६।४।५२।
 स्तुतौ आतुः ४।४।१४६।
 स्तु-सुजः अतडि ५।४।१६६।
 स्तु-स्वञ्ज-सिवादीनाम् वा अङ्व्यवाये
 ६।४।५६।
 स्तेयम् ४।१।१४३।
 स्तोः श्व-ष्टुभ्यां तौ ६।४।१३६।
 स्तोः षणि ६।४।४८।
 स्तोक-अल्प-कृच्छ्र-कतिपयात् असत्त्वार्थात्
 करणे २।१।८७।

स्तोमे डट् ४।१।६४।
 स्तोः ऊ च (उणादि) २।८३।
 स्त्रियां कुरु-कुन्ति-अवन्तिभ्यः २।४।१०५।
 स्त्रियां क्तिन् १।३।७४।
 स्त्रियां पुंवत् उक्तपुंस्कम् अनूङ् एकार्थे
 स्त्रियाम् अप्रधानपूरणी-प्रियादौ
 ५।२।२६।

स्त्रियां लुक् २।४।३०।
 स्त्रियां वा ६।२।५२।
 स्त्रियाः ५।३।८५।
 स्त्रियाः ६।२।५५।
 स्त्रियाम् २।३।१।
 स्त्रियाम् ५।४।४६।
 स्त्रीणाम् २।१।३७।
 स्त्रीनाम्नि ४।४।१३२।
 स्त्री-पुंसाभ्यां नञ्-स्नञौ २।४।१३।
 स्त्रीबहुषु फक् २।४।३४।
 स्त्री-यूभ्याम् २।१।३५।
 स्थः ६।१।६७।
 स्थः प्रतिज्ञा-निर्णय-प्रकाशनेषु १।४।६४।
 स्थण्डिले शेते व्रती ३।१।१३।
 स्थलादिना ४।१।६०।
 स्थादीनां द्विरुक्तेन तस्य च ६।४।५८।
 स्थानान्त-गोशाल-खरशालात् लुक्
 ३।३।६।
 स्था-भास-पिस-कसो वरच् १।२।१२२।
 स्था-स्ना-पा-व्यधि-हनि-युधः कः
 १।३।४६।

स्थास्तुः १।२।६५।
 स्थिरादयः (उणादि) ३।६।
 स्थूल-दूर-युव-क्षिप्र-क्षुद्राणां यणादेः य्-वोः
 एङ् च ५।३।१५६।

स्थूलादिभ्यः कन् ४।३।२७।
 स्तु-नमः स्वयम् १।४।१०२।
 स्पर्धायाम् आङ् १।४।७७।
 स्पर्श-द्रवमूत्योः श्यः ५।१।२६।
 स्पृश-मृश-कृष-तृप-दृप-सृपां वा ६।२।६।
 स्पृश-मृश-कृष-तृप-दृपो वा १।१।६१।
 स्पृशः अनुदकात् क्विन् १।२।४८।
 स्पृहि-गृहि-पति-शीङ् आलुच् १।२।१०४।
 स्पृहेः आय्यः (उणादि) २।१।१३।
 स्फायः स्फीः ५।१।३२।
 स्फायो वः ६।१।५३।
 स्फुरि-स्फुलोर्घञि ५।१।५१।
 स्फुरि-स्फुलोर्निर्-नि-विभ्यः ६।४।६४।
 स्मपरे लङ् च १।३।५।
 स्-महतोर्नुमि ५।३।८।
 स्मि-अजस-हिंस-दीप-नम-कम-कम्पो रः
 १।२।११६।

स्मृत्युक्तौ लृट् १।२।७८।
 स्मृ-दृशः १।४।११२।
 स्मृ-दृ-त्वर-प्रथ-म्रद-स्तृ-स्पशाम् अत्
 ६।२।१४२।

स्मे लोट् १।३।१२५।
 स्मेः च ५।१।५६।
 स्मै च तीयात् २।१।१६।
 स्मैवतः स्याङ् अत् च ६।२।५७।
 स्य-त्तासौ लृ-लुटोः १।१।५६।
 स्यदो जवे ५।३।३२।
 स्यन्दो यणः इग् धश्च (उणादि) १।१७।
 स्यमो यः ईत् च (उणादि) २।१०।
 स्य-सिचि कृत-चूत-च्छृद-तृद-नृतः

५।४।१२०।

सु-रिङ्भ्यां तुट् च (उणादि) ३।१०६।

लुवः चिक् (उणादि) ३।७२।	हनः ६।४।११६।
लु-श्रु-द्रु-मु-प्लु-च्युनाम् वा ६।२।१३१।	हनः कुत्सायाम् १।२।६४।
स्वञ्जः ५।३।२७।	हनस्तोऽचिण्-णलोः ६।१।४०।
स्वन-हसो वा १।३।५२।	हनः घ्नी हिंसायाम् ६।२।८३।
स्वपः ५।१।२३।	हनः जः ५।३।६०।
स्वप्नक् तृष्णक् १।२।११६।	हनो जघ च (उणादि) २।७२।
स्वर्गादिभ्यः यत् ४।१।१३३।	हनो वध लिङि ५।४।८६।
स्वसुः २।४।६६।	ह-य-व-र-लण् प्रत्याहारसूत्र (शिवसूत्र ५)
स्वसृ-पत्योर्वा ५।२।१६।	हरति उत्सङ्गादिभ्यः ३।४।१४।
स्वागतादीनाम् ६।१।१८।	हरितादिभ्यः अवः २।४।३६।
स्वाङ्गात् तस्-ना-धार्थं भुवा च २।२।४३।	हल् प्रत्याहारसूत्र (शिवसूत्र १३)
स्वाङ्गात् अकृत-मित-जात-प्रतिपन्नात्	हलः ५।३।२।
अन्यार्थे २।३।५७।	हल-सीरात् ठक् ३।३।८८।
स्वाङ्गात् अप्रधानात् २।३।६१।	हलः तित्-सिपः ५।१।६५।
स्वाङ्गात् ईद् अमानिनि ५।२।३७।	हलस्य कर्षे ३।४।६६।
स्वाङ्गेषु शक्तः ४।२।७१।	हलादेः इजुपान्तात् ६।४।१२५।
स्वात् ईर-ईरिणोः ५।१।८८।	हलादेः उपान्तस्य अश्वस-क्षण-ह्-म्-य्-
स्वादिभ्यः श्रुः १।१।६५।	एदितः अतः ६।१।७।
स्वादीनाम् ६।४।५७।	हलि पिति उतः औत् ६।२।३०।
स्वाद्वर्थात् अदीर्घात् १।३।१३५।	हलि मः ६।४।८।
स्वामिन् ईशे ४।२।१४३।	हलः अचः ६।१।४।
स्वाम्ये अधिना २।१।६१।	हलः झरां झरि सस्थाने लोपो वा
स्वार्थे २।३।१६।	६।४।१५५।
स्वार्थे ५।४।१३८।	हलः अनादेः ६।२।११२।
स्वृ-सूङ्-ऊदितः ५।४।१०७।	हलः अनिदितः किङ्कति उपान्तस्य ५।३।२३।
स्-वो वा-ऽमौ १।४।२५।	हलः यनादेः ५।३।१५२।
सु-औ-जस्-अम्-औट्-शस्-टा-भ्यां-भिस्-डे-	हलः हौ शानच् १।१।१०२।
भ्यां-भ्यस्-डसि-भ्यां-भ्यस्-डस्-ओस्-	हलि अश् ५।४।७५।
आम्-ङि-ओस्-सुप् २।१।१।	हवः १।३।६२।
ह एति ६।२।१०१।	हशि च अतो रोः ५।१।११६।
हनः १।२।३७।	हस्त-दन्तात् जाती ४।२।१३०।
हनः ५।३।४६।	हस्तप्राप्ये चेः-अस्तेये १।३।३१।

हस्ति-पुरुषात् अण् च ४।२।४०।
 हस्तेन १।३।१३७।
 हस्ति-अचित्तात् ३।१।४८।
 हाकः ५।३।१०६।
 हाकः त्वि ६।२।६५।
 हायनात् वयसि २।३।११।
 हायनान्त्युवादिभ्यः अण् ४।१।१४६।
 हिंसायां प्रतेश्च ५।१।१३६।
 हिंसार्थात् एकाप्यात् १।३।१४०।
 हितनाम्नो वा ५।३।१७२।
 हित-सुखाभ्यां चतुर्थी च २।१।६७।
 हिता भक्षाः ३।४।६६।
 हिनु-मीना-आनि ६।४।११५।
 हिमं सहते चेलुः ४।२।१५६।
 हिम-हृति-काषि-ष्ठन्-यति पद् ५।२।५६।
 हिमादिभ्यः ४।२।१३६।
 हिम-अरण्यात् महत्त्वे २।३।५२।
 हीने २।१।५८।
 हीयमान-पापयुक्तात् ४।३।४।
 हु-झलः अनिटः हेः धिः ५।३।६८।
 हु-स्तुवोः अलिटि ५।३।६१।
 हुनां द्वे च १।१।८४।
 ह्-क्रोः एणुः (उणादि) १।२७।
 ह्-क्रोर्वा २।१।४५।
 ह्वो गतिशीले १।४।६१।
 ह्वो दुक् च (उणादि) २।१०८।
 ह्वो दृति-नाथात् पशौ १।२।६।
 हृदयस्य प्रिये ३।४।६७।

हृदयस्य अणि हृत् ५।२।५५।
 हृद्-भग-सिन्धोः पूर्वस्य च ६।१।२६।
 ह-सृ-तडि-रुहि-युषिभ्यः इतिः (उणादि) ३।७६।
 ह-सः अवात् १।१।१४६।
 हेतु-फलयोः १।३।१२०।
 हेतौ २।१।६८।
 हे म-न-य-व-लपरे ते वा ६।४।११।
 हेमन्तात् वा तलोपश्च ३।२।८०।
 हेमार्थात् परिमाणे ३।३।१०७।
 हेः अचडि ६।१।८७।
 हैयंगवीनं संज्ञायाम् ३।३।१२१।
 हो ढः ६।३।६२।
 हो द्वे च (उणादि) २।६।
 हः व्रीहि-कालयोः १।१।१५६।
 हः हिर् च (उणादि) २।१।६६।
 हौ वा ५।३।११०।
 ह्रस्वः ६।२।११६।
 ह्रस्वस्य अतिडि पिति तुक् ५।१।६६।
 ह्रस्वात् ६।३।५६।
 ह्रस्वात् सुपः ति ६।४।८७।
 ह्रस्वापो नुट् २।१।३२।
 ह्रस्वे ४।३।७०।
 ही-इषि-कृशिभ्यः कुक्-सुग्-आनुक् (उणादि) १।३५।
 ह्लादो ह्रलद् ६।३।६२।
 ह्रवः ५।१।३६।
 ह्र्वा-लिप्-सिचः १।१।७१।

चान्द्र-उणादिसाधितशब्दानाम् अकारादिक्रमेण संकलनम् ।

शब्दः पादः सूत्रम्

अंहस् ३।१००।
 अकट २।३२।
 अक्ष ३।६३।
 अक्षर ३।१८।
 अक्षि १।६७।
 अग्नि १।७७।
 अग्र ३।१४।
 अङ्कश ३।५६।
 अङ्ग २।२६।
 अङ्गार ३।२१।
 अङ्गिरस् ३।६६।
 अङ्गुर ३।१।
 अङ्गुरि १।६३।
 अङ्गुलि १।६३।
 अङ्गुष ३।५७।
 अजिन २।६३।
 अजिर ३।६।
 अञ्जलि १।७३।
 अणु १।६,७।
 अण्ड २।३६।
 अतस ३।६५।
 अतिथि १।६३।
 अद्भुत २।४६।
 अद्रि १।७०।
 अधम २।१०६।
 अनेहस् ३।६६।
 अन्त २।५०।
 अन्त्र ३।४०।

शब्दः पादः सूत्रम्

अन्दु १।४७।
 अपष्ठु १।२१।
 अप्तु १।२५।
 अप्सरस् ३।६६।
 अब्द २।६१।
 अमति १।८६।
 अमत्र ३।३८।
 अम्बरीष ३।६०।
 अम्भस् ३।११०।
 अयस् ३।६६।
 अरणि १।७४।
 अरण्य २।११५।
 अरति १।७२।
 अरुस् ३।६२।
 अरूष ३।५७।
 अर्क २।३।
 अर्चिस् ३।८६।
 अर्जुन २।८०।
 अर्ण २।७६।
 अर्णस् ३।११३।
 अर्थ २।५६।
 अर्पिश ३।५४।
 अभङ्क २।२।
 अर्म २।१००।
 अर्य ३।११४।
 अर्शस् ३।११२।
 अलाबू १।४७।
 अलीक २।१८।

अवट २।३२।
 अवनि १।७४।
 अवभृथ २।५५।
 अवि १।५१।
 अविन २।६२।
 अविष ३।६१।
 अविषी ३।६१।
 अवी १।६०।
 अव्यथिष ३।६२।
 अशनि १।७४।
 अश्रि १।६०।
 अश्व २।६१।
 असु १।८।
 असुर ३।३।
 अस्थि १।६१।
 अहि १।५५।
 आखु १।२०।
 आगन्तु १।२२।
 आगस् ३।१०२।
 आगामिन् ३।८६।
 आजि १।५७।
 आडू १।४७।
 आति १।५७।
 आपणिक २।६।
 आपतिक २।६।
 आम्र ३।६।
 आयुस् ३।६३।
 आवसथ २।५३।
 आशु १।१।
 इक्षु १।३५।
 इध्म २।१०३।
 इन २।७५।

इन्दु १।८।
 इन्द्र ३।१३।
 इभ २।६७।
 इरा ३।१४।
 इरिण २।६६।
 इल्वला ३।५३।
 इषिर ३।६।
 इषीका २।१८।
 इषु १।१३।
 इष्टका २।१४।
 उक्थ २।५८।
 उक्षन् ३।८०।
 उग्र ३।१४।
 उत्पल ३।४६।
 उदक २।२।
 उद्गीथ २।५६।
 उद्र ३।१०।
 उरस् ३।१११।
 उरु १।१६।
 उलप २।८७।
 उलूक २।२२।
 उल्का २।४।
 उल्ब २।६२।
 उल्मुक २।४।
 उशनस् ३।६५।
 उशीर ३।२८।
 उषप २।८७।
 उषस् ३।१०१।
 उषिज् ३।७३।
 उष्ट्र ३।३७।
 उष्ण २।७५।
 उल्ल ३।१०।

उत्ता ३।१०।
 ऊन २।७५।
 ऊरु १।१६।
 ऊर्णा २।३८।
 ऊर्मि १।६५।
 ऋक्ष ३।६४।
 ऋजीक २।१६।
 ऋजीष ३।६०।
 ऋज्ज ३।१४।
 ऋतु १।२५।
 ऋषभ २।६४।
 एक २।१।
 एत २।५०।
 एधतु १।२५।
 एनस् ३।१०७।
 ओजस् ३।१०४।
 ओतु १।२२।
 ओदन २।६८।
 ओष्ठ २।५६।
 कंस ३।६३।
 कक्ष ३।६३।
 कचप २।८७।
 कचूक २।२२।
 कच्छ २।३१।
 कच्छू १।४४।
 कक्षार ३।२२।
 कट्वर ३।१५।
 कठोर ३।३४।
 कडत्र ३।३८।
 कडार ३।२१।
 कडित्र ३।४२।
 कणीका २।१६।

कणीचि १।६८।
 कण्ठ २।३६।
 कण्व २।६१।
 कनक २।२०।
 कन्तु १।२४।
 कन्द २।६०।
 कन्दु १।८।
 कन्या २।११०।
 कपि १।५५।
 कफेलू १।४७।
 कमट २।३२।
 कमठ २।३६।
 कमल ३।४५।
 कम्बू १।४७।
 करक २।२०।
 करण्ड २।३७।
 करभ २।६३।
 करीर ३।२७।
 करीष ३।५६।
 करुणा २।८०।
 करेणु १।२७।
 कर्क २।३।
 कर्कन्धू १।४७।
 कर्ण २।७४।
 कर्पासि ३।६६।
 कर्पूर ३।४३।
 कर्षू १।४७।
 कलत्र ३।३८।
 कलभ २।६३।
 कला ३।४६।
 कल्क २।३।

कवि १।५१।	कुश ३।५५।
कषेरू १।४७।	कुष्ठ २।५४।
काक २।१।	कूप २।८४।
काणूक २।२२।	कृकवाकु १।४।
कारि १।६०।	कृच्छ्र ३।१०।
कार १।१।	कृत्तिका २।१३।
कार्षक २।७।	कृत्स्न २।७६।
काष्ठ २।५४।	कृपीट २।३४।
कासू १।४७।	कृवि १।८३।
किशार १।३।	कृशानु १।३५।
किकि १।८३।	कृषक २।७।
किङ्किणीका २।१६।	कृषि १।५२।
किरण २।७०।	कृषिक २।८।
किरीट २।३४।	कृष्ण २।७५।
किल्बिष ३।६२।	कृसरा ३।१६।
कीनाश ३।५६।	केतु १।२५।
कुक्षि १।६६।	केवल ३।४६।
कुतप २।८७।	कोष्ठ २।५६।
कुटीर ३।२६।	क्रतु १।२५।
कुट्मल ३।४८।	क्रयिक २।१७।
कुणप २।८७।	क्रिमि १।५३।
कुणाल ३।५०।	क्रोष्टु १।२२।
कुण्ड २।४०।	क्षत्तृ १।५०।
कुन्द २।६१।	क्षिपक २।५।
कुप्र ३।१४।	क्षिपणि १।७५।
कुमार ३।२३।	क्षिपणु १।३२।
कुमारयु १।२१।	क्षिपि १।५२।
कुम्भीर ३।२६।	क्षिप्र ३।७।
कुरव ३।१७।	क्षीर ३।२६।
कुरीर ३।२६।	क्षुद्र ३।७।
कुरु १।१५।	क्षुर ३।१४।
कुलटा २।३२।	क्षेम २।१००।

क्षोम २।१००।
 खजाक २।१६।
 खट्वा २।६१।
 खण्ड २।३६।
 खदिर ३।६।
 खरु १।४०।
 खर्जू १।४७।
 खर्जूर ३।४३।
 खलत २।४८।
 खष्प २।८५।
 खिद्र ३।१०।
 खुर ३।१४।
 खुराक २।१६।
 गङ्गा २।२८।
 गडयन्त २।४५।
 गण्ड २।३६।
 गदयित्तु १।२६।
 गन्तु १।२२।
 गभीर ३।२६।
 गमथ २।५३।
 गमिन् ३।८५।
 गम्भीर ३।२६।
 गरुत् ३।७५।
 गर्ग २।२६।
 गर्त २।५०।
 गर्दभ २।६३।
 गर्भ २।६६।
 गरमुत् ३।७५।
 गर्व २।६०।
 गल ३।४६।
 गह्वर ३।१६।
 गातु १।२५।

गाथा २।५६।
 गुरु १।१५।
 गुल्फ २।८६।
 गुवाक २।१६।
 गूथ २।५६।
 गृधु १।१३।
 गृध्र ३।११।
 गो १।६२।
 गोधूम २।६८।
 गोपीठ २।५६।
 गोमायु १।१।
 गौर ३।१४।
 गौरी ३।१४।
 ग्रन्थि १।५१।
 ग्रहणि १।७४।
 ग्राम २।१०१।
 ग्रीवा २।६२।
 ग्रीष्म २।१०६।
 ग्लौ १।६३।
 घर्म २।१०६।
 घाति १।५६।
 घासि १।५७।
 घृणि १।८०।
 घृत २।५१।
 घोर ३।३५।
 चकोर ३।३४।
 चक्षुस् ३।६४।
 चण्ड २।३६।
 चतुर ३।१।
 चत्वर ३।१५।
 चण्डिर ३।५।
 चन्द्र ३।७।

चन्द्रमस् ३।६८।
 चपल ३।४६।
 चमस ३।६५।
 चमू १।४३।
 चरम २।६६।
 चरु १।५।
 चषाल ३।५३।
 चाटु १।२।
 चाण्डाल ३।४६।
 चारु १।२।
 चित्र ३।४०।
 चीर ३।१२।
 चीवर ३।१६।
 चुक्र ३।१०।
 चुन्न ३।१४।
 चूर्णि १।८०।
 छत्वर ३।१६।
 छदिष् ३।८६।
 छन्दस् ३।१०६।
 छर्दिस् ३।८६।
 छवि १।८३।
 छाया २।१०६।
 छित्तर ३।१६।
 छिदिर ३।६।
 छिद्र ३।८।
 जगत् ३।७०।
 जघन २।७२।
 जङ्घा २।३०।
 जटा २।३३।
 जटायु १।२१।
 जठर ३।३१।
 जतु १।१०।

जत्रु १।४०।
 जनक २।२०।
 जनि १।५७।
 जनुस् ३।६१।
 जन्तु १।२४।
 जन्म २।१०३।
 जन्मन् ३।८१।
 जन्यु १।३४।
 जम्बू १।४७।
 जयत २।४८।
 जयन्त २।४५।
 जरन्त २।४३।
 जरायु १।३।
 जरूथ २।५७।
 जर्जरीका २।१६।
 जर्त २।५२।
 जलूका २।२२।
 जहक २।६।
 जहन्तु १।३१।
 जागृवि १।८२।
 जानु १।२।
 जामातृ १।५०।
 जाया २।११०।
 जायु १।१।
 जिन १।६५।
 जिह्वा २।६२।
 जीर ३।६।
 जीर्ण २।७६।
 जीवथ २।५३।
 जीवन्ती २।४४।
 जीवातु १।२५।
 जीवि १।८३।

जुण्ड २।४०।
 जू ३।६८।
 जूर्णि १।८०।
 ज्योतिस् ३।६०।
 तक्र ३।७।
 तक्षन् ३।७६।
 तडाक २।१६।
 तडित् ३।७६।
 तण्डुल ३।५३।
 तनय २।१०७।
 तनु १।५।
 तनू १।४३।
 तन्तु १।२२।
 तन्द्री १।८८।
 तपस् ३।१००।
 तरणी १।७४।
 तरी १।६०।
 तरीष ३।५६।
 तरु १।५।
 तरुण २।८०।
 तर्कुं १।२१।
 तर्ण २।७४।
 तर्दू १।४५।
 तर्ष ३।६३।
 तलुन २।८०।
 तल्प २।८२।
 तसर ३।१६।
 तात २।५२।
 ताम्बूल ३।४४।
 ताम्र ३।६।
 तारा १।६४।
 तालु १।२।

ताविष ३।६२।
 ताविषी ३।६२।
 तिग्म २।१०५।
 तित्थ २।५६।
 तिन्तिडीका २।१६।
 तिमिर ३।५।
 तिरिट २।३४।
 तीक्ष्ण २।७८।
 तीर्थ २।५८।
 तीवर ३।१६।
 तुण्ड २।४०।
 तुत्थ २।५८।
 तुन्द २।६१।
 तुहिन २।६६।
 तूर्णि १।८०।
 तृण २।७६।
 तृप्र ३।८।
 तृष्णा २।७५।
 तेजस् ३।१००।
 त्रपु १।८।
 त्रपुस् ३।६२।
 त्वष्टृ १।५०।
 त्सरु १।२१।
 दक्षिणा २।६५।
 दण्ड २।३६।
 दन्त २।५०।
 दध्र ३।१०।
 दरद् ३।७८।
 दरि १।५१।
 दर्दरीक २।१६।
 दर्दुर ३।२।
 दद्रु १।४६।

दर्भ २।६५।
 दर्वि १।८१।
 दर्शट २।४८।
 दलप २।८७।
 दल्मि १।६४।
 दस्यु १।३४।
 दह् ३।८।
 दाक २।३।
 दात्र ३।३६।
 दानु १।२८।
 दारु १।२।
 दारुण २।८०।
 दाश ३।५६।
 दिधिषू १।४७।
 दिवि १।८३।
 दीदिवि १।८३।
 दुष्टु १।२१।
 दुहितृ १।५०।
 दूत २।५१।
 दूर ३।१०।
 दृति १।८४।
 दृन्भू १।४७।
 दृषद् ३।७८।
 देवट २।३२।
 देवयु १।२१।
 देवर ३।२०।
 देवृ १।४८।
 द्रविण २।६५।
 द्रू ३।६८।
 द्रोण २।७४।
 धनु १।२१।
 धनुस् ३।६२।

धन्वन् ३।७६।
 धमक २।५।
 धमनि १।७४।
 धरणि १।७४।
 धरिमन् ३।८३।
 धर्म २।१००।
 धाक २।३।
 धातु १।२२।
 धात्री ३।३६।
 धाना २।७३।
 धिषणा २।७१।
 धिष्य २।११६।
 धीन २।७५।
 धीर ३।११।
 धीवर ३।१६।
 धूक २।२।
 धूम २।१०३।
 धूर्त २।५०।
 धूसर ३।१६।
 धृषु १।१३।
 धेनु १।३१।
 ध्वनि १।५१।
 नक्षत्र ३।३८।
 नदनु १।३२।
 ननान्दृ १।५०।
 नन्दन्ती २।४४।
 नप्तृ १।५०।
 नमत २।४८।
 नमाक २।१६।
 नरक २।२०।
 नशाक २।१६।
 नाकु १।१०।

नाभि १।५६।
 नामन् ३।८२।
 निधान २।७०।
 निपथि ३।६०।
 निभृथ २।५६।
 निम्ब २।६२।
 निर्ऋथ २।५६।
 निशीथ २।५६।
 नीर ३।८।
 नीवर ३।१६।
 नीवि १।५६।
 नृ १।४६।
 नृतु १।४७।
 नेत्र ३।३६।
 नेम २।१००।
 नेमि १।६४।
 नेष्टृ १।५०।
 नौ १।६३।
 न्यङ्क् १।१२।
 पचत २।४८।
 पटायु १।२१।
 पटीर ३।२६।
 पटु १।८।
 पतंग २।२७।
 पतत्रीका २।१६।
 पताका २।१५।
 पति १।८५।
 पत्तन २।६४।
 पत्र ३।३६।
 पथिन् ३।८४।
 पद्य २।१००।
 पनस ३।६५।

पपी १।६०।
 पयस् ३।१००।
 पयोधस् ३।६७।
 परमेष्ठिन् ३।८८।
 परशु १।३८।
 परिव्राज् ३।७१।
 परीर ३।२६।
 परस् ३।६२।
 पर्जन्य २।११७।
 पर्ण २।७३।
 पर्प २।८२।
 पर्परीका २।१६।
 पर्वत २।४८।
 पर्शु १।३८।
 पलित २।५२।
 पल्वल ३।५३।
 पवित्र ३।४२।
 पशु १।१८।
 पशुपति १।८५।
 पांसु १।६।
 पाक २।१।
 पाणि १।५७।
 पाताल ३।४६।
 पात्र ३।३६।
 पादू १।४७।
 पाप २।८२।
 पायु १।१।
 पार्ष्णि १।८०।
 पिचूक २।२२।
 पिञ्जूल ३।४३।
 पिठर ३।३३।
 पितृ १।५०।

पिनाक २।१६।
 पियाल ३।५०।
 पीतु १।२५।
 पीठ २।५८।
 पीयूष ३।५७।
 पीवर ३।१६।
 पुण्य २।११८।
 पुत्र ३।४१।
 पुनर्भू १।४७।
 पुरीष ३।६०।
 पुरु १।१३।
 पुरुष ३।५८।
 पुरोधस् ३।६७।
 पुष्कर ३।२५।
 पूर्ण २।७५।
 पूरण २।७०।
 पूषन् ३।८०।
 पृथु १।१३।
 पृथुक २।२।
 पृषत् ३।७७।
 पृषत २।४६।
 पृष्ठ २।५६।
 पृष्ठि १।८३।
 पेरु १।३६।
 पोत २।५०।
 पोतृ १।५०।
 पोत्र ३।४२।
 पोषयितु १।२६।
 प्रतिदीवन् ३।७६।
 प्रथम २।६६।
 प्रशास्तृ १।५०।
 प्रहि १।६०।

प्राछ् ३।६६।
 प्राणथ २।५३।
 प्रू ३।६८।
 प्रोथ २।५६।
 प्लीहन् ३।८०।
 फल्गु १।११।
 बदर ३।३२।
 बदरी ३।३२।
 बधिर ३।५।
 बन्धु १।८।
 बन्ध्या २।११०।
 बलि १।५१।
 बहु १।२०।
 बाष्प २।८५।
 बाहु १।६।
 बिम्ब २।६२।
 बुध्न २।७५।
 ब्रध्न २।७३।
 भद्र ३।१४।
 भन्दाक २।१६।
 भयानक २।११।
 भरक २।२०।
 भरत २।४८।
 भरथ २।५३।
 भरिमन् ३।८३।
 भरु १।५।
 भवन्त २।४५।
 भवन्ति १।७१।
 भस्मन् ३।८१।
 भानु १।२५।
 भानु १।२८।

भाम २।१००।
 भालूक २।२२।
 भाविन् ३।८७।
 भासन्त २।४५।
 भित्तिका २।१३।
 भिदिर ३।६।
 भिदु १।१३।
 भीक २।२।
 भीम २।१०४।
 भीष्म २।१०४।
 भुजिष्य २।१११।
 भुज्यु १।३४।
 भुविस् ३।६०।
 भूक २।४।
 भूनि १।८०।
 भूमि १।६५।
 भूरि १।७०।
 भूणि १।८०।
 भृगु १।१८।
 भृङ्ग २।२६।
 भृङ्गार ३।२२।
 भूमि १।६०।
 भृश ३।५५।
 भेक २।१।
 भेर ३।१४।
 भेरी ३।१४।
 भ्रमर ३।२०।
 भ्रातृ १।५०।
 भ्रू १।४२।
 मकुर ३।२।
 मघवन् ३।८०।
 मङ्गल ३।५२।

मज्जन् ३।८०।
 मञ्जूषा ३।५७।
 मणीका २।१६।
 मण्डन २।७०।
 मण्डप २।८७।
 मण्डयन्त २।४५।
 मण्डूक २।२१।
 मत्सर ३।१८।
 मत्स्य २।११२।
 मथिन् ३।८४।
 मथुरा ३।१।
 मदयित्नु १।२६।
 मदार ३।२१।
 मदिरा ३।५।
 मद्गु १।५।
 मद्र ३।७।
 मधु १।१०।
 मधूक २।२२।
 मनस ३।६५।
 मनाक २।१६।
 मनु १।८।
 मन्तु १।२४।
 मन्द २।६१।
 मन्दार ३।२१।
 मन्दिर ३।५।
 मन्दुरा ३।१।
 मन्द्र ३।७।
 मन्यु १।३४।
 मयु १।२१।
 मरीचि १।६८।
 मरु १।५।
 मरुत् ३।७४।

मरुक २।२२।
 मर्क २।१।
 मर्कट २।३२।
 मर्जु १।४७।
 मर्त २।५०।
 मलूक २।२२।
 मसूर ३।३०।
 मस्तु १।२२।
 महत् ३।७७।
 महिन २।६६।
 मांस ३।६३।
 मातस्त्रिवन् ३।८०।
 मातृ १।५०।
 माया २।१०६।
 मायु १।१।
 मार्जार ३।२२।
 माला ३।५३।
 मितद्रु १।२१।
 मित्र ३।४०।
 मित्रयु १।२१।
 मीर ३।१२।
 मीवर ३।१६।
 मुचीर ३।६।
 मुण्ड २।४०।
 मुद्ग २।२६।
 मुद्रा ३।८।
 मुनि १।५४।
 मुष्क २।४।
 मुहिर ३।६।
 मूत्र ३।३७।
 मूर्ख २।२४।
 मूर्धन् ३।८०।

मूषिक २।८।
 मृगयु १।२१।
 मृडीक २।१६।
 मृत्यु १।३६।
 मृडु १।१३।
 मृद्वीका २।१६।
 मेरु १।३६।
 यक्ष्म २।१००।
 यजुस् ३।६२।
 यमत २।४८।
 यमुना २।८०।
 ययी १।६०।
 यवस ३।६५।
 यवागू १।४१।
 यशस् ३।१०३।
 यातु १।२५।
 याम २।१००।
 युग्म २।१०५।
 युध्म २।१०३।
 युवन् ३।७६।
 यूका २।२।
 यूथ २।५६।
 यूष २।८४।
 योनि १।७६।
 योषित् ३।७६।
 रजत २।४६।
 रजन २।६६।
 रजनी २।६६।
 रजस् ३।१०१।
 रज्जु १।१६।
 रण्डा २।३६।
 रतू १।४७।

रत्न २।७५।
 रथ २।५४।
 रन्ध्र ३।१०।
 रभस ३।६५।
 रवण २।६७।
 रवथ २।५३।
 रवि १।५१।
 रश्मि १।६५।
 रसना २।६७।
 राका २।३।
 राजन् ३।७६।
 राजि १।५६।
 रात्रि १।६६।
 राशि १।५७।
 गसभ २।६४।
 रास्ता २।७६।
 रिक्थ २।५८।
 रिपु १।१४।
 रग्म २।१०५।
 रुचि १।५२।
 रुचिर ३।६।
 रुचिष्य २।१११।
 रुद्र ३।७।
 रुधिर ३।५।
 रुह १।४०।
 रूप २।८५।
 रेणु १।२६।
 रेतस् ३।१०६।
 रेफ २।८८।
 रै १।६१।
 रोचना २।६७।
 रोमन् ३।८२।
 रोहन्त २।४४।

रोहन्ती २।४४।
 रोहित् ३।७६।
 रोहित २।४७।
 रोहिष ३।६२।
 लक्ष्मी १।८६।
 लङ्घक २।५।
 लट्वा २।६१।
 लत्तिका २।१३।
 लाङ्गल ३।४३।
 लिखक २।५।
 लोत २।५०।
 लोत्र ३।४२।
 लोमन् ३।८२।
 लोष्ट २।३३।
 लोहित् ३।७६।
 लोहित २।४७।
 लोहिष ३।६२।
 वंश ३।५५।
 वक्र ३।७।
 वक्षस् ३।१०५।
 वग्न १।३१।
 वज्र ३।१३।
 वटल ३।४६।
 वटर ३।२०, ३२।
 वणिज् ३।७३।
 वण्ड २।३६।
 वत्स ३।६३।
 वत्सर ३।१८।
 वदथ २।५३।
 वधू १।४३।
 वन्द्र ३।१०।
 वपुस् ३।६२।
 वप्र ३।१३।
 वयस् ३।१००।

वरक २।२०।
 वरणा २।६७।
 वरण्ड २।३७।
 वरत्रा ३।३६।
 वरुण २।८०।
 वरूथ २।५७।
 वरेण्य २।११४।
 वर्ण २।७४।
 वर्णु १।२६।
 वर्तन्ति १।७४।
 वर्त्मन् ३।८१।
 वर्ध ३।१३।
 वर्वर ३।१५।
 वर्वरी ३।१५।
 वर्वरीका २।१६।
 वर्वि १।८१।
 वर्ष ३।६३।
 वलाका २।१५।
 वलीका २।१६।
 वलूक २।२२।
 वल्क २।४।
 वल्गु १।११।
 वल्लभ २।६४।
 वल्लि १।५१।
 वल्लूर ३।४३।
 वसति १।८७।
 वसन्त २।४५।
 वसु १।८।
 वस्ति १।८४।
 वस्तु १।२३।
 वस्न २।७३।
 वहति १।८७।
 वहतु १।२५।

वहन्त २।४५।
 वहित्र ३।४२।
 वह्नि १।७६।
 वाच् ३।६६।
 वात २।५०।
 वातप्रमी १।६०।
 वापि १।५६।
 वायु १।१।
 वाशि १।५६।
 बाह्लीक २।१६।
 वाशुरा ३।१।
 वाश्र ३।१०।
 वासर ३।२०।
 वासस् ३।१०२।
 वासि १।५६।
 वास्तु १।२३।
 वि १।५८।
 विकुस ३।१०।
 विटप २।८७।
 विदाक २।१६।
 विधु १।१३।
 विधुर ३।२।
 विपिन २।६६।
 विप्र ३।१४।
 विशप २।८७।
 विशिप २।८७।
 विश्व २।६१।
 विष्टप २।८७।
 विष्ठा २।५८।
 विष्णु १।३०।
 वीका २।२।
 वीणा २।७६।
 वीर ३।८।

वृक २।४।
 वृक्ष ३।६४।
 वृजन २।७०।
 वृजिन २।६३।
 वृत्र ३।८।
 वृध ३।१४।
 वृन्द २।६१।
 वृश ३।५५।
 वृश्चिक २।८।
 वृषत् ३।७७।
 वृषन् ३।७६।
 वृषभ २।६४।
 वृषल ३।४६।
 वृष्णि १।८०।
 वेणि १।७८।
 वेणु १।३१।
 वेतना २।६४।
 वेतस ३।६५।
 वेदथ २।५३।
 वेधस् ३।६६।
 वेमन् ३।८२।
 वेशन्त २।४३।
 व्यथिष ३।६२।
 व्योमन् ३।८२।
 शकट २।३२।
 शकल ३।४७।
 शकुन २।८१।
 शकुनि १।७६।
 शकुन्त २।४२।
 शकुन्ति १।७१।
 शक्र ३।७।
 शङ्कु १।२१।
 शङ्ख २।२३।
 शण्ठ २।३५।

शण्ड २।४१।
 शतद्रु १।२१।
 शत्त्रि १।६६।
 शत्रु १।४०।
 शपथ २।५३।
 शबल ३।४५।
 शब्द २।६०।
 शमथ २।५३।
 शमल ३।४७।
 शम्ब २।६२।
 शयानक २।११।
 शयु १।५।
 शरद् ३।७८।
 शरभ २।६३।
 शरि १।५१।
 शरीर ३।२७।
 शरु १।२१।
 शर्करा ३।२४।
 शर्व २।६०।
 शर्वर ३।१५।
 शर्वरी ३।१५।
 शर्शरीक २।१६।
 शलभ २।६३।
 शलाका २।१६।
 शल्क २।१।
 शष्प २।८५।
 शस्त्र ३।३६।
 शारि १।५६।
 शालूक २।२१।
 शिक्य २।११६।
 शिखा २।२५।
 शिश्रु १।४०।
 शिक्षाणक २।१२।

शिथिल ३।५३।
 शिरस् ३।१०१।
 शिरीष ३।६०।
 शिल्प २।८५।
 शिव २।६२।
 शिशिर ३।६।
 शिशु १।१४।
 शीघ्र १।३७।
 शीर ३।१०।
 शुक २।४।
 शुक्र ३।१४।
 शुक्ल ३।५३।
 शुचि १।५२।
 शुभ्र ३।८।
 शुल्ब २।६२।
 शूर्प २।८५।
 शृङ्ग २।२६।
 शृङ्गार ३।२२।
 शृङ्ग १।४७।
 शोपाल ३।५१।
 शोफस् ३।१०८।
 शैवल ३।५१।
 शोचिस् ३।६०।
 शौटीर ३।२७।
 श्मश्रु १।४०।
 श्यान्द २।६१।
 श्याम २।१०३।
 श्यामाक २।१६।
 श्येत २।४७।
 श्येन २।६२।
 श्रथिर ३।६।
 श्री ३।६८।
 श्रेणि १।७६।

श्रोणि १।७६।
 श्रोत्र ३।४२।
 श्लक्ष्ण २।७७।
 श्वन् ३।८०।
 श्वशुर ३।४।
 श्वित्र ३।८।
 सन्ध्या २।११०।
 संयद्वर ३।१६।
 संवत्सर ३।१८।
 सक्तु १।२२।
 सक्थि १।६१।
 सखि १।६०।
 समिध २।५६।
 सरक २।२०।
 सरणि १।७४।
 सरयु १।३३।
 सरित् ३।७६।
 सर्ज १।४७।
 सर्पिस् ३।८६।
 सर्व २।६२।
 सर्षप २।८६।
 सव्य २।१०६।
 सस्य २।१०६।
 साधन्त २।४५।
 साधु १।१।
 सानु १।२।
 सामन् ३।८२।
 सारथि १।६२।
 सास्ना २।७६।
 सिंह ३।६७।
 सिक्थ २।५८।
 सित २।५१।
 सिध ३।१०।

सिन्धु १।१७।
 सीमिक २।१०।
 सीर ३।१२।
 सुमेरु १।३६।
 सुरा ३।११।
 सुष्ठु १।२१।
 सूक्ष्म २।१०२।
 सूत्र ३।३७।
 सूनु १।३०।
 सूप २।८४।
 सूर ३।११।
 सूरत २।३२।
 सूरि १।७०।
 सूक् २।४।
 सृणि १।८०।
 सृणीका २।१६।
 सेतु १।२२।
 सेना २।७४।
 सोम २।१००।
 स्तनयितु १।२६।
 स्तम्ब २।६२।
 स्तरी १।६०।
 स्तूप २।८३।
 स्तोम २।१००।
 स्त्येन २।६२।
 स्थवि १।८३।
 स्थविर ३।६।
 स्थाणु १।३१।
 स्थिर ३।६।
 स्थूणा २।७६।
 स्नुषा ३।६४।
 स्पृहयाय्य २।११३।
 स्फिर ३।६।

स्यमीक २।२।
 सुच् ३।७२।
 सु ३।६८।
 स्रोतस् ३।१०६।
 स्वप्न २।७४।
 स्वसृ १।५०।
 स्वादु १।१।
 हंस ३।६३।
 हनु १।८।
 हनूष ३।५७।
 हरि १।५१।
 हरिण २।६२।
 हरित् ३।७६।
 हरित २।४७।
 हरिद्रु १।२१।
 हरिमन् ३।८३।
 हरेणु १।२७।
 हर्यत २।४८।
 हर्षयितु १।२६।
 हविस् ३।८६।
 हस्त २।५०।
 हस्त ३।१०।
 हिम २।१०३।
 हिरण्य २।११६।
 हृदय २।१०८।
 हेतु १।२४।
 हेमन्त २।४५।
 होतृ १।५०।
 होम २।१००।
 ह्रीक २।२।
 ह्रीकु १।३५।
 ह्रीक २।२।
 ह्रीकु १।३५।

इति उणादिसाधितशब्दानाम् अकाराविक्रमेण संकलनं समाप्तम् ॥

चान्द्रव्याकरणस्थितधातुपाठागतधातूनाम् अकारादिक्रमेण संकलनम् ।

धातुः गणः संख्याङ्कः

अंह	१।४६४।
अक	१।५३४।
अक्ष	१।२१०।
अग	१।५३४।
अङ्क	१।३४०।
अङ्ग	१।३८।
अङ्घ्र	१।३४७।
अज	१।८१।
अञ्च	१।४६,५६०।
अझ	७।१७।
अट	१।१०४।
अट्ट	१।३६५।
	१०।१४।
अड	१।१३१।
अड्ड	१।१२५।
अण	१।१४७।
अण्ठ	१।३७१।
अत	१।३।
अद	२।१।
अन	२।३०।
अन्त	१।२०।
अन्द	१।२०।
अभ्र	१।१६०।
अम	१।१५५,५५२।
अम्ब	१।४०२।
अय	१।४२४।
अर्च	१।५२।
अर्ज	१।६५।

धातुः गणः संख्याङ्कः

अर्थ	१०।१००।
अर्द	१।१८।
अर्ब	१।१४३।
अर्व	१।२०१।
अर्ह	१।२५८।
अव	१।२०८।
अश	५।२४।
	६।४०।
अश्व	१०।१०५।
अस्	१।६०८।
	२।२५।
	४।४६।
आञ्छ	१।५६।
आप	५।१४।
आस	२।४१।
आह्वर	१०।१०५।
इ	१।१०४।
	२।११,१२,५२।
इह्व	१।३८।
इङ्ग	१।३८।
इट	१।१०४।
इन्द	१।२१।
इन्ध	७।२१।
इन्व	१।२०२।
इल	६।६४।
इष	४।१५।
	६।५८।
	६।४२।

ई	४।६३।
ईक्ष	१।४४८।
ईह्व	१।३८।
ईज	१।३६२।
ईङ्	२।३६।
ईर	२।३८।
ईक्ष्य	१।१५६।
ईर्ष्य	१।१५६।
ईश	२।४०।
ईष	१।२२६, ४४६।
ईह	१।४६२।
उ	१।४७७।
उक्ष	१।२१२।
उख	१।३८।
उच	४।६२।
उछ	१।६३।
	६।२०।
उज्झ	६।२७।
उञ्छ	१।६२।
	६।१६।
उन्द	७।१६।
उब्ज	६।२६।
उभ	६।३४।
उम्भ	६।३४।
उर्द	१।३२१।
उर्व	१।१६५।
उष	१।२३२।
ऊन	१०।७०।
ऊय	१।४२६।
ऊर्ज	१०।११।
ऊर्णु	२।६०।
ऊष	१।२२८।

ऊह	१।४७०।
ऊट	१।२८४।
	३।७।
ऊक्ष	५।२२।
ऊच	६।२५।
ऊछ	६।२१।
ऊज	१।३६२।
ऊञ्ज	१।३६३।
ऊण	८।४।
ऊध	४।८०।
	५।२१।
ऊफ	६।२६, ३०।
ऊम्फ	६।३०।
ऊष्	६।१६।
ऊ	६।२३।
एज	१।७३, ३६४।
एठ	१।१०३, ३७५।
एध	१।३०६।
एष	१।४५४।
ओख	१।३६।
ओण	१।१४८।
ओलण्ड	१०।६।
कंस	२।४४।
कक	१।३४३।
कक्ख	१।३५।
कख	१।५३०।
कङ्क	१।३४६।
कच	१।३५६।
कञ्च	१।३५७।
कट	१।८५, १०४।
कठ	१।११६।
कड	१।१३३।

कडु	११३४।
कण	११४७, ५३५।
कण्ठ	११३७३। १०१७४।
कण्ड	११३८६। १०१३२।
कत्थ	११३३२।
कथ	१०१७८।
कन	१११५२।
कन्द	११२७, ५२०।
कव	११४०४।
कम	११४२३, ५५२।
कम्प	११४०१।
कर्द	१११६।
कर्व	११२००।
कल	१११५३, ४३६। १०१८५।
कल्ल	११४३७।
कष	११२३०, ६१२।
कस	११५८७।
काङ्क्ष	११२२०।
काश	११४५६। ४११०५।
कास	११४५७।
कि	३।६।
किट	१११०४।
कित	११३०५। ३।६।
किल	६।६०।
कील	१११६७।
कु	११४७७। २।१०।

६।६५।	
कुक	११३४४।
कुच	११४५, ५८३। ६।७२।
कुज	११५०।
कुञ्च	११४७।
कुट	६।७०।
कुट्ट	१०११२।
कुड	६।८४।
कुण	६।४६।
कुण्ट	१११०६।
कुण्ठ	१११२१।
कुण्ड	११३७८।
कुथ	४।८।
कुन्थ	१।६। ६।३२।
कुन्द्र	१०।६।
कुप	४।७१।
कुम्ब	१११४४।
कुर	६।५०।
कुर्द	११३२२।
कुल	११५७१।
कुष	६।३६।
कुस	४।५७।
कुह	१०।६८।
कूज	११७६।
कूट	१०।२२।
कूल	१११६८।
कृ	५।७। ८।७।
कृड	६।८३।
कृण्व	११२०६।

कृत	६।१३।
	७।१०।
कृप	१।५१२।
कृश	४।६५।
कृष	१।३०२।
	६।६।
कृ	६।१०५।
	६।११।
कृत	१०।६२।
केप	१।३६८।
केव	१।३६६।
केल	१।१७८।
केव	१।४३६।
कै	१।२६६।
कनस	१।५४६।
	४।५।
कनूय	१।४२८।
	६।७।
कमर	१।१८६।
कथ	१।५३६।
कन्द	१।२७,५२०।
कप	१।५१६।
कम	१।१५७।
क्री	६।१।
क्रीड	१।१२६।
कुञ्च	१।४६।
कुघ	४।३०।
कुश	१।५८२।
कृथ	१।५३६।
कन्द	१।२७,५२०।
कम	४।४७।
किलद	४।७७।

किलन्द	१।२८,३१७।
किलश	४।१०४।
	६।३६।
कलीव	१।४०५।
क्लेश	१।४४५।
क्वण	१।१४७।
क्वथ	१।५७३।
क्षञ्ज	१।५१८।
	१०।५७।
क्षण	८।३।
क्षम	१।४२२।
	४।४६।
क्षम्प	१०।५६।
क्षर	१।५७७।
क्षल	१०।४३।
क्षि	१।७५।
	५।१२।
	६।१०३।
	६।२७।
क्षिप	४।११।
	६।५।
शिव	१।१६१।
	४।४।
क्षीज	१।७६।
क्षीव	१।४०६।
क्षु	२।१०।
क्षुद	७।६।
क्षुघ	४।३१।
क्षुभ	१।५०३।
	४।७५।
	६।३७।
क्षुर	६।५३।

क्षै ११२६६।
 क्षणु २।८।
 क्षमाय ११४२६।
 क्षमील १११६३।
 क्षिन्नद ११२६१, ४६८।
 ४।७६।
 खज १।७१।
 खञ्ज १।७२।
 खट १।६५।
 खट्ट १०।१६।
 खड १०।३१।
 खण्ड १।३६०।
 १०।३१।
 खद १।११।
 खन १।६०२।
 खर्ज १।६८।
 खर्द १।१६।
 खर्व १।१४३।
 खर्व १।२००।
 खल १।१८१।
 खव ६।४७।
 खाद १।१०।
 खिट १।६०।
 खिद ४।१०८।
 ६।१४।
 ७।२२।
 खुज १।५०।
 खुर ६।५१।
 खुर्द १।३२२।
 खोल १।१७८।
 खै १।२६८।
 खोर १।१८६।

ख्या २।२१।
 गज १।७०, ८०।
 गञ्ज १।८०।
 गड १।५२४।
 गण १०।८०।
 गण्ड १।१३५।
 गद १।१३।
 १०।८३।
 गम १।२६५।
 गर्ज १।६६।
 गर्द १।१५।
 गर्ब १।१४३।
 गर्व १।२००।
 १०।१०१।
 गर्ह १।४६५।
 गल १।१८२।
 गल्भ १।४१४।
 गल्ह १।४६५।
 गवेष १०।६०।
 गा १।४७६।
 ३।१४।
 गाध १।३०८।
 गालोड १०।१०५।
 गाह ७।४७१।
 गु १।४७५।
 गुज ६।७३।
 गुञ्ज १।७६।
 गुड ६।७४।
 गुण्ड १।१२१।
 गुध ४।१०।
 ६।६२।
 ६।३५।

गुप	१।१३६,४८८।
	४।७२।
गुफ	६।३३।
गुम्फ	६।३३।
गुर	६।६४।
गुर्द	१।३२२।
गुर्व	१।१६७।
गुह	१।६१७।
गूर	४।१००।
गृ	१।२८५।
गृज	१।८०।
गृञ्ज	१।८०।
गृध	४।८१।
गृह	१।४७२।
	१०।६६।
गृ	६।१०६।
	६।२१।
गेप	१।३६८।
गेव	१।४३६।
गै	१।२६६।
गोष्ट	१।३६८।
ग्रथ	१।३३१।
ग्रन्थ	६।३०।
ग्रस	१।४६१।
ग्रह	६।१४।
ग्रुच	१।५०।
ग्लस	१।४६१।
ग्ला	१।५५१।
ग्लुच	१।५०।
ग्लुञ्च	१।५१।
ग्लेप	१।३६६,३६८।
ग्लेव	१।४३६।

ग्लेष	१।४५२।
ग्लै	१।२६०।
घग्घ	१।४२।
घट	१।५१३।
घट्ट	१।३६६।
	१०।१५।
घस	१।२४४।
घिण्ण	१।४१७।
घु	१।४७७।
घुट	१।५००।
	६।८६।
घुण	१।४१८।
	६।४८।
घुण्ण	१।४१७।
घुर	६।५४।
घुष	१।२०६,४७३।
	१०।६६।
घूर	४।१००।
घूर्ण	१।४१८।
	६।४८।
घृ	१।२८५।
	३।६।
घृण	८।६।
घृण्ण	१।४१७।
घृष	१।२३८।
घ्रा	१।२७५।
ङु	१।४७७।
चक	१।३४५,५२८।
चकास	२।३४।
चक्क	१०।४२।
चक्ष	२।३७।
चञ्च	१।४६।

चण्ड	१।३८५।
चत	१।५६३।
चद	१।५६३।
चन्द	१।२५।
चप	१।१३६।
चम	१।१५६, ५५२।
चय	१।४२४।
चर	१।१६०।
चर्च	१।२४१।
	६।२३।
	१०।६७।
चर्व	१।१४३।
चर्व	१।१६६।
चल	१।५४४, ५६२।
	६।६३।
चष	१।६११।
चह	१।२५२।
चाय	१।६०४।
चि	५।५।
चित्	१।१००।
चित	१।२।
चिन्त	१०।२।
चिरि	५।२२।
चिल	६।६२।
चिल्ल	१।१७६।
चीभ	१।४०८।
चीव	१।६०३।
चुक्क	१०।४२।
चुट	६।७६।
	१०।५२।
चुड्ड	१।१२४।
चुण्ट	१।१०८।
चुद	१०।३६।

चुन्द	१।६००।
चुप	१।१४१।
चुम्ब	१।१४५।
चुर	१०।१।
चुल	१०।४६।
चुल्ल	१।१७४।
चूर	४।१०१।
चूष	१।२२२।
चृत	६।३७।
चेल	१।१७८।
चेष्ट	१।३६७।
च्यु	१।४७८।
च्युत	१।४।
छद	१।५४५।
	१०।७२।
छन्द	१०।२८।
छम	१।१५६।
छम्ब	१०।५५।
छिद	७।३।
छुप	६।११४।
छुर	६।५१।
छृद	७।८।
छो	४।१६।
छ्यु	१।४७८।
जक्ष	२।३१।
जज	१।७८।
जक्ष	१।७८।
जट	१।६२।
जन	१।५४६।
	३।१३।
	४।६५।
जप	१।१३८।

जम	१११५६।
जम्भ	११४११।
जर्त्स	११२४१।
	६।२३।
जल	११५६३।
जल्प	१११३८।
जष	११२३०।
जस	४।५१।
जागृ	२।३२।
जि	१११६२, २८६।
जिरि	५।२२।
जिष	११२३३।
जीव	१११६३।
जङ्ग	१।३६।
जुड	६।८१।
	१०।५६।
जुत	१।३२८।
जुन	६।३६।
जूष	६।६८।
जूर	४।६६।
जूष	११२३०।
जृम्भ	११४११।
जू	११५४६।
	४।१७।
	६।१६।
जेष	११४५४।
जेह	११४६८।
जै	११२६६।
ज्ञा	११५४३।
	६।२८।
	१०।४०।
ज्या	६।२२।

ज्यु	११४७८।
ज्जि	११२८६।
ज्वर	११५२३।
ज्वल	११५३७, ५३८,
	५५०, ५६१।
झट	१।६२।
झम	१११५६।
झर्झ	११२४१।
	६।२३।
झष	११२३०, ६१३।
झृ	४।१७।
झ्यु	११४७८।
टल	११५६४।
टिक	१।३४६।
टीक	१।३४६।
ट्वल	११५६४।
डिप	४।६६।
	६।७५।
डी	११४८७।
	४।८५।
ढौक	१।३४६।
तक	१।३१।
तक्ष	११२११।
तङ्क	१।३२।
तङ्ग	१।३८।
तञ्च	११४६।
	७।१८।
तट	१।६४।
तड	१०।३०।
तण्ड	१।३८७।
तन	८।१।
तन्त्र	१०।६५।

तप	१।२६७।
	४।१०२।
तम	४।४३।
तय	१।४२४।
तर्ज	१।६७।
तर्द	१।१७।
तल	१०।४४।
तस	४।५२।
ताय	१।४३१।
तिक	५।१८।
तिज	१।४८६।
	१०।२१।
तिप	१।३६५।
तिम	४।१३।
तिल	६।६१।
तीव	१।१६४।
तुज	१।७६।
तुञ्ज	१।७६।
	१०।२०।
तुट	६।८०।
तुड	१।१२७।
	६।८७।
तुण	६।४३।
तुण्ड	१।३८२।
तुद	६।१।
तुप	१।१४२।
तुफ	१।१४२।
तुभ	१।५०४।
	४।७६।
	६।३८।
तुम्प	१।१४२।
तुम्फ	१।१४२।
तुर	३।१०।

तुर्व	१।१६५।
तुल	१०।४५।
तुष	१।२४०।
	४।२६।
तुह	१।२५७।
तूर	४।६८।
तूल	१।१७०।
तूष	१।२२३।
तृक्ष	१।२१५।
तृण	८।५।
तृद	७।६।
तृप	४।३६।
	५।२३।
	६।३१।
तृम्प	६।३१।
तृष	४।६६।
तृह	६।५७।
	७।१५।
तृंह	६।५७।
तृ	१।२६०।
तेज	१।६६।
तेप	१।३६५।
तेव	१।४३८।
त्यज	१।२६८।
त्रङ्क	१।३४६।
त्रङ्ग	१।३८।
त्रन्द	१।२६।
त्रप	१।४००।
त्रस	४।७।
व्रुट	६।७६।
व्रुप	१।१४२।
व्रुफ	१।१४२।

शुम्प ११४२।
 शुम्फ ११४२।
 त्रै ११४८४।
 त्रौक ११३४६।
 त्वक्ष ११२११, २१८।
 त्वङ्ग ११३८।
 त्वच ६१२४।
 त्वञ्च ११४६।
 त्वर ११५२१।
 त्विष ११६२६।
 त्सर १११८८।
 थुड ६१८७।
 थुर्व १११६५।
 दंश ११३०१।
 दक्ष ११४४६, ५१८।
 दङ्घ ११४०।
 दद ११३१६।
 दध ११३१०।
 दम ४१४२।
 दम्भ ५१२०।
 दय ११४२५।
 दरिद्रा २१३३।
 दल १११८४।
 दस ४१५२।
 दह ११३०३।
 दा ११२७६।
 २१२०।
 ३११८।
 दान ११६२३।
 दाश ११६०६।
 दास ११६१५।
 दिन्व ११२०४।

दिव ४११।
 दिश ६१३।
 दिह २१५८।
 दी ४१८४।
 दीक्ष ११४४७।
 दीधी २१५३।
 दीप ४१६६।
 दु ११२८७।
 ५११०।
 दुर्व १११६५।
 दुल १०१४६।
 दुष ४१२७।
 दुह ११२५७।
 २१५७।
 दू ४१८३।
 दृ ११५४०।
 ६११०७।
 दृंह ११२५५।
 दृप ४१३७।
 ६१३२।
 दृभ ६१३६।
 दृम्प ६१३२।
 दृश ११३००।
 दृह ११२५५।
 द ६११८।
 दे ११४८१।
 देव ११४३८।
 दै ११२७३।
 दो ४१२१।
 द्यु २१५।
 द्युत ११४६६।
 द्यै ११२६२।

द्रम १।१५५।
 द्रा २।१७।
 द्राख १।३६।
 द्राघ १।३५०।
 द्राङ्क्ष १।२२१।
 द्राड १।३६३।
 द्राह १।४६६।
 द्रु १।२८७।
 द्रुण ६।४७।
 द्रुह ४।३८।
 द्रेक १।३३६।
 द्रै १।२६३।
 द्विष २।५६।
 द्व १।२८२।
 धक्क १०।४१।
 धन ३।१२।
 धन्व १।२०५।
 धा ३।१६।
 धाव १।५८६।
 धि ६।१०२।
 धिक्ष १।४४१।
 धिन्व १।२०४।
 धिष ३।११।
 धी ४।८६।
 धुक्ष १।४४१।
 धुर्व १।१६५।
 धू ५।६।
 ६।६१।
 ६।१३।
 धूप १।१३७।
 धूर ४।१००।
 धृ १।४७६, ६२१।

६।१०८।
 धृक्ष १।६४।
 धृष ५।१६।
 १०।७७।
 धे १।२५६।
 धोर १।१८७।
 ध्मा १।२७६।
 ध्यै १।२६५।
 ध्रञ्ज १।६४।
 ध्रण १।१४७।
 ध्रस ६।४१।
 ध्राख १।३६।
 ध्राङ्क्ष १।२२१।
 ध्राड १।३६३।
 ध्रुव ६।६३।
 ध्रेक १।३३६।
 ध्रै १।२६४।
 ध्वंस १।५०६।
 ध्वञ्ज १।६४।
 ध्वन १।१४७, ५५६।
 १०।६४।
 ध्वाङ्क्ष १।२२१।
 ध्वृ १।२८६।
 नक्क १०।४१।
 नक्ष १।२१५।
 नख १।३८।
 नट १।६६, ५२७।
 १०।२३।
 नद १।१५।
 नन्द १।२४।
 नभ १।५०४।
 ४।७६।
 ६।३८।

नम १।२६४,५५०।
 नय १।४२४।
 नर्द १।१५।
 नल १।५६७।
 नश ४।३५।
 नस १।४५८।
 नह ४।१२०।
 नाथ १।३२६।
 नाध १।३२६।
 नास १।४५७।
 निस २।४५।
 निक्ष १।२१४।
 निज ३।१५।
 निञ्ज २।४६।
 निद १।५६६।
 निन्द १।२३।
 निन्व १।२०३।
 निल ६।६६।
 निवास १०।६२।
 निष १।२४६।
 नी १।६२२।
 नील १।१६५।
 नीव १।१६४।
 नु २।७।
 नुद ६।२।
 नू ६।६०।
 नृत् ४।६।
 न १।५४१।
 ६।२०।
 नेद १।५६६।
 नेष १।४५४।
 पंस १०।५४।

पच १।६२५।
 पञ्च १।३६०।
 १०।६०।
 पट १।१०४।
 पठ १।११३।
 पण १।४२०।
 पण्ड १।३८८।
 पत १।५७२।
 पथ १।५७२।
 पद ४।१०७।
 पन १।४१६।
 पन्थ १०।२६।
 पर्द १।३२६।
 पर्व १।१४३।
 पर्व १।१६८।
 पल १।१८३,५६८।
 पस ४।६०।
 पा १।२७४।
 २।१८।
 पाल १०।५०।
 पि ६।१०१।
 पिच्छ १०।२७।
 पिञ्ज १०।२०।
 पिट १।६२।
 पिठ १।११६।
 पिण्ड १।३७७।
 पिन्व १।२०३।
 पिश ६।१५।
 पिष ७।१२।
 पिस १।२४३।
 पी ४।६२।
 पीड १०।१०।

पील	१११६४।
पीव	१११६४।
पुट	६१७१।
पुट्ट	१०११३।
पुण	६१४४।
पुथ	४१६।
पुन्थ	११६।
पुर	६१५५।
पुल	११५७०।
	१०१४८।
पुष	११२३४।
	४१२४।
	६१४४।
पुष्प	४११२।
पू	११४८५।
	६१८।
पूज	१०१५८।
पूय	११४२७।
पूर	४१६७।
पूर्व	१११६८।
पूल	१११७१।
पूष	११२२४।
पृ	५११३।
	६१६६।
पृच	२१४६।
	७१२०।
पृड	६१४०।
	६१३४।
पृण	६१४१।
पृथ	११५१५।
पृष	११२३६।
पृ	३१४।

	६११६।
पेण	१११५१।
पेव	११३६६।
पेल	१११७६।
पेव	११४३६।
पेस	११२४३।
पै	११२७१।
प्याय	११४३०।
प्युष	४१५४।
प्यै	११४८३।
प्रच्छ	६११०६।
प्रथ	११५१५।
प्रा	२१२२।
प्री	४१६४।
	६१२।
प्रु	११४७८।
प्रुष्	११२३५।
	६१४५।
प्रोथ	११५६४।
प्लीह	११४६७।
प्लु	११४७८।
प्लुष	११२३५।
	४१५५।
	६१४५।
प्सा	२११।
फक्क	११३०।
फण	११५५६।
फल	१११६२, १७३।
फुल्ल	१११७५।
फेल	१११७६।
बंह	११४६३।
बद्	१११२।

वध ११४६१।
 वन्ध ६१२६।
 वर्ध ११४३।
 वर्ह ११४६६।
 वल ११५६६।
 वल्ह ११४६६।
 वाड ११३६२।
 वाध ११३०६।
 वाह ११४६८।
 विट १११०२।
 विन्द ११२२।
 विल ६१६५।
 विस ४१५६।
 वुक्क ११३४।
 बुध ११५८४, ५६६।
 ४१११०।
 वुस ४१५८।
 वुस्त १०१३५।
 वू २१६२।
 भक्ष ११६१४।
 भज ११६२६।
 भञ्ज ७११३।
 भट ११६३, ५२६।
 भण १११४७।
 भण्ड ११३८०।
 १०१३४।
 भन्द ११३१४।
 भर्ष ११२०१।
 भल ११४३५।
 भल्ल ११४३५।
 भव ११२३१।
 भस ३१८।

भा २११४।
 भाज १०१६३।
 भाम ११४२१।
 भाष ११४५०।
 भास ११४५६।
 भिक्ष ११४४४।
 भिद ७१२।
 भी ३१२।
 ६१२६।
 भुज ६१११३।
 ७११४।
 भुण्ड ११३८३।
 भू १११।
 भूष ११२२७।
 भृ ११६२०।
 ३११६।
 भृज ११३६३।
 भृश ४१६३।
 भृ ६११७।
 भेष ११६०७।
 भ्यस ११४५६।
 भ्रंश ११५०५।
 ४१६३।
 भ्रज्ज ६१४।
 भ्रण १११४७।
 भ्रम ११५७६।
 ४१४५।
 भ्राज ११३६४, ५५८।
 भ्राश ११५५८।
 भ्रुड ६१८७।
 भ्रोज ११३६४।
 भ्लाश ११५५८।

मंह	१।४६३।
मख	१।३८।
मङ्क	१।३४२।
मङ्ग	१।३८।
मङ्घ	१।३४८।
मच	१।३५६।
मज्ज	६।१११।
मञ्च	१।४६, ३५८।
मठ	१।११५।
मण	१।१४७।
मण्ठ	१।३७३।
मण्ड	१।१०५, ३७६।
मथ	१।५७४।
मद	१।५४७।
	४।४८।
मन	४।११३।
	८।६।
मन्त्र	१०।६४।
मन्थ	१।७।
	६।३१।
मन्द	१।३१५।
मभ्र	१।१६०।
मय	१।४२४।
मर्व	१।१६८।
मल	१।४३४।
मल्ल	१।४३४।
मव	१।२०७।
मव्य	१।१५८।
मश	१।२४७।
मष	१।२३०।
मस	४।६०।
मस्क	१।३४६।

मह	१।२५८।
	१०।८६।
मा	२।२३।
	३।२०।
माङ्क्ष	१।२२०।
मान	१।४६०।
	१०।६८।
मार्ग	१०।७३।
माह	१।६१६।
मि	५।४।
मिछ	६।२२।
मिद	१।४६८, ५६७।
	४।७८।
	१०।८।
मिन्व	१।२०३।
मिल	६।७।
मिश	१।२४७।
मिश्र	१०।१०२।
मिष	१।२३३।
	६।५६।
मिह	१।३०४।
मी	४।८७।
	६।४।
मीम	१।१५५।
मील	१।१६३।
मीव	१।१६४।
मुच	६।८।
मुज	१।८०।
मुञ्च	१।३५६।
मुञ्ज	१।८०।
मुट	६।७८।
	१०।५३।

मुण ६।४५।
 मुण्ट १।१०७।
 मुण्ठ १।३७४।
 मुण्ड १।१०६, ३८१।
 मुद १।३१८।
 मुर ६।५२।
 मुच्छं १।५६।
 मुर्व १।१६६।
 मुष ४।५६।
 ६।४६।
 मुह ४।३६।
 मू १।४८६।
 मूल १।१७२।
 मूष १।२२५।
 मृ ६।६७।
 मृग १०।६७।
 मृज २।२६।
 १०।७५।
 मृड ६।४०।
 ६।३४।
 मृण ६।४२।
 मृद १।५१६।
 ६।३३।
 मृघ १।५६८।
 मृश ६।११६।
 मृष १।२३७।
 ४।११८।
 १०।७६।
 मृ ६।१५।
 मे १।४८०।
 मेट १।८४।
 मेद १।५६७।

मेघ १।५६५।
 मेव १।३६६।
 मेव १।४३६।
 म्ना १।२७८।
 म्रक्ष १।२१७।
 म्रद १।५१६।
 म्रुच १।४६।
 म्रुञ्च १।४६।
 म्लुच १।४६।
 म्लुञ्च १।४६।
 म्लेछ १।५३।
 म्लेट १।८४।
 म्लेव १।४३६।
 म्लै १।२६१।
 यज १।६३०।
 यत १।३२७।
 यन्त्र १०।३।
 यभ १।२६३।
 यम १।२६६, ५५४।
 यस ४।५०।
 या २।१३।
 याच १।५६१।
 यु २।६।
 ६।५।
 युङ्ग १।३६।
 युछ १।६१।
 युज ४।११४।
 ७।७।
 युत १।३२८।
 युघ १।५८५।
 ४।१११।
 युप ४।७३।

यूष	१।२३०।
येष	१।४५३।
यौट	१।८३।
रंह	१।२५४।
रक्ष	१।२१३।
रख	१।३८।
रग	१।५३१।
रङ्ग	१।३८।
रङ्ग	१।३८।
रङ्ग	१।३४६।
रच	१०।८४।
रञ्ज	१।५४६, ६२७।
	४।१२१।
रट	१।८६।
रण	१।१४७, ५३५।
रद	१।१४।
रघ	४।३४।
रन्व	१।२०५।
रप	१।१३८।
रफ	१।१४३।
रभ	१।४६२।
रम	१।५७६।
रम्फ	१।१४३।
रम्ब	१।४०३।
रय	१।४२४।
रस	१।२४०।
रह	१।२५३।
	१०।८२।
रा	२।१६।
राख	१।३६।
राघ	१।३४६।
राज	१।५५७।

राघ	४।२२।
	५।१७।
रास	१।४५७।
रि	६।१०१।
रिङ्ग	१।३८।
रिच	७।४।
रिन्व	१।२०५।
रिश	६।११५।
रिष	१।२३०।
री	४।८८।
	६।२३।
रु	१।४७८।
	२।१०।
रुच	१।४६६।
रुज	६।११२।
रुट	१।५०१।
रुठ	१।११८।
रुण्ट	१।१११।
रुण्ठ	१।१२३।
रुद	२।२८।
रुघ	४।११२।
	७।१।
रुप	४।७३।
रुश	६।११५।
रुष	१।२३०।
	४।६८।
रुह	१।५८६।
रेक	१।३३७।
रेज	१।३६४।
रेट	१।५६२।
रेव	१।३६६।
रेभ	१।४०६।

रेव	१।४४०।	लिङ्ग	१।३८।
रेष	१।४५५।	लिप	६।११।
रै	१।२६६।	लिश	४।११७।
रौड	१।१२६।		६।११६।
लक्ष	१०।५।	लिह	२।५६।
लख	१।३८।	ली	४।८६।
लग	१।५३२।		६।२४।
लङ्ग	१।३८।	लुज	४।११६।
लङ्ग	१।३८।	लुञ्च	१।४८।
लङ्घ	१।४१,३४६।	लुट	१।६६,५०१।
लछ	१।५४।		४।६१।
लज	१।७७।		६।८२।
	६।१००।	लुठ	१।११८।
लज्ज	६।१००।	लुड	६।८५।
लञ्ज	१।७७।	लुण्ट	१।१११।
लट	१।८७।		१०। १८
लड	१।१३२,५४६।	लुण्ठ	१।१२२,१२३।
	१०।७।	लुन्थ	१।६।
लप	१।१३८।	लुप	४।७३।
	१०।६३।		६।६।
लभ	१।४६३।	लुभ	४।७४।
लम्ब	१।४०३।		६।२८।
लल	१०।६६।	लू	६।६।
लष	१।६१०।	लूष	१०।५१।
लस	१।२४२।	लोक	१।३३४।
ला	२।१६।		१०।५।
लाख	१।३६।	लोच	१।३५३।
लाघ	१।३४६।	लोष्ट	१।३६८।
लाज	१।७७।	लौड	१।१३०।
लाञ्छ	१।५४।	वक्ष	१।२१६।
लाञ्ज	१।७७।	वख	१।३८।
लिख	६।६६।	वङ्क	१।३४१।

वङ्ग १।३८।
 वङ्घ १।३४७।
 वच २।२७।
 वज १।८१।
 वञ्च १।४६।
 वट १।८६, ५२६।
 वठ १।११४।
 वण १।१४७।
 वण्ट १।११०।
 वण्ठ १।३७२।
 वण्ड १।३७६।
 १०।३३।
 वद १।६३७।
 वन १।१५३, ५५१।
 ८।८।
 वन्द १।३१३।
 १०।३७।
 वप १।६३१।
 वभ्र १।१६०।
 वम १।५५१, ५७५।
 वय १।४२४।
 वर १०।७६।
 वर्च १।३५२।
 वल १।४३३।
 वल्क १०।२४।
 वल्ग १।३८।
 वल्भ १।४१३।
 वश १।२४८।
 २।३।
 वष १।२३०।
 वस १।६३६।
 २।४३।
 ४।५३।

वह १।६३२।
 वा २।१२।
 वाङ्क्ष १।२२०।
 वाञ्छ १।५५।
 वावृत ४।१०३।
 वाश ४।१०६।
 वास १०।६१।
 विच ७।५।
 विछ ६।११६।
 विज ३।१६।
 ६।६६।
 विट १।१०१।
 विथ १।३२६।
 विद २।२४।
 ४।१०६।
 ६।१०।
 ७।२३।
 १०।३८।
 विघ ६।३८।
 विश ६।११८।
 विष १।२३३।
 ३।१७।
 ६।४३।
 वी २।१२।
 वुङ्ग १।३६।
 वृ ५।८।
 ६।४८।
 वृंह १।२५५।
 वृक १।३४४।
 वृक्ष १।४४२।
 वृज २।४८।

वृज	७।१६।
	१०।४७।
वृत	१।५०८।
वृध	१।५०६।
वृश	४।६४।
वृष	१।२३६।
वृह	१।२५५।
	१।२५६।
	६।५६।
वृ	६।१२।
वे	१।६३३।
वेण	१।६०१।
वेथ	१।३२६।
वेप	१।३६७।
वेल	१।१७८।
वेवी	२।५४।
वेष्ट	१।३६६।
वेह	१।४६८।
वे	१।२७१।
व्यच	६।१८।
व्यथ	१।५१४।
व्यध	४।२३।
व्यप	१०।२२
व्यय	१।६०५।
व्ये	१।६३४।
व्रज	१।८१।
व्रण	१।१४७।
व्रश्च	६।१७।
व्री	४।६०।
	६।२५।
व्रीह	४।१४।
वृड	६।८७।

वृज्ज	१।३८।
व्ली	६।२३।
शंस	१।२५१।
	१।४६०।
शक	४।११८।
	५।१५।
शक्क	१।३३६।
शञ्च	१।३५५।
शट	१।८८।
शठ	१।१२०।
	१०।८१।
शण्ड	१।३८६।
शद	१।५८१।
	६।१२१।
शप	१।६२८।
	४।१२२।
शम	१।५५३।
	४।४२।
शर्ब	१।१४३।
शर्व	१।२०१।
शल	१।१८५।
	१।४३२।
	१।५७२।
शलूभ	१।४१२।
शश	१।२४६।
शस	१।२५०।
शाख	१।३७।
शान	१।६२४।
शास	२।३५।
	२।४२।
शि	५।३।
शिक्ष	१।४४३।
शिङ्ख	१।४३।
शिञ्ज	२।४७।

शिट	१।६१।
शिल	६।६८।
शिल्ल	१।१७७।
शिष	१।२३०।
	७।११।
शो	२।५१।
शीक	१।३३३।
शीभ	१।४०७।
शील	१।१६६।
	१०।८८।
शु	१।२८७।
शुक	१।३३।
शुच	१।४४।
	४।११६।
शुच्य	१।१६१।
शुण्ठ	१।१२१।
शुघ	४।३२।
शुनं	६।३६।
शुन्ध	१।२६।
शुभ	१।५०२।
शुम्भ	१।१४६।
	६।३५।
शुष	४।२५।
शूर	४।१००।
शूल	१।१६६।
शृध	१।५१०।
	१।५६८।
शृ	६।१५।
शैल	१।१७८।
शेव	१।४३६।
शो	४।१८।
शोण्	१।१४६।
शीट	१।८२।

श्च्युत	१।५।
श्नघ	१।५३६।
श्ये	१।४८२।
श्रक	१।३३८।
श्रङ्ग	१।३८।
श्रण	१०।२६।
श्रन्थ	१।३३०।
	६।३०।
श्रम्	४।४४।
श्रम्भ	१।४१५।
श्रा	१।५४२।
	२।१६।
	१०।३६।
श्रि	१।६१८।
श्रिव	४।३।
श्रिष	१।२३५।
श्री	६।३।
श्रु	५।१६।
श्रे	१।२७०।
श्रोण	१।१५०।
शलक	१।३३८।
शलङ्ग	१।३८।
शलाख	१।३७।
शलाघ	१।३५१।
शलाड	१।३६४।
श्लिष	१।२३५।
	४।२८।
श्लोक	१।३३५।
श्वङ्क	१।३४६।
श्वञ्च	१।३५५।
श्वठ	१०।१६।
	१०।८१।
श्वल्क	१०।२४।

इवल्ल	१।१८५।
इवस	२।३०।
इव	१।६३८।
इवत	१।४६७।
इवन्द	१।३१२।
इवेत	१०।१०५।
ष्ठिव	१।१६१।
	४।४।
वस्क	१।३४६।
संग्राम	१०।७१।
सग	१।५३३।
सघ	५।१८।
सच	१।१४०।
	१।३५४।
सज्ज	१।५१।
सञ्ज	१।२६६।
सट	१।६८।
सट्ट	१०।१७।
सद	१।५८०।
	६।१२०।
सन	१।१५४।
	८।२।
सम	१।५६०।
सर्ज	१।६५।
सर्व	१।१४३।
सस	२।२।
सह	१।५७८।
साध	४।२२।
	५।१७।
साम	१०।८६।
सि	५।२।
	६।५।
सिच	६।१२।

सिट	१।६१।
सिघ	१।८।
	१।६।
	४।३३।
सिल	६।६८।
सिव	४।२।
	४।३।
सु	१।२८८।
	५।१।
सुर	६।४६।
सुह	४।१६।
सू	२।५०।
	४।८२।
	६।१०४।
सूच	१०।६१।
सूद	१।३२३।
सूक्ष्म	१।२१६।
सूक्ष्म	१।१५६।
सूष	१।२२६।
सृ	१।२८३।
	३।७।
सृज	४।११५।
	६।११०।
सृप	१।२६५।
सृभ	१।१४२।
सृम्भ	१।१४२।
सेक	१।३३८।
सेल	१।१७८।
सेव	१।४३६।
सै	१।२६६।
सो	४।२०।
स्कन्द	१।२६२।
स्कम्भ	१।४१०।

स्कु	६।६।
स्कुन्द	१।३११।
स्खद	१।५१७।
	१।५५५।
स्खल	१।१८०।
स्तक	१।५२६।
स्तघ	१।५३३।
स्तन	१।१५३।
	१०।८३।
स्तम	१।५६०
स्तम्भ	१।४१०।
स्तिक	५।१८।
स्तिघ	५।२५।
स्तिम	४।१३।
स्तीम	४।१३।
स्तु	२।६१।
स्तुच	१।३६१।
स्तुभ	१।४१६।
स्तूप	४।७०।
स्तृ	५।६।
स्तृक्ष	१।२१५।
स्तृह	६।५७।
स्तृ	६।१०।
स्तेन	१०।६५।
स्तेप	१।३६५।
स्ते	१।२७२।
स्त्ये	१।२६७।
स्थल	१।५६५।
स्था	१।२७७।
स्थूल	१०।६६।
स्ना	१।५५१।
	२।१५।

स्निह	४।४१।
स्नु	२।६।
स्नुह	४।१०।
स्पन्द	१।३१६।
स्पर्ध	१।३०७।
स्पर्श	१।४५१।
स्पश	१।६०६।
स्पृ	५।१३।
स्पृश	६।११७।
स्पृह	१०।८७।
स्फट	१।११२।
स्फाय	१।४३०।
स्फिट	१०।२५।
स्फुट	१।११२।
	१।३७०।
	६।७७।
स्फुड	६।८७।
स्फुण्ड	१।३८४।
	१०।४।
स्फुर	६।८८।
स्फुर्छ	१।६०।
स्फुल	६।८६।
स्फूर्ज	१।७४।
स्मि	१।४७४।
स्मील	१।१६३।
स्मृ	१।२६५।
	१।५३६।
स्यन्द	१।५११।
स्यम	१।५५६।
स्यम्भ	१।५०७।
स्यंस	१।५०५।
स्यु	१।२८७।

लोक	१।३३८।	हुँ	१।५८।
लो	१।२७०।	हुल	१।५७२।
स्वञ्ज	१।४६४।	हुड	१।१२८।
स्वद	१।३२०।	हु	१।६१६।
स्वन	१।५५६।	हुष	१।२३६।
स्वप	२।२६।		४।६७।
स्वर्द	१।३२०।	हेठ	१।१०३।
स्वाद	१।३२०।		१।३७५।
स्विद	१।४६८।	हेड	१।५२५।
	४।२६।	हेष	१।४५७।
स्वृ	१।२८१।	होड	१।३६१।
हट	१।६७।	होड	१।१२८।
हठ	१।११७।	हु	२।५५।
हड	१।४६५।	हुल	१।५३८।
हन	२।४।		१।५५०।
हम्य	१।१५५।	हग	१।५३३।
हय	१।१६०।	हष	१।२४०।
हर्य	१।१६०।	हाद	१।३२४।
हल	१।५६६	ही	३।३।
हस	१।२४५।	हीछ	१।५७।
हा	२।५।	हेष	१।४५४।
	३।२१।	हग	१।५३३।
हि	५।११।	हष	१।२४०।
हिस	७।१५।	हाद	१।३२५।
हिक्क	१।५८८।	हल	१।५३८।
हिण्ड	१।३७६।		१।५५०।
हिन्व	१।२०४।	हृ	१।२८०।
हिल	६।६७।	हृ	१।६३५।
हु	३।१।		
हुड	६।७६।		
हुण्ड	१।३७७।		

इति^१ धातुपाठस्य अकारादिकः अनुक्रमः समाप्तः

टिप्पण-१. अत्र चान्द्रव्याकरणे १०५ पृष्ठतः १२६ पृष्ठपर्यन्तमाचार्यचन्द्रगोमिरचितो-
धातुपाठः समायातः । तत्र दश गणा दक्षिताः, तथा प्रत्येकधातुभिः सह आदा
वङ्का निर्दिष्टाः । अत्र तेषां धातूनामकारादिकोऽनुक्रमः प्रकाशितः । तत्र सर्वत्रा-
द्योऽङ्को गणसूचकः । अन्योऽङ्कश्च धातुपाठदक्षितधातुसंख्यासूचकः ।

शुद्धिसूची

पृष्ठाङ्क

१७। सूत्र १२।
२८। सूत्र ६१।
३१। सूत्र १२३।
३१। प्रथमे टिप्पणे
३१। द्वितीये टिप्पणे
३७। सूत्र १०२
४७। सूत्र ११२
७१। सूत्र ६८
१०१। सूत्र ६३
१०४। सूत्र ६३
१०४। सूत्र ६६
१२६। सूत्र १०३

अशुद्धम्

वश्येन
खञ्
वा०
तद्वत्तौ
निदर्शे
रात्री-
नस्
ससजुषः रः
वृ-त-
कित्
कसिः
इष्टवच्च

शुद्धम्

वंश्येन
कञ्
वा
तद्वृत्तौ
निर्देशे
रात्रि-
णस्
स-सजुषः रुः
वृ-तृ-
णित्
असिः
इष्टवच्च

*मुद्रणदोषाद् दृष्टिदोषान्मतिमान्द्याच्च अन्या अपि काश्चनाशुद्धयोऽत्र संजातास्ताः
सर्वाः क्षमन्तां विचक्षणाः संशोधयन्तु च कृष्णां कृत्वेति संपादकप्रार्थनम् ।

॥ इति समाप्तं सर्वाङ्गं चान्द्रव्याकरणसंशोधन-संपादनम् ॥

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक—पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य

प्रकाशित-ग्रन्थ

(क) संस्कृत-प्राकृत

१. प्रमाणमञ्जरी (ग्रन्थाङ्क ४), तार्किक चूडामणि सर्वदेवाचार्यकृत; अद्वयारण्य, बलभद्र, वामनभट्ट कृत टीकात्रयोपेत; सम्पादक—मीमांसान्यायकेसरी पं० पट्टाभिराम शास्त्री, विद्यासागर (७+१०६), १९५३ ई०। मू. ६.००
२. यन्त्रराज-रचना (ग्रन्थाङ्क ५), महाराजा सवाई जयसिंह कारित; संपादक—स्व० पं० केदारनाथ ज्योतिर्विद् (८+२८), १९५३ ई०। मू. १.७५
३. महर्षिकुलवंभवम्, भाग १ (ग्रन्थाङ्क ६) स्व० पं० मधुसूदन ओझा प्रणीत, म.म. पं० गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी द्वारा सम्पादित एवं हिन्दी व्याख्या सहित (५६+२९१), १९५६ ई०। मू. १०.७५
४. महर्षिकुलवंभवम् (मूलमात्र) (ग्रन्थाङ्क ५९), स्व० पं० मधुसूदन ओझा-प्रणीत, संपादक—पं० प्रद्युम्न ओझा (१६+१३३+१०), १९६१ ई०। मू. ४.००
५. तत्कसंग्रह, अन्नभट्टकृत (ग्रं० ९) टीकाकार—क्षमाकल्याणगणि; संपादक—डा० जितेंद्र जेटली, (१७+७४), १९५६ ई०। मू. ३.००
६. कारकसंबंधोद्योत, (ग्रं० १८) पं० रभसनन्दीकृत; कातन्त्रव्याकरणपरक रचना; संपादक—डा० हरिप्रसाद शास्त्री (२२+३४), १९५६ ई०। मू. १.७५
७. वृत्तिदीपिका (ग्रं० ७) मोनिकृष्णभट्टकृत; संपादक—स्व० पं० पुरुषोत्तमशर्मा चतुर्वेदी, साहित्याचार्य (६+४४+१२), १९५६ ई०। मू. २.००
८. कृष्णगीति (ग्रं० १६) कवि सोमनाथ विरचित, राधाकृष्ण सम्बन्धी प्रेमकाव्य; संपादिका—डॉ० कु० प्रियबाला शाह (२७+३२), १९५६। मू. १.७५
९. शब्दरत्नप्रदीप (ग्रं० १९), अज्ञातकर्तृक, बह्वर्थक-शब्दकोश; संपादक डॉ० हरिप्रसाद शास्त्री (१२+४४), १९५६ ई०। मू. २.००
१०. नृत्तसंग्रह (ग्रं० १७), अज्ञातकर्तृक; संपादिका—डॉ० कु० प्रियबाला शाह (६+४५) १९५६ ई०। मू. १.७५
११. शृङ्गारहारवली (ग्रं० १५), श्री हर्षकवि विरचित संस्कृत-गीतकाव्य; संपादिका—डॉ० कु० प्रियबाला शाह (१०+८२) १९५६ ई०। मू. २.७५

१२. राजविनोद महाकाव्य (ग्र० ८), महाकवि उदयरज प्रणीत, ग्रहमदावाद के सुलतान महमूद बेगड़ा का चरित्र-वर्णन; संपादक - श्री गोपालनारायण बहुरा (२८+४४) १९५६ ई० । मू. २.२५
१३. चक्रपाणिविजय महाकाव्य (ग्र० २०), भट्ट लक्ष्मीधर विरचित; उपापरिणय संबंधी अद्यावधि अज्ञात काव्य; संपादक - के. का. शास्त्री (७+११२), १९५६ ई० । मू. ३.५०
१४. नृत्यरत्नकोश (प्रथम भाग) (ग्र० २५), महाराणा कुम्भकर्णकृत, संगीतराजरत्न-कोषान्तर्गत; संपादक - प्रो० रसिकलाल छो० परोख एवं डॉ० कु० प्रियवाला शाह (७+१४४), १९५७ ई० । मू. ३.७५
१५. उक्तिरत्नाकर (ग्र० १२), साधुसुन्दर गणि विरचित, संस्कृत एवं देशी शब्दकोष; संपादक - पद्मश्री मुनि जिनविजय पुरातत्त्वाचार्य (१०+११८), १९५७ । मू. ४.७५
१६. दुर्गापुष्पाञ्जलि, (ग्र० २२), म. म. पं० दुर्गाप्रसाद द्विवेदी प्रणीत; संपादक पं० श्री गङ्गाधर द्विवेदी (३६+१४७), १९५६ ई० । मू. ४.२५
१७. कर्णकुतूहल एवं कृष्णलीलामृत, (ग्र० २६), महाकवि भोलानाथ, जयपुर नरेश सवाई प्रतापसिंह समाश्रित विरचित; संपादक - श्री गोपालनारायण बहुरा (२५+३०), १९५७ ई० । मू. १.५०
१८. ईश्वरविलास-महाकाव्यम्. (ग्र० २६), कविकलानिधि श्रीकृष्णभट्ट विरचित, जयपुर निर्माता सवाई जयसिंह द्वारा अनुष्ठित अश्वमेध यज्ञ का प्रत्यक्ष वर्णन एवं जयपुर राज्येतिहास सम्बन्धी अनेक संस्मरण संवलित महाकाव्य; संपादक - स्व० कवि-शिरोमणि भट्ट श्री मथुरानाथ शास्त्री (७६+२६३), १९५८ ई० । मू. ११.५०
१९. रसदीधिका, (ग्र० ४१), कवि विद्याराम प्रणीत, संस्कृत रसालङ्कारपरक सरल एवं लघु कृति; संपादक - श्री गोपालनारायण बहुरा (१२+८०) १९५६ ई० । मू. २.००
२०. पद्यमुक्तावली, (ग्र० ३०), कविकलानिधि श्रीकृष्णभट्ट विरचित, अनेक साहित्यिक एवं ऐतिहासिक पद्य संग्रह; संपादक - स्व० कविशिरोमणि भट्ट श्री मथुरानाथ शास्त्री (२०+१४६), १९५६ । मू. ४.००
२१. काव्यप्रकाश, भाग १, (ग्र० ४६), मूल ग्रन्थकार मम्मटाचार्य के समकालीन भट्ट सोमेश्वर कृत 'काव्यादर्श संकेत' सहित, जैसलमेर के जैन ग्रन्थभंडारों से प्राप्त प्राचीन प्रति के आधार पर संपादित; संपादक - श्री रसिकलाल छो० परोख (४+३५२), १९५६ ई० । मू. १२.००
२२. काव्यप्रकाश भाग २, (ग्र० ४७), संपादक - श्री रसिकलाल छो० परोख (२२+११०+६४), १९५६ ई० । मू. ८.२५
२३. वस्तुरत्नकोश, (ग्र० ४५), अज्ञातकर्तृक, संस्कृत का सामान्यज्ञान-कोश; संपादक - डॉ० कु० प्रियवाला शाह (६+६४), १९५६ । मू. ४.००
२४. वनकण्ठवधम्, (ग्र० २३), म. म. पं० दुर्गाप्रसाद द्विवेदी कृत, रामचरित्रात्सक संस्कृत-चम्पू; संपादक - श्री गङ्गाधर द्विवेदी (४+१५६), १९६० ई० । मू. ४.००

२५. श्री भुवनेश्वरीमहास्तोत्रम्, (ग्र० ५४), पृथ्वीधराचार्य विरचित, कवि पद्मनाभ प्रणीत भाष्यान्वित, पूजा-पञ्चाङ्गादि संवलित; संपादक - श्री गोपालनारायण बहुरा (१+१६६), १९६० ई० । मू. ३.७५
२६. रत्नपरीक्षादि सप्तग्रन्थ संग्रह, (६०) दिल्ली-सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी के मुद्राधीक्षक ठक्कुर फेरू विरचित, मध्यकालीन भारत की आर्थिक दशा एवं रत्नपरीक्षादि वस्तुजात-संग्रहादिक विषयों पर विस्तृत विवेचनात्मक ग्रन्थ; संपादक - पद्मश्री मुनि जिनविजय पुरातत्त्वाचार्य । मू. ६.२५
२७. स्वयम्भूछन्द, (ग्र० ३७) कवि स्वयम्भू कृत, दसवीं शताब्दी में रचित प्राकृत एवं अप-भ्रंश छन्दःशास्त्र पर अलम्ब्य कृति; सम्पा० प्रो. एच० डी० वेलणकर (२५+२४४) १९६२ ई० । मू. ७.७५
२८. वृत्तजातिसमुच्चय, (ग्र० ६१), कवि विरहाङ्क कृत, ७वीं शताब्दी में प्रणीत संस्कृत एवं प्राकृत छन्दःशास्त्र पर अलम्ब्य कृति; संपादक प्रो० एच. डी. वेलणकर (३२+१४४), १९६२ ई० । मू. ५.२५
२९. कविदर्पण, (ग्र० ६२), अज्ञातकर्तृक, १३वीं शताब्दी में रचित प्राकृत-संस्कृत छन्दः-शास्त्र पर अनुपम कृति; संपादक - प्रो० एच. डी. वेलणकर (५२+३५६), १९६२ ई० । मू. ६.००
३०. वृत्तमुक्तावली, (ग्र० ६९), कविकलानिधि श्रीकृष्णभट्ट प्रणीत, वैदिक एवं संस्कृत छन्दःशास्त्र पर दुर्लभ कृति; संपादक - स्व० पं० श्री मधुरानाथ भट्ट (१७+७६) १९६३ ई० । मू. ३.७५
३१. कर्णामृतप्रपा, (ग्र० २) सोमेश्वर भट्ट कृत (१३वीं शताब्दी) मध्यकालीन संस्कृत-काव्य-संग्रह, जैसलमेर के जैन-भंडारों से प्राप्त अलम्ब्य प्रति के आधार पर; संपादक - पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य; (१०+५६), १९६३ ई० । मू. २.२५
३२. पदार्थरत्नमञ्जूषा, (ग्र. ३८), श्रीकृष्णमिश्र प्रणीत दर्शनशास्त्र की वैशेषिक शाखा पर आधारित, जैसलमेर के जैन-भंडारों से प्राप्त प्राचीन प्रति के आधार पर संपादित; संपादक - पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य; प्रस्तावना - श्री दलमुख मालवणिया । (७+४५) १९६३, ई० । मू. ३.७५
३३. त्रिपुराभारती-लघु-स्तव, (ग्र० १), लघ्वाचार्य प्रणीत वागीश्वरी स्तोत्र, सोमतिथिक सूरि (१३४० ई०) कृत टीका सहित; संपादक-पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य (१०+५६) ई० १९५२ ई० । मू. ३.२५
३४. प्राकृतानन्द, (ग्र० १०), रघुनाथ कवि कृत प्राकृत भाषा व्याकरण संबंधी महत्त्वपूर्ण रचना; संपादक - पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य (१७+५२+५३+७६) १९६२ ई० । मू. ४.२५
३५. इन्द्रप्रस्थ-प्रबन्ध, (ग्र. ७०), अज्ञात कर्तृक, दिल्ली के प्रारम्भिक शासकों के विषय में ऐतिहासिक काव्य; संपादक - डा० दशरथ शर्मा (८+४६) १९६३ ई० । मू. २.२५

(ख) राजस्थानी - हिन्दी

१. कान्हडदे प्रबन्ध, (ग्र० ११), महाकवि पद्मनाभ विरचित, सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी के द्वारा जालोर दुर्ग के प्रसिद्ध घेरे आदि का वर्णन; संपादक - प्रो० के. बी. व्यास (३३+२७५) १९५३ ई०। मू. १२.२५
२. क्यामखां रासा, (ग्र० १३), कवि जानकृत, फतेहपुर के नवाब अलफ़ख़ान तथा राज-पूताने के क्यामखानी मुस्लिम राजपूतों के उद्गम और इतिहास का रोचक वर्णन; संपादक - डा० दशरथ शर्मा और अग्रचन्द भेंवरलाल नाहटा (५०+१२८) १९५३ ई०। मू. ४.७५
३. लावा रासा, (ग्र० १४) अपर नाम कूर्मवंशयशप्रकाश, गोपालदान कविया कृत, नरूका (कछवाहा) राजपूतों और पिडारी पठानों के बीच हुए पांच युद्धों का समकालीन अजोस्वी वर्णन, संपादक-श्री महतावचन्द खारेड़, (१९+८६) १९५३ ई०। मू. ३.७५
४. बांकीदास री ह्यात, (२१) बांकीदास कृत, राजस्थान के प्राचीन ऐतिहासिक विवरणों का प्रमुख ग्रन्थ; संपादक - श्री नरोत्तमदास स्वामी (९+२१८) १९५६ ई०। मू. ५.५०
५. राजस्थानी साहित्य-संग्रह, भाग १, (ग्र० २७) राजस्थानी भाषा में रचित प्रतिनिधि गद्य कथा-संग्रह; संपादक - श्री नरोत्तमदास स्वामी (१४+५२) १९५७ ई०। मू. २.२५
६. राजस्थानी साहित्य-संग्रह, भाग २, (ग्र० ५२) तीन ऐतिहासिक वार्ताएं-बगड़ावत, प्रतापसिंह महोकर्मसिंह और वीरमदे सोनगिरा; संपादक - डा० पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, (२४+१०८) १९६० ई०। मू. २.७५
७. कवीन्द्र-कल्पलता, (ग्र० ३४), मुगल बादशाह शाहजहां के समकालीन कवीन्द्राचार्य सरस्वती कृत; संपादक - रानी लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत (७+५५+५) १९५८ ई०। मू० २.००
८. जुगलविलास, (ग्र० ३२), कुशलगढ़ के महाराजा पृथ्वीसिंहजी अपरनाम कवि पीथल कृत; संपादिका - रानी लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत (५+५०) १९१० ई०। मू. १.७५
९. भगतमाल, (४३) चारण ब्रह्मदास दादूपंथी कृत; संपादक - श्री उदयराम उज्ज्वल (८+६४) १९५९ ई०। मू. १.७५
१०. राजस्थान पुरातत्त्व मंदिर के हस्तलिखित ग्रन्थों की सूची, भाग १, (ग्र० ४२) ई० स० १९५६ तक संग्रहीत ४००० ग्रन्थों का वर्गीकृत सूचीपत्र; संपादक - पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वोचार्य, (२+३०२+२०) १९५९ ई०। मू. ७.५०
११. राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान के हस्तलिखित ग्रन्थों की सूची, भाग २, (ग्र० ५१) ७८५ तक के ग्रन्थों का सूची-पत्र; (२+३९१) १९६० ई०। संपादक - श्री गोपाल-नारायण बहुरा। मू. १२.००

१२. राजस्थानी हस्तलिखित-ग्रन्थ-सूची, भाग १ (ग्रं ४४) मार्च १९५८ तक के ग्रन्थों का विवरण; संपादक - पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य, (१९६० ई०) ।
मू. ४.५०
१३. राजस्थानी हस्तलिखित-ग्रन्थ-सूची, भाग २ (ग्रं ५८) १९५८-५९ के संग्रहीत ग्रंथों का विवरण; संपादक - डॉ० पुरुषोत्तमलाल मेनारिया (२+६१) १९६१ ई० ।
मू. २.७५
१४. स्व० पुरोहित हरिनारायणजी विद्याभूषण ग्रन्थ-संग्रह सूची, (ग्रं ५५), संपादक - श्री गोपालनारायण बहुरा और श्री लक्ष्मीनारायण गोस्वामी (८+१६३+३८), १९६१ ई० ।
मू. ६.२५
१५. मुंहता नैणसी री ख्यात, भाग १. (ग्रं ४८), मुंहता नैणसी कृत, साधारणतः राजस्थान देशीय एवं मुख्यतः मारवाड़ राज्य का प्रथम प्रामाणिक ऐतिहासिक ग्रन्थ; संपादक - आ० श्री बदरीप्रसाद साकरिया (११+३६५), १९६० ई० । मू. ८.५०
१६. मुं० नै० री ख्यात भाग २, (ग्रं ४९), सं० आ० बदरीप्रसाद साकरिया (११+३४३) १९६२ ई० ।
मू. ९.५०
१७. मुं० नै० री ख्यात भाग ३, (ग्रं ७२)(२+२६५) १९६४ ई० ,, मू. ८.००
१८. सूरजप्रकाश भाग १, (ग्रं ५६), चारण करणीदान कविया कृत, सामान्य रूप से मारवाड़ का ऐतिहासिक विवरण व विशेषतः जोधपुर के महाराजा अभयसिंहजी व सरवुलन्दखान के बीच हुए अहमदाबाद के युद्ध का समकालीन वर्णन; संपादक - श्री सीताराम लाळस (२०+३१०+३७), १९६१ ई० ।
मू. ८.००
१९. सूरजप्रकाश भाग २, (ग्रं ५७), संपादक - श्री सीताराम लाळस (९+३६३+६१) १९६२ ई० ।
मू. ९.५०
२०. ,, भाग ३, (ग्रं ५८), ,, (९७+२७५+८४) १९६३ ई० ।
मू. ९.७५
२१. नेहतरंग, (ग्रं ६३), बूंदी नरेश राव बुधसिंह हाड़ा कृत, काव्य शास्त्रीय ग्रन्थ संपादक - श्री रामप्रसाद दाघीच (३२+१२०), १९६१ ई० ।
मू. ४.००
२२. मत्स्य-प्रदेश की हिन्दी-साहित्य को देन, (ग्रं ६६), लेखक डा० मोतीलाल गुप्त, पूर्वी राजस्थान में हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज विषयक शोध-प्रबन्ध; (९+२९६), १९६० ई० ।
मू. ७.००
२३. राजस्थान में संस्कृत साहित्य की खोज, (ग्रं ३१), श्री ब्रह्मदत्त त्रिवेदी द्वारा प्रोफेसर एस. आर. भाण्डारकर लिखित हस्तलिखित संस्कृत ग्रन्थों की खोज में मध्यप्रदेश व राजस्थान में १९०५-६ ई० में की गई खोज-रिपोर्ट का हिन्दी अनुवाद (२+७७+१९), १९६३ ई० ।
मू. ३.००
२४. समदर्शी आचार्य हरिभद्र, (ग्रं ६८), लेखक पं० सुखलालजी, हिन्दी अनुवादक-शान्तिलाल म. जैन, राजस्थान के गण्यमान्य साहित्यकार एवं विचारक आचार्य हरिभद्र का जीवन-चरित्र और दर्शन, (८+१२२), १९६३ ई० ।
मू. ३.००

२५. वीरवाण, (ग्र० ३३), ढाढी वादर कृत, जोधपुर के वीर-शिरोमणि वीरमजी राठीइ संबंधी रचना; संपादिका - रानी लक्ष्मीकुमारी चूडावत (१६+६२+११२), १९६० ई० । मू. ४.५०
२६. वसन्त-विलास फागु, (ग्र० ३६), अज्ञातकर्तृक, १३वीं शताब्दी का एक प्राचीन राजस्थानी भाषा निबद्ध शृंगारिक काव्य; संपादक - एम. सी. मोदी, (१४+११६), १९६० ई० । मू. ५.५०
२७. रूपमणीहरण, (ग्र० ७४), महाकवि सांयाजी भूला कृत; राजस्थानी भक्तिकाव्य; संपादक - डॉ० पुरुषोत्तमलाल मेनारिया (५२+११३) १९६४ ई० । मू. ३.५०
२८. बुद्धि-विलास, (ग्र० ७३), वखतराम साह कृत, जयपुर के संस्थापक सवाई जयसिंहजी का समकालीन ऐतिहासिक वर्णन; संपादक - श्री पद्मधर पाठक (२४+१७६), १९६४ ई० । मू. ३.७५
२९. रघुवरजसप्रकास, (ग्र० ५०), चारण कवि किसनाजी आढ़ा कृत, राजस्थानी भाषा का काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ; संपादक - श्री सीतारामजी लाळस (२०+३७६) १९६० ई० । मू. ८.२५
३०. सन्त कवि रज्जब : सम्प्रदाय और साहित्य (ग्र. ७६) : लेखक - डा० ब्रजलाल वर्मा (८४ ३१५+३१६+३१४), १९६५ ई० । मू. ७.२५
३१. प्रतापरासो-जाचिक जीवण कृत, (ग्र. ७५): अलवर राज्य के संस्थापक रावराजा प्रतापसिंहजी के शौर्य का ऐतिहासिक वर्णन, भाषा-शास्त्रीय विशिष्ट अध्ययन सहित, सम्पादक - डा० मोतीलाल गुप्त (१६६+११८), १९६५ ई० । मू. ६.७५
३२. भक्तमाल, (ग्र. ७८) राघोदास कृत, चतुरदास कृत टीका; दादूपन्थीय भक्त नामावली और विवरण, सम्पादक-श्री अग्रचन्द नाहटा (३८+२८+२८६) १९६५ ई० । मू. ६.७५

(ग) अंग्रेजी

१. संस्कृत व प्राकृत ग्रन्थों का सूचीपत्र भाग १ (ग्र० ७१), राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर-संग्रह का स्वरित रोमन-लिपि में ४००० ग्रन्थों का सूचीपत्र, अंत में विशिष्ट ग्रन्थों के उद्धरण; संपादक - पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य (१६+८६+ ३७३+१५६), १९६३ ई० । मू. ३७.५०
२. , भाग २ ग्र (ग्र० ७७), संपादक - पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य, (१६+७०+३२६+६६), १९६४ ई० । मू. ३४.५०

सूचना- पुस्तक विक्रेताओं को २५% कमीशन दिया जाता है ।

